डॉ० भोलानाथ तिवारी

ताज़ुड़बेकी

ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन तथा संक्षिप्त शब्दकोश

डॉ० भोलानाथ तिवारी

भारत और सोवियत संघ

की

मैत्री के नाम

जिसके कारण यह अध्ययन संभव हो सका

दो शब्द

हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय के तत्त्वावधान में पुस्तकों के प्रकाशन की विभिन्न योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। हिन्दी में अभी तक ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नहीं है, इसलिए ऐसे साहित्य के प्रकाशन को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यह तो आवश्यक है ही कि ऐसी पुस्तकें उच्च कोटि की हों, किन्तु यह भी ज़रूरी है कि वे अधिक महंगी न हों ताकि सामान्य हिंदी पाठक उन्हें खरीदकर पढ़ सकें। इन उद्देश्यों को सामने रखते हुए जो योजनाएं बनाई गई हैं, उनमें से एक योजना प्रकाशकों के सहयोग से पुस्तकें प्रकाशित करने की है। इस योजना के अधीन भारत सरकार प्रकाशित पुस्तकों की निश्चित संख्या में प्रतियाँ खरीदकर उन्हें मदद पहुंचाती है।

प्रस्तुत पुस्तक इसी योजना के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही है। इसके लेखन और प्रकाशन इत्यादि की व्यवस्था प्रकाशक ने स्वयं की है। पुस्तक के लेखक सोवियत सरकार के निमंत्रण पर ताशकंद विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाने के लिए सन् १९६२ में गए थे। वहाँ उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'ताजुज़्बेकी' बोली हिंदी से मिलती-जुलती है। वहीं से प्रेरणा प्राप्त कर उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक लिखने का निश्चय किया। पुस्तक में शिक्षा-मंत्रालय द्वारा स्वीकृत शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

हमें विश्वास है कि प्रकाशकों के सहयोग से प्रकाशित साहित्य हिंदी को समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होगा और साथ ही इसके द्वारा ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित पुस्तकें हिन्दी के पाठकों को उपलब्ध हो सकेंगी।

आशा है यह योजना सभी क्षेत्रों में लोकप्रिय होगी।

कृष्णा दयाल भार्गव

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय

(कृष्णदयाल भार्गव)
निदेशक

भूमिका

अगस्त १९६२ में इन पंक्तियों के लेखक को सोवियत सरकार के निमंत्रण पर विज़िटिंग प्रोफ़ेसर के रूप में हिंदी पढ़ाने के लिए ताशकंद विश्वविद्यालय जाने का अवसर मिला। वहाँ पहुँचने के कुछ ही दिनों बाद कुछ लोगों (विशेषत: मेरे उज़्बेक मित्र श्री फ़त्ता) से सूचना पाकर मेरा ध्यान इस बोली के अध्ययन की ओर आकर्षित हुआ, और मैंने सामग्री एकत्र करनी आरंभ कर दी। थोड़ी ही सामग्री एकत्र कर पाया था कि एक प्रश्न उठ खड़ा हुआ। प्रश्न यह था कि कहीं यह अफ़गानी या पश्तो का कोई ऐसा तो रूप नहीं है जो ताजिक और उज़्बेक भाषा से प्रभावित हो। इस प्रश्न के उठने का कारण यह था कि उस समय तक मुझे इस बोली के जो बोलने वाले मिले थे, वे अपने को अफ़गान तथा अपनी इस बोली को 'अफ़गानी' या 'ज़बाने अफ़ग़ानी' या 'लफ़्ज़े अफ़ग़ानी' कहते थे। साथ ही उनके आस-पास के लोग भी उन्हें तथा उनकी बोली को इन्हीं नामों से पुकारते थे। मुझे अफ़गानी भाषा (पश्तो) का ज्ञान नहीं था, अत: कुछ दिनों के लिए सामग्री-संकलन का कार्य रोकना पड़ा। इस बात का उस समय तक मुझे पता नहीं था कि ताशकंद की ओरियंटल फ़ैकल्टी में, जहाँ मैं प्रोफ़ेसर था, अफ़ग़ानी विभाग भी है। इसका पता चलते ही पहले इसी का निर्णय करना मैंने उचित समझा कि यह बोली अफ़ग़ानी से संबद्ध है या नहीं। अफ़ग़ानी विभाग की सहायता से मैंने तुलना के लिए अफ़ग़ानी के ३० ऐसे शब्द लिये जिनके ताजुज़्बेकी पर्याय मेरे पास थे। यह देखकर मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा कि उक्त बोली और उसके बोलने वालों का चाहे जो भी नाम हो, उनके वे शब्द अफ़ग़ानी से बिल्कुल अलग और हिंदी के समान हैं। मेरे द्वारा एकत्रित तुलनात्मक सामग्री यह थी :

ताजुज़्बेकी	अफ़ग़ानी	हिंदी
एक	याव	एक
दो	द्वा	दो
तिन	द्रे, द्रेया	तीन
चार	सलोर, त्सल्लोर	चार

चे	इपज़	छे
सत	ग्रोवें, उवी, ग्रोव	सात
दस	लस	दस
याराँ	यावलस	ग्यारह
बाराँ	द्वालस	बारह
तेराँ	दियारलस	तेरह
बीस	शिल	बीस
चुरी	चाक़ू	छुरी
ग्राँक्	स्तिर्गा, स्तर्गा	ग्राँख
दान्, दान्त	ग़ाश	दाँत
दड़ी	ज़िरा	दाढ़ी
हुंट	शुंडा	होंठ
हत	लास	हाथ
नाक	पाज़ा	नाक
कुतो	स्पय	कुता
बकरि	उज़ा,व्ज़ा	बकरी
बल्द	ग़्वयाइ	बैल (भोजपुरी) बरध
बिलि, बलि	पिशी, प्शी	बिल्ली
ग्रंडो	हगी, तुहुम	ग्रंडा
चिड़ि	मुर्ग़	चिड़िया
पाड़	ग़ार	पहाड़
दूत	शिदा	दूध
कालो	तोर	काला
लाल	सोर	लाल
कल्ला	सबा	कल

यह बोली ताजिक भाषा से बहुत ग्रधिक प्रभावित है। कई पीढ़ियों से ताजिक लोगों के बीच रहने के कारण इस ताजुज़्बेकी बोली की सांस्कृतिक एवं उच्च शब्दावली का बहुत बड़ा ग्रंश ताजिक भाषा से गृहीत है। इसी कारण कुछ लोगों ने यह भी शंका उठाई कि कहीं यह ताजिक का कोई रूप तो नहीं है, जिस पर पाश्ववर्ती ग्रन्य भाषाग्रों का प्रभाव है। ऐसा कहने वालों का यह भी कहना था कि ताजिक भारोपीय परिवार की है ग्रतः, इसके किसी रूप या बोली के कुछ शब्दों का हिंदी या भारतीय भाषा के शब्दों से मिलता-जुलता होना सर्वथा संभव है। शंका के समाधान के लिए ताजुज़्बेकी की ताजिक भाषा

के साथ तुलना करनी पड़ी। अपने प्रिय ताजिक छात्र श्री तिल्ला तुरा की सहायता से मैंने यह कार्य किया और इसका भी परिणाम वही निकला जो अफ़ग़ानी से तुलना करने पर निकला था। अर्थात् ताजुज़्बेकी ताजिक से सर्वथा भिन्न और हिंदी से मिलती-जुलती सिद्ध हुई। तुलनात्मक सामग्री थी:

ताजुज़्बेकी	ताजिक
तिन (तीन)	से
चे (छे, छह्)	शश, शिश
सात (सात)	अफ़, हफ़, हफ़्त
आट (आठ)	अश, हश्त
याराँ (११)	योज़्दअ
बाराँ (१२)	द्वोज़्द्अ
तेराँ (१३)	सेज़्द्अ
पन्द्राँ (१५)	पोन्ज़्द्अ
सवलाँ (१६)	शोंज़्द्अ
अटाराँ (१८)	अश्द्अ, हज़्दा
उनि (१९)	न्यूस्द्अ, न्यूज़्द्अ
साढ़े (½)	निम
आँक (आँख)	चश्म
बाल (बाल)	मू, मोय
दाँत (दाँत)	दंदोन
हात (हाथ)	दस्त
हुंठ (होंठ)	लब
जिप (जीभ)	ज़बान
पेट (पेट)	शिकाम, इशकाम
पेर (पैर)	पो, पोय
नाक (नाक)	बिनी, बेनी, बिंदी, बुर्नी
बेटा (बेटा)	पिस्सार
पाई (भाई)	बरादर
में (मैं)	मन
हम (हम)	मो
तम (तुम)	शुमो
ओ (वह)	वाइ
अंडो (अंडा)	तुहूम
बकरी (बकरी)	बुज़गोला, बुज़

बिली (बिल्ली)	गुर्वा, पिशिक
चिड़ी (चिड़िया)	परन्दा
चुरी (छुरी)	कोर्त, कोर्द
दिया (दिया)	चिराग़
दूत (दूध)	शिर
रूटी (रोटी)	नान
पाड़ (पहाड़)	कुह
कुता (कुर्ता)	कुचुक
बाल्द (बैल)	गोव
कालो (काला)	सियाह
लाल (लाल)	सुर्ख
आच (आज)	इम्रोज़, इम्रूज़, इनरोज़
कल्ला (कल)	पगा

ताजुज़्बेकी शब्दों के सामने कोष्ठक में हिंदी के शब्द हैं।

इसी प्रकार उज़्बेक भाषा का भी इस पर कुछ प्रभाव पड़ा है; साथ ही उज़्बेकिस्तान में भी यह बोली जाती है, अतः उससे भी इसकी तुलना आवश्यक जान पड़ी। इस तुलना में मेरी उज़्बेक शिष्या कुमारी मरग़ूबा ने सहायता की :

ताजुज्बेकी	**उज्बेक**
एक (१)	बीर
दो (२)	इक्के
तिन (३)	उच
चार (४)	तोर्त
पाँज (५)	बेश
चे (६)	ओल्ते
सात (७)	इत्ते
आट (८)	सक्किज़
नु (९)	तोक्किज़
दस (१०)	ओन

उपर्युक्त तुलना से मुझे विश्वास हो गया कि यह बोली भारतीय है, साथ ही एकत्र सामग्री की हिन्दी से अत्यधिक समानता के कारण इस पर भी मैं विचार करने लगा कि कहीं यह हिन्दी ही की एक बोली तो नहीं है।

इतना कार्य कर लेने के बाद मुझे श्री ओरांस्की के इस बोली के सम्बन्ध में कुछ लेख तथा पैम्फ़लेट देखने को मिले। यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि

ताजुज़्बेकी लोगों एवं इनकी बोली के नाम (अफ़ग़ान, अफ़ग़ानी) के कारण मेरी ही तरह ओरांस्की को भी इस बोली की अफ़ग़ानी से तुलना करनी पड़ी थी। ओरांस्की फ़ारसी और पश्तो के विद्वान् हैं, और भारतीय भाषाओं से उनका प्रत्यक्ष परिचय प्रायः बहुत कम है। इसी कारण उन्होंने इस बोली की सामग्री तो एकत्र की किन्तु इसके अध्ययन को प्रारम्भिक विश्लेषण से आगे नहीं बढ़ाया।

धीरे-धीरे मैं और सामग्री एकत्र करता रहा और उसके विश्लेषण से मेरी यह धारणा पुष्ट और दृढ़ होती गई कि इस बोली का सम्बन्ध हिन्दी से है। साथ ही इसका कोई उचित नाम न पा मैंने इसे 'ताजुज़्बेकी' नाम देना उचित समझा। ओरांस्की इसे 'सुरहानी' या 'पार्या' कहते रहे हैं, किन्तु जैसा कि आगे प्रथम अध्याय 'परिचय' में स्पष्ट किया गया है, ये दोनों नाम इस बोली के एक सीमित रूप का ही प्रतिनिधित्व करते हैं, पूरी बोली का नहीं।

सन् १९६३ के अन्तिम चरण में भारत में कुछ समाचारपत्रों में यह सूचना छपी कि मैंने सोवियत संघ में बोली जाने वाली किसी बोली के विश्लेषण के आधार पर यह सिद्ध किया है कि वह हिन्दी भाषा की एक बोली है। साथ ही मैं उस पर एक विस्तृत पुस्तक लिख रहा हूँ। भारतीय पत्रों से यह सूचना मास्को में भारतीय दूतावास को मिली। दिसम्बर, १९६३ के अन्त में मास्को स्थित भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव श्री दास का मुझे निम्नांकित पत्र मिला :

(Seal)
Government of India

EMBASSY OF INDIA
MOSCOW

No. 8(56)/60 December 20, 1963

Dear Dr. Tewari,

We have been informed that you are preparing a comprehensive book on a dialect of Hindi which is spoken in Tajikistan and Uzbekistan in the Soviet Union. It is said that the dialect is known as Afghani in the two Republics mentioned above.

Would you kindly throw some light on the subject and let me know?

Yours sincerely,
Sd/- (B.S. Das)

Dr. B.N. Tewari
Professor of Hindi,
Tashkent University,
Tashkent.

पत्र के उत्तर स्वरूप मैंने उन्हें विस्तार से अपने कार्य के बारे में लिखा और साथ ही कुछ सीमांत क्षेत्रों में जाकर सर्वेक्षण करने के लिए सोवियत सरकार से अनुमति दिलाने की प्रार्थना की।

जनवरी, १९६४ में मैंने इस बोली के संबंध में एक लेख 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' दिल्ली को भेजा जो 'हिंदी भाषा की एक नवज्ञात बोली' शीर्षक से २२ मार्च, १९६४ के अंक में प्रकाशित हुआ। उसी समय मैंने एक अपेक्षाकृत बड़ा और कुछ गंभीर लेख हिन्दुस्तानी एकेडेमी की मुख-पत्रिका 'हिन्दुस्तानी' के लिए भेजा जो उसके भाग २४ अंक ३-४ (जुलाई-दिसम्बर, १९६३) में 'ताजुज़्बेकी या पार्या : हिन्दी भाषा की एक नवज्ञात बोली' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इस लेख में इस बोली की कुछ विस्तृत जानकारी दी गई थी; साथ ही इसकी एक कहानी, उसका हिंदी रूपांतर तथा उस पर भाषावैज्ञानिक टिप्पणी भी थी।

अप्रैल १९६४ तक मैं श्री ओरांस्की द्वारा तथा अपने द्वारा एकत्र सामग्री के आधार पर इसके प्रस्तुत व्याकरण और कोश का प्रारंभिक प्रारूप तैयार करता रहा। बीच-बीच में जब भी किसी अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता पड़ती, उसकी प्राप्ति के लिए इस बोली के बोलने वालों से संपर्क स्थापित करना पड़ता। बीच में एक बार कुछ सामग्री के लिए मेरा काम कुछ रुक-सा गया। कुछ परेशानियों के कारण मैं स्वयं जाने में असमर्थ था। श्री रहमान बेर्दी मुहम्मदजानफ़ तथा श्री नबी जान मुहम्मदोफ़ मेरे दो उज़्बेक मित्रों ने स्वयं वह लंबी यात्रा की और अपेक्षित सामग्री मेरे लिए ले आए। उनकी यह अप्रतिम सहायता मेरे लिए अविस्मरणीय है। बेर्दी साहब हिंदी-उर्दू के विद्वान् हैं। हिंदी व्याकरण पर भी उन्होंने काफ़ी मौलिक कार्य किया है। नबी जान साहब साहित्यकार हैं। इन्होंने गोदान के उज़्बेक अनुवाद में सहयोग दिया है तथा कई उर्दू कवियों पर कार्य किया है।

ताजिकिस्तान और उज़्बेकिस्तान के कुछ क्षेत्रों में इस बोली के सर्वेक्षण के लिए जाने की इजाजत देकर सोवियत सरकार ने भी इस कार्य में मेरी बड़ी सहायता की। मई, १९६४ में मुझे मास्को स्थित भारतीय दूतावास से पत्र मिला था :

(Seal)
Government of India

EMBASSY OF INDIA
MOSCOW
26th May, 1964

No. Mos. 25(2)/62

Dear Shri Tiwari,

Will you kindly refer to your request regarding permission of the Soviet authorities to visit certain areas in Central Asia for doing some research work on the Indian dialect ? We had taken up the matter with the Soviet authorities. I am enclosing a copy of their reply for your information.

With kind regards,

Yours sincerely,
Sd/- (B.S. Das)

Prof. B.N. Tiwari
Professor of Hindi,
Tashkent State University,
Tashkent
Encls : ref. to.

Translation

21st May, 1964

MEMORANDUM

The Foreign Relations Department of the Ministry of Higher and Special Secondary Eduction, USSR, presents its compliments to the Embassy of India and has the honour to state that the Department has no objection against the visit by Dr. B.N. Tiwari to the districts of the Tajik SSR enumerated in your letter of 17-3-1964, No. 25(2)52.

The Foreign Relations Department of the Ministry avails itself of this opportunity to renew to the Embassy of India the assurances of its highest consideration.

इस अनुमति के लिए मैं सोवियत सरकार का बड़ा कृतज्ञ हूँ।
इस बोली के संबंध में कुछ विद्वानों से विचार-विमर्श करने तथा ब्रिटिश

म्यूज़ियम से जिप्सी भाषा से संबद्ध पुस्तकों से कुछ तुलनात्मक सामग्री लेने मैं लंदन भी गया था, किंतु दुर्भाग्य से वहाँ कुछ विशेष कार्य नहीं हो सका।

अगस्त, १९६४ में मैं भारत लौट आया।। १९६६ में मैंने अपनी पुस्तक 'हिंदी भाषा' प्रकाशित की, जिसकी भूमिका में, हिंदी की अन्य बोलियों के साथ इस बोली का परिचय भी है, साथ ही इसका पूरा यद्यपि अत्यंत संक्षिप्त व्याकरण प्रथम बार वहाँ दिया गया है।

इधर तीन वर्षों में धीरे-धीरे यह काम पूरा हुआ है। पुस्तक चार खंडों में विभक्त है। प्रथम खंड में परिचय है, दूसरे में ध्वनि तथा व्याकरण, तीसरे में संक्षिप्त ताजुज़्बेकी-हिन्दी शब्दकोश तथा चौथे में ताजुज़्बेकी की कुछ लोक-कथाएँ। मैं जानता हूँ कि इस बोली पर जितना अच्छा काम किया जा सकता था, मैं नहीं कर सका। फिर भी अपनी सीमाओं को देखते हुए अपने इस कार्य के प्रति मेरे हृदय में संतोष है।

पुस्तकों में धन्यवाद और आभार औपचारिक भी हुआ करता है, किंतु यहाँ जिन-जिन को मैं स्मरण कर रहा हूँ, उनके बिना यह कार्य पूरा करना मेरे बस का नहीं था। सचमुच ही इस पुस्तक का बहुत कुछ इन सबके सहयोग का परिणाम है। सोवियत सरकार, मास्को में भारतीय दूतावास, विशेषतः उसके तत्कालीन प्रथम सचिव श्री दास, मास्को में अफ़ग़ानी दूतावास जिससे अफग़ानिस्तान में इस बोली की स्थिति के बारे में कुछ सूचनाएँ मिल सकीं, फ़त्ताह, रहमान बेर्दी, नबी जान, अलमुर्ज़ायफ़, कासानोफ़्स्की, मेरी प्रिय छात्राएँ ग्नारा, मरगूबा, सलीमा सरमसाकोवा, आइता; मेरे प्रिय छात्र तिल्ला तुरा, अमान, घनिष्ठ मित्र डा० क़मर रइस (उर्दू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय), निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव (नेपाल निवासी), तथा डा० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (भाषाविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। सबसे अधिक आभारी मैं लेनिनग्राद के प्राध्यापक श्री ई० एम० ओरांस्की का हूँ जिनके द्वारा एकत्र सामग्री से मुझे सर्वाधिक सहायता मिली है। आप से पत्र द्वारा जब-जब भी मैंने कुछ पूछा, आपने तुरंत उत्तर देने की कृपा की। लोक-साहित्य कुछ मैंने भी एकत्र किया था, किंतु यहाँ जो कुछ दिया गया है उसका यह रूप ओरांस्की के कार्यों के बिना मेरे लिए कठिन होता। सोवियत मानव-शास्त्रवेत्ता स्वर्गीय विल्किन्स तथा लोकसाहित्यवेत्ता रोज़ेन्फ़ेल्ग और अमोनोबिम भी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं, जिनके लेखों से मैं लाभान्वित हुआ हूँ। अंत में, इस पुस्तक के लेखन तथा इसकी प्रेस-कॉपी तैयार करने में मुझे अपनी सहधर्मिणी दुलारी से जो सहायता मिली है उसका स्मरण हो आना स्वाभाविक है। इन्हें धन्यवाद दूँ भी तो किन शब्दों में ? वस्तुतः अनेकानेक व्याघातों और परेशानियों के बावजूद जो थोड़ा-बहुत कार्य अब तक मैं कर सका हूँ, उनके सहयोग के बिना असंभव होता।

मैं सोवियत संघ से सीधा न आकर लंदन आदि होता आया, अतः अपना सामान मुझे सीधे भेजना पड़ा। दुर्भाग्य से वहाँ से मेरे घर तक पहुँचने में उस सामान में से कुछ अन्य चीज़ों के साथ-साथ पुस्तक की भी कुछ सामग्री खो गई, साथ ही भारत में आने पर पानी गिर जाने से पांडुलिपि के कुछ अंश अपठ्य हो गए। इन्हीं कारणों से पुस्तक में कुछ अव्यवस्थाएं तथा त्रुटियाँ रह गई हैं। प्रूफ़ की भूलें भी हैं। पैराग्राफों का क्रमांकन भी कुछ अव्यवस्थित है। इन सभी के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

ताजुज़्बेकी स्वरों और व्यंजनों को नागरीलिपि में लिखने में कुछ कठिनाइयाँ रही हैं। जैसे उसमें 'आँ' का एक अनुनासिक रूप भी मिलता है, किंतु उसे बिना विशेष चिह्न के नागरी में नहीं लिख सकते। इसी प्रकार कुछ ताजुज़्बेकी शब्दों में 'अ' का एक ऐसा रूप मिलता है जो मात्रा की दृष्टि से 'अ' से दीर्घ किंतु 'आ' से ह्रस्व है। ताजुज़्बेकी के महाप्राण व्यंजन महाप्राणता की दृष्टि से हमारे अल्पप्राण एवं महाप्राण के बीच के सुनाई पड़ते हैं। ऐसी सभी विशेष ध्वनियों के लिए मैं विशेष चिह्न प्रयुक्त करना चाहता था, किंतु प्रेस की असुविधा की दृष्टि से यह विचार छोड़ना पड़ा और निकटतम चिह्न से उन्हें व्यक्त करके ही संतोष कर लेना पड़ा।

कोश में अक्षरांत एवं शब्दांत 'अ' के लोप को हलचिह्न द्वारा दिखाने की पद्धति कुछ अपवादों को छोड़कर प्रायः नहीं अपनाई गई है। हिंदी पाठक 'बलराम' लिखता है किंतु पढ़ता 'बलराम्' है, अतः आशा है, ठीक उच्चारण समझने में उसे कठिनाई न होती। यह भी प्रेस की सुविधा की दृष्टि से ही करना पड़ा है।

भोलानाथ तिवारी

ई ४/२३, मॉडल टाउन
दिल्ली

संक्षेप

अ०, अर०	=अरबी
अप०	=अपभ्रंश
अ० पु०	=अन्य पुरुष
अव०	=अवधी
अफ़०	=अफ़ग़ानी
आ०	=आधुनिक
आसा०	=आसामी
उज०	=उज़्बेक
उ० पु०	=उत्तम पुरुष
एक	=एकवचन
कुमा०	=कुमायूनी
गुज०	=गुजराती
ताजि०	=ताजिक
तु०	=तुर्की
तुल०	=तुलनीय
दे०	=देखिये
ने०	=नेपाली
पं०, पंज०	=पंजाबी
हि०, हिं	=हिंदी
पा०	=पालि
पु०	=पुंल्लिग
प्रा०	=प्राकृत
फ़ा०, फ़ार०	=फ़ारसी
बं०	=बंगाली
बहु०	=बहुचन
भोज०	=भोजपुरी
म० पु०	=मध्यम पुरुष
मरा०	=मराठी
मु०	=मुहावरा
राज०	=राजस्थानी
लहँ०	=लहँदा
सं०	=संस्कृत
सि०	=सिंधी
स्त्री०	=स्त्रीलिंग
हरि०	=हरियाणी

अनुक्रम

१

परिचय

परिचय

मध्य एशिया में भारतीय

मध्य एशिया से भारत का संबंध बड़ा पुराना है। यह संबंध राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा व्यापारिक कई स्तरों पर था, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय वहाँ आया-जाया करते थे। अस्त्राखान में प्राचीन काल से ही बनियों और जैनियों के रहने के संकेत मिलते हैं। उज़्बेकिस्तान में एक वयोवृद्ध सज्जन ने अपने बचपन की घटनाओं का स्मरण करते हुए समरकंद में मुझे बताया कि 'वहाँ कुछ ऐसे भारतीय रहते थे जिनके रास्ते को यदि रेखाओं से काट दें तो वे थोड़ी देर के लिए पीछे हटकर तो फिर आगे बढ़ते थे। इसी प्रकार छोटे जीव-जंतुओं को पकड़कर लड़के उनके पास जाते थे तो वे पैसे देकर उन्हें छुड़-वाते थे।' मेरा अनुमान है कि ये जैनी रहे होंगे। पहले मध्य एशिया में बौद्ध धर्म का बड़ा प्रचार था। इधर खुदाई में बौद्ध धर्म से संबद्ध काफ़ी चीज़ें वहाँ मिली हैं। 'बुख़ारा' (नगर का नाम) 'बिहार' (बौद्धों का) शब्द का अपभ्रंश कहा जाता है। समरकंद के एक प्राचीन अवशेष पर स्वस्तिक का चिह्न भी मुझे मिला था, जो वहां से भारतीय संबंध का प्रमाण है। यूरोप और चीन के साथ भारत का व्यापार इसी रास्ते होता था।

किंतु इस प्रकार के लोगों के अतिरिक्त कुछ घुमंतू जातियाँ भी भारत से उधर गईं जिनमें 'जिप्सी' प्रमुख हैं। जिप्सियों के अतिरिक्त चित्राउ-भाषी, जाट और ताजुज़्बेकी-भाषी भी उल्लेख्य हैं। ये लोग भारत से मध्य एशिया में गए और वहीं बस गए।

मध्य एशिया में भारतीय भाषाएँ

मध्य एशिया में भारत से जाने वालों के साथ, जैसा कि स्वाभाविक है, उनकी भाषाएँ भी गईं, जिनमें कुछ तो अब समाप्त हो गई हैं, और कुछ अब भी बोली जा रही हैं। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, इस प्रकार की अब तक निम्नां-

कित पाँच भाषाओं का पता चला है ।

(क) हिंदी

इसके बोलने वाले व्यापार करने के लिए गए थे, और मध्य एशिया के समरकंद तथा अस्त्राख़ान जैसे कुछ केन्द्रों में बस गए थे । अब इन लोगों का वहाँ पता नहीं है । ये कदाचित् वहाँ के लोगों में घुल-मिल गए या समाप्त हो गए । इस सदी के प्रारम्भ तक इनमें कुछ लोग थे । उज़्बेकिस्तान के कुछ पुराने लोगों से बातचीत करने पर इस भाषा के चार शब्द मुझे मिले : रोती (रोटी), खिचरी (खिचड़ी), पइसा (पैसा), हइ (है)। वहां की भाषा में मूर्द्धन्य व्यंजन तथा संयुक्त स्वर के अभाव के कारण ये शब्द 'रोती', 'खिचरी', 'पइसा' तथा 'हइ' हो गए हैं। इन चार शब्दों के आधार पर ही मैंने उनकी भाषा को हिंदी कहा है ।

(ख) चित्राउ

इस भाषा के संबंध में मुझे केवल यही ज्ञात हो सका है कि यह मूलतः एक भारतीय भाषा है तथा इसके कुछ बोलने वाले पामीर में हैं ।

(ग) जाटू

मध्य एशिया में १९ वीं सदी में कुछ भारतीय लोग रहते थे जो अपने को 'इन्दुस्तानी' कहते थे तथा अपनी जाति 'जाट' या 'बलूजी (बलूची) जाट' बतलाते थे । जाट यों तो कभी प्रायः पूरे पश्चिमोत्तरी भारत में थे किंतु मुझे लगता है कि ये जाट, मूलतः पश्चिमोत्तरी हरियाना के नट थे तथा इनकी बोली मूलतः 'जाटू' या 'हरियानी' का पश्चिमोत्तरी रूप थी ।

प्रसिद्ध सोवियत नृशास्त्रवेत्ता ए० इ० विल्किन्स ने १९वीं सदी के अंतिम चरण के प्रारंभिक वर्षों में मध्य एशिया में रहने वाले विदेशी लोगों के संबंध में कुछ नृशास्त्रीय सामग्री एकत्र की थी । इस सिलसिले में वे भारतीय जिप्सियों के अतिरिक्त इन लोगों के संपर्क में भी आए थे । विल्किन्स ने अपने 'स्रेद्नीआज़ित्स्कया बगेमा'[1] शीर्षक लेख में इनके बारे में विस्तृत रूप से लिखा है ।

ये लोग उस समय बलख़, बुख़ारा, समरकंद, ताशकंद, फ़रग़ाना तथा चिमकेंत आदि में ककान्द तथा सिरदरिया के किनारे ख़ानाबदोश के रूप में ख़ेमों

१. ऐन्थ्रापालगिचेस्कया वीस्तफ़्का (नृविज्ञानिक प्रदर्शनी), १८७९ ई०, खंड ३, भाग १ (ए० पी० बग्दानोवा के संपादकत्व में मास्को से १८८२ ई० में प्रकाशित), पृ० ४३६-४५३ ।

में रहते थे। इनका प्रमुख पेशा भीख माँगना, तोते, बंदर, भालू के तमाशे दिखाना या छोटी-मोटी चीज़ें बेचना था। चीज़ें बेचने वाले अपने को 'अत्तार' कहते थे। उज़बके भाषा में 'अत्तार' का अर्थ है 'छोटा व्यापारी'। इनकी औरतें, इस प्रदेश के उज़बके या ताजिक लोगों की स्त्रियों की तरह ही घूँघट नहीं निकालती थीं, अपितु खुले मुँह रहती थीं। वे सुरमा, मुंह के लिए अपने द्वारा बनाया गया विशेष प्रकार का साबुन तथा छोटी-मोटी दवाएँ बेचती थीं। इस प्रदेश में रहने वाले भारतीय जिप्सियों से ये लोग पूर्णतः अलग थे। इनका आपस में शादी-ब्याह भी नहीं होता था। जिप्सी लोग हाथ देखने का भी काम करते थे, किंतु ये लोग यह पेशा नहीं करते थे, और इसे जिप्सियों का पेशा बताते थे। जिप्सियों की भाँति ही इनकी भी रहन-सहन, वेश-भूषा प्रायः स्थानीय उज़बके-ताजिक लोगों के समान थी।

ये लोग ताजिक और कुछ उज़बके भाषा भी जानते थे, किंतु इनकी अपनी अलग भी भाषा थी। स्थानीय लोगों से ये उज़्बेक या ताजिक में बात करते थे, किंतु आपस में अपनी भाषा में।

इनकी भाषा में यों तो उज़्बेक और ताजिक शब्द भी काफ़ी थे, किंतु व्याकरण और आधार-शब्दावली की दृष्टि से यह भारतीय आर्य बोली थी। विल्किन्स ने लिखा है कि तत्कालीन जिप्सियों की भाषा के यह काफ़ी निकट थी। इन पंक्तियों के लेखक ने १९६२ से १९६४ तक इन लोगों को खोजने का बहुत प्रयास किया किंतु कहीं पता नहीं चला। संभव है, गत ७०-७५ वर्षों में ये लोग स्थानीय लोगों में मिल गए हों और इनकी स्वतंत्र सत्ता समाप्त हो गई हो, या कहीं दूर-दराज़ के इलाकों में पड़े हों।

विल्किन्स ने इनकी भाषा के २०० से कुछ ऊपर शब्द दिए हैं। एकाध संक्षिप्त वाक्य भी हैं। एक-दो ध्वन्यात्मक प्रवृत्तियों की ओर भी संकेत किया है, किंतु सब-कुछ मिलाकर विल्किन्स द्वारा दी गई सामग्री भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत अधूरी है। विल्किन्स ने अपने लेख में एकाधिक स्थलों पर यह कहा है कि वे भाषाशास्त्री नहीं है, इसी कारण उनके द्वारा दिए गए शब्दों की वर्तनी में भी एकरूपता नहीं है, तथा कई शब्दों की वर्तनी से, उनके ठीक उच्चारण का अनुमान लगाना बहुत कठिन है। वस्तुतः वे नृशास्त्री थे, और भाषा की ओर उनका ध्यान आनुषंगिक रूप से ही गया था।

विल्किन्स द्वारा दी गई सामग्री नीचे दी जा रही है। अर्थ विल्किन्स द्वारा दिए गए रूसी अर्थ के हिंदी अनुवाद हैं। तुलनात्मक सामग्री मैंने अपनी ओर से जोड़ दी है। स्पष्ट ही इसमें कुछ शब्द ताजिक तथा उज़्बेक हैं, और प्रभाव स्वरूप उनकी बोली में आए हैं, किंतु कुछ सामग्री भारतीय भी है। यदि यह बोली मूलतः सचमुच ही हरियानी है तो कदाचित् इस बोली की यह प्राचीनतम

सामग्री है। यों इसमें के कुछ रूप आधुनिक पंजाबी में भी हैं। वस्तुतः पश्चिमोत्तरी हरियानी पंजाबी के बहुत निकट है।

ज़र्दलू (ज़र्दालू)
तारबुज़ (तरबूज़)
गोज़्बान् (भेंड़)
नि (बिना)
तिद्ज़ि नइज़ (बेचैनी से)
नज़िक (नज़दीक; आ०[1] हरि० नजीक; भोज० नगीच)
तिल्ली (धनी; ताजि० उज़० तिल्ला=सोना)
वद्दह् सिपइ (बहादुर; शायद शायद 'बड़ा सिपाही')
बिमारि (बीमार)
खुदा (भगवान)
वद्दाह् (बड़ा; आ० हरि० बड्डा, वड्डा)
दरि (दाढ़ी)
बिराँ (भाई; हिन्दी बीर, बीरन, आ० हरि० वीर, बीरा)
वद्दाह् बिराँ (बड़ा भाई; आ० हरि० बड्डा, वड्डा)
निकि बिरा (छोटा भाई; आ० हरि० निक्का)
चंडॉल् (ग़रीब; हिन्दी चांडाल)
चिट्टा (सफ़ेद; आ० हरि० चिट्टा)
दँन्, दन्द् (बैल; हि० नन्दी (शिव का बैल), आ० हरि० दन्द, दान्द)
उट् (ऊंट)
रसा (रस्सा, रस्सी)
रिस्की (देखना)
अंगूर् (अंगूर)
पॉनि (पानी)
वल् (बाल)
सिर्कपि (दुश्मन)
वख्त् (समय)
घोलावाला (घोड़ावाला; घुड़सवार)
वतुनि, सरि, युर्ति (सब, सारे, जुड़ते)
हील् (हवा)
बद्यरि (ल) (बीता हुआ कल)

---

१. आ० हरि० यहाँ तथा आगे 'आधुनिक हरियानी' का संक्षेप है।

अक्कि (आँख; आ० हरि० अक्ख)
लय् (मिट्टी)
कसल् (बोलना)
वर (साल; वर्ष>वर)
सिंर् (सिर)
कोह (पहाड़)
शह्र (शहर)
सिना (सीना)
कुंद्ज़ा (हंस)
वट्टा (दूर)
दर्वज़ा (दरवाज़ा)
दी (दिन)
वस्ति (गांव, बस्ती)
लकिर् (पेड़; लकड़ी>लकिर)
बॉल (लड़के सं० बाल)
दराख (लंबा; दराज़>दराख)
मिं० (वर्षा; सं० मेघ, हि० मेह, आ० हरि० मीं)
घर् (घर)
लराइ (लड़ाई)
जुरय (मित्र; उज़० जोरा=मित्र; हिन्दी जोड़ा)
रफ़िग (मित्र; ताजि०)
घा (मूर्ख; भोज० घामड़; आ० हरि० घामड़=सुस्त, पशु के लिए)
जन (प्राण, जान)
खरबूज़ा (खरबूजा)
चुइरि, चुहिरि, चुहिर (लड़की; भोज० छोकड़ी, आ० हरि० छोरी)
दी (भी)
ज़र्द (पीला)
लोग्र (लोहा; आ० हरि० लोह्)
रन् (स्त्री)
गुरॉं, गोलॉं (बछेड़ा; हिन्दी घोड़ा)
गुर, गोल (घोड़ा)
दिद (पेट; भोज० ढेंढ़, ढींड़; आ० हरि० टिड्डु)
तिदुल् (एक कीड़ा, रूसी ज़ूक)
उरि आ (यहाँ आ; आ० हरि० उरे आ)

नम् (नाम)
दीनु (आनेवाला कल)
ख़रगोश् (ख़रगोश)
तरि (तारा)
वद्द (किसान)
ज़ामिन (ज़मीन)
ज़िमिस्तन् (सर्दी का मौसम; उज ज़िमिस्ताॅन=अंधेरा)
ना (सांप; हिं० नाग)
तिल्लि (सोना; ताजि० उज़० तिल्ला=सोना)
वत्ता (पत्थर; हिं० बट्टा)
गुरि (घोड़ी)
नबुद् (क़ालीन)
बक्रि (बकरी)
बक्रो (बकरा)
पिंदा (चमड़ी; हिं० पिंड=शरीर; आ० हरि० पिंडा)
पंगूरा (बच्चों का झूला; सं० पंघूडा)
चल्लि (अंगूठी; हिं० छल्ला)
गन, गाँ (गाय; आ० हरि० गाँ)
खद्दी (हड्डी; रूसी आदि में 'ह' का उच्चारण 'ख' जैसा होता है)
कक्वि, ककेवि (बर्तन विशेष)
दग्लि (छोटा बर्तन विशेष; आ० हरि० ताखड़ी=तराज़ू)
बिल्लि (बिल्ली)
बू, बु (पशुओं का चारा, घास)
सून्आँ (सुन्दर)
सन्त्रि (सुन्दरी)
रत (लाल; सं० रक्त)
रत् (खून; सं० रक्त)
दिवल् (क़िला; सं० देवालय)
तम् (छत; उज़० ताॅम्=छत)
कौं (कौन)
अहन्गर (लोहार)
कुक्किर (मुर्गी; सं० कुक्कुट, आ० हरि० कुक्कड़)
काउक् (तीतर; सं० कामुक=तीतर)
लुक्मा (खाना, कौर)

तेबिब् (चिकित्सक, तबीब)।
मत्ता (ललाट; माथा, आ० हरि० मत्था)
दोय्, दुय् (कलछी; हिं० डोई, दोई (लकड़ी की कलछी), आ० हरि० डोई, सं० दर्वी)
कमाल् (धनुष; कमान)।
महिना (चाँद)।
सावा (एक घास; हि० सांवा (एक अन्न या उसका पौधा)।
निकि (छोटा)।
चुहुर् बल (लड़का; भोज० छोकड़ा=लड़का), उज्र० बॅला=लड़का)।
बुबा; बहुवचन बुबि (मां)।
घिउ (घी; भोज० घिउ, आ० हरि० घीउ)।
मा (माँ)।
जहुन् (ज्यादा)।
रिच (भालू; हि० रीछ)।
रिच्नि, रिच्लि (मादा भालू; हि० रीछनी)।
दुद् (दूध)।
दहि (दही)
चुहुर (मर्द; शौहर)।
सबुन् (साबुन)।
चुहि (चूहा, चुहिया)।
मिस्गर् (कसेरा, ठठेरा)।
बिरिंज (ताँबा)।
महिना (महीना)
गुत्रि (थैला, बोड़ा; गठरी; गुदड़ी)
लखम्, लहम् (गोश्त; उज० लखम=गोश्त)।
बदुल् (आसमान; बादल)।
हफ़्ता (हफ़्ता)।
नव (नया)।
कत्ति (छुरी, चाकू; सं० कर्तरी)।
पि, बहुवचन पय्क् (पैर)।
नक् (नाक)।
राति (रात)।
नइ (नहीं)।
बनुर, बंदुर (बंदर; भोज०, अव० बानर)।

बन्रि (बंदरिया; भोज० बनरी)
मिश (भेड़; सं० मेष)
अग् (आग)
लिब्, लेब (रज़ाई, कंबल; लिहाफ़)
दुर्बिन् (खिड़की)
गुड्ड (गदहा; प्रा० गद्दह, सं० गर्दभ)
पिउ (बाप; आ० हरि० पिउ)
बहु, बघु (बहुत)
तंबु (तंबू)
अंग्लि (अंगुली)
चोपनि (चरवाहा; उज़् चोपान्=चरवाहा)
सदफ़् (सीपी)
शफ़्तल् (शफ़्तालू)
रिद् (रेत, बालू)
चदिर् (सिर का रुमाल; चादर, चद्दर)
कम्चित् (कोड़ा; उज़० कमचित्=कोड़ा, आ० हरि० कामची)
करिक्, करेक् (हल)
नल् (घोड़े की नाल)
सुव् अन्दु (तकिया; सिर>सुव्; अंद्रे>अन्दु)
दारु (बारूद)
पकु (चिड़िया; पक्षी, पखेरू)
घोला (तोप; गोला)
कनिक् (गेहूँ)
कुक्कुर् (मुर्ग; सं० कुक्कुट, आ० हरि० कुक्कड़)
चुर् (चोर)
मू (मुहँ)
चुला (कपड़ा; हि० चोल=कपड़ा, आ० हरि० चोल्ला)
मचि (मछली, आ० हरि० मच्छी)
तुफ़न् (तोप, बंदूक; हि० तुफ़ंग=छोटी तोप)
खत्त् (हाथ; प्रा० हत्त)
तल्वव् (तलवार, कटार)
बुइस्तन् (बाग़; ताजि० बोस्तान्)
मोज़ि (घुटने तक का जूता; आ० हरि० मोज़े=जूते)
निस्रि, निस्लि (चीनी, मिस्त्री)

कल्लि (सीस; क़लइ)
खुक् (सूअर; सं० शूकर)
अदि (आज; सं० अद्य)
नुक्रा (चांदी; उज़० नुक्रा=चाँदी)
रूपा (चांदी; आ० हरि० रूपा)
वलिया (कान की बाली; सं० वलय)
बिबि (बहन, भोज० बीबी=पति की छोटी बहन)
सवा (नीला; पंज० सावा)
चान्रि (छलनी; भोज० चलनी, आ० हरि० छालणी, छानणी)
खत्ति (हाथी, प्रा० हत्ति)
बर्फ़ (बर्फ़)
कुत्ता (कुत्ता)
घर्मि (धूप; भोज घाम=धूप, आ० हरि० घाम, सं० घर्म)
लुन् (नमक, आधु० हरि० लूण)
बुँ (एक घास)
निन्दिव् (सोना, निद्रा)
चिंजि (शांति से)
बुड्ः (बुड्ढा)
बुड्ढि (बुड्ढी)
जंदिल् (पुराना)
शीशा (शीशा)
दश्त् (रेगिस्तान्, ऊजड़ भूमि, उज़० दश्त्)
तिरि (तीर)
कुत्ति (कुतिया, आ० हरि० कुत्ती)
ज़िन् (घोड़े की 'ज़ीन')
जौ, जउ (अनाज, बीज; जौ, सं० यव)
कजुल् (सुरमा, हि० काजल, आ० हरि० कज्जल)
तट्टि (गर्म; आ० हरि० तात्ता, तत्ता; सं० तप्त)
तबर् (कुल्हाड़ी; ताजि० तबर् (कुल्हाड़ी), मूलतः फ़ा०)
घा (घास)
जौमा, जउमा (जामा, लबादा; ताजि०, आ० हरि० जामा)
रुटि (रोटी)
तड्डि (शीतल, ठंडी)
अच्चा (अच्छा)

गुल् (फूल; ताजि० उज़्० गुल)

पुल् (फूल)

तुता, चतु, वट्टिट (प्याला, कटोरा; आ० हरि० तूंतरो, तूतरी, तूत्री)

कटुरा (धातु का कटोरा; आ० हरि० कटोरा)

अद्मि (आदमी, व्यक्ति)

कयुन्दयु, कँदै (किसका)

कला (काला)

लइन् (शैतान, दानव)

दघा (रेशम, सिल्क)

लुँ (ऊन, सं० ऊण)

गिचि (गर्दन्)

सुत्ति (पाजामा, बिरजिस; भोज० सुथनी, आ० हरि० सुथना)

अश, ओश (है)

लघि वयुनिअ (जाना)

सिब् (सेब)

अना (अंडा)

दिब् (जीभ)

दानि (जौ, दाना)

(घ) जिप्सी

जिप्सी लोग भारत से दूसरी सदी ई० के आस-पास गए। इनका मूल निवास मध्य देश था, इस प्रकार इनकी भाषा उस प्रदेश की है, जहाँ आज हिंदी बोली जाती है। पहले इनको पश्चिमोत्तर भारत का माना जाता था किंतु टर्नर[1] ने अंतिम रूप से इन्हें, इनकी भाषा के अध्ययन के आधार पर, मध्य देश का सिद्ध कर दिया। आजकल जिप्सी एशिया, यूरोप, अमेरिका तथा अफ्रीका के अनेक भागों में हैं। मध्य एशिया के अधिकांश जिप्सी अपनी भाषा अब छोड़ चुके हैं और ताजिकिस्तान में रहने वाले ताजिक, तथा उज़्बेकिस्तान में रहने वाले उज़्बेक भाषाएँ बोलते हैं। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस प्रकार के काफ़ी जिप्सियों से मिला। उनकी आपसी बातचीत में अवश्य कुछ-कुछ शब्द ऐसे मिलते हैं जो मूलतः भारतीय हैं; उदाहरणार्थ रत (रक्त), चुक्रि (लड़की; तुलनीय हिन्दी 'छोकड़ी'), सिर आदि। पिछली सदी में इनमें अधिकांश अपनी भाषा के कुछ-

---

1. The Position of Romani in Indo-Aryan, Edinburg University Press, 1927

कुछ रूप जानते थे और उज़्बेक या ताजिक बोलने में उसके शब्द, रूप आदि का प्रयोग करते थे। पीछे 'जाट्‌' के प्रसंग में विल्किन्स के लेख की चर्चा की जा चुकी है। उस लेख में, पिछली सदी में मध्य एशिया में रहने वाले भारतीय जिप्सियों की भाषा के ऐसे कुछ शब्द दिए गए हैं। जैसे बिना=बिना, पाँनि =पानी, यख=आँख, दिवेस्=दिन, गरा=घोड़ा, बक्रि=बकरी, बक्रा=बकरा, चुकर=लड़का (छोकड़ा), रिचिनी=रीछनी, थुद=दूध, नेवो=नया, रत=रात, बुहु=बहुत, चोर=चोर, मुय=मुँह, चोल=कपड़ा, मचो=मछली, हस्त=हाथ, खम=धूप (घाम), लोन=नमक (लवण), जोव=जौ, क्लो=काला, चिब= जीभ आदि।

(ङ) ताजुज़्बेकी

प्रस्तुत पुस्तक का विषय यही बोली है, अतः आगे इस पर विस्तार से विचार किया जा रहा है।

प्रस्तुत बोली का नाम

इस बोली के लिए बहुत-से नामों का प्रयोग मिलता है। जैसा कि अन्यत्र भी संकेत किया जा चुका है, इसके बहुत से बोलने वाले तथा इनके आस-पास रहने वाले अन्य लोग, इस बोली को 'अफ़ग़ानी', 'ज़बान-इ-अफ़ग़ानी' या 'लफ़्ज़-इ-अफ़ग़ानी' कहते रहे हैं, किंतु जैसा कि भूमिका में हम देख चुके हैं, इस बोली का अफ़ग़ानी अर्थात् पश्तो से कोई संबंध नहीं है। इस तरह इन नामों का प्रयोग भ्रम पर आधारित है। इस भ्रम का आधार यह है कि सोवियत संघ में ये लोग अफ़ग़ानिस्तान से आए हैं। इसीलिए आस-पास के लोग इन्हें 'अफ़ग़ान' या 'अफ़ग़ानी' तथा इनकी बोली को उपर्युक्त नामों से अभिहित करने लगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वयं ये लोग भी इनका प्रयोग करते रहे हैं। यों इनको भी तथा आस-पास के लोगों को भी इस बात की जानकारी है कि मूल अफ़ग़ानों से ये लोग भिन्न हैं, तथा इनकी भाषा भी अफ़ग़ानों की भाषा नहीं है। इस तरह इन नामों का प्रयोग इनकी भाषा के लिए नहीं किया जा सकता।

इस कबीले के कुछ लोग अपने को तथा अपनी भाषा को 'पार्‌या' कहते हैं। इसी आधार पर रूसी विद्वान् ओरांस्की ने 'पार्‌या' नाम का प्रयोग अनेक स्थलों पर इनके लिए तथा इनकी भाषा के लिए किया है। मैंने भी हिन्दुस्तानी में प्रकाशित अपने एक लेख में इस नाम का प्रयोग किया था। 'पार्‌या' शब्द की व्युत्पत्ति अस्पष्ट है। यों कई अनुमान लगाए जा सकते हैं। हो सकता है ये लोग मूलतः पहाड़ी हों और इनके नाम 'पार्‌या' का संबंध 'पहाड़ी' या 'पहाड़िया'

से हो। हिंदी शब्द पराया (सं० पारागत) से भी इस शब्द का संबंध हो सकता है। पंजाब तथा अफ़ग़ानिस्तान में 'पराइचा' नाम की एक जाति का पता चलता है जो कपड़े का व्यापार या छोटे-मोटे काम करती थी। इस 'पराइचा' से भी 'पार्या' का विकास हो सकता है। इसी प्रकार 'पार' नामक किसी प्रदेश या गाँव से भी इनका संबंध हो सकता है। उत्तर प्रदेश तथा बिहार में 'भर' नामक एक जाति रहती है। ताजुज़्बेकी में 'भ' का 'प' हो जाने की सामान्य प्रवृत्ति है, अतः 'भर' शब्द से भी 'पार्या' को जोड़ा जा सकता है। दक्षिण भारत में हिन्दुओं की एक नीची जाति का नाम 'परियह' या 'परिअर' मिलता है। कभी-कभी 'नीची जाति के अर्थ में भी इन दोनों शब्दों का प्रयोग मिलता है। संभव है 'पार्या' शब्द इनसे संबद्ध हो। राजस्थानी मारवाड़ियों में एक जाति 'पाड़िया' होती है। उससे भी 'पार्या' का संबंध हो सकता है। वस्तुतः ये सारे मात्र अनुमान हैं। ज्ञान की वर्तमान स्थिति में निश्चयपूर्वक यह कहना कठिन है कि इस शब्द का मूल अर्थ या इसकी व्युत्पत्ति क्या है।

यों इस नाम की व्युत्पत्ति जो भी हो, अब मैं ओरांस्की महोदय से इस बात में सहमत नहीं हूँ। मेरे विचार में इस नाम का प्रयोग इस पूरे कबीले के लिए, या पूरे कबीले की भाषा के लिए नहीं किया जा सकता। इसमें सन्देह नहीं कि इस कबीले का एक वर्ग अपने लिए तथा अपनी भाषा के लिए इस नाम का प्रयोग करता है, किंतु दूसरी ओर मुझे ऐसे लोग भी मिले जिन्होंने अपने लिए इस नाम के प्रयोग पर आपत्ति की। इसीलिए उसके बाद से इन पंक्तियों के लेखक ने पूरे कबीले या उसकी भाषा के लिए इस नाम का प्रयोग छोड़ दिया।

कुछ अफ़ग़ानी तथा कुछ अन्य लोग इनकी भाषा को 'इंकू' या 'लफ़्ज़-इ-इंकू' भी कहते हैं। 'इंकू' कदाचित् हिन्दको (हिन्दकः) का विकृत रूप है। ताशकंद विश्वविद्यालय के एक पश्तो विभाग के अध्यापक से मुझे पता चला कि अफ़ग़ानिस्तान में 'लफ़्ज़-इ-इंकू' का प्रयोग गूजरों, जाटों या भारत से आए अन्य हिन्दुस्तानियों की भाषा के लिए होता है। किंतु यह भी नाम इस भाषा के लिए सर्वस्वीकृत नहीं है।

'सुरहान दरिया' के आस-पास रहने के कारण कुछ लोग इन्हें तथा इनकी भाषा को 'सुरहानी' भी कहते हैं किंतु ये लोग अन्य क्षेत्रों में भी हैं, इसी कारण यह नाम भी इनकी पूरी भाषा के लिए उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

इस कबीले के कुछ वर्गों की भाषा के लिए 'चंगर' 'चशगरक' या 'चचगरक' आदि नामों का भी प्रयोग होता है, किंतु यह वस्तुतः उस बोली की एक उप-बोली मात्र है, इसीलिए पूरे कबीले की बोली के लिए इसका भी प्रयोग नहीं किया जा सकता।

ऊपर विभिन्न नामों पर विचार करते हुए हमनें देखा कि कोई भी ऐसा

नाम नहीं है जो इस पूरे कबीले की बोलीं के लिए प्रयुक्त हो सके। इसीलिए किसी अन्य अधिक उपयुक्त नाम के अभाव में मैंने इसका नामकरण 'ताजुज़्बेकी' किया है। इसके बोलने वाले ताजिकिस्तान और उज़बेकिस्तान में रहते हैं, अतः दोनों के आधार पर इसे 'ताजुज़्बेकी (ताज्+उज्बेक+ई) हिन्दी' या संक्षेप में 'ताजुज़्बेकी' कहा जा सकता है।

बोलनेवालों का नाम

ताजुज़्बेकी बोलने वालों का कोई सर्वसम्मत नाम नहीं मिलता। जैसा कि पहले संकेत किया जा चुका है कुछ लोग इन्हें 'अफ़ग़ान' या 'अफ़ग़ानी' कहते हैं। इनमें भी कुछ लोग अपने को इस नाम से पुकारते हैं। कुछ लोग अपने को 'पार्या' भी कहते हैं, किंतु यह भी सर्वसम्मत नाम नहीं है। इसी प्रकार इनमें कुछ लोग अपने को 'शइ-खेल' भी कहते हैं। अफ़ग़ान से आने वाले कुछ अन्य लोग भी इस पूरे कबीले को 'शइ-खेल' कहते हैं। किंतु कुछ लोग 'शइ-खेल' का प्रयोग पूरे कबीले के लिए न करके इस कबीले के केवल 'कालू' लोगों के लिए ही करते हैं। 'शइ-खेल' से एक शब्द 'शाख़-इ-खेल' तुलनीय है जिसका प्रयोग पेशावर के आस-पास मुसलमानों की एक जाति के लिए होता रहा है, जिनका कार्य क़ब्र खोदना, सड़क पर झाड़ू लगाना या पाख़ाना साफ़ करना आदि था।

कुछ लोग ताजुज़्बेकी-भाषियों को 'इंकी' (हिन्दकी), 'इन्दुस्तानी' 'हिन्दुस्तानी' 'चंगर', 'चंगरि' 'चंगरी', 'चश्गरक' 'चंगरक' आदि भी कहते हैं किंतु ये सर्व-स्वीकृत तो नहीं ही हैं, बहुस्वीकृत भी नहीं हैं। जैसा कि अन्यत्र संकेत किया जा चुका है इनमें अंतिम चार का प्रयोग तो प्रायः लोग इनके केवल एक वर्ग के लिए करते हैं। 'मुसल्ली' शब्द का भी कुछ लोग इनके लिए प्रयोग करते हैं, किंतु अन्य इनके एक वर्ग 'चंगर' को मुसल्ली कहते हैं। 'मुसल्ली' शब्द का प्रयोग पेशावर के आस-पास ऊपर-उल्लिखित 'शाख़-इ-खेल' के लिए भी होता है। कुछ लोग 'चंगर' के लिए भी 'मुसल्ली' का प्रयोग करते हैं। बहुत से ताजुज़्बेकी 'मुसल्ली' वर्ग के लोगों को अपने से नीचे मानते हैं, और अपने लिए इस नाम के प्रयोग पर आपत्ति भी करते हैं। कुछ से मैंने यह भी सुना कि मुसल्ली मूलतः अलग जाति थी, और यह भाषा भी उनकी अपनी नहीं थी। उन्होंने बाद में अपनी भाषा छोड़ इसे अपना ली, और इसीलिए वे इसे शुद्ध रूप में नहीं बोल सकते।

स्थानीय लोग सामान्य अफ़ग़ानियों से अलग करने के लिए कभी-कभी इन्हें 'अफ़ग़ॉनो-इ-रंग-फ़ुरुश' अर्थात् 'रंग बेचने वाले अफ़ग़ान', 'अफ़ग़ानो-इ-नोस-फ़ुरुश' अर्थात् 'नोस (सुर्ती या सुँघनी) बेचने वाले अफ़ग़ान', 'अफ़ग़ानो-इ-

सियो-रुइ' अर्थात् 'काले चेहरे वाले अफ़ग़ान' या 'अफ़ग़ानो-इ-सियोपुस्त' अर्थात् 'काली चमड़ी वाले अफ़ग़ान' भी कहते हैं, किंतु स्पष्ट ही ये नाम जैसे नहीं हैं। इस तरह कोई भी एक ऐसा नाम नहीं है जिसका प्रयोग इस पूरे कबीले के लिए निर्विवाद रूप से किया जा सके। इसीलिए प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने इस पुस्तक में बोली कि तरह ही इन लोगों को भी 'ताजुज़्बेकी' ही कहा है।

क्या ये जिप्सी हैं ?

यह प्रश्न सहज ही उठता है कि ये लोग पुराने जिप्सी तो नहीं हैं, जो दूसरी सदी के आस-पास भारत से चले गए थे, और आजकल एशिया, यूरोप, अफ्रीकी और अमेरिका के अनेक भागों में फैले हुए हैं। संबद्ध सारी बातों पर विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ये लोग जिप्सियों से पूर्णतया अलग हैं। इस निर्णय के लिए निम्नांकित कारण दिए जा सकते हैं :

(१) ताजुज़्बेकी बोली जिप्सी (भाषा) से पूर्णतया भिन्न है। जिप्सी जैसा कि सर्वविदित है मूलतः प्राकृतों के निकट है, जब कि ताजुज़्बेकी हिंदी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं के निकट है।

(२) जैसा कि अन्यत्र विस्तार से दिया गया है उज़्बेकिस्तान तथा ताजिकिस्तान में ताजुज़्बेकी भाषी रहते हैं। इन दोनों ही में जिप्सी भी रहते हैं। जिप्सी लोग अपनी मूल भाषा भूल चुके हैं और ताजिक-उज़्बेक का ही प्रयोग करते हैं, ज़बकि ये लोग अपने घर के लोगों में ताजुज़्बेकी का प्रयोग करते हैं, और केवल ताजिक-उज़्बेक लोगों के साथ ही ताजिक या उज़्बेक में बात करते हैं। यही नहीं अपने घर के लोगों में ये लोग ताजुज़्बेकी छोड़ और किसी भी भाषा (ताजिक, उज़्बेक, रूसी) में बात करना प्रायः अच्छा नहीं मानते। कम से कम पुरानी पीढ़ी के लोगों में यह बात बहुत मिलती है। इस तरह जिप्सी अपनी भाषा छोड़ चुके हैं, किंतु ताजुज़्बेकी-भाषी अपनी भाषा के प्रति पर्याप्त अपनत्व रखते हैं। दोनों एक दूसरे की भाषा नहीं समझते।

(३) ताजुज़्बेकी अपने ही लोगों में प्रायः विवाह-शादी करते हैं। यों कभी-कभी ताजिक उज़्बेक या अफ़ग़ानियों से भी उनके वैवाहिक संबंध देखे जाते हैं, किंतु जिप्सियों से न तो वे अपनी लड़कियों का विवाह करना पसंद करते हैं, और न उनकी लड़कियों से अपने लड़कों का। वे जिप्सियों को अपने से हीन समझते हैं।

(४) ताजुज़्बेकी-भाषी प्रायः सुन्नी मुसलमान हैं, जिसका अर्थ कदाचित् यह है कि भारत में मुसलमान धर्म के प्रचार के बाद ये भारत से आए थे। इसके विपरीत जिप्सी मूलतः हिन्दू हैं। उनमें अब भी कुछ मिलते हैं जो गोमांस

नहीं खाते। ऐसे भी जिप्सी काफ़ी हैं जिनका अब अपना कोई खास धर्म नहीं है। उनमें कुछ बातें हिन्दू धर्म की हैं, तथा कुछ प्रभाव स्वरूप अन्य धर्मों की आ गई हैं।

(५) दोनों के पेशों में बहुत अंतर है। जिप्सी हाथ देखते हैं, घूम-घूमकर छोटी-मोटी चीज़ें (चेहरे के लिए अपने द्वारा बनाया गया विशेष प्रकार का साबुन, सुंघनी आदि) बेचते हैं, जैसे भारत में चिड़ियों से भविष्य के अच्छे-बुरे का विचार किया जाता है, उसी प्रकार का कार्य जंगली चूहे जैसे एक स्थानीय जन्तु से करते हैं, गाकर या ऐसे ही भीख माँगते हैं और कभी-कभी चोरी करते हैं। इन पंक्तियों के लेखक को ताशकंद के एक पार्क में एक बार तीन जिप्सी स्त्रियों ने लूटने का प्रयास किया। सौभाग्य से ओवरकोट की बाहरी जेब में थोड़े ही 'रूबल' (रूसी रुपया) थे, अतः उनके हाथ अधिक कुछ नहीं आया। इसके विपरीत ताजुज़्बेकी सामूहिक फ़ार्मों में रहते हैं और वे व्यवस्थित नागरिकों की तरह खेती आदि करते हैं।

(६) सभी जिप्सी यह जानते हैं कि वे मूलतः भारतीय हैं, किंतु ताजुज़्बेकी लोग प्रायः अपने को मूलतः अफ़ग़ानिस्तान का मानते रहे हैं। इधर उनकी भाषा के भारतीय सिद्ध होने पर अवश्य उनकी धारणा कुछ बदली है। मुझे इस प्रसंग में एक घटना भूलती नहीं। एक बार मैं जिप्सियों की तलाश में ताशकंद से ३०-३५ किलोमीटर पर गया था, संयोग से एक ताजुज़्बेकी से मुलाक़ात हो गई। उस समय तक ताजुज़्बेकी भाषा मुझे आ गई थी, मैंने टूटी-फूटी ताजुज़्बेकी में उससे बात करने की कोशिश की। उसने बड़े आश्चर्य से पूछा, "क्या आप अफ़ग़ानिस्तान के हैं?" मैंने उसे बताया कि मैं हिंदुस्तान का हूँ। इस पर वह बोला, "अच्छा तो फिर आपके पूर्वज अफ़ग़ानिस्तान से हिन्दुस्तान गए होंगे, इसलिए आप हमारी अफ़ग़ानी बोल लेते हैं।" मैंने उत्तर स्वरूप कहा, "नहीं, बात ठीक उलटी है। आपके पूर्वज हिन्दुस्तान से अफ़ग़ानिस्तान आए थे।" मैंने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, किंतु उसे विश्वास न हुआ।

(७) सांस्कृतिक रहन-सहन जीवन के प्रति दृष्टिकोण आदि की दृष्टि से भी दोनों में अंतर है, इसी कारण वे दोनों ही एक दूसरे को अपने से अलग मानते हैं।

(८) ताजुज़्बेकी लोग अपने आपको, तथा आसपास के अन्य लोग भी इन्हें 'अफ़ग़ानी' या अन्य नामों से पुकारते हैं, जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। इसके विपरीत ताजुज़्बेकी लोग तथा आसपास के अन्य लोग भी जिप्सियों को 'लोले' (लोली या जुगी भी) कहते हैं।

(९) उज़्बेकिस्तान तथा ताजिकिस्तान के मूल निवासी भी इन दोनों को

अलग मानते हैं।

इस प्रकार ताजुज़्बेकी लोग जिप्सी नहीं हैं।

संख्या

ताजुज़्बेकी लोगों की कुल संख्या सोवियत संघ में कितनी है, यह कहना कठिन है। यों मैं सामग्री एकत्र करते समय जो अनुमान लगा सका, उससे लगता है कि उनकी कुल संख्या छः हज़ार के लगभग होगी।

क्षेत्र

ताजुज़्बेकियों का कोई एक सुनिश्चित प्रदेश नहीं है। ये ताजिकिस्तान और उज़्बेकिस्तान के अनेक सामूहिक और सरकारी फ़ार्मों में रहते हैं। किसी-किसी फ़ार्म में इनके ३-४ परिवार हैं तो किसी-किसी में १८-२०। किसी एक स्थान पर इनकी आबादी इससे अधिक नहीं है। ताजिकिस्तान में इनकी आबादी मुख्यत: गिस्सार (हिस्सार), स्तालिनाबाद, शहर-इ-नव, रेगार, पख्ताबाद में तथा उज्बेकिस्तान में सरिआसिआ, देनव, उजुन, और शोर्ची में है। सुरहानदरिया, खानाका, समरकंद आदि में भी ये हैं। इन क्षेत्रों में भी ये सर्वदा एक ही स्थान पर नहीं रहे हैं। बीच-बीच में, इनमें कुछ लोग एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जाते रहे हैं। कुछ लोग इधर से अफ़गानिस्तान एवं उधर से यहाँ भी आते-जाते रहे हैं।

मूल स्थान और प्रवास-काल

अधिकांश ताजुज़्बेकी अपना मूल स्थान अफ़गानिस्तान में लग़मान (इनके अपने उच्चारण में लग़मॉन या लग़मोन) बतलाते हैं। उनका यह भी कहना है कि उनके कबीले के लोग अब भी लग़मान में हैं। कालू लोग यह बात विशेष बल से कहते हैं कि कम से कम उनकी जाति के लोग तो वहाँ अवश्य हैं। मास्को स्थित अफ़ग़ानी दूतावास की सूचना के अनुसार लग़मान काबुल से २०० किलोमीटर है। इन पंक्तियों के लेखक ने लग़मान जाकर वहाँ भाषा के रूप के अध्ययन की योजना बनाई थी, और इसके संबंध में अफ़ग़ानी दूतावास से पत्र-व्यवहार भी किया था। किंतु वहां से यह उत्तर आने पर कि लग़मान में इस तरह के लोग नहीं हैं, यह विचार छोड़ देना पड़ा। उनका पूरा पत्र था :—

(Seal)
L' AMBASSADE ROYALE
D' AFGHANISTAN
A MOSCOU

June 17, 1963

Dear Sir,

In answer to your letter dated 6-6-1963 we would like to tell you that from Kabul to Laghman it is about 200 km., and as we know there are no such people in this place who speak some mixed Indian languages.

Will you please let us know what kind of visa you need: transit/which gives one the right to stay in Kabul for 3 days/or tourist. In both cases we need three application forms filled in, four photos and passport.

In the meanwhile we remain,

Sd/
Sincerely yours,
Afghan Embassy.

To : Dr. B. N. Tiwari,
Tashkent University

लग़मान, काबुल और जलालाबाद के बीच में उस स्थान के पास है जहाँ भारतीय (१९४७ के पूर्व) और ईरानी भाषा-क्षेत्र मिलते हैं। यहाँ की भाषा लग़मानी है, जो ताजुज़्बेकी से भिन्न है।

एक ताजुज़्बेकी से मुझे यह भी सूचना मिली कि इनके कबीले के लोग लग़मान के अतिरिक्त जलालाबाद, बलख़, तालिकान, ख़ानाबाद, गुलबहार, मज़ार-इ-शरीफ़, काबुल, अन्दखोई में तथा काबुल, गुर्बन्द, हज़्दानहर, हिलबन्द आदि नदियों के आस-पास रहते हैं, किंतु यह सूचना भी ठीक साबित नहीं हुई।

इसी प्रकार कुछ ताजुज़्बेकी अपने को बलख और तालिकान से आया मानते हैं। कुछ यह भी मानते हैं कि उनके पूर्वज पेशावर से आए थे। शुया जाति के ताजुज़्बेकियों को कुछ लोग मुल्तान से आया मानते हैं।

वास्तविकता यह है उपर्युक्त सारे स्थान सच्चे अर्थों में उनके मूल स्थान न होकर परवर्ती मूल स्थान हैं।

इनकी भाषा के विश्लेषण के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मूलतः ये लोग भारत में राजस्थानी, हरियानी, और पंजाबी की सीमा रेखा के पास हिसार के दक्षिण-पश्चिम में किसी स्थान से संबद्ध हैं, और इनकी

भाषा पश्चिमी हिंदी वर्ग की है। यहाँ से ये लोग पंजाब में गए ज्ञात होते हैं, जहाँ कुछ समय रहने के बाद पेशावर (यहाँ भी रुककर) होते ये भारत के बाहर गए (खैबर पास के रास्ते से) और अफ़ग़ानिस्तान में ऊपर संकेतित स्थानों पर रुके। मुख्यत: ये कदाचित् लग़मान में थे, किंतु आस-पास के अन्य स्थानों से भी इनका संबंध था और इनमें कुछ अपना स्थान एकाधिक बार बदलते रहे। अफ़ग़ानिस्तान में ये काफ़ी दिनों तक रहे, इसी कारण अपना वास्तविक मूल स्थान भूल गए, और अफ़ग़ानिस्तान को ही अपना मूल स्थान मानने लगे। यहाँ से इन्होंने छोटे-छोटे वर्गों में तर्मेस के पास से सोवियत संघ में प्रवेश किया और उत्तर पश्चिम में फैलते गए। चूँकि वहाँ ये लोग अफ़ग़ानिस्तान से गए थे, अत: सहज ही वहाँ के लोग इन्हें 'अफ़ग़ान' तथा इनकी भाषा को 'अफ़ग़ानी' आदि कहने लगे, और इन्होंने भी इन दोनों नामों को प्राय: स्वीकार कर लिया। मूल स्थान के रूप में लग़मान, मुल्तान, पेशावर आदि के नाम लिए जाने का अर्थ मैं यह लगाता हूँ कि ये स्थान इनके आने के रास्ते के कदाचित् दीर्घकालीन पड़ाव थे।

कुछ पश्तो और ताजिक लोककथाओं में भी इन्हें भारतीय कहा गया है। इनकी अपनी लोककथाओं में भी 'हिंदू' और 'हिंदुस्तान' के नाम आते हैं, और कभी-कभी बड़े आदर के साथ आते हैं।

मध्य एशिया में जाने के बाद भी ये बीच-बीच में अफ़ग़ानिस्तान आते रहे हैं, किंतु अब आना-जाना बंद हो गया है। सारी परिस्थिति पर विचार करने पर इस बात की पूरी संभावना ज्ञात होती है कुछ ताजुज़्बेकी अफ़ग़ानिस्तान, ईरान और तुर्की में भी हैं, चाहे उनकी संख्या इतनी थोड़ी क्यों न हो कि लोगों का ध्यान उनकी तरफ़ न जाता हो।

ताजुज़्बेकी लोगों का सोवियत संघ में १९वीं सदी के द्वितीय चरण से छोटे-छोटे वर्गों में अलग-अलग समयों में आना शुरू हुआ, और उसी सदी के अंत तक ये आते रहे। ये भारत से कब गए यह कहना बड़ा कठिन है। अनुमानत: यह समय १४०० ई० के आस-पास हो सकता है।

जातियाँ

ताजुज़्बेकी क़बीला कुछ जातियों या वर्गों में बँटा है। ये लोग अपनी जातियों को 'तोइफ़ा' 'क़ोम' या 'उरुग़' कहते हैं। इनकी प्रमुख जातियों के नाम हैं : कालू, जुणी, बिस्योण, जिताण, हाल्जइ, मगरा, मुसल्ली तथा शूया। 'कालू' को 'कालु' 'कलु' 'कलो' या 'कालो' भी कहते हैं। इसी प्रकार 'जुणी' को 'जुनि' 'जुनी' 'जूनी'; 'बिस्योण' को 'बिस्यान', 'बिस्यौन', 'बिस्याण'; 'जिताण' को

'जितियाण, 'जितन', 'जितण'; 'मगरा' को 'मग्रा' 'मग्र'; मुसल्ली को 'मुसली', 'सुस्ली' तथा 'शूया' को शुय, शुया, 'शूय' आदि भी कहते हैं। इनमें कालू कदाचित् सर्वाधिक हैं। इनके अतिरिक्त हाल्जइ (गिल्जइ), शइ-खेल (शहि-खेल), चंगर आदि कुछ अन्य नाम भी मिलते हैं, यद्यपि इनके बारे में कई तरह के विवाद हैं। जैसे शइ-खेल का प्रयोग कुछ लोग पूरे वर्ग के लिए करते हैं, तथा कुछ लोग मात्र कालू के लिए करते हैं तथा कुछ लोग कालू, जूनी, जितान और मगरा, इन चारों के समूह के लिए।

इन जातियों में सभी समान स्तर की नहीं मानी जातीं। कालू प्राय: सर्वोपरि हैं। जुणी, जिताण, कुछ निम्न। शेप विस्योण, हाल्जइ, चंगर, मुसल्ली आदि कुछ और निम्न। भारतीयों की तरह, इसी उच्च-निम्न के आधार पर कालू हाल्जइ की लड़की से विवाह करते रहे हैं, किंतु अपनी लड़कियों का विवाह उनके यहाँ नहीं करते रहे हैं। मुसल्ली मिश्रित (इन्हें ये लोग दुरगा कहते हैं) होने के कारण छोटे समझे जाते हैं। विस्योण के बारे में यह सामान्य धारणा है कि ये अपनी भाषा अच्छी तरह नहीं जानते। इसके लिए या तो यह माना जाता है कि मूलत: ये इनके कबीले के नहीं हैं, या मिश्रित हैं। शुया की स्थिति भी कुछ वैसी ही है। कुछ लोगों के अनुसार इनकी भाषा मूलत: कुछ और थी, इन्होंने बाद में इसे अपनाया। इस प्रकार वे भी मूलत: किसी अन्य वर्ग के माने जाते हैं। शुया लोगों का पता १९३० ई० तक ही चलता है। अब इनका अलग अस्तित्व कदाचित समाप्त हो गया है।

यह भी उल्लेख्य है कि उपर्युक्त जातियों में कालू, महरा (जो शायद मगरा है), शाए-इ-खेल आदि कुछ के नाम अफ़गानिस्तान तथा पश्चिमोत्तरी भारत संबंधी पुस्तकों में मिलते हैं।[1]

रूप-रंग और रहन-सहन

नाक-नक़्श की दृष्टि से ताजुज़्बेकी आस-पास के लोगों से कोई खास भिन्न नहीं हैं। हाँ कुछ अपवादों को छोड़कर इनका रंग वहाँ के मूल लोगों की तुलना में अवश्य कुछ काला है, जो कदाचित् इनके भारतीय मूल का अवशेष है। इसीलिए आस-पास के लोग इन्हें कभी-कभी 'अफ़ग़ानो-इ-सियोरुइ' अर्थात् 'काले (स्याह) चेहरे (रू) वाले अफ़ग़ान' या 'अफ़ग़ानो-इ-सियोपुस्त' अर्थात् 'काली

---

1. H.W. Bellow—An Inquiry into the Ethnography of Afghanistan ; तथा H.A. Rose—A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and North-West Frontier Province.

(स्याह) चमड़ी (पुस्त) वाले अफ़ग़ान' कहते हैं ।

खान-पान और रहन-सहन में ये लोग आस-पास के लोगों जैसे ही हैं, हाँ, इनकी स्त्रियाँ कभी-कभी एक खास तरह का पाजामा और खास तरह की कमीज़ अवश्य पहनती हैं, किंतु इन विशेष कपड़ों का प्रचार अब कम होता जा रहा है। हाँ तंबाकू खाना और सुँघनी सूँघना इनकी अपनी विशेषता है। जैसे हमारे यहाँ सुर्ती में चूना मिलाकर उसे खाने के लिए बनाते हैं, इसी प्रकार ये लोग भी चूना, तेल या मक्खन तथा राख (विशेष) आदि मिलाकर खाने की तंबाकू बनाते हैं।

धर्म

जहां तक मुझे पता चल सका है, ताजुज़्बेकी लोग सुन्नी मुसलमान हैं। एक मेरे उज़्बेक विद्यार्थी ने मुझे बताया कि उज़्बेकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान की सीमा के पास भी इस बोली के बोलने-वाले रहते हैं, और वे गाय का गोश्त नहीं खाते। मैं नहीं कह सकता कि यह बात कहाँ तक सच है। मैं स्वयं वहाँ नहीं जा सका। यदि इसे सच मानें तो इसका अर्थ यह होगा कि कुछ ताजुज़्बेकी हिंदू (कम-से-कम मूलतः) भी हैं।

व्यवसाय

ताजुज़्बेकी अपने को मूलतः किसान कहते हैं। ओरांस्की ने भी एकाधिक स्थानों पर यही माना है, किंतु मुझे लगता है कि मूलतः ये किसान नहीं हो सकते। किसानों में यह प्रवृत्ति प्रायः नहीं मिलती कि अपना स्थान छोड़कर यायावर जैसा जीवन बिताएँ। इसीलिए, मेरे विचार में मूलतः ये लोग भारतीय नटों जैसे रहे होंगे। इस यायावरी प्रवृत्ति के कारण ही ये अपने मूल स्थान से चलकर अनेक स्थानों पर रुकते अपने वर्तमान स्थान पर पहुँचे हैं। इसका अर्थ यह है कि अपनी जीविका के लिए ये लोग खेती नहीं अपितु अन्य साधनों का सहारा लेते रहे हैं। इन साधनों में फेरी लगाकर छोटे-मोटे सामान बेचना तथा बढ़ईगीरी आदि ज्ञात होते हैं। सोवियत संघ में आने पर भी ये लोग इस प्रकार का काम थोड़ा-बहुत करते रहे हैं, इसीलिए स्थानीय लोग इन्हें अन्य नामों के अलावा 'अफ़ग़ानो-इ-नोस फ़ुरुश' [अर्थात् नोस (सुर्ती या सुँघनी) बेचने वाले अफ़ग़ान] या अफ़ग़ानो-इ-रंग फ़ुरुश' (अर्थात् रंग बेचने वाले अफ़ग़ान) आदि भी कहते रहे हैं।

अब इनका मुख्य व्यवसाय खेती है। संभव है अफ़ग़ानिस्तान में भी ये लोग

थोड़ी-बहुत खेती कर लेते रहे हों। सोवियत संघ में पहले ये ईख (**नइशकर**[1] अर्थात् चीनी का डंडा', नइ=डंडा) मक्का (**जुवोरी** या **जुवॉरी**; तुलनीय हिंदी ज्वार), उड़द (**माश**), धान (**बिरिंज** या **शालि**; तुलनीय संस्कृत शालि); गेहूं (**गंदुम**), तंबाकू (**तमोकु**) आदि की खेती करते थे, सब्जियों में प्याज़ (**पियॉज़**), बैंगन (**बेंगा**) मुख्य रूप से उगाते थे, अपने को '**किश्तुकोर**' अर्थात् काश्तकार और अपने व्यवसाय को '**किश्तुकोरि**' अर्थात् काश्तकारी तथा तंबाकू की खेती को '**तमोकुकोरि** कहते थे। अब ये सामूहिक या सरकारी फ़ार्मों में (विशेषतः कपास के) काम करते हैं। तंबाकू से ये खाने और सूंघने की सुर्ती बनाते रहे हैं जिसे '**नोस**' कहते हैं। इसमें तंबाकू के अतिरिक्त चूना, तेल तथा किसी चीज़ की राख आदि मिलाते हैं। पशुओं में गाय, बकरी और मुर्ग़ी पालते हैं।

वैवाहिक संबंध

ताजुज़्बेकी अपने को आस-पास के लोगों से बड़ा मानते हैं। जिप्सियों को तो ये बहुत नीचा समझते हैं, इसीलिए उनके साथ तो इनका वैवाहिक संबंध बिल्कुल ही नहीं होता। भारत की तरह ही इनमें भी अपनी लड़की अपने से छोटे के यहाँ न देने की परम्परा रही है, और कुछ-कुछ यह अब भी है। उदाहरण के लिए ये ताजिक, तातार, या उज़्बेक लड़कियों से अपने लड़कों का विवाह तो कर लेते हैं (पहले ऐसा भी कम होता रहा है, किंतु अब हो रहा है), किंतु अपनी लड़की की शादी ताजिक, उज़्बेक आदि से प्रायः नहीं करते (अब यह नियम भी कुछ कुछ टूटने लगा है)। यही नहीं, अपने कबीले में भी ये जाति के ऊँच-नीच का विचार करते हैं, जिसका संकेत जाति के प्रसंग में किया जा चुका है। इसीलिए अपने से निम्न जाति के लड़के से अपनी लड़की की शादी नहीं करते, और प्रयास तो यह भी करते हैं कि लड़के का विवाह भी अपने से निम्न जाति में न हो, हालांकि इसके विरोधी उदाहरण काफ़ी मिल जाते हैं। इस दृष्टि से कालू सबसे ऊंचे, जुणी उससे कुछ निम्न तथा चंगर, हाल्जइ, मगरा, मुसल्ली सबसे निम्न समझे जाते हैं। कुछ भारतीय प्रदेशों में जैसे एक जाति के लड़के और दूसरी जाति की लड़की से संतान 'दोगली' कही जाती है, और उसे समाज में बहुत आदर की दृष्टि से नहीं देखा जाता, इसी प्रकार इनके यहाँ ऐसी संतान 'दुरगा' (दो रंगों या नस्लों वाली) कहलाती है, और उसे बहुत सम्मान्य नहीं माना जाता रहा है। ये लोग दो, तीन या कभी-कभी चार-चार विवाह तक करते रहे हैं।

---

१. काले टाइप में मुद्रित शब्द ताजुज़्बेकी के हैं।

इनमें एक और वैवाहिक परंपरा भारत की कुछ जातियों के समान है। किसी व्यक्ति के मरने पर उसका छोटा भाई अर्थात् उसकी पत्नी का देवर तो उससे विवाह कर सकता है, किंतु बड़ा भाई छोटे भाई की पत्नी से विवाह नहीं कर सकता। 'देवर' को ये लोग 'देवॉर' कहते हैं।

यूरोपीय भाषाओं में सभी पारिवारिक रिश्तों के लिए शब्द नहीं हैं, किंतु ताजुज़्बेकी, हिंदी आदि भारतीय भाषाओं की भांति ही इस दृष्टि से बहुत संपन्न है। उदाहरण के लिए इनके कुछ संबंधियों के नाम हैं : बुडो अबा (बूढ़ा अब्बा अर्थात् दादा या बाप का बाप), वोवो अबा (बाबा अब्बा अर्थात् नाना), बुडि आई (बुढ्डी आयी अर्थात् दादी), बुडयी (नानी), अवा या दा (बाबा; अब्वा, दादा), अया या अयी या जी (माँ), बेटा, बिटिया, बीटा (बिटिया), ति (धी=लड़की, सं० दुहिता), बउ (बहू=पतोहू), जइँ या जइँन (जमाई), पोतो या ओतो (पोता), नेबिरा पोतो या नेवरा पोतो (नाती), पोती या नेबिरा (पोती), पोती या नेवरा पोती (नतिनी), दोतो (पड़पोता), दा (बड़ा भाई, दादा, सं० तात), पइ (छोटा भाई,भ्रातृ), जी (बड़ी बहन, जीजी), पेण, या पें या पेन (छोटी बहिन), पाबी (भाभी), बउ या केलिन या पावच (छोटे भाई की पत्नी), जइँ या जोइँन (जीजा), यज़्ना (छोटी बहिन का पति), पतिजो या जियन (भतीजा), पंजो (भांजा), पतीजी (भतीजी), पंजी (भांजी), मामा या मोमा या मों (मामा), मॉमी (मामी), मास्सी (मौसी), चचा या लाला या अका (ताऊ), बीबी या पुइ (फूफी), चचा-क-जतक या चाचा-क-बेटा या अमकबचा (चचाज़ाद भाई), सासु (सास), सुस्रो (ससुर), चाची या पावी (ताई), दुरानी (देवरानी), बोजा या बाजो (साढू), क़ुदा (समधी), साली, सालू, (साला), तथा उगि मा (विमाता) आदि। यहाँ कोष्ठक में हिंदी अर्थ या मूल स्रोत दिए गए हैं या शब्द को समझाया गया है।

कला और साहित्य

उपयोगी कलाओं में ये बढ़ई का काम थोड़ा-बहुत जानते हैं। ललित कलाओं में इन्हें संगीत से लगाव है और ताजिक बाजा 'दुमरा' बजाकर ये अपने, ताजिक या पश्तो गीत गाते हैं। पश्तो गीतों का ये अर्थ नहीं समझते। कुछ 'रुबाब' भी बजाते हैं। 'रुबाब' उज़्बेक लोगों का प्रिय बाजा है। मध्य युग में भारत में भी उसका प्रचार था। कबीर आदि मध्ययुगीन कवियों में इसका नाम (रबाब) एकाधिक बार आया है।

इनकी कोई अपनी लिपि नहीं है, और न इनका लिखित साहित्य ही है। लोक साहित्य पर्याप्त है जिसमें चुटकुले, पहेलियाँ, लोककथाएँ तथा गीत (जिन्हें

ये गित, ग़ज़ल या बैत कहते हैं) प्रमुख हैं । इनकी कथाओं के बीच में पश्तो भाषा के गीत भी आते हैं, जो इन्हें परंपरागत रूप से याद तो हैं किन्तु उनका अर्थ ये नहीं समझते ।

इनका लोक साहित्य रोज़ेन्फ़ेल्ग तथा अमोनोविम आदि कई लोकसाहित्य-विदों ने एकत्र किया है । ओरांस्की ने भी इनकी काफ़ी लोक कथाएँ और गीत एकत्र किए हैं । कुछ थोड़ी कथाएँ मैंने भी एकत्र की हैं, यद्यपि मेरा ध्यान इसके व्याकरण पर अधिक था, अतः मैंने वाक्य ही अपेक्षाकृत अधिक नोट किए ।

प्रस्तुत पुस्तक में इनकी कुछ लोक-कथाएँ दी गई हैं ।

ताजुज़्बेकी द्विभाषी, त्रिभाषी या चतुर्भाषी हैं

ताजुज़्बेकी लोग घर में तो अपनी भाषा ताजुज़्बेकी बोलते हैं, किन्तु घर के बाहर वे वही भाषा या भाषाएँ बोलते हैं जो आसपास बोली जाती हैं । इसका आशय यह है कि ताजिकिस्तान के ताजुज़्बेकी अपनी भाषा के अतिरिक्त ताजिक भी अच्छी जानते हैं और इसी प्रकार उज़्बेकिस्तान के ताजुज़्बेकी उज़्बेक भी जानते हैं । इस तरह ये द्विभाषी हैं । दोनों राज्यों की सीमाओं पर के ताजुज़्बेकी-भाषी अपनी भाषा के अतिरिक्त दोनों ही भाषाएँ जानते हैं, इस प्रकार वे त्रिभाषी हैं । कुछ अपेक्षाकृत नए लोग इनके अतिरिक्त रूसी भी जानते हैं, और वे चतुर्भाषी हैं ।

ये अफ़ग़ानी भाषा नहीं जानते

यद्यपि इनकी तथा इनकी बोली को अफ़ग़ान तथा अफ़ग़ानी कहते हैं किन्तु ये अफ़ग़ानी या पश्तो भाषा नहीं जानते । यहाँ तक कि इनकी लोक कथाओं में बीच-बीच में पश्तों के छंद (अफ़ग़ानिस्तान में बहुत दिनों तक रहने के कारण प्रभाव स्वरूप) आते हैं जो इन्हें ग़लत-सही उच्चारण के साथ याद तो हैं, किन्तु ये उनका अर्थ नहीं समझते । यों इन्हें यह पता है कि इनकी बोली पश्तो से पूर्णतः भिन्न है ।

मूल ताजुज़्बेकी तथा उस पर अन्य भाषाओं का प्रभाव

जैसा कि पीछे मूल स्थान के प्रसंग में कहा जा चुका है, मेरे विचार में ताजुज़्बेकी मूलतः पश्चिमी हिंदी वर्ग की बोली है । इस बोली का व्याकरण और शब्दावली मूलतः उस पश्चिमी हिंदी प्रदेश की है जो राजस्थानी और

पंजाबी भाषाओं की सीमा रेखा के पास है, इसी कारण इस बोली की कुछ बातें राजस्थानी और पंजाबी के समान हैं। ये लोग वहाँ से चलकर पंजाब आए और वहाँ पंजाबी का प्रभाव पड़ा। और आगे बढ़ने पर ये मुल्तान में रुके, जहाँ मुल्तानी ने भी इसे प्रभावित किया। फिर भारत पार करके ये अफ़ग़ानिस्तान में बसे जहाँ पश्तो तथा फ़ारसी का प्रभाव पड़ा। अफ़ग़ानिस्तान में काफ़ी दिनों तक रहने के बाद ये ताजिकिस्तान और वहाँ से कुछ उज़्बेकिस्तान में आए। इन दोनों प्रदेशों की ताजिक तथा उज़्बेक भाषाएँ आज भी इन्हें प्रभावित कर रही हैं। सोवियत संघ में होने के कारण इधर शब्दावली के क्षेत्र में रूसी ने भी कुछ प्रभावित किया है।

कुछ ताजुज़्बेकी-भाषियों को अपनी भाषा के संबंध में कदाचित् इस बात का पता है कि उसमें कई भाषाओं का मिश्रण है। इससे संबद्ध कई मनोरंजक बातें इन लोगों से सुनने को मिलती हैं। दुशांबे से २०-२५ किलोमीटर दूर स्थित गिसार (हिसार) तहसील के ज़्दानफ़ नामक सामूहिक फ़ार्म (कलखोज़) में रहने वाले जुमायफ़ तुर्सुन (आयु ४७ वर्ष) नामक एक ताजुज़्बेकी भाषी ने बतलाया कि जब ख़ुदा सभी लोगों को अलग-अलग भाषाएँ दे चुके तो हम लोग पहुँचे। देर हो जाने के कारण उन्होंने हमें कोई नई भाषा नहीं दी, अपितु इकहत्तर भाषाओं से एक-एक 'हर्फ़' लेकर हमारे लिए यह भाषा बना दी।

ताजुज़्बेकी की उपबोलियाँ

इस क़बीले में जातियों-जैसे कई वर्ग हैं। संभव है इनमें कभी भाषा के स्तर पर कुछ अंतर रहा हो किंतु अब प्रायः समाप्त हो गया है। हां अकारांतता एवं ओकारांतता का कुछ भेद अवश्य वर्तमान है। इस कबीले के अधिकांश लोग प्रायः ओकारांत (गियो=गया, लोयो=लोहा, मथो=माथा, बुडो=बूढ़ा) रूप बोलते हैं, किंतु चंगर (इसे चंगरि, चंगरी, चश्गरक, चचगरक, चंगड़ आदि भी कहते हैं) उपबोली में अकारांतता (गियं, लोय, मथ, बुड) या आकारांतता की प्रवृत्ति है, यद्यपि ये ओकारांत एवं अकारांत रूप अन्य लोगों में बिल्कुल न चलते हों, ऐसी बात नहीं है। यह भी हो सकता है कि ब्रज और खड़ी बोली की तरह पहले दो उपबोलियाँ रही हों, किंतु बाद में उनका मिश्रण हो गया हो, और केवल उस पुराने भेद के अवशेष रूप में ही चंगर में अ, आ की प्रधानता हो तथा शेष में ओ की हो गई हो। यह उपबोली ताजिकिस्तान के गिसार प्रदेश में बोली जाती रही है। इसकी कुछ सामग्री ओरांस्की को मिली थी। मुझे कुछ अतिरिक्त सामग्री भी मिली। इसे बोलने वाले किसी व्यक्ति से मैं नहीं मिल पाया। इसके कुछ वाक्य एवं शब्द हैं :

ए बिट्य वकर इ=यह लड़की सुन्दर है।
ओ कर चे अय=वह घर से आया।
मे बज़ारे गियं=मैं बाज़ार गया।
तू न चवुल खया=तूने चावल (पोलाव) खाया।
खचिर=खच्चर गजिर=गाजर
खीर=खीर पनि=पानी
गेदर (ड़)=भेड़िया; गीदड़
मंगेव=विवाह, मँगनी
बॉल=मर्द के सर का बाल
वाल=स्त्री के सिर का बाल
कुता=कुत्ता

कुछ लोग 'चंगर' का प्रयोग ताजुज़्बेकी के लिए भी करते हैं, यद्यपि अधिकांश लोगों के अनुसार ऐसा प्रयोग ठीक नहीं है।

कुछ लोगों के अनुसार मुसल्ली कहलाने वाले इनके एक वर्ग की भाषा भी सामान्य ताजुज़्बेकी से भिन्न है, जिसका कारण यह है कि मुसल्लियों की अपनी भाषा भिन्न थी, उन्होंने बाद में ताजुज़्बेकी अपना ली। इसी कारण उनकी ताजुज़्बेकी उनकी मूल भाषा से कुछ प्रभावित है। यह बात कहाँ तक ठीक है, मैं नहीं कह सकता। इसके लिए मुझे कोई भेदक सामग्री नहीं मिल पाई। इसी तरह शुया और बिसियान वर्ग की बोलियाँ भी कुछ मिश्रित कही जाती हैं।

वस्तुतः कालू, जूनी, जितान और मगरा वर्ग की बोली तो बिल्कुल एक है, किंतु अन्यों में कुछ थोड़ा-बहुत अंतर है, अतः एक सीमा तक वे सभी उपबोलियों-जैसी हैं।

ताजुज़्बेकी की समाप्तोन्मुखता

ताजुज़्बेकी इस क़बीले के लोगों की 'घर की भाषा' है। बाहर वे दूसरी भाषाएँ बोलते हैं, इस बात का संकेत अन्यत्र किया जा चुका है। यही कारण है कि अपनी भाषा को सीखने का अवसर इन्हें केवल घर में ही, अर्थात् अपेक्षाकृत कम मिलता है। एक स्थान पर इनके दो-दो, चार-चार घर ही ज़्यादातर हैं, इस कारण भी भाषा सीखने के लिए अपेक्षित समाज का वातावरण नहीं बन पाता। इसका परिणाम यह हुआ है कि बूढ़े लोग अपनी भाषा अपेक्षाकृत अच्छी जानते हैं किंतु बाद की पीढ़ी उतनी अच्छी नहीं जानती। नए लोग और भी कम जानने लगे हैं। यह बात कई बातों से प्रकट होती है। उदाहरणार्थ पुराने लोग 'न' (ने) का प्रयोग प्रायः काफ़ी अंश में उसी प्रकार करते हैं, जैसे

हिंदी में होता है, किंतु नए लोगों में इसकी बहुत ग़लतियाँ होती हैं। कभी-कभी तो वे अपेक्षित स्थान पर इसे छोड़ जाते हैं और अनपेक्षित स्थान पर इसका प्रयोग कर देते हैं। इसी प्रकार क्रिया, संबंध कारक के रूप या विशेषण के साथ लिंग के प्रयोग में भी नए लोग काफ़ी ग़लतियाँ करते हैं। यह पार्श्ववर्ती निर्लिंगी भाषाएँ ताजिक और उज़्बेक का प्रभाव भी हो सकता है। इस तरह जैसे-जैसे समय बीत रहा है, नई पीढ़ी भाषा को पूरी तरह नहीं सीख पा रही है। किंतु इसके अतिरिक्त एक और कारण है, और कदाचित बड़ा कारण है, जिसके परिणामस्वरूप इस बात की पूरी संभावना है कि धीरे-धीरे यह बोली लुप्त हो जाएगी। पहले ये लोग विवाह अपने क़बीले में ही करते थे और इस प्रकार इनकी पारिवारिक भाषा पूर्ण रूप से यही थी। ऐसे परिवारों में आज भी किसी अन्य भाषा का प्रयोग बड़े-बूढ़े अच्छा नहीं मानते। किंतु इसके बाद स्थिति यह हो गई कि इस कबीले के लड़के ताजिक आदि अन्य लोगों की लड़कियों से भी विवाह करने लगे। ऐसे परिवारों के बच्चे, माँ के अन्य भाषी होने के कारण अपनी भाषा पूरी तरह से सीखने की स्थिति में सहज ही नहीं रहते। यों ये लोग प्रायः अपनी लड़कियों का विवाह अपने क़बीले में ही करते रहे हैं, किंतु अब इनकी लड़कियों का विवाह भी ताजिक आदि दूसरे लोगों के साथ होने लगा है। इस प्रकार धीरे-धीरे इनके घरों में भी अब ताजिक या उज़्बेक का प्रवेश होता जा रहा है, और धीरे-धीरे ताजुज़्बेकी का प्रयोग कम और ताजिक आदि का अधिक होने लगा है। इसका अर्थ यह हुआ कि अगली कुछ पीढ़ियों के बाद यह बोली इनके परिवार में भी अपना स्थान सुरक्षित नहीं रख पाएगी। इस परिवार के स्कूल जाने वाले कुछ बच्चे आज भी ऐसे मिलने लगे हैं जो इसे सुनकर समझ तो लेते हैं किंतु बोल नहीं पाते, और यदि कुछ टूटी-फूटी बोलते भी हैं तो वह ताजिक-उज़्बेक शब्दों एवं प्रयोगों से बहुत अधिक प्रभावित रहती है। कभी-कभी बीच में रूसी शब्द भी आ जाते हैं। इस तरह यह बोली प्रायः समाप्तोन्मुख है।

ताजुज़्बेकी और उनकी बोली के अध्ययन का इतिहास

ताजुज़्बेकी लोग सोवियत संघ में पिछली सदी में ही आ गए थे, और बहुत जल्द खान-पान और रहन-सहन आदि में आस-पास के लोगों के समान हो गए थे। घर के बाहर ये वही भाषा भी बोलने लगे थे जो और लोग बोलते थे। इसी कारण आस-पास के अन्य लोगों से इन्हें अलग करने वाली कोई ऐसी बात नहीं थी जो विद्वानों का ध्यान आकर्षित करती। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत दिनों तक इस बात का पता नहीं चल सका कि इस प्रकार के कुछ लोग

हैं, जो आस-पास के अन्य लोगों से अलग हैं।

नृवंशविज्ञान से संबंधित साहित्य में इनका प्राचीनतम उल्लेख कदाचित् १९१६-१७ का है। इन सूचनाओं के अनुसार, उस समय, समरकन्द प्रदेश में इन लोगों की कुल संख्या २७३ थी। इनमें २३१ व्यक्ति तो समरकन्द और कत्ताकुर्गान आदि शहरों में थे और शेष ४२ आस-पास के गांवों में।[1]

और आगे चलकर ए० पन्कोफ़ ने अपने 'ताजिकिस्तान के निवासी'[2] में कुछ और सूचनाएँ दीं। इन्होंने लिखा है कि ताजिकिस्तान में, अफ़गानिस्तान की सीमा के पास के कुछ इलाकों में ये लोग रहते हैं।

ई० मगिदोविच के, बुखारा के निवासियों से संबंधित लेख[3] में कुछ और भी विस्तृत सूचनाएँ दी गई हैं। इनकी तालिका के अनुसार यहाँ इन लोगों की कुल संख्या ३६५ थी। ज़रफ़्शां के इलाके में ६५ (बगोउद्दिन में ३५; बुखारा में १०; तथा पयानरुत में २०) तथा दुशांबे में ३०० (गिस्सार में ८०; दुशांबे (स्तालिनाबाद) में ८५; तथा यंगी बाज़ार में १३५)।

१९५४ में ई० एम्० ओरांस्की का ध्यान इन लोगों की ओर आकर्षित हुआ। ये लोग अफ़ग़ान या अफ़ग़ानी कहे जाते थे अतः अफ़ग़ानी भाषा में अभिरुचि रखने के कारण वे इनकी खोज में निकले। उन्हें ताजिकिस्तान एवं उज़्बेकिस्तान में ये लोग मिले। इनकी भाषा की अफ़ग़ानी से तुलना करने पर ओरांस्की ने देखा कि ये 'अफ़ग़ानी' नहीं बोलते, जैसा कि कहते हैं। अंत में इनकी भाषा का प्रारंभिक विश्लेषण करने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ये कोई भारतीय भाषा बोलते हैं। ओरांस्की ने उनके संबंध में (१९५४ से १९६१ तक) काफ़ी सामग्री एकत्र की और उसे लेखों, पैम्फ़लेट तथा एक पुस्तिका रूप में प्रकाशित भी किया।[4] ओरांस्की, ईरानी और अफ़ग़ानी भाषा के विद्वान हैं, और भारतीय भाषाओं से उनका बहुत अधिक संबंध नहीं है, अतः इस बोली का विश्लेषण-कार्य वे विशेष आगे नहीं बढ़ा पाए।

रोजेनफ़ेल्ग तथा अमोनोविम आदि कुछ लोकसाहित्यविदों ने इसका लोक साहित्य एकत्र किया तथा मंगोली, पश्तो, ताजिक आदि लोक साहित्यों से उनकी

---

१. ई० ई० ज़रूबिन, नसेलेनिये समरकन्दस्कइ ओब्लस्ती (त्रूदी कमीसिन प इज़ुचेनियू प्लेमेन्नोवा सस्तावा नसेलेनिया एस् एस् एस् एर्, नं० १०, १९२६, पृ० २२-२४)।

२. ताजिकिस्तान, ताशकन्द, १९२५, पृ० ९०।

३. मतिरिआलि प रइऑनीरवनियू स्रेद्नेइ आज़ि, खंड १, भाग १, बुख़ारा, ताशकन्द, १९२६, पृ० २५५।

४. अंत में संबंधित साहित्य में इनकी सूची दी गई है।

तुलना की जिनसे पता चला कि इनका कुछ लोक-साहित्य अन्यों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आधारित है।

जैसा कि अन्यत्र संकेतित है १९६२ में सोवियत संघ में पहुँचने पर इन पंक्तियों के लेखक ने इस बोली पर काम करना प्रारंभ किया। प्रारंभिक विश्लेषण एवं तुलना आदि कर लेने के बाद मुझे ओरांस्की द्वारा किया गया काम मिला, और उससे तथा उनसे बड़ी सहायता भी मिली। मैंने भी इस संबंध में कुछ लेख लिखे तथा अपनी पुस्तक 'हिंदी भाषा' में भी इससे संबंधित सामग्री दी। अब प्रस्तुत पुस्तक के रूप में मेरा सारा कार्य प्रकाशित हो रहा है।

२

ध्वनि तथा व्याकरण

ध्वनि

१.० व्यंजन और स्वर ध्वनियाँ

१.१ व्यंजन ध्वनियाँ

ध्वन्यात्मक स्तर (Phonetic level) पर ताजुज़्बेकी में मुख्यतः ३२ व्यंजन हैं, जिन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है :

	स्थान	द्वयोष्ठ्य	दंतोष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	तालव्य	मूर्द्धन्य	कोमल तालव्य	अलि जिह्वीय	स्वर-यंत्रमुखी
	प्रयत्न									
अवरोधी	स्पर्श	प् फ् ब्		त् थ् द्			ट् ठ् ड्	क् ख् ग्	क़	
	स्पर्श-संघर्षी					च् छ् ज्				
	नासिक्य	म्			न्	ञ्	ण्	ङ्		
अनवरोधी	पार्श्विक				ल्					
	प्रकंपित				र्					
	उत्क्षिप्त						ड़्			
	संघर्षी		फ़् व्		स् ज़्	श्		ख़् ग़्		ह्
	अर्ध स्वर	व्				य्				

१. १. १. इनके विवरण निम्नांकित हैं।

१. १. १.१ प—द्वयोष्ठ्य, अघोष अल्पप्राण स्पर्श। यह आदि, मध्य, अंत्य, तीनों ही स्थितियों में आता है : पेर् (पैर), पड़् (पहाड़), पोतो (पोता), अप्‌रे (अपने), चपति (चपाती), तुप् (धूप), लप् (किनारे)।

१. १. १.२ फ—द्वयोष्ठ्य घोष महाप्राण स्पर्श।

महाप्राण व्यंजनों (फ्, थ्, ठ्, ख्, छ्) का प्रयोग ताजुज्बेकी में बहुत कम मिलता है। जहाँ मिलता भी है, उसके स्थान पर प्रायः लोग अल्पप्राण (प्, त्, ट्, क्, च्), या अल्पप्राण+ह (प्‌ह्, त्‌ह्, ट्‌ह्, क्‌ह्, च्‌ह्) का प्रयोग करते हैं। पुरानी पीढ़ी के कुछ लोग महाप्राण का उच्चारण अवश्य प्रायः ठीक करते हैं, किंतु उस स्थिति में भी महाप्राणता हिंदी की तुलना में अत्यंत क्षीण होती है। अंत्य स्थिति में आने पर महाप्राणता और भी क्षीण हो जाती है। कुछ लोग फ, ख महाप्राणों के स्थान पर कभी-कभी संघर्षी फ़, ख़, का भी प्रयोग करते हैं।

फ तीनों स्थितियों में आता है : फेर् (फिर), खफन् (क़फ़न), उफर्, (ऊपर) सफ् (साफ़)।

१. १. १.३ ब—द्वयोष्ठ्य घोष अल्पप्राण स्पर्श। यह आदि, मध्य, अंत्य तीनों ही स्थितियों में आता है : बुल्‌बुल्, बुडो (बुड्ढा), बेटा, बॉल (बाल), मुक़ोबिलो (मुक़ाबिला), तोबा, एबे (अभी), कितॉब् (किताब)।

१. १. १.४ त—दंत्य अघोष अल्पप्राण स्पर्श। त् तीनों ही स्थितियों में आता है : तु (तू), तिन् (तीन), तम् (तुम), उस्ता (उस्ताद), केतुनो (कितना), गित् (गीत), खत् (पत्र), बोत् (बहुत), सत् (सात), दरख्त। दे० १. १. १.७.

१. १. १.५ थ—दंत्य अघोष महाप्राण स्पर्श। दे० १. १. १.२। यह तीनों स्थितियों में आता है : थरु (जगह, स्थल), मथो (माथा), हथ् (हाथ)।

१. १. १.६ द—दंत्य घोष अल्पप्राण स्पर्श। द् तीनों स्थितियों में आता है : दस् (दस), दो (दो), देवॉर् (देवर), दुम् (पूँछ), बदल् (बादल), बदन् (शरीर), चदर् (चादर), यॉद् (याद), पोलॉद् (फ़ौलाद)। अनेक शब्दों में बिना किसी प्रकार के अर्थ-भेद के 'द्' के स्थान पर 'ड्' भी आता है : अंदो-अंडो (अंडा), देणो-डेणो (देना)।

१. १. १.७ ट—मूर्द्धन्य अघोष अल्पप्राण स्पर्श। यह तीनों स्थितियों में आता है : टिकि (टिक्की, रोटी), बिटिया (बेटी), रुटि (रोटी), पेट् (पेट), अट् (आठ), हुंट (होंठ)। 'ट' के स्थान पर 'त' बिना किसी अर्थ-परिवर्तन के, प्रायः आता हैं : उतुर्‌नो-उटुर्‌नो (उतरना), तुट्‌नो-टुट्‌नो (टूटना), कुतुर्‌नो-कुटुर्‌नो (कुतरना, खोदना), कुतो-कुटो (कुत्ता), खितो-खिटो (इकट्ठा), टुंड्‌यो-तुंड्‌यो (ढूंढा)।

१. १. १.८ ठ—मूर्द्धन्य अघोष महाप्राण स्पर्श। दे० १. १. १.२। यह तीनों स्थितियों में आता है : ठग् (ठग), बेठ्‌नो (बैठना), बेठ् (बैठ, बैठो)।

१. १. १. ६ ड—मूर्द्धन्य घोष अल्पप्राण स्पर्श। ड् तीनों स्थितियों में आता है : डर् (डर), बुडो (बूढ़ा), हृडि (हड्डी), कॉड् (काढ़, काढ़ो)। 'ड्' के स्थान पर बिना किसी अर्थ-परिवर्तन के प्राय: 'द्' आता है : अंडो-अंदो (अंडा), डर-दर (डर), हृडि-हृदि (हड्डी), मुंडो-मुंदो (मुंडा, लड़का), तोडि-तोदि (ठोढ़ी)।

१. १. १. १० क—कोमलतालव्य अघोष अल्प प्राणस्पर्श। क् तीनों स्थितियों में आता है : कल् (आने वाला या पिछला दिन), काम् (काम). कितॉब् (किताब), बकरि (बकरी), लकड़ि (लकड़ी), लक् (कमर), नक् (नाक), एक् (एक)। कुछ शब्दों में यह ग् का मुक्त परिवर्त (Free Variant) है : अक्-अग् (आग)।

१. १. १. ११ ख—कोमलतालव्य अघोष महाप्राण स्पर्श। दे० १. १. १. २। यह तीनों ही स्थितियों में आता है : खीर् (खीर), खॉ (खा), देख्यो (देखा), मखि (मक्खी), देख् (देख, देखो)।

१. १. १. १२ ग—कोमलतालव्य घोष अल्पप्राण स्पर्श। तीनों स्थितियों में आता है : गित् (गीत), गियो (गया), गोस्त (गोश्त), तगो (तागा), मंगर (कंधा), जॉग् (जगह), दे० १. १. १. १०।

१. १. १. १३ क़—अलिजिह्वीय अघोष स्पर्श। यह तीनों स्थितियों में आता है : क़ला (क़िला), क़ाज़ि (क़ाज़ी), क़ोम् (क़ौम्), क़मचिन् (कोड़ा), अवक़ात् (भोजन), मुक़ोबिलो (मुक़ाबिला), खल्क़् (लोग, दुनिया)।

१. १. १. १४ च—तालव्य अघोष अल्पप्राण स्पर्श-संघर्षी। तीनों स्थितियों में आता है: चॉर् (चार), चिड़ि (चिड़िया), चपति (चपाती), पॉचॉ (बादशाह), चिचि (स्तन, चूँची), बचा (बच्चा), सच् (सत्य), आच् (आज)। च् या छ् का कई शब्दों में 'श' मुक्त-परिवर्त है : छि-चि-शि (थी), छे-चे-शे (हैं)।

१. १. १. १५ छ—तालव्य अघोष महाप्राण स्पर्श-संघर्षी। यह ध्वनि तीनों स्थितियों में आती है: छे (है), छो (था), पछे (पीछे), मुछ् (मूछ)। दे० १. १. १. २

१. १. १. १६ ज—तालव्य घोष महाप्राण स्पर्श-संघर्षी। ज तीनों ही स्थितियों में आता है: जतक् (लड़का), जिप् (जीभ), जि (जीजी), गंजो (गंजा), गजिर् (गाजर), बोज़् (साढ़ू)।

१. १. १. १७ म—द्वयोष्ठ्य घोष अल्पप्राण नासिक्य। म् तीनों स्थितियों में आता है : मे (मैं), मयिन् (महीन), मर्नो (मरना), ममि (मामी), अन्मि (आदमी), तमॉम् (समाप्त), सलॉम् (सलाम), हम् (हम), दुम् (पूँछ)।

१. १. १. १८ न—वर्त्स्य घोष अल्पप्राण नासिक्य। न् तीनों स्थितियों में आता है : निन् (नीद), नक् (नाक) केतुनो (कितना), कनिज़् (नौकरानी), दिन् (दिन) कॉन् (कान) तिन् (तीन)। ण्, ङ्, ञ् इसकी संध्वनियाँ (allophones) हैं। कुछ शब्दों में 'न' 'ल' का मुक्त परिवर्त है : नाल-नान (साथ, से)। 'ण्' के स्थान पर भी 'न' प्रायः आ जाता है : । पेन्-पेण् (बहिन)।

१. १. १. १९ ञ—तालव्य घोष अल्पप्राण नासिक्य। सुनने में न् सा होने पर भी यह न् से भिन्न है। प्रमुख अन्तर हैं: (क) न् वर्त्स्य है जबकि ञ् तालव्य। (ख) न् में जीभ की नोक या उसके पश्चवर्ती भाग का प्रयोग होता है, किन्तु इसमें, अपेक्षाकृत और पश्च भाग का। (ग) ञ् का स्पर्श-स्थल, न् की अपेक्षा विस्तृत होता है। यह केवल च्, छ्, ज् के पूर्व संयुक्त व्यंजन के प्रथम सदस्य के रूप में ही आता है: पंच् (पाँच), अंचा (काफी), गंजी (गंजी स्त्री), मिंजा (मैंने)।

१. १. १. २० ण—मूर्द्धन्य घोष अल्पप्राण नासिक्य। यह केवल मध्य तथा अंत में आता है: पणि (पानी), केतुणो (कितना), रण्डी (विधवा), पेण् (बहिन)। ट्, ठ्, ड् के पूर्व संयुक्त व्यंजन के प्रथम सदस्य रूप में छोड़कर, अन्य सभी स्थानों पर, इसकी जगह, न् बिना किसी अर्थ-परिवर्तन के आ सकता है।

१. १. १. २१ ङ—कोमल तालव्य घोष अल्पप्राण नासिक्य। यह केवल क, ख, ग के पूर्व संयुक्त व्यंजन के प्रथम सदस्य के रूप में आता है: जंगल् (जंगल), दिंगो (टेढ़ी आँख वाला), कुतुरुंगो (पिल्ला), अंक (आँख)। अपवादतः एक शब्द में (करङ्=गेहूं) यह मुझे अंत में भी मिला है।

१. १. १. २२ ल—वर्त्स्य घोष अल्पप्राण पार्श्विक। ल् तीनों स्थितियों में आता है: लें (लिए), लोयो (लोहा), सलॉम् (सलाम), बिलि (बिल्ली), बॉल् (बाल), सॉल् (वर्ष), दलॉल् (दलाल)।

१. १. १. २३ र—वर्त्स्य घोष अल्पप्राण प्रकंपित। र् तीनों स्थितियों में आता है: रुटि (रोटी), कर्‌यो (किया), मुरॉद् (इच्छा), वज़ीर् (मंत्री), देवर् (देवर), अगर् (यदि)।

१. १. १. २४ ड़—मूर्द्धन्य घोष अल्पप्राण उत्क्षिप्त। यह केवल मध्य एवं अंत्य स्थिति में आता है: कोड़ो (घोड़ा), पड़्यो (पढ़ा), लकड़ि (लकड़ी), काड़् (काढ़, काढ़ो), चड़् (चढ़, चढ़ो), मुड़् (मुड़, मुड़ो)। 'ड़' के स्थान पर 'र' भी बिना अर्थ-परिवर्तन के प्रायः आता है: कोड़ो-कोरो (घोड़ा), जोड़नो-जोरनो (जोड़ना), मुर-मुड़ (मुड़)। ड् (काड़नो-काड्नो=काढ़ना) की भी यही स्थिति है। कुछ शब्दों में 'ट' भी ड़ का मुक्त परिवर्त (काड़नो-काट्नो=काढ़ना) है।

१. १. १. २५ फ़—दंत्योष्ठ्य अघोष संघर्षी। यह तीनों ही स्थितियों में आता है: फ़लॉन् (फ़लाँ), फ़िल (हाथी), कफ़स (पिंजड़ा), लेफ़् (लिहाफ़)।

१. १. १. २६ व—दंत्योष्ठ्य घोष संघर्षी। तीनों ही स्थितियों में आता है: वर (बारी), वा (हवा), देवर (देवर), तुँवा (धुँवा), देव् (दानव)।

१. १. १२७ स—वर्त्स्य अघोष संघर्षी। स् तीनों ही स्थितियों में आता है: सच् (सत्य), सॉल् (वर्ष), सत् (सात), अस्मॉन् (आसमान), सासु (सास), रइस् (कलखोज का प्रधान), दस् (१०)।

१. १. १. २८ ज़—वर्त्स्य घोष संघर्षी। ज़् तीनों स्थितियों में आता है : ज़ाँर (ज़हर), ज़र्द् (पीला), ज़िन् (घोड़े की ज़ीन), ताँज़ि (कुत्ता) हाँज़िर (अभी), काग़ज़् (काग़ज़, पत्र), पइज़् (रेलगाड़ी), पियज़् (प्याज़)।

१.१.१.२९ श—तालव्य अघोष संघर्षी। यह तीनों ही स्थितियों में आता है : शिकाँर (शिकार), पाँशाँ (बादशाह), पिश्न (प्रश्न), खुश्, पश् (पीछे), कुश् (कुछ)।

१. १. १. ३० ख़—कोमलतालव्य अघोष संघर्षी। यह तीनों स्थितियों में आता है : ख़त् (पत्र), ख़बर, (समाचार), ख़ुश् (प्रसन्न), वख़्त् (समय), दरख़्त (पेड़), सख़् (सींग), य ख़् (सर्दी), सिख़् (सीख)।

१. १. १. ३१ ग़—कोमलतालव्य घोष संघर्षी। तीनों ही स्थितियों में ग़् आता है : ग़ाँर (गुफा), काँग़ज़् (काग़ज़), बाँग़् (बाग़), चिराँग़् (चिराग)।

१. १. १. ३२ ह—स्वरयंत्रमुखी घोष संघर्षी। तीनों ही स्थितियों में यह आता है : हड्डि (हड्डी), हम् (हम), मेहमान् (अतिथि), रह् (राह)।

१. १. १. ३३ व—द्वयोष्ठ्य घोष अर्धस्वर। इसका प्रयोग प्राय: कम मिलता है। जहाँ भी यह आता है दंतोष्ठ्य व का मुक्त परिवर्त (Free Variant) होता है। पह्वन् (चरवाहा), जुवोब् (जवाब), हव्लि (आँगन), पड़व् (पड़ाव, यात्रा), अवग़ाँल (अहवाल, हाल)। श्रुति रूप में केवल यही आता है, व नहीं।

१. १. १. ३४ य—तालव्य घोष अल्पप्राण अर्धस्वर। यह तीनों ही स्थितियों में आता है : याँद् (याद), य (यह), गियो (गया), बियाँ (व्याह), बिटिया (बेटी), चाँय् (चाय)।

१. १. २ उपर्युक्त व्यंजनों में केवल निम्नांकित १७ ही ध्वनिग्रामिक (Phonemic) हैं :

प्, ब् त्, द्, क्, ग्, च्, ज्, न्, म्, र्, ल्, य्, व्, स्, श्, ह्

१.१.२.१ इनके न्यूनतम विरोधी युग्मों (minimal pairs) का चार्ट पृष्ठ ३६ पर देखिए।

१.१.२.२ उपर्युक्त युग्मों के अर्थ (बायें से दायें)

बेट्=बैठ् (धातु)। पेट्=पेट।
तर्=रख्, हो (To have)। पर=पर (परसर्ग)।
दर्=डर। पर्=पर।
कर्=कर् (धातु)। पर्=पर।
गि =गई। पि=पी (धातु)।
चि=थी। पि=पी।
जि=जीजी। पि=पी।

न्यूनतमविरोधी युग्मों (Minimal Pairs) का चार्ट

	प	ब	त	द	क	ग	च	ज	न	म	र	ल	य	व	स	श	ह
प	×	वेट् पेट्	तर् पर्	दर् पर्	कर् पर्	गि पि	चि पि	जि पि	नर् पर्	मर् पर्	रि पि	लर् पर्	य प	वर् पर्	सर् पर्	शर् पर्	हर् पर्
ब		×	ति बि	दे बे	कल् बल्	गल् बल्	चे बे	जल् बल्	नि बि	मे बे	रि बि	ले बु	ये बे	वइ बइ	साल् बाल्	शि बि	हर् बर्
त			×	दिन् तिन्	रक् रत्	गे ते	चे ते	जि ति	नि ति	मर् तर्	रि ति	लर् तर्	ये ते	वर् तर्	सर् तर्	शर् तर्	हर् तर्
द				×	को दो	गो दो	चो दो	जो दो	नर् दर्	मर् दर्	रि दि	ले दे	ये दे	वर् दर्	सर् दर्	शर् दर्	हर् दर्
क					×	गल् कल्	चो को	जिस् किस्	न क	मर् कर्	रि कि	ले के	ये के	वर् कर्	सर् कर्	शर् कर्	हर् कर्
ग						×	चो गो	जि गि	नि गि	मे गे	रि गि	ले गे	ये गे	वो गो	सो गो	शि गि	हो गो
च							×	त्रि चि	नि चि	मि चि	रि चि	ले चे	ये चे	वो चो	सो चो	शर चर	हर् चर्
ज								×	नि जि	मि जि	रि जि	लि जि	य ज	वों जों	सो जो	शि जि	हां जां
न									×	मि नि	रि नि	लि नि	य न	वर् नर्	सर् नर्	शि नि	हर् नर्
म										×	रि मि	लि मि	य म	वर् नर्	सर् मर्	शि मि	हर् मर्
र											×	लि रि	ये रे	वों रों	सो रो	शिं रिं	हों रों
ल												×	ये ले	वल् लल्	सल् लल्	शि लि	हन् लन्
य													×	व य	साख् याख्	शि यि	हो यो
व														×	सो वो	शर् वर्	हर् वर्
स															×	शर् सर्	हर् सर्
श																×	हर् शर्
ह																	×

नर्=नाल (से, साथ); आदमी । पर्=पर ।
मर्=मर (धातु) । पर्=पर ।
रि =रही । पि=पी ।
लर्=लड़् (धातु) । पर्=पर ।
य =यह । प=पर ।
वर्=बारी । पर्=पर ।
सर्=सिर । पर्=पर ।
शर्=शहर । पर्=पर ।
हर्=प्रति । पर्=पर ।
ति=लड़की । बि=भी ।
दे =दे (धातु) । बे=द्वार; बिना ।
बुटो=बूटा । टुटो=टूटा ।
डर्=डर । बर्=पर (परसर्ग)
कल्=कल (आने वाला तथा बीता हुआ दिन) । बल्=बाल ।
गल्=बात । बल्=बाल ।
चे =थे, छः । बे=द्वार, बिना ।
जल्=जाल । बल्=बाल ।
नि =नहीं । बि=भी ।
मे =मैं । बे=द्वार, बिना ।
रि =रही । बि=भी ।
ले =ले (धातु) । बे=द्वार, बिना ।
ये =ये (सर्वनाम) । बे=द्वार, बिना ।
वह्=वही । बड्=अमीर ।
सॉल=वर्ष । बॉल्=बाल ।
शि=थी । बि=भी ।
हर्=प्रति । बर्=पर, ऊपर; बाहर ।
दिन्=दिन । तिन्=तीन ।
रक्=रख् (धातु) । रत्=रात ।
गे=गए । ते=को; के; से ।
चे=थे; छः । ते=को; के; से ।
जि=जीजी । ति=धी (लड़की) ।
नि=नहीं, नहीं है । ति=लड़की
मर्=मर् (धातु) । तर्=रख्, हो (to have) ।
रि=रही । ति=लड़की ।

लर्=लड़् (धातु) । तर्=रख्, हो (to have) ।
ये=ये । ते=को, के, से ।
वर्=बारी । तर्=रख्, हो ।
सर=सिर । तर्=रख्, हो ।
शर्=शहर । तर्=रख्, हो ।
हर्=प्रति । तर्=रख्, हो ।
को=का । दो=दो (संख्या) ।
गो=गया । दो=दो ।
चो=था । दो=दो ।
जो=जो । दो=दो ।
नर=से, साथ; आदमी । दर्=डर ।
मर्=मर् (धातु) । दर्=डर ।
रि=रही । दि=दी ।
ले=ले (धातु) । दे=दे (धातु)
ये=ये । दे=दे ।
वर्=बारी । दर्=डर ।
सर्=सिर । दर्=डर ।
शर्=शहर । दर्=डर ।
हर्=प्रति । दर्=डर ।
गल्=बात । कल्=कल ।
चो=था । को=का ।
जिस्=जिस । किस्=किस ।
न=नहीं । क=क्या ।
मर्=मर् (धातु) । कर्=कर् (धातु) ।
रि=रही । कि=की ।
ले=ले (धातु) । के=के ।
ये=ये । के=के ।
वर्=बारी । कर्=कर (धातु) ।
सर=सिर । कर्=कर (धातु) ।
शर्=शहर । कर्=कर (धातु) ।
हर=प्रति । कर्=कर् (धातु) ।
चो=था । गो=गया ।
जि=बहिन, बड़ी बहिन । गि=गई ।
नि=नहीं, नहीं है । गि=गई ।

मे=मैं । गे=गए ।
रि=रही । गि=गई ।
ले=ले (धातु) । गे=गए ।
ये=ये । गे=गए ।
वो=वह, वे । गो=गया ।
सो=सौ । गो=गया ।
शि=थी । गि=गई ।
हो=हो (धातु) । गो=गया ।
जि=बहन, बड़ी बहिन । चि=थी ।
नि=नहीं । चि=थी ।
मि=बारिश । चि=थी ।
रि=रही चि=थी ।
ले=ले (धातु), लिए । चे=थे, है ।
ये=ये । चे=थे, है ।
वो=वह । चो=था ।
सो=सौ । चो=था ।
शर्=शहर । चर=बायां, उलटा; चढ़् (धातु)
हर=प्रति । चर=बायां; चढ़् (धातु) ।
नि=नहीं । जि=जीजी ।
मि=बारिश । जि=जीजी ।
रि=रही । जि=जीजी ।
लि=ली । जि=जीजी ।
य=यह । ज=जा (धातु) ।
वो=वह । जो=जो ।
सो=सौ । जो=जो ।
शि=थी । जि=जीजी ।
हो=हो (धातु) । जो=जो ।
मि=बारिश । नि=नहीं ।
रि=रही । नि=नहीं ।
लि=ली । नि=नहीं ।
य=यह । न=ने ।
वर्=बारी । नर्=साथ ।
सर्=सिर । नर्=साथ ।
शि=थी । नि=नहीं ।

हर्=प्रति । नर्=साथ ।
रि=रही । मि=बारिश ।
लि=ली । मि=बारिश ।
य=यह । म=में ।
वर=बारी । मर्=मर् (धातु) ।
सर=सिर । मर्=मर् (धातु) ।
शि=थी । मि=बारिश ।
हर=प्रति । मर्=मर् (धातु) ।
लि=ली । रि=रही ।
ये=ये । रे=रह (धातु) ।
वो=वह । रो=रो (धातु) ।
सो=सौ । रो=रो (धातु) ।
शि=थी । रि=रही ।
हो=हो (धातु) । रो=रो (धातु) ।
ये=ये । ले=ले (धातु) ।
वल्=बाल । लल्=लाल ।
सल्=साल । लल्=लाल ।
शि=थी । लि=ली ।
हन्=हैं । लन्=साथ, से ।
व=और । य=यह, या ।
साख़=सींग । याख़्=ठंडा ।
शि=थी । यि=यह ।
हो=हो (धातु) । यो=यह ।
सो=सौ । वो=वह ।
शर्=शहर । वर्=बारी ।
हर्=प्रति । वर्=बारी ।
शर्=शहर । सर्=सिर ।
हर्=प्रति । सर्=सिर ।
हर्=प्रति । शर्=शहर ।

१.२ स्वर

१. २. १ ध्वन्यात्मक स्तर पर, ताजुज़्बेकी में मुख्य स्वर निम्नांकित १० हैं : इ, ई, ए, ऍ, अ, आ, ऑ, ओ, उ, ऊ ।

स्थान की दृष्टि से इन्हें यों रखा जा सकता है—
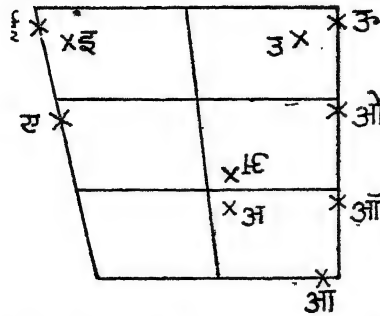
१. २. १. १ ई—यह संवृत दीर्घ अवृत्तमुखी अग्रस्वर है। ई आदि (बहुत कम) मध्य एवं अंत्य (कम) तीनों स्थानों में आती है: ईद्, वज़ीर्, खीर्, दूरबीन्, दीनो (दिया), छी (थी), दी (दी), ती (गिरे)। इस स्वर का प्रयोग ताजुज़्बेकी में बहुत ही कम होता है। इसके सभी स्थानों पर ह्रस्व इ मुक्त परिवर्त (Free Variant) है।

१. २. १. २ इ—संवृत ह्रस्व अवृत्तमुखी अग्रस्वर। यह आदि मध्य, अंत्य तीनों ही स्थानों पर आती है। इस्, इन्, तिन् (तीन), कियो (कहा), रनि (रानी), बुडि (बुड्ढी)। जैसा कि ऊपर कहा गया है 'ई' के स्थान पर सर्वत्र ही बिना अर्थ-परिवर्तन के इ आ सकती है। दे० १ २.१.३ तथा १. २. १. ५।

१. २. १. ३ ए—यह अर्द्धसंवृत दीर्घ अवृत्तमुखी अग्रस्वर है। ए आदि, मध्य, अंत तीनों ही स्थानों में आती है: एक्, देवर्, बेटा, म्रे (मेरे), कोड़े (घोड़े), के (के, कि)। कुछ शब्दों में 'ए', 'इ' का मुक्त परिवर्त है: बे-बि (भी), केणो-किणो (कहना)।

१. २. १. ४ ऋ—अर्द्धविवृत मध्य ह्रस्वार्द्ध अवृत्तमुखी उदासीन स्वर। आदि स्थिति में मुझे इसके उदाहरण नहीं मिले। अंत्य स्थिति में यह आता है, किंतु मध्य स्थिति में अपेक्षाकृत अधिक आता है: प्ऋ (पर), त्ऋ (को, से), तुग्ऋ (ठीक), पाद्ऋवान् (चरवाहा), बज्ऋर् (बाज़ार), खत्ऋर् (खातिर), दस्ऋखन् (दस्तरखान)। यह अ की संध्वनि है।

१. २. १. ५ अ—यह अर्द्धविवृत ह्रस्व अवृत्तमुखी मध्य स्वर है। आदि, मध्य, अंत्य तीनों ही स्थितियों में आता है: अगर्, अट् (आठ), सत् (सात), देवर्, न (नें), म(में), त (को) बिट्य (बिटिया), खॉत (खाता), अग (अगर)। कई शब्दों में 'उ' इसका मुक्त परिवर्त है: चल्नों-चुल्नो (चलना), उतरनो-उतुर्नो (उतरना), कह्णो-कुह्णो (कहना)। कुछ में 'इ' भी: चल्नो-चिल्नो (चलना)। ओ भी: बज़र्-बोज़ोर (बाज़ार)। ऑ भी: ससु-सॉसु (सास), जग्-

जाँग् (जगह), कर-काँर (घर)।

१. २. १. ६ आ—विवृत दीर्घ अवृत्तमुखी पश्च स्वर। यह तीनों स्थितियों में आता है : आयो (आया), लायो (लाया), लाड़ि (नई बहू), पाबि-(भाभी) बेटा, ना (नहीं)। इस स्वर का इस भाषा में बहुत ही कम प्रयोग मिलता है। इसके स्थान पर आँ, अ और कभी-कभी ओ, इस बोली में मुक्ततः प्रयुक्त होते हैं। उदाहरणार्थ 'बेटा' को 'बेट' या बेटो भी कहते हैं। इसी प्रकार 'लायो' (लाया) का उच्चारण 'लाँयो' भी मिलता है।

१. २. १. ७ आ—अर्द्धविवृत दीर्घ वृत्तमुखी पश्च स्वर। यह तीनों स्थितियों में आता है : आँदमज़ात् (आँदमज़ाद), याँद् (याद) साँल् (वर्ष), सलाँम् (सलाम), चाँर् (चार), पाँशाँ (बादशाह), निकाँ (निकाह), बियाँ (बियाह, विवाह)। अनेक शब्दों में यह अ, ओ, आ का मुक्त परिवर्त है : साँसु-ससु (सास), बाँजाँर-बोज़ोर, (बाज़ार), लाँड़ि-लाड़ि (नई दूल्हन), माँमा-मोमा (मामा)।

१. २. १. ८ ओ—अर्धसंवृत दीर्घ वृत्तमुखी पश्च स्वर। यह तीनों ही स्थितियों में आता है, किंतु मध्य और अंत में अपेक्षया अधिक: ओ (वह), ओव् (शिकार), ओते (होते), पोतो (पोता), बोत् (बहुत), मुंडो (लड़का), कुत्तो (कुत्ता), चुलो (चूल्हा), दो (संख्या), छो (था)। अनेक शब्दों में यह अ, आँ, उ का मुक्त परिवर्त है : बोज़ाँर-बाज़ार; मोमा-माँमा (मामा), दोव-दुव (दुआ), कोड्डन-कुड्डन (घोड़े)।

१. २. १. ९ उ—संवृत ह्रस्व वृत्तमुखी पश्च स्वर। यह तीनों ही स्थितियों में आता है : उस्, उन्, तुरो (तेरा), बुल्बुल्, गुल (फूल), नु (नौ), साँसु (सास)।

१. २. १. १० ऊ—संवृत दीर्घ वृत्तमुखी पश्च स्वर। आदि एवं मध्य में बहुत कम आता है। अंत्य स्थिति में भी अधिक नहीं। वस्तुतः इसका प्रयोग इस बोली में बहुत ही कम होता है, और जहाँ होता भी है, उसके स्थान पर 'उ' बिना किसी अर्थ के परिवर्तन के आता है। ऊन, दूरबीन्, चूल् (चूल्हा), समूतू (समझता), इनू (ये), देतू (देता), कोंगू (मि कोंगू=मैं खाऊंगा)। दे० १. २. १. ५

१. २. २ उपर्युक्त स्वरों में केवल इ, ए, अ, आँ, ओ, उ ये छः ही ध्वनिग्रामिक (Phonemic) हैं।

१. २. २. १ इनके न्यूनतम विरोधी युग्मों (Minimal Pairs) का चार्ट अगले पृष्ठ पर देखिए।

१. २. २. २ उपर्युक्त युग्मों के अर्थ इस प्रकार हैं :—

कुति=कुतिया। कुते=कुत्ते।
किस्=किस। कस्=घास।
किन्=किन। काँन्=कान।

पोति=पोती । पोतो=पोता ।
इस् =इस । उस्=उस ।
पेर् =पैर । पर=पर्, ऊपर ।
लेणो=लेना । लाणो=लाना ।

	इ	ए	अ	ऑ	ओ	उ
इ	×	कुति कुते	किस् कस्	किन् कॉन्	पोति पोतो	इस् उस्
ए	×	×	पेर पर	लेणो लॉणो	दे दो	ए उ
अ	×	×	×	देवर् देवॉर्	चर् चोर्	कम् कुम्
ऑ	×	×	×	×	आइ ओइ	कॉम् कुम्
ओ	×	×	×	×	×	गोल्, मोंडो गुल्, मुंडो
उ	×	×	×	×	×	×

दे =दे (धातु) । दो=दो (संख्या) ।
ए =ये; ऐ (संबोधन) । उ=वह ।
देवर्=देवर । देवॉर्=दीवार ।
चर्=चार । चोर्=चोर ।
कम्=कम, काम । कुम्=दे० नीचे ।
आइ=आई । ओइ=वही ।
कॉम=काम । कुम्=पहने हुए कपड़े और सीने के बीच की जगह जहाँ कोई चीज़ छिपा सकते हैं ।
गोल्=गोलाकार । गुल्=फूल ।
मोंडो=कंधा । मुंडो=लड़का ।

१.२.३ अनुनासिक स्वर

ताजुज़्बेकी के सभी स्वर अनुनासिक रूप में भी आते हैं : छीं (हैं), उईं (वहीं); इँया (यहाँ); में (मैं); गबँ (गर्भ, गर्भवती); काँम् (काम),

माँम् (मामा); (यहाँ माँ का स्वर ाँ है); जोंवइ (जोहती हूँ); दुँवइ (दूँगा); चूँ (हूँ)।

अनुनासिकता इसमें स्वनिमीय अथवा ध्वनिग्रामिक (Phonemic) नहीं है।

१.३ दीर्घता (Length)

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि दीर्घ स्वर (आ, ऑ, ई, ऊ, ए, ओ) तो इस बोली में हैं, किंतु दीर्घता ध्वनिग्रामिक नहीं है। इन स्वरों में ऑ, ए, ओ के मात्रा के आधार पर एकाधिक भेद हैं। शब्द में स्थिति के अनुसार इनकी दीर्घता अधिक या कम हो जाती है। उदाहरणार्थ ऑ—सॉल्, सॉसु, निकॉ, पॉशॉ (साल, सास, निकाह, बादशाह)

ए—ए, एल्, एक्, कोड़े (ए, साथ, एक, घोड़े)

ओ—ओ, मोम, बोत् कुतो (ओ, मामा, बहुत, कुत्ता)।

इनमें प्रारंभिक शब्दों में आ, ए, ओ की दीर्घता अधिक है, और क्रमशः परवर्ती शब्दों में कम।

१.४ संयुक्त स्वर

ताजुज़्बेकी में संयुक्त स्वरों की संख्या १० है :—

(१) अ+इ—करइ (करता है), मइमुन् (बंदर), अइ (है), यइ (यही)
(२) अ+उ—जउ (जाओ), शउकुन् (शोर)
(३) अ+ओ—खओ (खाया)
(४) आ+इ—पाइ (भाई)
(५) ऑ+इ—बॉइ (अमीर)।
(६) उ+इ—बुइ (बूआ)
(७) ए+इ—हेइरॉन (हैरान), लम्केइ (लटक रहा है)
(८) ओ+इ—ओइ (वही), नुकोइ (छोटा)
(९) ऑ+उ—लॉउ (लाओ)
(१०) ओ+उ—चुणोउ (चुनो), टूँडोउ (ढूँढो)

इनमें २ एवं ३ एक दूसरे के स्थान पर आ सकते हैं। कभी-कभी (यद्यपि बहुत कम) १ के स्थान पर ४ भी आ जाता है। ४, ५, ७ भी आपस में परिवर्त्य हैं। ८, ९, १० के बारे में भी यही बात कही जा सकती है।

संयुक्त स्वर अनुनासिक तथा निरनुनासिक दोनों ही प्रकार के हैं। अनुनासिकता कभी तो संयुक्त स्वर के प्रथम सदस्य पर सुनाई पड़ती है, कभी दूसरे

पर, एवं कभी दोनों पर। उदाहरणार्थ :—

मँइँन (महीना)—दोनों स्वर अनुनासिक हैं।

जोंउ (जाऊँ)—प्रथम स्वर अनुनासिक है।

पड़ुइँ (पढ़ता हूँ)—द्वितीय स्वर अनुनासिक है।

१.५ ध्वनियों का विकास

ताजुज़्बेकी में हिंदी, पंजाबी, अफ़गानी, ताजिक, उज़्बेक तथा रूसी शब्द हैं। इसकी ध्वनियां, इन भाषाओं की उन्हीं ध्वनियों (जैसे अ से अ, या क् से क् आदि) से संबद्ध हैं। ऑ ध्वनि ताजिक-उज़्बेक का प्रभाव है। इन भाषाओं में इस ध्वनि का प्रयोग बहुतायत से होता है, इसी कारण ताजुज़्बेकी में भी इसका अधिक प्रयोग होने लगा है। ताजुज़्बेकी की कुछ ध्वनियाँ अपवादतः कुछ अन्य ध्वनियों से भी विकसित हुई हैं। यहाँ उनमें कुछ प्रमुख ध्वनियों के कुछ प्रमुख स्रोत दिए जा रहे हैं। (जिन शब्दों के साथ भाषा के नाम का उल्लेख नहीं है, वे हिंदी के हैं)।

अ

आ>अ : मुसाफ़िर>मुसफ़िर, आग>अक्, किताब>कितब्, चाक़ू>चक़ु

इ>अ : बिछा>बचा (बिछाना)

उ>अ : बुला>बला (बुलाना)

ए>अ : बैठा>बटा (बैठाना)

ओ>अ : रूसी उकोल्>उक्ल् (इंजेक्शन)

औ>अ : क़ौम>क़म् (क़ौम, जाति)

ऑ

आ>ऑ : क़ाग़ज़>कॉग़ज़, काम्>कॉम, चार>चॉर्, रात>रॉत्, याद>यॉद्

अ>ऑ : जगह>जॉग्, घर>कॉर (घर)

इ

अ>इ : क़यामत>क़ियोमत्, ज़मीन>जिमिन्

आ>इ : उज़० तथा ताजि० गिलाम>गिलिम् (क़ालीन)

उ>इ : जूती>जिति० (जूता)

ए>इ : एल्चि>इलिचि (दूत)

ऐ>इ : ऐश>इश

ई>इ : भी>बि

उ

अ > उ : नंग् > लुंग् (नंगा)

ऊ > उ : चाक़ू > चक़ु, उज़॰ उकूञ्चि > उकुव्व (छात्र)

ओ > उ : हो > हु (होना), आदमख़ोर > अदमख़ुर, उज़॰ ओक़िश > उक़िश् (शिक्षा)

औ > उ : नौ > नु, दौड़ > दुड़ (दौड़ना)

अ > ए : अगर > एगर

उ > ए : उज़॰ इला > एला (साथ)

ऐ > ए : पैर > पेर, मैं > में, बैठ् > बेट् (बैठना), पैदा > पेदा

ओ

अ > ओ : नख > नोक् (नाख़ून)

आ > ओ : बाज़ार > बोज़ोर, उज़॰ क़ंदालत > कंदोलत् (मिठाई)

ऊ > ओ : ख़ूब > ख़ोप् (ख़ूब, अच्छा)

औ > ओ : कौन > कों

क

क़ > क : क़ब्र > कबर्, क़सम, > कसम्, अक़्ल > अकल्

: उज़॰ ओकिश > उकिश (शिक्षा)

ख > क : नख > नोक् (नाख़ून), देख् > देक् (देखना),

दुख् > दुक् (दुखना), ओखली > ओकिलि

ख़ > क : ख़ोता > कोता, कोत (गदहा)

ग > क : आग > अक्

घ > क : घर > कर, घास > कस्

ख

क > ख : कंघी > खकि, इकट्ठ > खिट् (इकट्टा)

ख़

ह > ख़ : हया > ख़यो

ख़ > ख़ : ख़ल्क > ख़ल्क (दुनिया)

ग

ख > ग : देख् > देग् (देखना)

ग़ > ग : उज़॰ उरुग़ > उरुग (क़बीला, जाति)

घ > ग : घास > गाँस्

ग़

ख > ग़ : ओख्खो > ओग़ो (ओहो)

ह्>ग : रह्म्>रग़म्

च

छ>च : छो>चो (था), छुरी>चुरि

स>च : ताजि० रस्>रच् (पहुंचना)

ज>च : आज>आच्, ताज>ताच्

झ>च : झूठ>चुत्

श>च : बादशाह्>पाँचाँ

छ

च>छ : बेच्>बेछ (बेचना)

ज

झ>ज : समझ्>समज् (समझना)

ट

ठ>ट : आठ>अट्, ठोक्>टोक् (ठोकना)

ड>ट : उड्>उट् (उड़ना)

ढ>ट : ढूँढ्>टुँड् (ढुँढना)

ढ़>ट : कढ़्>कट् (कढ़ना)

ड

ड़>ड : उड़्>उड् (उड़ना)

ध>ड : आध>अड् (आधा)। ध>द>ड; अर्ध>अड्ड>अड्

ढ़>ड : ठोढ़ी>तोडि

र>ड़ : धर>तड़ (धरना)

न>ड़ : ईंधन>इंदड़्। न्>ण्>ड़ँ>ड़्

ठ>ड़ : उठ्>उड़् (उठना), बैठ्>बेड़ (बैठना)

ढ़>ड़ : दाढ़ी>दड़ि, पढ़्>पड़् (पढ़ना)

ण

न>ण : सुन्>सुण् (सुनना), कहानी>कणि, गिन्>गिण् (गिनना)।

ट>ण : ऊंट>उण्

त

ट>त : टूट्>तुट् (टूटना)

ठ>त : झूठ>चुत्, ठोढ़ी>तोदि

द>त : गिर्द>गिर्त (चारों ओर)

थ>त : हाथ>आत्

ध>त : दूध>दूत्, धूप>तुप्

ढ>त : ढूंढ़>तुंड्

द

ज़>द : फ़ज़ीरे>फ़दरा (कल, प्रातः)

ड>द : डर>दर

ध>द : आध>अद् (आधा)

ढ़>द : ठोढ़ी>तोदि

न्

द>न : नींद>नीन्, चांद्>चान्, आदमी>अन्मि

ल>न : (पंजाबी) नाल>नन (से, के साथ)

प्

फ>प : फाड्>पाड् (फ़ाड़ना)

फ़>प : उज़० नफ़स>नपस् (साँस), क़फ़न>कपन्

ब>प : जेब>जेप्, तबीबी>ताँबिपि (डाक्टरी)

भ>प : भाई>पइ, जीभ>जिप्

फ़

प>फ़ : धूप्>तुफ़् (धाम), उज़० कप्तर>कफ़्तर (कबूतर), ऊपर >उफ़र

ब

भ>ब : गाभिन>गबन्

म

न>म : कोयिन्>कुम् (दे० पुस्तक के अंत का कोश)

य

ग़>य : उरुग़>उरुय् (क़बीला, जाति)

ड़>य : घोड़ी>कोयि

ढ़>य : पढ़्>पय् (पढ़ना)

द>य : उस्तादी>उस्तायि

न>य : कहानी>कयि, ईंधन>इदय

ह>य : महीन>मयिन

'य' वस्तुतः श्रुतिरूप में आता है। यहाँ ग़, ड़ आदि से विकास का आशय यह है कि 'य' इनके स्थान पर आया है।

र

ड़>र : उड़्>उर (उड़ना), जोड़्>जोर् (जोड़ना)

ढ़>र : चढ़—चर् (चढ़ना)

न>र : अपन्>अप्र् (अपना), नमाज़>रमाज़्

ल>र : निकल्>लकर् (निकलना), स्थल>थरु, नाल>नार् ।

ल

न>ल : नंग्>लुंग (नंगा), निकल्>लकर् (निकलना)

र>ल : कर>कल् (करना)

व

ब>व : बारी>वार

श

छ>श : कुछ>कुश्, छो>शो (था)

च>श : बेच्>बेश् (बेचना)

स

श>स : गोश्त्>गोस्त्

१. ५. १ ध्वनि-विकास की कुछ प्रवृत्तियाँ

ध्वनियों के उपर्युक्त विकास के अतिरिक्त, मूल शब्द या रूप से तुलना करने पर, ताजुज़्बेकी में कुछ सामान्य ध्वनि-प्रवृत्तियाँ भी दिखाई पड़ती हैं। उनमें से कुछ अत्यंत प्रमुख यहाँ दी जा रही हैं :

१. ५. १. १ ह्रस्वीकरण

स्वर: आ>अ : आग>अक्, चाकू>चकु

ई>इ : भी>बि, हडडी>हडि, की>कि, बिल्ली>बिल्लि

ऊ>उ : चाकू>चकु, उज़॰उकून्चि>उकुन्चि (छात्र)

व्यंजन: च्च>च : कच्चा>कचा (कच्चा)

ज्ज्>ज़ : इज्ज़त>इज़त

ड्ड>ड : हड्डी>हडि

न्न>न : अन्न>अन् (पोलाव, अन्न, खाना)

ब्ब>ब : अब्बा>अबा

१. ५. १. २ अल्पप्राणीकरण

ख—क : लिख्>लिक् (लिखना); रख>रक् (रखना);

नख>नोक् (नाखून); दुख्>दुक् (दुखना);

ओखली>आकिली

छ>च : छो>चो (था); बिछा>बचा (बिछाना) छत>चतो;
छुरी>चुरि

ठ>ट : पठान>पटान; ठोक्>टोक् (ठोकना) ; बैठ>बेट
(बैठना); आठ>अट; उठ्>उट् (उठना)

थ>त : हाथ>आत्, हत्; माथा>मातो

फ>प : फिर>पेर, फाड>पाड़ (फ़ाडना) फूफी>पुइ

ढ़>ड : दाढ़ी>दडि, पढ>पड (पढ़ना) चढ़>चढ़ (चढ़ना)

घोष महाप्राणों के अल्पप्राणीकरण के लिए देखिए

१. ५. १. ३ अघोषीकरण

ग>क : आग>अक्

ज>च : आज>आच्, ताज>ताच् (मुकुट), जंग>चंग् (युद्ध)
भावज>पावच्

ब>प : बहिन>पेण, पेन्, जेब>जेप्

१. ५. १. ४ लोप

ताजुज़्बेकी में 'ह' के लोप की प्रवृत्ति बहुत मिलती है। यह लोप आदि, मध्य, अंत्य तीनों ही स्थितियों में दिखाई पड़ता है :

आदि>हाथ>आत् हो>ओ (होना), है>अइ>इ

मध्य>कहानी>कणि (कहानी), क़हर>क़ॉर (क्रोध), बहुत>बोत
पहाड़>पाड़, पड़ (पहाड़), रह>रे, जहर>ज़ार, शहर>शर,
महीन>मयिन

अंत्य>निकाह>निकॉं (विवाह), पनाह>पना (शरण), मुंह>मों, मो
(मुंह), विवाह>बियॉं, ब्यॉं

यों, इसके विरुद्ध कभी-कभी 'ह' का आगम भी (इच्छा>हिच्) होता है।

लोप के कुछ अन्य उदाहरण ये हैं :—

ड़्>घोड़ी>कोयि; य् श्रुति है।

त्>गोश्त>गोश्, दांत>दां, दश्त>दश् (रेगिस्तान, बंजर)

द्>आदमी>आमि, उस्तादी>उस्तायि; य श्रुति है। उस्ताद>उस्ता,
गिर्द>गिर (चारों ओर)

न्>कौन>कों। अनुनासिकता 'न' का अवशेष है।

म्>नाम>नॉं, नाँ। अनुनासिकता 'म' का अवशेष है।

र>अगर>अग
ल्>लश्कर>अश्कर्

१. ५. १. ५ आगम

अ>अक़्ल>अकल् (बुद्धि)।
इ>एल्ची>इलिचि (दूत)।
द्>छोड़्>चौड़्द् (छोड़ना), काढ्>कड़्द् (काढ़ना)।
र>पेट>पेर्ट् (पेट)।
ह>इच्छा>हिच् (इच्छा), तुलनीय भोजपुरी हिच्छा (इच्छा)।

१. ५. १. ६ विपर्यय

दस्तरख़ान>दर्सखन (मेज़पोश)।
लानत>नालत (लानत)।
नाल>लन् (साथ, से)।

१. ५. १. ७ हिंदी में, शब्दों में जहाँ घ, झ, ढ, ध, भ मिलता है, ताजुज्बेकी में प्रायः उनके स्थान पर क, च, ट, त, प हो जाता है।

घ>क>घोड़ा>कुड़ो, घास>कस, घर>कर, घड़ा>कॉड़्, कंघी>ककि
झ>च>समझ>समच (समझना), झूठ>चुत
ढ (ढ़)>ट>ढूंढ>टुंड (ढूँढना), कढ़>कट (कढ़ना, निकलना)
ध>त>दूध>दुत, धूप>तुप, धर>तर (धरना) ध्यान>तियम, धुवां>
तुवं्, धी, धिया>ति (लड़की)
भ>प>जीभ>जिप, भाई>पइ, भारी>पारो, भंज>पंज (तोड़ना, भंजना) भाभी>पाबि, भतीजा>पतिजो, भांजा>पांजो, भग्>
पक् (भगना), भावज>पावच

किंतु अनेक ध्वनि-विकास इसके विपरीत भी मिलते हैं :

घ>ग>बाघ>बग, घास>गॉस, गस
झ>ज>समझ>समज (समझना)
ढ (ढ़)>ड>ढूंढ>तुंड (ढूंढना), ठोढ़ी>तोड़ि,कढ़>कड (कढ़ना, निकलना)
बुड्ढी>बुडि
>त—ढूंढ>तुंड (ढूंढ़ना)
>द—ठोढ़ी>तोदि,कढ़>कद (कढ़ना, निकलना)
>य—पढ़>पय् (पढ़ना)

घ>द—बांध>बंद (बांधना), आधा>अदो

भ>ब—गाभिन>गबन, भाभी>पाबि, भी>बि, अभी>अबे

दूसरे वर्ग के ये उदाहरण मूलतः अल्पप्राणीकरण के उदाहरण हैं। घ, भ, घ, भ, में यह बात स्पष्ट है। 'ढ' से विकसित ध्वनियों में 'ड' अल्पप्राणीकृत है। 'द', द-ड में पारस्परिक परिवर्तन के परिणाम स्वरूप 'ड' का परिवर्तित रूप है। 'त', 'ढ' के ट होने पर ट का परिवर्तन है। 'ढ्' के लोप होने पर उच्चारण-सुविधा के लिए य् के आगम से अ 'य' हो गया है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में पाँचों वर्गों के चतुर्थ व्यंजन के स्थान पर, प्रथम व्यंजन हो जाने की विशेष प्रवृत्ति पंजाबी में है, यद्यपि वहां जो ध्वनि सुनाई पड़ती है, उसे शुद्ध प्रथम व्यंजन नहीं कहा जा सकता। वह उसके अंतर्मुखी रूप जैसी है। ताजुज़्बेकी में यह बात नहीं है। इस प्रसंग में उल्लेख्य है कि चतुर्थ व्यंजन के प्रथम हो जाने की प्रवृत्ति हिंदी आदि अन्य भाषाओं में नहीं है किंतु ठीक उल्टे एक-दो शब्दों में पहले व्यंजन का चौथा होता देखा गया है: तागा (सं० तार्कव)>धागा। ताजुज़्बेकी में यह शब्द 'तगो' रूप में मिलता है। कहना कठिन है कि यहाँ 'त' ही 'त' है, या वह 'घ' का विकास है।

उपर्युक्त तथ्य से अनुमान लगता है कि ताजुज़्बेकी में चतुर्थ का प्रथम व्यंजन हो जाने की प्रवृत्ति का प्रारंभ कदाचित्, उनके मूल स्थान, अर्थात् हिंदी प्रदेश में न होकर, वहां से चलने पर, पंजाब में उनके प्रवासकाल के समय पंजाबी प्रभाव के कारण हुआ होगा।

संज्ञा

२.० ताजुज़्बेकी संज्ञाएँ पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग दो प्रकार की होती हैं। अंत्य ध्वनि के आधार पर भी इनके मूलतः दो प्रकार हैं: स्वरांत तथा व्यंजनांत। उदाहरण के लिए—

२.१ पुल्लिग स्वरांत

अ—चच (चाचा), सुर्म (सुर्मा), कमानगुलक (गुरदेल)
आ—अब्बा (अब्बा), कपड़ा, अका (चाचा), मामा, कोता (गदहा)
इ—अन्मि (आदमी), अंगरि (अंगारा)
उ—अंड़ु (अंडा), एल्चु (दूत), दिनु (दिन)
ओ—अंडो (अंडा), अख्तख़ानो (अस्तबल), अबो (अब्बा), कुतो (कुत्ता), मुंडो (लड़का), मोज़ो (जूता), मुसो (चूहा), मोतरो (गाल), मंडो (कंघा), पंजो (पंजा), तमाशो (तमाशा)

२.२ स्त्रीलिंग स्वरांत

आ—अइज़ा (स्त्री), गा (गाय), दुम्बा (भेंड़)
इ—अइ (माँ), उगुटि (अंगूठी)
ई—ककी (कंघी), दड़ी (दाड़ी), अतड़ी (अँतडी), टेपी (टोपी), चुन्की (बाली)
ओ—अइज़ो (स्त्री), अवाज़ो (आवाज)

२.३ पुल्लिग व्यंजनांत

क—कतक़् (दही)
क़—अहमक़् (मूर्ख)

ग़—उरुग़् (वंश)
ज—क़र्ज़्, काग़ज़्
ट—ऊँट् (ऊंट), खट् (कीचड़)
ड़—इंदड़् (ईंधन)
त—अत् (वायदा)
द—उस्ताँद् (उस्ताद)
न—इस्पिन् (चाचा), अस्मन् (आसमान)
प—अस्प् (घोडा)
फ़—कैफ़् (मज़ा), ग़फ़् (छेद)
ब—जवब् (जवाब)
म—काँम् (काम), अदम् (आदमी)
य—उस्ताँय् (उस्ताद)
र—अंगुर् (अंगूर), अइग़िर् (घोडा)
ल—अफ़ज़ल् (सामान)
व—ओव् (शिकार)
श—इश् (ऐश), कोश् (भौं)
स—कपस् (पिंजडा), कुस् (चूतड़)

२. ४ स्त्रीलिंग व्यंजनांत

क—अँक् (आँख)
ग—अग् (आग)
ज़—अवाज़् (आवाज़)
त—क़ियोमत् (क़यामत)
न—केलिन् (दूल्हन)
ब—कितब् (किताब)
म—क़सम् (क़सम)
य—असिय् (चक्की)
र—क़बर् (क़ब्र), खबर्
ल—अकल् (अक़्ल), ग़ज़ल्
स—गास् (घास)

२. ५ एक ही शब्द के कई रूपों का प्रचलन ताजुज़्बेकी में बहुत अधिक है। जैसे अवाज़-अवाज़ो, क़ियोमत-कियोमतो, कपड़ा-कपड़ो, कुता-कुतो, अदम-अन्मि, अंड्ड-अंडो, अइज़ा-अइज़ो, एल्चु-एल्चि आदि।

२. ६ स्वरांत शब्दों में ब्रज, राजस्थानी, कनौजी की तरह ओकारांत शब्द काफी हैं। यों उनमें कुछ के आकारांत रूप भी मिलते हैं।

२.७ कारकीय रूप

हिन्दी आदि की भांति ही ताजुज्बेकी में भी मूल रूप एकवचन, मूल रूप बहुवचन, विकृत रूप एकवचन, विकृत रूप बहुवचन, संबोधन एकवचन तथा संबोधन बहुवचन ये छः रूप होते हैं। इनके बनने के सामान्य नियम ये हैं :

(१) मूल रूप एकवचन (पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनों) में कुछ भी नहीं जोड़ा जाता। शब्द अपने मूल रूप में ही प्रयुक्त होते हैं।

(२) मूल रूप बहुवचन (दोनों लिंगों) में भी बिना कुछ जोड़े ही मूल रूप प्रयुक्त होता है। आकारांत पुल्लिग शब्द इसके अपवाद हैं। हिन्दी ही की भांति अन्त्य 'आ' के स्थान पर 'ए' कर देते हैं। जैसे कुता-कुते (कुत्ते), कोड़ा-कोड़े (घोड़े), बेटा-बेटे, बिया—बिये (द्वार), कोता-कोते (गदहे) आदि। राजस्थानी की कुछ बोलियों की तरह ओकारांत पुल्लिग शब्दों के भी मूल रूप बहुवचन एकारांत ही बनते हैं। जैसे मोज़ो-मोज़े (जूते), तमाशो-तमाशे (तमाशे), पंजो-पंजे (पंजे) कुतुरंगो-कुतुरंगे, कलो-कले (सिर), सरो-सरे (सारे), कुतो-कुते (कुत्ते), कोड़ो-कोड़े (घोड़े), मुंडो-मुंडे (लड़के), चुलो—चुले (चूल्हे), गलो-गले (ढेर), खरबूज़ो-खरबूज़े (खरबूजे), कोयो-कोये (घोड़े), रस्तो-रस्ते (रास्ते), रसो-रसे (रस्से), मोड़ो-मोड़े (कंधे, मोढ़े), तथा मातो-माते (माथे) आदि।

इसके प्रभाव-स्वरूप कुछ आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के भी बहुवचन मूल रूप एकारांत होते हैं। जैसे अइज़ा-अइज़े (औरतें)।

(३) विकृत रूप एकवचन तथा संबोधन एकवचन में हिन्दी की भाँति ही कुछ नहीं जोड़ा जाता। मूल रूप ही प्रयुक्त होते हैं। हाँ आकारांत तथा ओकारांत पुल्लिग शब्दों के एकारांत भी प्रयुक्त होते हैं। यद्यपि इनके स्थान पर मूल रूप का भी प्रयोग विरल नहीं है।

(४) विकृत रूप बहुवचन में हिन्दी में 'ओं' (जैसे घोड़ों) तथा बोलियों में वन, अन, आदि जोड़े जाते हैं। ताजुज़्बेकी में ओं, ऊँ, उँ, उन, न, अन, एन, इन आदि जोड़े जाते हैं। उदाहरणार्थ बिटिया-बिटियों, बिट्युन बेटी-बेटियों, जतक्=जतकूँ, जतकुन (लड़कों), अन्मि-अन्मिउँ, अमि-अमुन,अमियों (आदमियों), जिति-जितुन (जूतों), जन—जनों, जनुन (जनों), कुता-कुतन, कुतुँ (कुत्तों), कोड़ा-कोड़ुन (घोड़ों), काम-कामुन (कामों), कल-कलेन (सरों), अइज़ो-अइज़ुन, सर-सरन (सरों), रन-रनुन (स्त्रियों), मोडो-मोडेन (कंधों) मुर्स-

मुसुन (मर्दों), माल-मालुन (जानवरों), बेटा-बेटुं, बेटुन, पेर-पेरिन (पैरों), नज़र-नज़रुन (नज़रों), टेपी-टेपिन पइ-पयुन-पयुँन (भाइयों) तथा देव-देवुन, देवुं (देवों—दानवों) आदि। यहां कुछ रूपध्वनिग्रामिक परिवर्तन (Morphophonemic change) उल्लेख्य हैं : (क) कुछ शब्दों में अंत्य ई के स्थान पर 'इन' कर दिया जाता है (टेपी-टेपिन), तथा कुछ में 'ई' का इ करके ओं जोड़ते हैं। बीच में य श्रुति आ जाती है (बेटी-बेटियों)। (ख) आकारांत शब्दों में अंत्य आ के स्थान पर उन (बेटा-बेटुन), उं (बेटा-बेटुं), ओं (बिटिया-बिटियों) तथा अन (कुता-कुतन) जोड़ते हैं। (ग) कुछ इकरांत शब्दों में ओं (य श्रुति के साथ; अमि-अमियों) जोड़ते हैं या 'इ' के स्थान पर उन (अमि-अमुन) कर देते हैं। कुछ में इ का य (पइ-पयुन) करके उन जोड़ते हैं। (घ) ओकारांत शब्दों में ओ के स्थान पर एन या उन (मोडो-मोडेन, अइज़ो-अइज़ुन) जोड़ते हैं। वस्तुतः इन बहुवचन के प्रत्ययों में एकरूपता नहीं है। व्यक्ति-व्यक्ति गाँव-गाँव में अंतर मिलता है। मुक्त-परिवर्तता (Free Variation) बहुत अधिक है।

(५) संबोधन बहुवचन में ओ या उ जोड़ते हैं : बेटी-बेटियो, पइ-पइयो, पइउ। उपर्युक्त की तरह ही रूपध्वनिग्रामिक परिवर्तन होते हैं। ओकारांत में कुछ नहीं जोड़ते : कोड़ो-कोड़ो।

उपर्युक्त में 'शून्य' का विकास संस्कृत विभक्तियों के पालि, प्राकृत, अपभ्रंश होते घिस जाने से हुआ है। जैसे सं० कर्मः > पा० कम्मो > प्रा० कम्मो > अप० कम्मु > कामु > काम > काम्। एकवचन 'ए' के विकास के संबंध में मतभेद है।[1] मेरे विचार में सं० के स्य, स्मिन्, ए, एन विभक्तियों का विकास 'ए' रूप में हुआ है। जैसे घोटकस्य > घोडअहि > घोडइ > घोड़ै > घोड़े। बहुवचन ए के संबंध में भी विवाद है।[2] मुझे इसके विकास की सर्वाधिक संभावना सं० की चतुर्थी-पंचमी विभक्ति एभ्यः > पा० एभि > एहि > एंइ > ऐ > ए रूप में है। विकारी बहुवचन के ओं, ऊं, उं, उन, न, अन, एन, इन सभी का संबंध सं० षष्ठी बहुवचन आनाम् > पा० आनं > प्रा० आणं > अन > (श्रुति के कारण) यन, वन से है। संबोधन ओ (बहुवचन) का विकास निम्नांकित रूपों में हुआ ज्ञात होता है : सं० संबोधन एकवचन शून्य > पा० शून्य > प्रा० एकवचन ओ (प्रथमा एकवचन का प्रभाव) > अप० बहुवचन हो (एकवचन का प्रभाव, ह का आगम)—ओ।

---

१. हिन्दी भाषा, पृ० १५९-१६०।
२. वही पृ० १६०-१६१।

२. ८ लिंग

जैसा कि ऊपर की बातों से स्पष्ट है ताजुज़्बेकी में पुल्लिग और स्त्रीलिंग दो लिंग हैं। इसका विचार हिन्दी की तरह ही संज्ञा (बेटा, बेटो-बेटी), विशेषण (बड़ो, बड़ा-बड़ी) संबंधकारक के रूपों (का-की, रो-री) तथा क्रिया (कियो-की) में होता है। पुल्लिग के सामान्य प्रत्यय ओ (कोड़ो, बेटो, कुतो) तथा आ (कोड़ा, बेटा, कुता) हैं। स्त्रीलिंग में हिन्दी की तरह ही इ या ई (कोड़ी, बेटी, कुति, कुती) का प्रयोग होता है। 'ओ' का विकास सं० अकः या अ से हुआ है। जैसे घोट : >घोटो>घोडो>घोड़ो>कोड़ो अथवा घोटक : >घोटओ>घोडओ>घोड़ौ>घोड़ो>कोड़ो। 'आ' का विकास सं० अकः से है: घोटक : >घोड़ओ>घोड़ओ>घोड़अ>घोड़ा>कोड़ा। 'इ' 'ई' का विकास सं० 'इका' से हुआ है: घोटिका>घोडिआ>घोड़ी, कोड़ी>कोड़ि।

२. ९ वचन

वचन दो हैं : एकवचन, बहुवचन। ऊपर के कारकीय रूपों से स्पष्ट है कि बहुवचन के प्रत्यय शून्य, ए, ओं, ऊँ, उँ, उन, न, अन, एन, इन हैं। हिंदी की तरह ही वचन का विचार संज्ञा, विशेषण, संबंधकारक के रूप तथा क्रिया में होता है। वचन के प्रत्ययों पर ऊपर कारक-रूपों के प्रसंग में विचार किया जा चुका है।

कारक-चिह्न

३. ० ताजुज़्बेकी में परसर्ग, पूर्वसर्ग तथा विभक्ति का कारक-चिह्न के रूप में प्रयोग होता है। जैसा कि हम आगे देखेंगे, इनमें अधिकांश हिंदी के समान हैं। जो प्रयोग हिन्दी से भिन्न हैं, वे या तो प्रभाव स्वरूप अन्य भाषाओं से आए हैं या ताजुज़्बेकी की अपनी विशेषता हैं।

३. १ कर्त्ता

हिंदी ही की तरह ताजुज़्बेकी में भी कर्ता कारक दो प्रकार का होता है : सपरसर्ग एवं अपरसर्ग।

सपरसर्ग कर्ता कारक में 'न' परसर्ग जोड़ा जाता है। यह परसर्ग 'न' के अतिरिक्त ने, नो, नि रूपों में भी मिलता है। उदाहरणार्थ—

न—

(१) रन् तिरे न कुतुरुंगो जणियो।
(तेरी स्त्री ने कुत्ते के बच्चे जने)

(२) मुंडे न तोश-तो पर त तुग्र् कर्‍यो।
(लड़के ने तोशे-तपरे (=सामान) को ठीक किया)

(३) अब मरे न खयो।
(मेरे अब्बा ने खाया)

(४) बिटिय न कियो।
(बिटिया ने कहा)

ने—

(१) इस ने देख्यो। (इसने देखा)

(२) पाँशाँ ने मो कोल्यो। (बादशाह ने मुँह खोला)

नो—

उस नो बणयो। (उसने बनाया)

नि—

बिल्लि नि पुगुरियो। (बिल्ली ने पकड़ा)

इन 'न', 'ने', 'नो', 'नि' में कोई अंतर नहीं है। एक ही व्यक्ति कभी तो 'न' और कभी 'ने' या 'नो', 'नि' कहता सुना जा सकता है। हाँ, इनमें, 'न' का प्रयोग ही प्रायः अधिक होता है, और कभी-कभी 'ने' का। 'नो' एवं 'नि' अपवादतः ही कभी-कभार सुने जाते हैं।

अ—

'अ', 'न' का ही एक संरूप है। जब मूल शब्द के अंत में न् व्यंजन होता है तो 'न' के स्थान पर अ का प्रयोग होता है।

(१) उन्-अ कियो। (उन्होंने कहा)
(२) रन्-अ बणयो। (स्त्री ने बनाया)
(३) जतकुन्-अ मर्‌यो। (लड़कों ने मारा)
(४) अन्मुन्-अ पिश्न कर्‌यो। (आदमियों ने प्रश्न किया)

ऐसे प्रयोगों में अ पूर्ववर्ती न् से मिलकर उच्चरित होता है और न् में कुछ थोड़ी-सी दीर्घता आ जाती है। यों ऐसी स्थिति केवल इसी बोली की विशेषता नहीं है। सभी भाषाओं में इस प्रकार के परिवर्तन मिलते हैं। हिंदी में भी जब 'भगवान् ने कहा' या 'आम् में दाग़ है' जैसे वाक्य धारा-प्रवाह रूप में कहे जाते हैं तो एक ही 'न्' या 'म्' उच्चरित होता है। हाँ उसकी मात्रा अवश्य बढ़ जाती है।

अपरसर्ग कर्ता कारक में परसर्ग नहीं जोड़ा जाता। आधुनिक शब्दावली का प्रयोग करें तो कह सकते हैं कि इसमें शून्य परसर्ग होता है। उदाहरणार्थ :

(१) बेटा चलो गो। (बेटा चला गया)
(२) रनि साँझ गि। (रानी समझ गई)
(३) मैं रूटि खाँवै। (मैं रोटी खाता हूँ)
(४) ओ कितब पड़ै दे। (वह किताब पढ़ रहा है)

हिन्दी की भाँति ही, ताजुज़्बेकी में भी सपरसर्ग कर्ता, कुछ अपवादों को छोड़ कर, केवल सकर्मक धातु के भूतकालिक कृदंत से बनी क्रियाओं के साथ ही आता है। अन्यत्र केवल अपरसर्ग कर्ता कारक आता है। ऊपर के उदाहरणों से यह बात स्पष्ट है। किंतु यह स्थिति, इस बोली की प्रकृति में सिद्धांततः है। अन्य क्षेत्रों की भांति, इस क्षेत्र में भी अब अव्यवस्था है और ऐसे प्रयोग भी मिल जाते हैं, जिनमें उपर्युक्त नियम का उल्लंघन होता है। अर्थात् एक ओर जहाँ 'न' का प्रयोग होना चाहिए, वहाँ बिना 'न' के भी लोग वाक्य-रचना कर लेते हैं :—

(१) देव् मुड़ के देख्यो। (देव ने मुड़कर देखा)
(२) किसी बि कियो न गियो। (किसी ने भी कहा नहीं गई)

और दूसरी ओर जहाँ 'न' अनावश्यक है, वहाँ भी उसका प्रयोग हमें मिल जाता है :—

(१) हम् न तारो शेर त लिनेइ। (हम तुम्हारे शहर को लेंगे)

(२) कुते न दुड़ के अयो। (कुत्ता दौड़ कर आया)

यह अव्यवस्था बड़े-बूढ़ों की अपेक्षा नयों की भाषा में अधिक है।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'न' या 'ने' का संबंध ट्रम्प[1] तथा किशोरीदास वाजपेयी[2] ने संस्कृत अकारांत शब्दों में तृतीया एकवचन विभक्ति—एन से माना है, किंतु वस्तुतः आधुनिक परसर्गों का विकास विभक्तियों से न होकर स्वतंत्र शब्दों से हुआ है अतः 'ने' के—एन से विकसित होने की संभावना नहीं है। बीम्स[3] इसे 'लगि' 'लागि' जैसे शब्दों से जोड़ते हैं। केलाग[4] का मत भी इससे बहुत भिन्न नहीं है। वे सं० लग्य>प्रा० लग्गिओ>हि० लगि>लइ>ले>ने रूप में इसे विकसित मानते हैं। इसी प्रकार कुछ लोगों ने कर्णस्मिन्, कर्ण, कर्णे आदि से भी इसे जोड़ने का यत्न किया है, किंतु मेरे विचार में 'ने' की व्युत्पत्ति इन सारे मतों के बावजूद संदिग्ध है।

'ने' का प्राचीनतम प्रयोग कीर्तिलता[5] (१५ वीं सदी) में मिलता है: दाने गरुअ गएनेस जेन्ने जावक जन रंजिअ। सिंधी तथा पूर्वी भाषाओं आदि को छोड़कर यह परसर्ग विभिन्न रूपों तथा अर्थों में अन्य अनेक भाषाओं में मिलता है: ब्रज-बुन्देली-कनौजी ने, नैं; मालवी, मेवाती, नीमाड़ी ने; कौरवी-बाँगरू ने, नैं; दक्खिनी ने, नैं, पंजाबी ने। कौरवी, बाँगरू, गुजराती, राजस्थानी में ने कर्म-संप्रदान तथा मराठी में करण कारक का भी परसर्ग है।

३. २ कर्म

ताजुज़्बेकी में भी हिंदी की भांति ही कर्म कारक का अपरसर्ग और सपरसर्ग दोनों ही प्रकारों का होता है। अपरसर्ग कर्म कारक का प्रयोग प्रायः निर्जीव वस्तुओं के साथ ही होता है:—

(१) बुडि रुटि खवै। (बुड्ढी रोटी खाती है)

(२) म न कितब दि। (मैंने किताब दी)

(३) उस् न खत पड़ो। (उसने खत पढ़ा)

---

१. सिंधी ग्रैमर, पृ० ११२।

२. हिन्दी शब्दानुशासन, पृ० २६-७; भारतीय भाषा-विज्ञान, पृ० ५३-४।

३. कम्प० ग्रैमर, भाग २, पृ० २६२-७२।

४. हिन्दी ग्रैमर, पृ० १३१-२।

५. पृ० ३२।

(४) हम रूटि पकोवँइ। (हम रोटी पकाते हैं)

यों इस क्षेत्र में भी कुछ अव्यवस्था दृष्टिगत होती है। अर्थात् सपरसर्ग के स्थान पर अपरसर्ग एवं अपरसर्ग के स्थान पर सपरसर्ग का प्रयोग भी मिल जाता है।

सपरसर्ग कर्म कारक में प्रयुक्त होने वाले परसर्ग निम्नांकित हैं:—

मूल परसर्ग– त, ता, ते, ति, तइ, तय, ता, को, के, पर

संयुक्त परसर्ग—पर त, पर् त, परे त, प्रे त पे त, पे तो, प त, प तो, म त, को त, के त, कि ता, त त, अ त।

मूल परसर्गों में सर्वाधिक प्रयुक्त परसर्ग 'त' है। 'ते', 'ति' आदि इसी के रूपांतर हैं। इनका प्रयोग बहुत ही कम होता है। 'को', 'के', एवं 'पर' का प्रयोग और भी कम होता है।

संयुक्त परसर्गों को मुख्यत: ६ वर्गों में बांटा जा सकता है:

१. अधिकरण परसर्ग पर+कर्म परसर्ग त=पर त। पर् त, परे त, पे तो, पे त, प तो तथा प्रे त, प त, आदि इसी के रूपांतर हैं। इनमें 'पर त' एवं 'प त' का प्रयोग तो खूब होता है, किंतु शेष का बहुत ही कम।
२. अधिकरण परसर्ग म+कर्म परसर्ग त=म त। इसका प्रयोग भी बहुत ही कम होता है। यह कभी-कभी 'मि त' 'मि तई' आदि रूपों में भी मिलता है।
३. अधिकरण प्रत्यय अ+कर्म परसर्ग त=अ त। इसका भी प्रयोग बहुत कम होता है।
४. कर्म परसर्ग को+कर्म परसर्ग त=को त। इसका भी प्रयोग बहुत ही कम होता है।
५. कर्म परसर्ग के+कर्म परसर्ग त=के त। इसका भी प्रयोग बहुत ही कम होता है।
६. कर्म परसर्ग त+कर्म परसर्ग त=त त। इसके बीच में अवलंब शब्द स, सो आदि आते हैं। इसका प्रयोग भी कम ही मिलता है।

इस प्रकार 'त', 'पर त' तथा 'पि त' ही इस भाषा में कर्म कारक के प्रमुख परसर्ग हैं। कुछ के प्रयोग ये हैं:—

त—(१) उस् त पै तुरो ले के ओव (उसको भाई तेरा लेकर आवे)
(२) इस् त पाँचाँ न कान अ रकेयो (इसको बादशाह ने कान में रक्खा)

ते— पाँचाँ ते ले जा के (बादशाह को ले जा कर)

ति— रुटि ति ख लीनी (रोटी (को) खा ली)

को— अन् को पक के (अन्न (चावल, पुलाव) पका कर)

के— (१) यँ बैरक़् जिगि के ती, उगी जणो मरो दरकाँर इ (यह झंडा जिधर को गिरेगा, उधर ही हमें जाना दरकार है)

(२) पाँचाँ के निन ग्राँवइ । (बादशाह को नींद ग्राती है)

पर—वज़ीर् पर् पाँशाँ न बलाँयो । (वज़ीर को बादशाह ने बुलाया)

पर त—(१) बेट पर त बलयो । (बेटे को बुलाया)

(२) तुग़्रि गल पर न कर । (सच्ची बात को कर)

पर त— ति पर् त पाँचाँ त दे । (लड़की (को) बादशाह को दो)

परे त— कले परे त कटो । (सर को काटा)

प त— पयुन प त ले क ज । (भाइयों को लेकर जा)

प तो— हक प तो लुवै । (हक को लेता है)

म त— हत् म त पुगुड़ को । (हाथ को पकड़ कर)

को त— हत् को त बन्दियो । (हाथ को बांधा)

त त— चवाँल त स त पकयो । (चावल को पकाया)

ग्र त— मे मल् ग्र त दोंवै । (मैं माल (को) दूंगा)

ग्र—

जिस प्रकार नकारांत शब्दों के बाद कर्ता कारक के परसर्ग 'न' का रूप 'ग्र' हो जाता है, इसी प्रकार तकारांत शब्दों के बाद कर्म (ग्रथवा संप्रदान) कारक परसर्ग 'त' भी 'ग्र' हो जाता है ।

जैसे—

हतग्र (हाथ को); खतग्र (ख़त को)

दौलतग्र (दौलत को); ग्रमानतग्र (ग्रमानत को)

कर्म-परसर्ग का ग्रसामान्य प्रयोग

कभी-कभी विशेषणात्मक सर्वनाम तथा उसके विशेष्य दोनों के साथ परसर्ग का प्रयोग मिलता है, जबकि यथार्थतः केवल एक के साथ होना चाहिए :—

(१) इन् त सरुन् त तेल् म पुन् के बाँर कड़्यो ।

(इन (को) सरों को तेल में भुन कर बाहर काढ़ा)

(२) इन् त कलुन त खपन लि जा के दब़ियो ।

(इन (के) सरों को क़फ़न ले जाकर दबाया (=दफ़नाया)

(३) मैं त्रे त गुन त लंगे चूं ।

(मैं तेरे (को) गुनाह को माफ़ करता हूं)

'त्' व्यंजनयुक्त परसर्गों (त, ता, ते, ति) का प्रयोग ताजुज़्बेकी में कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, इन चारों कारकों में होता है । मुझे लगता है कि ग्राधुनिक भारतीय भाषाग्रों में त्-युक्त परसर्ग दो प्रकार के हैं । एक तो कर्म-संप्रदान के हैं ग्रौर दूसरे करण-अपादान के हैं । इन दोनों के ऐतिहासिक विकास भी अलग-ग्रलग हुए हैं । ग्रवधी ताईं, तईं; गढ़वाली तैं, तईं; सिंधी ताईं, तोईं, दे; पंजाबी ताईं; हरियानी तैं, ती; जिप्सी ते तथा ताजुज़्बेकी के कर्म-

संप्रदान के त आदि एक परंपरा में हैं, तो ब्रज-कनौजी ते, तें, तैं; अवधी बघेली ते, तें, मेवाती तैं; गढ़वाली ते; हरियानी तैं, ती, ते; कुमायूनी थें, थैं; दक्खिनी ते, तें, थे, तैं, पंजाबी ते; गुजराती थी; राजस्थानी तों, तु, ते थें तथा ताजुज़्बेकी करण-अपादान दूसरी परंपरा में।

कर्म-संप्रदान का संबंध बीम्स ताईं, तई पर विचार करते समय सं० 'स्थाने'[1] से मानते हैं। केलाग[2] भी यह व्युत्पत्ति देते हैं। मोनियर विलियम्स ने 'तक' का संबंध सं० 'दघ्न' से माना है तथा हार्नले[4] और उन्हीं के साथ केलाग[5] ने इसे सं० 'तरित' से विकसित कहा है। कर्म-संप्रदान—त् के भी इनसे संबद्ध होने की संभावना हो सकती है। मेरे विचार में सं० तरिते>तरिए> एतइ रूप में इसका विकास हुआ है।[6] अनुनासिकता अकारण आ गई है।

करण-अपादान त्-- का संबंध बीम्स[7] सं० अपादान विभक्ति—तः प्रा०—तो से मानते हैं। किंतु परसर्गों का विकास स्वतंत्र शब्दों से हुआ ज्ञात होता है, न कि विभक्ति से, अतः इसे स्वीकार करना कठिन है। हार्नली[8] तथा केलाग[9] सं० तरिते>प्रा० तरिए>तइए>ते रूप में इसे विकसित मानते हैं। चटर्जी[10] इसे सं० अन्तः+धि से जोड़ते हैं। मैं तेसितोरी[11] से सहमत हूँ और इसे भवन्तकः>अप० होन्तउ से व्युत्पन्न माना जा सकता है। अनुनासिकता 'न' के कारण तथा महाप्राणता ह के कारण है।

ब्रज कौं, कूं; कनौजी को; अवधी कहँ, कुँ, क; बुंदेली खाँ, खों; छत्तीसगढ़ी का; भोजपुरी के; मैथिली के, कें, कौं; जैपुरी कै, मेवाती कैं; मालवी के, खे; कुमायूनी कैं, कँ; गढ़वाली क, कैं, कूँ; हरियाणी कै; निमाड़ी क, ख; मगही के; सिन्धी खे; बंगाली के; उड़िया कू से ही संबद्ध ताजुज़्बेकी को के

---

१. कम्पप० ग्रैमर, भाग २ पृ० २६८
२. हिन्दी ग्रैमर, पृ० १३१।
३. संस्कृत ग्रैमर, पृ० ८०।
४. ग्रैमर, पृ० २२५।
५. हिन्दी ग्रैमर, पृष्ठ १३३।
६. हिन्दी भाषा, पृ० १६६।
७. कम्प० ग्रैमर, भाग २, पृ० २७३।
८. ग्रैमर पृ० २२५-६।
९. हिन्दी ग्रैमर, पृ० १३२।
१०. ओ० डी० बी० एल्०, पृ० ७५०-५१।
११. राजस्थानी, पृ० ७८।

हैं। ट्रंप[1] सं० कृतः>कितो>किश्रो, से इसे जोड़ते हैं। बीम्स,[2] हार्नली,[3] चटर्जी[4] आदि सं० कक्षं>कखं>काखं>काहं>कहं>कहुं>कौं आदि रूप में इन्हें विकसित मानते हैं। कैल्डवेल[5] इसे द्रविड़ 'कु' से जोड़ने के पक्ष में थे। मेरे विचार में इनका विकास 'कृत' से ही है।[6]

३. ३ करण

हिंदी की तरह ही ताजुज़्बेकी बोली में भी करण कारक का प्रयोग अधिकतर सपरसर्ग ही होता है। करण कारक के परसर्ग हैं—

मूल परसर्ग—त, ते, से, चे, नल, नल्, नाल्, लन, लन्, नन, नन्, नर्, नार।

संयुक्त परसर्ग—पर त, परे त, प त, प ते, पर् नल्, परे नल, पर कुल त, परे कुल त, परे कुल, पर कुल, नल् त, कुल् त।

मूलपरसर्गों में मुख्य 'त' तथा 'नल' हैं। शेष का प्रयोग वहुत कम मिलता है। 'ते' 'त' का रूपांतर है। 'से' का ही रूपांतर चे है। यह कभी-कभी 'जे' रूप में भी मिलता है। इस बोली में 'स्' या 'श्' से 'च्', एवं च् से 'स्' होने के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं। इसी प्रकार ल-न-र भी आपस में बदलते रहते हैं। इस, तथा अंत्य अ के लोप के कारण नल के नल्, लन, लन्, नन, नन्, नर् आदि रूपांतर मिलते हैं।

संयुक्त परसर्गों को वर्गों में रखा जा सकता है :

(१) अधिकरण परसर्ग पर्+करण परसर्ग त=पर् त। परे त, प त, प ते इसी के रूपांतर हैं। इन सभी के प्रयोग मिलते हैं, किंतु 'त' एवं 'नल' से कम।

(२) अधिकरण परसर्ग पर्+करण परसर्ग नल्=पर् नल्। 'परे नल' इसी का रूपांतर है। 'प नल', 'प नर', पर् नल', 'प नन', 'परि लन' आदि इसके कई अन्य रूप भी कभी-कभी सुनाई पड़ते हैं। 'से' के अतिरिक्त 'के साथ' (with) अर्थ में भी यह प्रयुक्त होता है।

(३) अधिकरण परसर्ग पर+पार्श्वार्थी कुल=पर कुल। 'परे कुल' इसी

---

१. सिंधी ग्रैमर, पृ० ११५।

२. कम्प० ग्रैमर, भाग २, पृ० २५६-२५७।

३. ग्रैमर, पृ० ३७५।

४. ओ० डी० बी० एल० पृ० ७६०।

५. ड्रविडियन, पृ० २७९।

६. हिन्दी भाषा, पृ० १६८।

का रूपांतर है। 'पर कुल' 'परि कुल' तथा 'पर् कुल्' आदि रूपों में भी यह मिलता है। 'से' के अतिरिक्त 'के पास' (at) तथा 'के साथ' (with) आदि अन्य अर्थों में भी इसका प्रयोग होता है।

(४) अधिकरण परसर्ग पर+पाश्वर्थी कुल+करण परसर्ग त=पर कुल त। 'परे कुल त' इसी का रूपांतर है। इनका प्रयोग बहुत कम होता है।

(५) करण परसर्ग नल+करण परसर्ग त=नल त। इसका प्रयोग भी अधिक नहीं होता।

(६) पाश्वर्थी कुल+करण परसर्ग त=कुल त।

करण परसर्गों के प्रयोग के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं :

त—(१) पतिजो न चच त कियो।
(भतीजे ने चचा से कहा)

(२) कोड़े त कियो कि पाँणि पि।
(घोड़े से कहा कि पानी पी)

(३) बुन्दुख त मरियो। (बंदूक से मारा)

ते— वज़ीर न पाँशाँ ते केयो।
(वज़ीर ने बादशाह से कहा)

से— तपंच से मर सट्यो।
(तपंचे से मार डाला)

चे— में पेर चे चलुइ।
(मैं पैर से चलता हूँ)

नल— नल्, लन, लन्, नन, नन्, नर् रूप में भी यह परसर्ग मिलता है।

(१) सिख नल मरियो।
(सीख से मारा)

(२) दन नल पुगुर्‌यो।
(दाँत से पकड़ा)

(३) मरे नल गल करइ।
(मेरे साथ बात करेगी)

(४) इस कम नल कम तरो न वा।
(इस काम से तुझे काम नहीं)।

नन— ओ म्रे न दोस हो गिया।
(वह मेरा दोस्त हो गया)

नर—(१) पख़्त नर बिय त मुस्तक़्म कॉर्‌यो ।
(रूई से द्वार को मज़बूत किया)
(२) मुंडो क़ॉर नर गियो पॉशॉं कुल ।
(लड़का ग़ुस्से से गया बादशाह के पास)

'नल' या इसके अन्य रूपांतर परसर्ग (Postposition) के रूप में तो आते ही हैं, कभी-कभी ये पूर्व सर्ग (Preposition) के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

ओ नल तरे गल करइ ।
(वह तुझसे बात करेगी)
पर् त—बोड़्ड़े द पर् त कियो ।
(बड़े भाई से कहा)
परे त—बिश्कले पै परे त कियो ।
(बिचले भाई से कहा)
प त—दशमॉल प त अंक मलेग्रो
(रूमाल से आँख मली)
प ते—अयि प ते कियो ।
(माँ से कहा)
परे नल—हिक परे नल (हृदय से)
परे कुल् त—अब फ्रे कुल् त पिश्न कर्‌यो
(अब्बा से प्रश्न किया)
परे कुल—पर्युँन परे कुल गल् न कर्‌यो ।
(भाईयों से बात न की)
नल् त—उस नल् त काम नि हुवै ।
(उससे काम न होगा)
कुल् त—अन्मुन कुल् त पिश्न कर्‌यो ।
(आदमियों से प्रश्न किया)

उपर्युक्त परसर्गों में प्रथम व्यंजन से अंत होने वाला कोई शब्द यदि उनके पहले आता है तो परसर्ग से वह व्यंजन निकल जाता है। जैसे—

दस्त अ (हाथ से)
रत ए (रात से)

'त' 'ते' की व्युत्पत्ति पर कर्म के अंतर्गत विचार किया जा चुका है। य (नृत्य>नाच, अद्य>आज, संध्या>साँझ) के प्रभाव से त, द, ध क्रमशः च, ज, झ हो जाते हैं। य ए सजातीय हैं। इस तरह 'चे', 'ते' का ही विकास है।

नल, लन, नन, नार आदि रूपों के केन्द्र में 'नाल' है। पंजाबी तथा लहँदा

में भी यह 'नाल' रूप में ही प्रयुक्त होता है। एक व्यक्तिगत पत्र में डा० सिद्धेश्वर वर्मा ने संस्कृत की तृतीया विभक्ति 'ना' या अपभ्रंश णालिआ (एक यंत्र; अंग्रेज़ी 'चैनेल' के समान यह शब्द 'माध्यम' के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा होगा) से इसके संबद्ध होने का संकेत किया था, किंतु इन दोनों से ही मेरी विनम्र असहमति है। इसकी तुलना में सं० 'नाल' से इसके संबद्ध होने की संभावना अधिक हो सकती है।

से की व्युत्पत्ति के संबंध में भी कई मत हैं। मेरे विचार में सं० संगे (>सँए>सैं>से) से यह विकसित हुआ है।[1] 'से' परिनिष्ठित हिन्दी के अतिरिक्त ब्रज, कनौजी, बुन्देली, कौरवी, बाँगरू, दक्खिनी, अवधी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मगही, मैथिली राजस्थानी आदि में भी मिलता है।

३. ४ संप्रदान

ताजुज़्बेकी में भी हिंदी ही की तरह कर्म कारक के परसर्ग ही, संप्रदान कारक में भी प्रयुक्त होते हैं, और यह कारक प्रायः मात्र सपरसर्ग ही होता है।

ताजुज़्बेकी के प्रमुख संप्रदान-परसर्ग निम्नांकित हैं :

मूल परसर्ग—त, ति, को

संयुक्त परसर्ग—पर त, परे त, तत

उदाहरणार्थ :—

त— (१) जतकुन न चिचि दिनेओ।
(लड़कों को थन दिया)

(२) इस देव न खत कर के मुंडे त दिनेओ।
(इस देव ने खत लिखकर लड़के को दिया)

(३) काग़ज़ त देव त दिनेओ।
(काग़ज देव को दिया)

ति— एक ति बि रन कर के न दीने छो।
(एक को भी विवाह करके नहीं दिया था)

को— ये को दिनेओ।
(इसी को दिया)

पर त—उस पर त दे।

---

१. हिन्दी भाषा, पृ० १७०।

(उसे दे)

परे त—अव्वल कुते परे त दे ।

(पहले कुत्ते को दे)

त त —केड़क त स त रन कर के दिनि ?

(कितनों को विवाह करके दिया)

'त', 'ति', 'को' की व्युत्पत्ति के लिए पीछे कर्म कारक देखिए ।

३. ५ अपादान

हिंदी की ही भांति ताजुज़्बेकी में भी अपादान कारक प्रायः सपरसर्ग ही होता है । इस कारक के प्रमुख परसर्ग निम्नांकित हैं :—

मूल परसर्ग—त, ते, से, चे, जे

संयुक्त परसर्ग—पर त, प त, परे त, परि त, पर से~चे~ज, म त, में त, मित, म से~चे~ज, परे म त, कुल ते ।

मूल में 'त' का प्रयोग सर्वाधिक होता है । इसका एक अन्य रूप 'ते' भी मिलता है । जे एवं चे अधिक नहीं मिलते ।

संयुक्त परसर्ग को निम्नांकित वर्गों में रखा जा सकता है :—

१. अधिकरण परसर्ग पर+अपादान परसर्ग त=पर त । 'प त', 'परे त' तथा 'परि त' इसी के रूपांतर हैं ।
२. अधिकरण परसर्ग पर+अपादान परसर्ग से=पर से । 'पर चे' या 'पर जे' इसी के रूपांतर हैं ।
३. अधिकरण परसर्ग म+अपादान परसर्ग त=म त । 'में त', 'मि त' इसी से संबद्ध हैं ।
४. अधिकरण परसर्ग म+अपादान परसर्ग से=म से । 'म चे' 'म जे' इसी के रूपांतर हैं ।
५. अधिकरण परसर्ग परे+अधिकरण परसर्ग म+अपादान परसर्ग त= परे म त । इसका प्रयोग अधिक नहीं होता । 'पर म त' आदि कुछ अन्य रूपांतर भी इसके मिलते हैं ।

कुछ उदाहरण हैं :—

त— (१) पेड़ त पत गिरयो ।

(पेड़ से पत्ता गिरा)

(२) पश त शवकुन होयो ।

(पीछे से शोर हुआ)

(३) उस जाँग त बकरि त ले के ले गयो ।

(उस जगह से बकरी को ले कर ले गया)

से— कोड़्ड़े से गिर गयो।

(घोड़े से गिर गया)

चे— मे ताँजिकिस्ताँन चे आया।

(मैं ताजिकिस्तान से आया)

जे— पड़ जे दरियाँ निकिलो।

(पहाड़ से नदी निकली)

पर त—दरख्त पर त गिर्यो।

(दरख्त पर से गिरा)

प त —कोड़्ड़े प त गिर्यो।

(घोड़े पर से गिरा)।

म त —कर म त अन्मि निकिलइ।

(घर में से आदमी निकलता है)

मि त —पुन्दुक मि त गुल निकिलइ।

(बंदूक में से गोली निकलती है)

परे म त—कुम परे म त बर न काड़।

(कपड़े के भीतर से बाहर न काढ़)

व्युत्पत्तियों पर करण के प्रसंग में विचार किया जा चुका है। 'जे' चे का विकास है।

३. ६ संबंध

इस बोली में संबंध कारक के परसर्ग निम्नांकित हैं :

मूल परसर्ग—को, कि, के, क, तो, ति, ते, त

संयुक्त परसर्ग—पर के, परे को, परे के, परि को, परे क, म क, म को, म कि, म के।

ताजुज़्बेकी में संबंध कारक के सर्वाधिक प्रयुक्त परसर्ग 'को कि के' हैं। इनके विभिन्न प्रयोगों को देखने से पता चलता है कि मूलतः इस बोली में हिंदी 'का की के' की तरह ही इनका प्रयोग होता था। अर्थात्

को—पु० एक० अविकारी रूप

(१) कोलखोज को रईस अयो।

(कलखोज़ का प्रधान आया)

(२) पइ मरे को हत सड़ गि।

(मेरे भाई का हाथ जल गया)

कि—स्त्री०

(१) पाँचाँ कि दो रनि छि।

(बादशाह की दो रानियाँ थीं)

(२) वज़ीर कि ति न कियो।

(वज़ीर की लड़की ने कहा)

के—पु० एक० विकारी,

(१) पदवन बाँइ के कर ग्र जो वह।

(चरावाहा अमीर के घर जाता है)

(२) उँट के उफ़र लत के चले गे।

(ऊँट के ऊपर लाद कर चले गए)

पु० बहु०

पाँशाँ के जतकुन न कियो।

(बादशाह के लड़कों ने कहा)

किंतु बाद में अन्य व्याकरणिक नियमों की तरह ही इसमें भी गड़बड़ी हो गई, और अब इनके प्रयोग में लिंग, वचन एवं विकारी-अविकारी रूप की ग़लतियाँ प्रायः मिलती हैं। उदाहरणार्थ :

को—पु० बहु० अविकारी

पाँचाँ को मुंडे लिकरिये।

(बादशाह के लड़के निकले)

—स्त्री०

बिट्य को अंगूठी

(बिटिया की अंगूठी)

—पु० एक० विकारी

लकरि को कोड़े त चड़ के अये।

(लकड़ी के घोड़े पर चढ़ कर आए)

—पु० बहु० विकारी

उस् को जतकुन न कियो।

(उसके लड़कों ने कहा)

कि—पु०

इसि खतर इस कि न त मिंज गुल रके चो।

(इसी खातिर इसका नाम (को) मैंने गुल रखा था)

के—स्त्री०

पाँचों के दो रनि न ज के।

(बादशाह की दोनों रानियों ने जाकर)

क, तो, ति, ते, त के प्रयोग अधिक नहीं मिलते। कुछ उदाहरण हैं :

क—कर क चुल
(घर का चूल्हा)

तो—उस तो न
(उसका नाम)

ते—पाँचाँ हम इस ते हेक निकिल के।
(बादशाह भी इस के आगे निकल कर)

त—दलाल न खोत त मख्त करो।
(दलाल ने गदहे की तारीफ़ की)

संयुक्त परसर्ग दो प्रकार के हैं :

(क) अधिकरण परसर्ग 'पर'+संबंध परसर्ग 'को' जैसे 'पर को' आदि। 'परे को', 'परि को' आदि इसी के रूपांतर हैं।

(ख) अधिकरण परसर्ग 'म'+संबंध परसर्ग 'को' : 'म को'। 'म क' 'म कि' 'म के' आदि इसी के रूपांतर हैं।

कुछ उदाहरण हैं :—

परि कि—रन न जतकुन त चिचि परि कि बिश्कर म निपिट्यो।
(स्त्री ने लड़कों को स्तन के बीच में लिपटाया)

परे के—हम अब परे के शर म जोंवइ।
(हम अब्बा के शहर में जाएँगे)

परि को—पाँचाँ न रन परि को न त गुल् रके चो।
(बादशाह ने स्त्री के नाम को गुल रखा था, अर्थात् बादशाह ने स्त्री का नाम गुल रखा था।)

परे क —अब परे क वसियत।
(अब्बा की वसीयत)

म क —कर म क चिज़।
(घर (में) की चीज़)

फ़ारसी की संबंधदर्शी इज़ाफ़त इ, ए या अ भी ताजुज़्बेकी में मिलती हैं। यह स्पष्ट ही ताजिक प्रभाव है। दान-अ-ज़र्दालू (ज़र्दालू का दाना), बुलबुल-इ-गुया (बात करने की बुलबुल अर्थात् बात करने वाली बुलबुल) आदि प्रयोग इसी प्रकार के हैं।

संबंध कारक के उपर्युक्त परसर्गों में 'को' तथा 'तो' ही मूल है। शेष 'कि', 'के', 'ति', 'ते' आदि उन्हीं के रूपांतर हैं।

'को' ब्रज कौ, को, कों; कनौजी को; बुन्देली कौ, खौ; निमाड़ी को, का; कौरवी का; बाँगरू का; दक्खिनी का, केर, केरा; अवधि कर, केर, केरा,

क; छत्तीसगढ़ी के, राजस्थानी कउ, का, केर, कौ; पहाड़ी का, को; भोज० क; मैथिली कर, केर आदि से संबद्ध है। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में संबंध के परसर्ग (पंज० दा, सिंधी जो, गुजराती नो, मराठी चा, बंगाली एर, उड़िया अर) 'क' वाले नहीं हैं। इस तरह 'क' परसर्ग इस बात का बहुत बड़ा प्रमाण है कि 'ताजुज़्बेकी' हिन्दी बोली ही है।

संबंध कारक के इन क-युक्त परसर्गों का संबंध यों तो सं० 'इक' (जो कायिक, मानसिक आदि में है), सं० क (जो रोचक, मद्रक में है), सं० कीय (जो राजकीय में है) आदि से भी जोड़ा है, किंतु अधिक समर्थित मत दो हैं। वेबर, लासेन, पिशेल इसका संबंध सं० 'कार्य' से मानते हैं,[1] तो हार्नले, बीम्स आदि सं० 'कृत' से।[2] डा० चटर्जी[3] इन परसर्गों में 'केर' और मिलते-जुलते परसर्गों का संबंध 'कार्य' से मानते हैं, और शेष का 'कृत' से। मेरे विचार में[4] सभी का संबंध 'कृत' से है :

(१) कृतः>कदो>कओ>को, का।

(२) कृत+कः>केरको>केरओ>केरअ>केरा, केर, कर।

'तो' तथा उसके रूपांतरों का प्रयोग ताजुज़्बेकी में मिलता तो है, किंतु जैसा कि कहा जा चुका है, अधिक नहीं। संबंधकारकीय 'तो' तथा उसके सिंधी संदो, कश्मीरी 'संद', 'सुंद', 'हुंद', पंजाबी दा-दे-दी, लहँदी ड़ा-ड़े-ड़ी, दा-दे-दी, पश्तो दा, द से संबद्ध ज्ञात होते हैं। ये 'त' वाले रूप ताजुज़्बेकी में प्रभाव हो सकते हैं या इसके अपने रूप। इनकी व्युत्पत्ति विवादास्पद है। डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा ने इस प्रसंग में एक व्यक्तिगत पत्र में सं० दाय (विभाग) या प्राकृत 'दइअ' (रक्षित) का संकेत करने की कृपा की थी किंतु, इनसे उपर्युक्त रूपों के विकास की संभावना नहीं है। मार्गेन्स्टर्न (Morgenstierne) ने अपने पश्तो कोश (An Etymological Vocabulary of Pashto 1927) में पश्तो 'द' पर विचार करते समय पहले प्राचीन ईरानी प्रत्यय 'त्य' से इसे जोड़ने का संकेत किया है किंतु अंत में इसे संभव न मान ईरानी शब्द 'तर' से इसके विकास को अधिक उचित माना है, किंतु इससे भी उपर्युक्त सारे रूपों को नहीं जोड़ा जा सकता। मुझे लगता है कि ये रूप सं० अस् धातु के रूप 'सन्तः' या इरानी एवं दरद में उसके समानांतर रूपों से संबद्ध हैं। प्राकृतों में 'सन्तो' 'सुन्तो' इसी से विकसित हैं जिनसे सन्दो, सन्द, सुंद, हुन्द सहज ही

---

१. कम्प० ग्रैम०, भाग २, पृ० २८५।
२. वही, पृ० २८५-८६।
३. ओ० डी० बी० एल०, पैरा ५०३।
४. हिन्दी भाषा, पृ० १७२।

निकल सकते हैं। 'दा' या उससे संबद्ध रूप सन्तक: (>सन्तको>सन्तओ> सन्दअ>सन्दा) से व्युत्पन्न ज्ञात होते हैं। इस प्रकार ताजुज़्बेकी 'तो' सं० सन्तः से संबद्ध है।

३. ७ अधिकरण

ताजुज़्बेकी में अधिकरण कारक का प्रयोग हिंदी की तरह ही प्रमुखतः सपरसर्ग रूप में होता है, किंतु कुछ प्रयोग अपरसर्ग के भी मिल जाते हैं। जैसे :—

पाँचाँ न गिलिम जाँग बचयो।

(बादशाह ने क़ालीन जगह पर बिछाया)

अधिकरण के परसर्ग निम्नांकित हैं :

मूल परसर्ग एवं विभक्तियाँ—म, मे, में, मो, मि, म्; पर, पर्, परे, परि, प; अ, इ, ए, आँ, उफ़र, फ़ेर; त; बर।

संयुक्त परसर्ग—पर म, परे म, पर् म; उफ़र म; को उफ़र, को फ़ेर, के उफ़र; अ परे, अ पर; अ म, ए पर, प त पर

मूल परसर्गों में म, मि, म्, मो, 'मे' के ही रूपांतर हैं। इनमें सर्वाधिक प्रयोग 'म' का होता है। मे का उससे कम तथा शेष का बहुत ही कम। पर, परे, परि, प 'पर' से संबद्ध हैं। इनमें 'पर' का प्रयोग सर्वाधिक होता है। परे का उससे कम तथा शेष का और कम। अ, इ, ए, आँ आपस में संबद्ध हैं। इनमें 'अ' का प्रयोग सर्वाधिक होता है। वस्तुतः इन्हें परसर्ग न कहकर विभक्ति कहना उचित है। उफ़र और फ़ेर एक ही शब्द के रूपांतर हैं। दोनों ही का प्रयोग अधिक नहीं होता। त और बर तो बहुत ही कम प्रयुक्त होते हैं।

संयुक्त परसर्गों को निम्नांकित वर्गों में रखा जा सकता है :—

अधिकरण परसर्ग पर+अधिकरण परसर्ग म=पर म। 'परे म', 'पर् म' इसी के रूपांतर हैं। इन दोनों का प्रयोग 'पर म' से कम होता है। अंत्य का और भी कम।

अधिकरण परसर्ग या परसर्गवत प्रयुक्त अव्यय उफ़र+अधिकरण। परसर्ग म=उफ़र म।

इसका भी प्रयोग बहुत अधिक नहीं होता।

संबंध परसर्ग 'को'+परसर्गवत प्रयुक्त अव्यय 'उफ़र'=को उफ़र। 'को फ़ेर' 'के उफ़र' आदि भी इसके रूपांतर हैं।

अधिकरण विभक्ति 'अ'+अधिकरण परसर्ग 'पर'=अ पर। 'अ परे' इसी का रूपांतर है। इसका प्रयोग पर्याप्त होता है। 'ए पर' भी इसी से

संबंधित है।

अधिकरण विभक्ति अ+अधिकरण परसर्ग म=अ म।, यह अधिक नहीं मिलता।

अधिकरण परसर्ग प+कर्म परसर्ग त+अधिकरण परसर्ग पर=प तपर्। इसका प्रयोग बहुत ही कम मिलता है।

अधिकरण परसर्ग प्रि+नि (में)+ता। जैसे: घर प्रि मि ता=घर में से। यह भी बहुत अधिक नहीं मिलता।

कुछ उदाहरण हैं :—

म—(१) पाँचाँ सइज़ख़ाने म गियो।
(बादशाह सईसख़ाने में गया)

(२) उस म बे रन कुब चो।
(उसमें भी स्त्री ने कहा था)

(३) शिकार म जोब छो।
(शिकाँर में गया था)

मे—(१) कुर्बन तिरे जोन में।
(कुर्बान तेरी जान पर)

(२) ओ कल् बाँज़ाँर में चो।
(वह कल बाज़ार में था)

(३) वख़्तर माँज में उट्यो।
(वख़्त नमाज़ में उठा)

मि—कर् मि क इ?
(घर में क्या हैं?)

म्—असमन म परि छि।
(आसमान में परी थी)

मो—मुरि मो गियो।
(मोरी में गया)

पर—(१) एक दरख़्त पर चरो।
(एक दरख़त पर चढ़ा)

(२) मरे पर मेहमान हुवे।
(मेरे मेहमान बनोगे?)

पर्—मोंडे पर उट के।
(मोढ़े पर उठा कर)

परे—पच परे देख्यो।
(पीछे (पर) देखा)

परि— मंजि परि बेटो ।
(चारपाई पर बैठा)

• प— म प नि
(मुझ पर (मेरे पास) नहीं है)

अ— (१) ए अन्मि शिकाँर अ गे ।
(ये आदमी शिकार में गए)
(२) पेर तल अ बगयो ।
(पैर तले फेंका)
(३) ले ज के बज़र् अ बेच शितो ।
(ले जाकर बाज़ार में बेच दिया)
(४) असमाँन अ देव उ परि छि ।
(आसमान में देव और परि हैं)

इ— दुम इ स त बंदियो ।
(दुम में स्त्री को बाँधा)

ए— ओ कर ए गियो ।
(वह घर (में, पर) गया)

आँ— फ़लाँन् जाँग् आँ बुल्बुल्-इ-गुयाँ छे ।
(फ़लाँ जगह में बुलबुले गोया है)

उफ़र— उँट उफ़र लत् के चले गे ।
(ऊँट पर लाद कर चले गए)

फ़ेर— कोड़्ड़े फ़ेर अयो ।
(घोड़े पर आया)

त— लकरि को कोड़े त चड़के अये ।
(लकड़ी के घोड़े पर चढ़ कर आए)

बर— बर् पदर ताँरो नलत होव ।
(तुम्हारे बापों पर लानत हो)

'बर' ताजिक शब्द है और यह पूर्वसर्ग रूप में ही प्रायः आता है ।

पर म— कर पर म ले कि चल गो ।
(घर पर ले कर चला गया)

परे म— सख् परे म पणि लोवइ ।
(सींग पर पानी लाती है)

पर म— पाँशाँ मुर् कि कर पर म अयो ।
(बादशाह मुड़ कर घर पर आया)

उफ़र म— बेल त लल कर कि उफ़र म चरो ।

(बेलचे को लाल करके ऊपर चढ़ा)

को फ़ेर— मंजि को फ़ेर तु क बेग़म पड़ि ।
(चारपाई के ऊपर तू क्या बेग़म पड़ी है)

के उफ़र— चिलम के उफ़र ।
(चिलम के ऊपर)

अ परे— (१) कॉंर अ परे ले गियो ।
(घर पर ले गया)
(२) शमशेर त हत अ परे लिनेओ ।
(शमशेर को हाथ में ले लिया)

अ पर— पेड़ अ पर
(पेड़ पर)

अ म— कर अ म
(घर में)

ए पर— फ़ेर कर ए पर अयो ।
(फिर घर पर आया)

प त पर— मोंडे प त पर चुक के
(मोढ़े पर उठाकर)

हिंदी में 'मुझ पर' के स्थान पर 'मेरे पर' या 'मेरे ऊपर' का प्रयोग भी चलता है । उसी प्रकार ताजुज़्बेकी में भी 'म पर' (मुझ पर) के स्थान पर 'मुरो उफ़र' (मेरे ऊपर) का प्रयोग भी होता है :

मुरो उफ़र चर ।
(मेरे ऊपर चढ़ो)

'में' हिन्दी की प्राय: सभी बोलियों में मिलता है । ताजुज़्बेकी में इसके मे, मि, म आदि कई रूपांतर हैं । सं० मध्ये>प्रा० मज्झे>मज्झि>महि>मइं>मैं>में रूप में इसका विकास हुआ है । 'पर' भी इसी रूप में या कुछ परिवर्तन के साथ सभी हिन्दी बोलियों में है । कुछ लोगों ने इसे सं० परे से जोड़ा है,[1] किंतु मेरे विचार में सं० उपरि से इसका विकास अधिक संभावित है ।[2] सं० उपरि>प्रा० उप्परि>उप्पर>ऊपर>पर । उफ़र, परि, इसी से संबद्ध है । ए, इ, अ, आँ, सं० सप्तमी ए से विकसित ज्ञात होते हैं ।

---

१. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास—उ० ना० तिवारी, २रा संस्करण, पृ० ४३३ ।

२. हिन्दी भाषा, पृ० १७३ ।

'त' जिप्सी त, आसामी, बंगाली ते, पंजाबी ते है। बीम्स[1] इसे सं० 'तः' (अपादान) से तथा भंडारकर[2] प्रा० तहिं से जोड़ने के पक्ष में हैं। मैं इस संबंध में डा० चटर्जी से सहमत हूँ, जिनके अनुसार यह सं० 'अन्तः' से संबद्ध है।[3]

३. ८ संबोधन

हिंदी की भाँति ही ताजुज़्बेकी में भी संबोधन कारक का प्रयोग अपूर्वसर्ग एवं सपूर्वसर्ग दोनों ही प्रकार का होता है। सम्बोधन में परसर्ग का प्रयोग नहीं होता।

अपूर्वसर्ग—

(१) उस्त ! मरे दन त पोलॉद कर।
(उस्ताद ! मेरे दाँत को फ़ौलाद कर)

(२) पॉशॉ, सेलम् अलेइकुम
(बादशाह ! सलाम अलयक़म)

'ओ' 'ए' 'ऐ' और 'अ' का संबोधन के पूर्वसर्ग रूप में प्रयोग होता है। इनमें अधिक प्रयोग प्रथम दो का ही मिलता है। कुछ उदाहरण हैं :—

ओ— (१) ओ पै इँय चलि बिट्य छि।
(ओ भाई, यहाँ चालिस बिटियाँ हैं)
(२) ओ पैओ कैनि अब मरो·········)
(ओ भाइयो ! क्यों हमारे अब्बा ने·········)

ए— (१) ए बेट अगर मे मर गो
(ऐ बेटो ! अगर मैं मर गया)
(२) ए अयि म त दे।
(ए आई (माँ) ! मुझको दे)

ऐ— ऐ बेट ! इन्यँ अ
(ऐ बेटा ! यहाँ आ)

अ— अ पेण तु कैनि गल नि करतॉ ?
(ऐ बहिन ! तू क्यों बात नहीं करती ?)

'अ' के अतिरिक्त अन्य सभी, हिंदी की प्रायः सभी बोलियों में व्यवहृत

---

१. कम्प० ग्रैमर, भाग २, पृ० २९५।
२. विलसन फ़िलालॉजिकल लेक्चर्स, पृ० २४८।
३. ओ० डी० बी० एल०, पृ० ७५०।

होते हैं। ऐ, ए सं० हे से विकसित हैं, तो ओ, अ सं० भो से।

३. ६ परसर्गवत् प्रयुक्त कुछ अन्य शब्द

(१) पच—'पीछे' 'के पीछे'। इसे 'पश', 'पश्' या 'पस' भी कहते हैं।

(१) मैं बुल्बुल्-इ-गुयाँ पच अये छूँ।
(मैं बुलबुले गोया के पीछे आया हूँ)

(२) बुल्बुल्-इ-गुयाँ पच केतणे अन्मि मर गे।
(बुलबुले गोया के पीछे कितने आदमी मर गए)

यह सं० 'पश्च' से संबद्ध है।

(२) कुल, कुला—'पास' 'के पास'। मूलतः यह सं० 'कूल' (किनारा) है।

(१) अे कुल अ ज।
(मेरे पास आ जा)

(२) अब कुल
(अब्बा के पास)

(३) जतकुन कुला
(लड़कों के पास)

(३) लब्, लब, लबा —'किनारा' 'पास' 'ओर' 'की तरफ़'। यह फ़ा० लब से विकसित है। ताजुज़्बेकी में ताजिक भाषा से आया है। इसे लप् लेब भी कहते हैं।

य बेरक् हुन्दुस्तान लब तेपड़ गि।
(यह झंडा हिंदुस्तान की तरफ़ गिर गया)

तिरे लब गियो।
(तुम्हारे पास गया)

(४) ग़म् ग़मा—वास्ते, लिए, पास। यह फ़ारसी है।

(१) बोसरो उस त ग़म ल्यओ
(बहुत सारा उसके पास लाया)

इन ग़म देकले
(इन के पास भेजा)

अे ग़मा
(मेरे लिए)

(५) हेक—आगे, सामने, के सामने। इसका संबंध सं० अग्र से ज्ञात होता है।

अब मर हेक तर्‌यो।
(मेरे अब्बा के आगे धरा)

(६) तल—नीचे । सं० तल

पेर तल गिलिम ऐ ।

(पैर के नीचे क़ालीन है)

(८) ले, ल—लिए, के लिए, वास्ते, तक । हि० लिए<सं० लग्ने ।

मे कले ले अये छो ।

(मैं सिरों के लिए आया हूँ)

पॉचॉ ले खबर तक्यो ।

(बादशाह तक खबरें पहुँची)

(९) खतर्, खतर—लिए, वास्ते, खातिर । अर० खातिर ।

तिज कै खतर मरि

(तूने किस लिए मारा)

(१०) तइ, त—तक । (सं० यथा>) ता+(लग्न>) लग>तक>तअ> तय>तै ।

तरे अणे तै ।

(तुम्हारे आने तक)

(११) मरे—मारे, कारण । हि० मारे । सं० मारितेन से संबद्ध है ।

इस रत् अ बोड़्ड़ो द दर के मरे कबर परे न गियो ।

(इस रात में बड़ा भाई डर के मारे क़ब्र पर नहीं गया)

(१२) वसे—वास्ते, लिए । हि० वास्ते<अरबी वासितः ।

एक दिनोयो बॉइ न मेमोन वसे अन पकयो ।

(एक दिन अमीर ने मेहमान के वास्ते अन्न पकाया)

(१३) तुनि—पास । अव० तन<सं० तनु ।

स तुनि

(रानी के पास)

(१४) तल—पास । सं० तल ।

पॉचॉ तल

(बादशाह के पास)

(१५) ले—तक । स० लग्न ।

पॉचॉ तक खबर तक्यो ।

(बादशाह तक खबर गई)

३. १० कुछ अन्य संयुक्त परसर्ग

(१) लब अ—'ओर' 'तरफ़' । 'लब' फ़ा० शब्द है । इस भाषा में ताजिक से

आया है। 'अ' अधिकरण विभक्ति है।

अे लब अ कर।

(मेरे ओर कर)

(२) लब त—'ओर से'। यह 'ल प त' रूप में भी मिलता है।

कुब्ले लप त पगुड़इ।

(क़िब्ले की तरफ़ से पकड़ता है)

(३) परे पच—'के पीछे', 'पीछे'। 'परे' अधिकरण परसर्ग। पच सं० पश्च> प्रा० पच्च। 'परे पच्च' के 'परे पश' 'परि पच' आदि कई अन्य रूपांतर भी मिलते हैं।

रन परे पच निकिलो

(स्त्री के पीछे निकले)

(४) कल ते—'से'।

अयि कुल ते हक प तो लुवइ।

(माँ से हक को लेता है)

सर्वनाम

ताजुज़्बेकी में पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक तथा निजवाचक का प्रयोग होता है।

(१) पुरुषवाचक

उत्तम पुरुष

एकवचन	बहुवचन
कर्ता—	
अपरसर्ग—मे, मि, म, मन्	हम्
सपरसर्ग—मिंज, मिज, मिज्य, मिन्य, मिय	हम् न
कर्म-संप्रदान— म त	हम् त
मरे त	
करण-अपादान— म त	हम त
संबंध—पु०—मुरो,	मरो, मर्, मॉरो, मर्य
पु० बहु० तथा विकारी—मिरे	मरे, म्रे, मर
स्त्री०—मिरि, म्रि	मरि
अधिकरण—म म	हम् म
म पर	हम् पर
मरे पर	

उपर्युक्त रूपों में मे, मि, म वही हैं जो हिंदी में तथा उसकी विभिन्न बोलियों में मैं, में, मइँ, मयँ आदि रूपों में मिलते हैं। जिप्सी मे, म, मराठी मी, बंगाली मइँ, असमिया मइ, सिंधी मुँ, पंजाबी मैं, गुजराती में आदि भी तुलनीय हैं। हिंदी ही की तरह ताजुज़्बेकी के भी इन रूपों का संबंध सं० मया से है : सं० मया > पा० मया > प्रा० मइ > अप० मइ > मे, मि, म। विकारी

रूप में प्रयुक्त 'म' भी यही है।

'मन्' फ़ारसी का रूप है। ताजिक में भी यही प्रयुक्त होता है। ताजुज़्बेकी में यह ताजिक से ही आया है।

हिंदी मैंने के स्थान पर ताजुज़्बेकी में मिंज, मिज, मिज्य, मिन्य, मिय का प्रयोग होता है। इसी प्रकार 'तूने' के लिए तिंज, तिज, तिज्य, तिन्य, त्रिय आदि आते हैं। भारतीय आर्य भाषाओं में इन रूपों से मिलते-जुलते रूप केवल पश्चिमी पहाड़ी की चमेआली और काँगड़ी बोलियों में मिंजो, तिंजो रूप में मुझे मिले हैं। इन दोनों का संबंध वैदिक संस्कृत के संप्रदान रूप 'मह्य' 'तुह्य' से ज्ञात होता है। मह्य>प्रा० *मिज्झ (य के कारण इ)>मिंज अप० मिंजु>मिंजो; तुह्य>प्रा० तुज्झ>तिज (मिंज के सादृश्य पर)>अप० तिंजु>तिंजो। ताजुज़्बेकी रूप भी इन्हीं से संबद्ध हैं। चमेआली में तो अब भी इनका प्रयोग संप्रदान के लिए होता है। किंतु ताजुज़्बेकी में ये कर्ता में प्रयुक्त होने लगे हैं।

संबंध के एकवचन के रूप सं० मम+केरक से विकसित ज्ञात होते हैं। सं० मम+केरको (सं० कृतकः)>*मँवएरओ>*मउएरो>मुरो; मम+केरक>*मँवएरअ>*मएरअ>मेर>मिर+ए (विकारी तथा बहुवचन)। इसी तरह स्त्रीलिंग ई (—इका से; घोटिका>घोडिआ>घोडी>घोड़ी) के कारण मिरि, म्रि।

वैदिक सं० अस्मे>सं०>* अस्मे>पा०, प्रा० अप० अम्हे>अम्ह> अम्>हम। सं० अस्मे+कार्यकः>अम्हअरओ>*हम्मअरओ>हम्मारउ> हमारो>मारो>मरो>मर आदि। मरे, मरि आदि उसी के>ए तथा>इ वाले विकारी बहुवचन तथा स्त्रीलिंग रूप हैं।

मध्यम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता—		
	अपरसर्ग—तु, त, त्	तम्
	सपरसर्ग—तिंज, तिज, तिज्य तिन्य, तिय	तम् न
कर्म-संप्रदान—तत		तम् त
करण-अपादान—त त		तम् त
संबंध—पु० तुरो,		तरो, तर, तॉरो
	पु० बहुवचन तथा विकारी—तिरे	तरे, त्रे, तर
	स्त्री०—तिरि, त्रि	तरि

अधिकरण—त म	तम् म
त पर	तम् पर

'तु' का विकास सं० त्वम्>पा० त्वं, तुवं>प्रा० तुं>तु रूप में हुआ है। लगभग सभी भारतीय आर्य भाषाओं में यह तू, तु, तूं, थूं आदि रूपों में है। ताजुज़्बेकी 'त्' भी इसी से है। 'तिज' आदि पर ऊपर उत्तम पुरुष के प्रसंग में विचार किया जा चुका है।

संबंध के एकवचन के रूप सं० तव+केरक से विकसित हैं। सं० तव+केरको (सं० कृतकः)>*तउएरओ>*तउएरो>तुरो; तव+केरक>*तवएरअ>तेर>तिर+ए (विकारी तथा बहुवचन)। इसी तरह स्त्रीलिंग ई (-इका से; घोटिका>घोडिआ>घोडी>घोड़ी) के कारण तिरि, त्रि।

'तम' हिंदी का 'तुम' है। यह बागरू, कौरवी, राजस्थानी की कुछ बोलियों तथा जिप्सी में भी 'तम' रूप में ही मिलता है। इसका विकास वैदिक सं० युष्मे>सं० *युष्मे>(एकवचन के रूपों के प्रभाव के कारण) पा०, प्रा०, अप० तुम्हे>तुम्ह>तुम>तम। युष्मे+*कार्यकः (एकवचन का प्रभाव) तुम्ह कारको>तुम्हारो>तुम्हारो>तारो, तारो, तरो, तर। तरे त्रे, तरि आदि उसी के -ए तथा -इ वाले विकारी बहुवचन तथा स्त्रीलिंग रूप हैं।

अन्य पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता—		
	अपरसर्ग—ओ, उ, वो; त; सो, सु, सि, से, स	ओ, उ, वो, वे, ओदुन्, उनु, उनुँ, उनू, उनो, ओं, ओंहु, ओंन्हु, उनुँन्
	सपरसर्ग—उस् न	उन् न
कर्म-संप्रदान—	उस् त	उन् त
करण-अपादान—	उस् त	उन् त
संबंध—	पु० उसको	उन् को
	पु० बहु० तथा विकारी—उस्के	उन् के
	स्त्री०—उस् कि	उन् कि
अधिकरण—	उस् म	उन् म
	उस् पर	उन् पर

उसी के लिए 'उसि' तथा उन्हीं के लिए 'उनि' आते हैं।

ओ, वो, उ से तुलनीय हैं पंजाबी, लहंदा ओ; सिंधी ऊ, हो; कौरवी ऊ,

ओ; ब्रज वौ, बौ; कनौजी ओ, वो ऊ; बंगाली, उड़िया, असमी ओ, हिन्दी वह (उच्चारण में प्रायः वो) आदि। इनकी व्युत्पत्ति पर्याप्त विवादास्पद हैं।[1] मेरे विचार में मूल भारोपीय* अव>सं०* अवः>प्रा०* वो>अप० वो, ओ से ओ, वो, उ का संबंध है। 'स्' व्यंजन वाले रूपों का संबध सं० सः, प्रा० सो से है। 'त' संस्कृत के कर्ता (सः) के रूपों को छोड़ अन्य (तम्, तेन, तस्य आदि) से संबद्ध है। 'उस' का विकास सं० अमुष्म>पा० अमुस्स>प्रा० अउस्स>उस रूप में हुआ है। अन्यों की व्युत्पत्तियाँ हैं : सं० अवेभिः (करण बहुवचन)>* अवहि>* अवइ>* वइ> वै>वे। उनु, उन, ओंन्हु आदि सं०* अवानां *>अवन>अउण>उण्हु>उन से संबद्ध हैं। 'ओदुन' में 'द' का आगम स्पष्ट नहीं है। यह सुन्दर (सु+नर), बन्दर (वन+नर या वा+नर) के समान भी हो सकता है। कुछ रूपों के अंत्य 'उ' अपभ्रंश की उकारबहुला प्रवृत्ति के अवशेष हैं। 'ह' आगम के कारण (जैसे ओष्ठ>होंठ) हैं, तथा अन्त्य 'न' बहु-वचन का है।

निश्चयवाचक निकटवर्ती

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता—		
अपरसर्ग—	य, याँ, यो, इ, यि, जि	ये, ए, इनो, इनू, इनु, इनुन्, इन्हु
सपरसर्ग—	इस् न, इज् न एस् न	इन् न, एन् न
कर्म-संप्रदान—	इस् त, एस् त	इन् त, एन् त
करण-अपादान—	इस् त, एस् त	इन् त, एन् त
संबंध पु०—	इस् को, एस् को	इन् को, एन् को
पु०—बहु० तथा विकारी—	इस् के, एस् के	इन् के, एन् के
स्त्री०—	इस् कि, एस् कि	इन् कि, एन् कि
अधिकरण—	इस् म, एस् म, इस्म	इन् म, एन् म
	इस् पर, एस् पर	इन् पर, एन् पर

इसी के लिए 'इसि' तथा इन्हीं के लिए 'इनि' आते हैं। 'यही' के लिए यइ, एइ, अइ प्रयुक्त होते हैं।

ताजुज़्बेकी के य, याँ आदि रूप हिन्दी यह, पंजाबी इह, एह, लहँदा एह,

---

१. विस्तार के लिए देखिए प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक की 'हिन्दी भाषा' पृ० १९३-९५।

ई, बाँगरू या आदि के अनुरूप हैं। सं० एषः>पा०, प्रा०, अप० एसो, एहो, एहु से इनका संबंध है। सं० एतस्य>पा० एतस्स>प्रा० एअस्स>इस; सं० एते>प्रा० एए>अप० एइ>ए>ये; सं० एषाम्>पा० एसानं>प्रा० एआणं>एआणु>एण>एन>इन्ह, इन, इन्हु आदि अन्य विकास हैं।

निश्चयवाचक दूरवर्ती के लिए अन्य पुरुष के रूपों का प्रयोग होता है।

अनिश्चयवाचक

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता—		
अपरसर्ग—	(क) कुइ, केड़ो	एक वचन के ही
	(ख) कुच्, कुश, कइन, किश	
सपरसर्ग—	किसि न, कइ न	किनि न

'किसी' 'किनि' में ही अन्य परसर्ग भी जोड़े जाते हैं। 'क' कोई के समानार्थी हैं, और 'ख' कुछ के।

'कुइ' हिन्दी कोई है : सं० कोपि (कः अपि)>पा० को पि>प्रा० को वि>अप० कोइ>कुइ। 'ख' वर्ग का विकास सं० किंचित् से है : सं० किंचित् >प्रा० किंछि*किच्छ>किछ>किश। कुश, कुच्, हिंदी 'कुछ' के अनुरूप हैं: किंचित्>किंछि>किच्छ>किछु>कछु>कुछ>कुच्>कुश। 'कइन' ऊपर के रूपों से संबद्ध है। 'किसि' किस+ही तथा 'किनि' किन+ही है।

प्रश्नवाचक

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता—		
अपरसर्ग—	(क) कोन, कोंन, को, किं, किन्, कनि, कुर्, केड़क, केड़ो, केड़ि	एक वचन के ही
	(ख) का, काँ, कुर्, कन, क कइन, केन, कुल्, कुरि	
सपरसर्ग—	किसन, कइने, केड़ो ने, केड़क न	किन्न, किन्ने

उपर्युक्त में (क) 'कौन' के समानार्थी हैं तथा (ख) 'क्या' के। यद्यपि बहुत से लोगों के प्रयोग में इनमें से कुछ दूसरे के स्थानों पर भी आते हैं। अन्य कारकों में एकवचन में 'किस', 'केड़ो' या 'केड़क' में विभिन्न परसर्ग जुड़ते हैं, तथा वहुवचन में 'किन' या 'कन' में। संबंध में 'को' पुल्लिग में, कि स्त्रीलिंग में

उनके साथ जोड़े जाते है।

कोंन कोन कन आदि हिन्दी कौन, पंजाबी कौन, कौंण; बांगरू कौंण, कौरवी कौंण; ब्रज, बुन्देली कौन; लहँदा कौन; गुजराती, मराठी कौण के अनुरूप हैं। सं० कः पुनः>पा० को पुन>अप० कवण से इनका संबंध है। कुर, कुल भी इसी से ण>ड़>र>ल रूप में विकसित हुए हैं। 'के' 'कड़' वाले रूप (केड़क, केड़ो, केड़ि, कड़न आदि) 'के पुनः' से हैं। केड़क का अंत्य 'क' स्वार्थे है। सं० किस्यकः>पा० किस्सको>प्रा० किस्सा>कीआ>क्या>का>कॉ>क; सं० किस्य>पा० किस्स>प्रा० *किस्स>अप० किस>क़िस; सं० केषानाम्>पा० केसानं>प्रा० केणं>केण>अप० किण।

संबंधवाचक

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता—		
	अपरसर्ग—जो, जु, जे, जेड़, जेड़े	एकवचन के ही
	सपरसर्ग—जिस न, जेड़े या जेड़ न, जि न	जिन न

जिस, जि, जेड़े, जेड़, जिन में ही परसर्ग जोड़कर अन्य रूप बनते हैं।

जो, जु, ब्रज जो, जु; कौरवी जो; पंजाबी, सिंधी, गुजराती, मराठी जो के अनुरूप हैं। इनका विकास सं० यः>पा० यो>प्रा० जो से हुआ है। जे भोजपुरी, अवधी, बंगाली, उड़िया जे के अनुरूप है। यह सं० यः>मागधी प्रा० जे से संबद्ध हैं। जेड़, जेड़े सं० यः पुनः>जेउण से विकसित हैं। अन्य व्युत्पत्तियाँ हैं : यस्य>पा० यस्स>प्रा० जिस्स (पा० किस्स के सादृश्य पर) >जिस; सं० येषाम्>पा० येसानं>प्रा० जाण>जिण>जिन।

निजवाचक

एकवचन तथा बहुवचन

अन्य—अप, अब

संबंध—अपर, अपन, अप्रा, अप्ना, अप्रे, अप्ने, अपरे, अपने

'आप' के लिए 'अप' या 'अब' (कम प्रयुक्त);

'आप ही' के लिए 'अपि'; अपना, अपनी के लिए अपर, अपन, अप्रा, अप्ना, तथा अपने के लिए 'अप्रे' या 'अप्ने' आते हैं।

अप, अब का संबंध सं० आत्म (प्रा० अप्प>आप>अप, अब) से है। अप्ना तथा संबंधित रूप सं० आत्मनः>पा० अत्मनो>प्रा० अप्पणा से विकसित हैं। 'र' वाले रूप में न>ल>र रूप में विकास हुआ ज्ञात होता है।

विशेषण

रूप-रचना

ताजुज़्बेकी विशेषण अपनी रूप-रचना की दृष्टि से हिंदी के समान हैं। हिंदी में आकारांत विशेषण (कुछ अपवादों को छोड़कर) ही परिवर्तित होते हैं। पुल्लिग शब्दों के साथ ये आकारांत (बड़ा घोड़ा), स्त्रीलिंग शब्दों के साथ ईकारांत (बड़ी घोड़ी) तथा बहुवचन एवं विकारी रूपों के साथ एकारांत (बड़े घोड़े) रूप में आते हैं। ताजुज़्बेकी में ये पुल्लिग रूप में प्रायः **ओकारांत** (बड़ो कोड़ो) या **आकारांत** (बड़ा कोड़ा, यह 'आ' कभी-कभी बहुत ह्रस्व होकर 'अ' के बहुत कुछ समान हो जाता है), स्त्रीलिंग में **इकारांत** या **ईकारांत** (बड़ि कोड़ि, बड़ी कोड़ी) तथा बहुवचन एवं विकारी में **एकारांत** (बड़े कोड़े) होते हैं। अन्य सारे विशेषण, विशेष्य चाहे जिस रूप, वचन एवं लिंग में हो अपरिवर्तित रहते हैं। केतुनो-केतुने-केतुनी, असो-असे-असि आदि सार्वनामिक विशेषणों में भी यही प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।

तुलना

ताजुज़्बेकी में हिन्दी 'से' (यह उससे बड़ा है, यह सबसे बड़ा है) की तरह ही 'त' 'ता' या 'पर ता' से तुलना का भाव व्यक्त किया जाता है:

इ उस ता बोड़ो चो=यह उससे बड़ा था।

इ सब ता बोड़ो चो=यह सबसे बड़ा था।

तुर्सुन सब पर त् बोड़ो चो=तुर्सुन (व्यक्ति का नाम) सबसे बड़ा था।

कभी-कभी कुछ शब्दों में ताजिक 'तर-तरीन' का प्रयोग भी होता है:

क़दिम शेर=पुराना शहर।

क़दिमतर शेर=उससे पुराना शहर।

क़दिमतरिन शेर=सबसे पुराना शहर।

सार्वनामिक विशेषण

(१) परिमाणवाचक

इतना	उतना	जितना	तितना	कितना
इत्नो	उत्नो	जित्नो	तित्नो	कित्नो
इत्णो	उत्णो	जेत्नो	तित्णो	केतुणो
यतुनो		जित्णो		केतुनो
यतुणो				

ये पुल्लिग हैं। स्त्रीलिंग में इकारांत (जैसे केत्नि) तथा बहुवचन एवं विकारी में एकारांत (केत्ने) रूप होते हैं। कुछ लोग गुणवाचक उकरि, इकरि, का भी 'उतने' 'इतने' के लिए प्रयोग करते हैं।

उपर्युक्त रूपों की व्युत्पत्ति के संबंध में विवाद है।[1] संबद्ध सभी बातों पर विचार करते हुए इन रूपों को तीन खंडों में बांटा जा सकता है: (१) इत; उत, जित, तित, कित; (२) न; (३) ओ। इनमें प्रथम का संबंध संस्कृत *इयत्तक, *यत्तक, *तत्तक, *कियत्तक से ज्ञात होता है। 'उत' इन्हीं के आधार पर 'उ' (वह) से बना है। 'न' संस्कृत का विशेषणात्मक प्रत्यय है जो समान, पुराण आदि में है। ओ सं० प्रथमा एकवचन के विसर्ग का विकसित रूप है (घोटकः>घोड़ो), जो ताजुज़्बेकी में पुल्लिग एकवचन का चिह्न है। हिन्दी में यही 'आ' है। ब्रज औ, ओ, कनौजी ओ, राजस्थानी ओ आदि में भी यह है। ये 'तनो' वाले रूप हिंदी की प्रायः सभी बोलियों में किसी न किसी रूप में हैं।

(२) गुणवाचक

ऐसा	वैसा	जैसा	तैसा	कैसा
असो	वसो	जसो	तसो	कसो
इ कुड़	उ कुर	जि कुर	त कुर	क कुर
इ कुड़	उ कुड़	जि कुड़	तकुड़	क कुड़
य कुर	व कुर	जु कुर	×	कुर

इनके स्त्रीलिंग रूप अंत में इ जोड़ने से बनते हैं, जैसे इकुरि, उकुड़ि, कुरि आदि। असो आदि के बहुवचन या विकारी रूप 'ओ' के स्थान पर 'ए' कर देने से बनते हैं। हालाँकि इनके प्रयोग कम ही होते हैं। इनके स्थान पर भी प्रायः असो आदि ही बोले जाते हैं। इनमें 'सो' वाले रूप 'सो' 'स' या 'सा'

---

१. दे० हिन्दी भाषा, पृ० २३५-३७।

रूप में हिन्दी की अनेक बोलियों में हैं। कुर-कुड़ वाले रूप कौरवी (खड़ी बोली) जुक्कर, कुक्कुर, उक्कर से तुलनीय हैं।

असो, जसो, तसो, कसो क्रमशः इदृश+कः, यादृश+कः, तादृश+कः, कीदृश+कः से संबद्ध हैं। 'वसो' इनके सादृश्य पर 'व' (वह) से बना है। अन्य रूपों में अ, इ, उ, जि, जु, त, क तो सर्वनामों से संबद्ध हैं तथा कुर, कुड़, कुरं सं० कः+दृश, प्रा०>कोरिस से विकसित ज्ञात होते हैं।

संख्यावाचक शब्द

ताजुज़्बेकी में प्रयुक्त पूर्ण, अपूर्ण, क्रम तथा समुदाय संख्यावाचक शब्द निम्नांकित हैं।

(१) पूर्ण संख्यावाचक

(क) एक से दस तक

१. एक्, यक्, येक्, एकु, एके
२. दो, दु
३. तिन्, तीन्, तिण्
४. चॉर, चर्, चार
५. पंज्, पंच्, पाँज्
६. चे, छे
७. सत्, सात्
८. अट्, अठ्
९. नु, नो, नोउ
१०. दस्

उपर्युक्त संख्याओं में, जिनके लिए एक से अधिक शब्द हैं, प्रथम का प्रयोग अधिक होता है, अन्यों का क्रमशः प्रायः कम।

उपर्युक्त प्रायः सभी शब्द हिन्दी और उसकी बोलियों तथा अधिकांश आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में लगभग ऐसे ही या कुछ परिवर्तन के साथ प्रयुक्त होते हैं। इनका विकास संस्कृत[1] से हुआ है :

सं० एक>पा० एक>प्रा०, अप० एक्क>परवर्ती अप० एक>ताजुज़्बेकी एक। 'एकु' ब्रज, अवधी आदि में मिलता है। इसमें 'उ' संस्कृत विसर्ग (एकः)

---

१. विस्तार के लिए देखिए लेखक की पुस्तक 'हिन्दी भाषा', पृष्ठ २१४-२२२।

का 'ओ' होते विकास है।

सं० द्वौ>पा०*दो>प्रा० दो>अप० दो>ताजुज़्बेकी दो>दु

सं० त्रीणि>पा० तीणि>प्रा० तिण्णि>अप० तिण्ण>ताजुज़्बेकी तीन्, तिन्, तिण्

सं० चत्वारि>पा०, प्रा० चत्तारि अप० चयारि, चारि>ताजुज़्बेकी चार्, चाँर्, चर्।

सं० पंच>पा०, प्रा०, अप० पंच>ताजुज़्बेकी पंच

सं० षट्>पा०*छअ>प्रा०*छअ>अप० छह>ताजुज़्बेकी छे, चे,

सं० सप्त>पा०, प्रा० अप० सत्त>ताजुज़्बेकी सात्, सत्

सं० अष्ट>पा०, प्रा० अप० अट्ठ—ताजुज़्बेकी अठ्, अट्

सं० नव>पा० नव>प्रा० णव>अप० णव>ताजुज़्बेकी नोउ, नो, नु,

सं० दश>पा०, प्रा०, अप० दस>ताजुज़्बेकी दस।

'यक' फा० है। ताजुज़्बेकी में यह ताजिक से गृहीत है। 'येक्' एक का ही आदिश्रुतियुक्त रूप है।

'पंच' फ़ारसी, ताजिक, पश्तो, लहँदा, पंजाबी, सिंधी आदि में मिलता है। ताजुज़्बेकी में मूलतः कदाचित् पंच ही था। पंजाबी, लहंदा, पश्तो, ताजिक (उनके सोवियत संघ पहुंचने का मार्ग यही ज्ञात होता है) प्रभाव से वह 'पंज' हो गया। 'पंज' का 'पाँच' हिन्दी की भाँति क्षतिपूरक दीर्घीकरण के कारण है।

(ख) ग्यारह से बीस तक

ग्यारह से बीस तक की संख्याएँ दो प्रकार की हैं :

(१) संयोगात्मक

११. ग्यारा, यॉरॉन्, यॉराँ, यारा
१२. बॉराँ, बारअ, बॉरॉन्, बाराँ, बारा
१३. तेरा, तेरअ, तेरॉन्, तेराँ,
१४. चउदा, चव्दा, चव्दॉन्, चव्दॉ
१५. पन्द्रा, पन्दरअ, पन्नॉन्, पन्द्रॉन्, पन्द्राँ
१६. सव्ला, सव्लॉन्, सव्लाँ
१७. सतरा, सितरा, सअरॉन्, सत्रॉन्, सत्राँ
१८. अठारा, अटरॉन्, अटाराँ, अटराँ
१९. उन्नि, उन्नी, उनि, उणि
२०. बिस्, बिस्त्, बीस्

संख्यायों के लिए प्रयुक्त ये शब्द, प्रथम दशक की भाँति अयोगिक नहीं हैं।

ये 'दस' या 'बीस' के साथ एक से नौ तक की संख्याए जोड़ या घटाकर बने हैं, किंतु यह जोड़ या योग ऐसा है कि ये पूर्ण संयुक्त शब्द जैसे ज्ञात होते हैं। आगामी प्रकार की तुलना में इसी लिए इन्हें संयोगात्मक कहा गया है। विश्व की अधिकांश भाषाओं में इनकी स्थिति प्रायः यही है।

उपर्युक्त संख्याओं में कुछ तो हिन्दी के निकट हैं, और कुछ लहँदा, सिंधी, पंजाबी के। यों सभी का संबंध संस्कृत से है। केवल 'बिस्त' अपवाद है जो फ़ारसी का है, और ताजुज़्बेकी में प्रभावस्वरूप पश्तो या ताजिक से आया ज्ञात होता है।

सं० एकादश>पा० एकारस>प्रा०, अप० एग्गारह>ताजुज़्बेकी ग्यारा, यारा, याराँ, (तुलनीय पंजाबी, लहँदा, याराँ, सिंधी यारहँ)

सं० द्वादश>पा० बारस>प्रा०, अप० बारह>ताजुज़्बेकी बारअ, बारा, बाराँ (तुलनीय पंजाबी, लहँदा, बाराँ, सिंधी, बारहँ)

सं० त्रयोदश>पा० तेरस>प्रा०, अप० तेरह>ताजुज़्बेकी तेरअ, तेरा, तेराँ (तुलनीय पंजाबी लहँदा, तेराँ,सिंधी तेरहँ)

सं० चतुर्दश>पा०, प्रा० चतुद्दस>अप० चउदह>ताजुज़्बेकी चउदा, चव्दा, चव्दाँ (तुलनीय पंजाबी, लहँदा, चौदाँ, सिंधी चौदहँ)

सं० पंचदश>पा०, प्रा०, अप० पण्णरह>ताजुज़्बेकी पन्दरअ, पन्द्रा, पन्द्राँ (तुलनीय पंजाबी, पन्द्राँ, लहँदा, पन्ध्राँ, सिंधी पन्द्रहँ)

सं० षोडश>पा० सोळस प्रा०, अप० सोलह>ताजुज़्बेकी सव्ला, सव्लाँ, (तुलनीय, पंजाबी, लहँदा सोलाँ, सिंधी सोरहँ)

सं० सप्तदश०>पा० प्रा० सत्तरहँ>अप सत्तरहँ>ताजुज़्बेकी सतरा, सत्राँ (तुलनीय पंजाबी लहँदा, सताराँ, सिंधी सत्रहँ)

सं० अष्टदश>पा०, प्रा० अट्ठारस>अप० अट्ठारह>ताजुज़्बेकी, अठारा अटाराँ (तुलनीय पंजाबी लहँदा, अठाराँ, सिंधी अड़िढाँ)

सं० एकोनविंशति>पा० एकूनवीस>प्रा०, अप० *ऊणबीस>ताजुज़्बेकी उन्नी, उणि (तुलनीय पंजाबी उन्नी, लहँदा उनवी, सिंधी उणीह)

सं० विंशति>पा० बीसति>प्रा० अप० बीस>ताजुज़्बेकी बीस, बिस (तुलनीय पंजाबी लहँदा वी, सिंधी वीह)[१]

(२) विश्लेषणात्मक

विश्लेषणात्मक शब्द समुच्चयबोधक अव्यय 'ति' (यह अव्यय विभिन्न रूपों

---

१. इन व्युत्पत्तियों के विस्तार के लिये देखिए लेखक की 'हिन्दी भाषा', पृ० २१४-२९।

में अन्य भारतीय आर्य भाषाओं में भी मिलता है। जैसे पंजाबी, ते, अते; लहँदा ते, अत्ते; जिप्सी बोलियाँ त, ति आदि) की सहायता से बनते हैं। उदाहरणार्थ दस ति एक=११; दस ति दो=१२; दस ति तिन=१३; दस ति चार=१४ आदि। ११ से १६ तक की संख्यायों के लिए इस प्रकार के विश्लेषणात्मक नाम भाषाओं में बहु-प्रचलित तो नहीं कहे जा सकते, किंतु उनका यह एक मात्र उदाहरण नहीं है। सोवियत संघ के युक्रेनी जिप्सियों में समुच्चयबोधक अव्यय 'उ' की सहायता से इनकी रचना होती है। जैसे: देश उ येक, देश उ दो आदि।

(ग) बीस से ऊपर की संख्याएँ

३०. त्रि, त्री, सि
४०. चाली, चालि, चॉलि, चल्लि, चलि, चल्ल्, चिल; दु बिस, दु बिसी, दो बिसी, दु ब्रिस्त
५०. पिंजा, पिंजअ; पंजो, पिंजाअ
६०. तिन बिस, तिन बिसि, तिन बिस्त; शस्त
७०. सड़े (सरे) तिन बिस्त (बिसि, बिस), हफ़्तोद् (त्)
८०. चार् (चॉर, चर) बिस्त (बिसि, बिस), हश्तोद् (त्)
६०. सड़े (सरे) चार (चॉर, चर) बिस्त (बिसि, बिस),नवद् (त्)
१००. सउ, सो, सु, सद्, सत्, सोद
१०००. हज़ार, हज़र, अज़ॉर, अज़र, ज़ॉर, ज़र
१००००. ०. लक्, लख्

इन में त्री, त्रि सं० त्रिंशत् से विकसित हैं। पंजाबी तथा लहंदा त्री भी यही हैं। हिन्दी तीस या सिंधी टीह मूलतः त्रिशंत् से सम्बद्ध होने पर भी विकास की दूसरी>परम्परा में हैं। सं० चत्वारिंशत>पा०, प्रा० चत्तालीस>अप० चालीस से चाली या चालि आदि विकसित हैं। पंजाबी लहँदा चाली तुलनीय हैं। सं० पंचाशत>प्रा० पंचास>अप० पंचास से पिंजा आदि हैं। तुलनीय पंजाबी पंजा, लहँदा पंझा, सिंधी पंजाह। ३० और ५० के सि, तथा पँजो जैसा कि आगे दिया गया है, ताजिक के हैं। द्वित्त ल वाले ४० के रूप ताजिक चिल्ला (४० दिन आदि) से सम्बद्ध या प्रभावित ज्ञात होते हैं।

'बीस' या 'बीसी' (२० का समूह) के आधार पर हिंदी की प्रायः सभी बोलियों में गणना-पद्धति प्रचलित है। 'दु बिसि' 'चार बिसि' 'सड़े चार बिसि' आदि उसी के अनुरूप हैं। यद्यपि 'सड़े' (हिंदी साढ़े) के आधार पर ७० तथा ६० के लिए अभिव्यक्तियाँ भारत में प्रायः विरल या नहीं हैं। जैसा कि आगे की

सूची से स्पष्ट है शस्त् (६०), हफ़्तोद् (७०), हश्तोद् (८०), नवद् (९०), सद, सत्, सोद् में कुछ तो शुद्ध ताजिक हैं तथा कुछ ताजिक शब्दों के विकसित या विकृत रूप हैं। हज़ॉर' ताजिक है। 'हज़ार' के अन्य रूप इसी के विकास हैं। लक, लख, हिंदी लाख सं० लक्ष>प्रा० लक्ख से सम्बद्ध हैं।

(घ) ताजिक संख्याएं

ताजुज्बेकी (प्रमुखतः नई पीढ़ी के लोगों) में ताजिक संख्याएँ भी पर्याप्त प्रचलित हैं। इनमें २०, ३०, ४०, ५०, ६०, ७०, ८०, ९०, १०० के नामों का प्रचार अपेक्षाकृत अधिक है तथा अन्यों का कम। कभी-कभी 'ति' के स्थान पर ताजिक समुच्चय बोधक अव्यय 'उ' जोड़कर भी संख्याएँ बनती हैं। जैसे 'पिजा उ एक'=५१। सौ से ऊपर प्रायः ताजिक संख्यायों का ही प्रयोग होता है। जैसे 'एक सोद उ हश्ताद'=१८०। बहुत संभव है कि 'ति' की सहायता से विश्लेषणात्मक संख्यावाचक शब्द बनाने की पद्धति ताजिक के प्रभाव का परिणाम हो। जैसा कि हम आगे देखेंगे ताजिक में 'उ' की सहायता से ये संख्याएँ बनती हैं। ताजिक के पूर्ण संख्यावाचक शब्द ये हैं :—

१. याक्, यक्
२. दू
३. से
४. चॉर
५. पंज्, पंच्
६. शश, शिश
७. हफ़्त्, हफ़्
८. हश्त्, हश्
९. नोह्, नो
१०. दह्, द
११. योज़्दः, योज्दा
१२. दुवोज्दः, द्वोज्दः, द्वोज्दा
१३. सेज़्दः, सेज़्दा
१४. चॉरदः, चॉरदा
१५. पोंज़्दः, पोंज़्दा, पोंज़ा
१६. शोंज़्दः, शोंज़्दा
१७. हफ़्दः, हब्दा, हप्त्दा
१८. हज़्दः, हज़्दा, हश्दा
१९. नूज़्दः, नुज़्दा
२०. बिस्त्, बिस्
३०. सी, सि
४०. चिल्
५०. पंजोः, पंजो
६०. शस्त्
७०. हफ़्तोद्, हफ़्तोत्
८०. हश्तोद्, हश्तोत्
९०. नवद्, नव्वत्
१००. सद्, सत्

ताजिक की अन्य संख्याएं इन्हीं में उ (=और) तथा एक से नौ तक की संख्याएँ जोड़कर बनाई जाती हैं। जैसे बिस्तु यक (बिस्त्+उ+यक्)=२१; सीयु दु (सी+उ+दु)=३२; चिलु से (चिल्+उ+से)=४३; पंजोउ चॉर (पंजोः+उ+चॉर)=५४; शस्तु पंच् (शस्त्+उ+पंच)=६५; हफ़्तोदु शिश्

(हफ़्तोद्+उ+शिश्)=७६; हश्तोदु हफ़ (हश्तोद्+उ+हफ़्)=८७; नवदुहश् (नवद्+उ+हश्)=९८; दुसद्=२००; सेसद्=३००; याक् सदु याक=१०१; से सदु चाँर=३०४; हज़ाँर, हज़ोर=१००० ।

(ङ) अन्य संख्याएँ

ताजुज़्बेकी की अन्य संख्याएँ ११ से १९ तक की विश्लेषणात्मक संख्याओं की भांति ही 'ति' की सहायता से बनती हैं । जैसे :—

२१. बिस् ति एक्
२२. बिस् ति दो
२३. बिस् ति तिन
२४. बिस् ति चाँर
२५. बिस् ति पंच
२६. बिस् ति चे
२७. बिस् ति सात्
२८. बिस् ति अट्
२९. बिस् ति नौ
३१. त्रि ति एक
३९. त्रि ति नो
४२. चालि ति दो
४९. चालि ति नो
५९. पिंजा ति नो, पिंजा नो
६१. तिन बिसि ति एक
७२. सड़े तिन बिसि ति दो
८३. चार बिसि ति तिन्
९१. सड़े चार बिसि ति एक्
९८. सड़े चार बिसि ति अट्

(२) अपूर्ण संख्यावाचक

$\frac{1}{4}$ चउथाइ, चउताइ
$1\frac{1}{4}$ सवा एक, सवा (आगे सवा दो, सवा तिन् आदि)
$\frac{1}{2}$ अदो, आदो, आतो; निम
$1\frac{1}{2}$ डेड़, डेर, देड़; एक उ निम, एकुनिम

२½ तइ, टाइ; दु उ निम, दुनिम

३½ सरे तिन, सड़े तिन (आगे सड़े सरे या 'उ निम' जैसे सड़े दस या
दहुनिम=१०½)

• ¾ पउन, पोन, पोण (पउण दु, पोण तिण् आदि)

• इनमें 'निम्' 'उ निम्' ताजिक के हैं। 'उ निम्' का प्रयोग प्राय: ताजिक संख्याओं के साथ होता है। जैसे दहु निम=१०½। शेष हिन्दी के शब्दों के ही रूपांतर हैं और संस्कृत से विकसित हैं[1] :—

सं० चतुर्थिक>प्रा० चउत्थिअ>ताजुज़्बेकी चउथाइ आदि।

सं० अर्धः>प्रा० अप० आदो>ताजुज़्बेकी आदो आदि।

सं० द्विकार्ध>प्रा० दिवड्ढ>अप० दिअड्ढ>देढ़>डेढ़>ताजुज़्बेकी डेड़ आदि।

सं० अर्धतृतीय>प्रा० अड्ढाइज्ज>अप० अड्ढाइज>अढ़ाई ताजुज़्बेकी टाइ।

सं० सार्द्ध>प्रा० सड्ढ>साढ़े>ताजुज़्बेकी सड़े आदि।

सं० पादोन>प्रा० पा० पाओण>ताजुज़्बेकी पउण आदि।

(३) क्रमसंख्यावाचक

१. पेलो; यकुम्; अव्वल
२. दुसरो; दुजो; दुयुम
३. तिसरो; तिजो; सेयुम्
४. चउथो, चउतो; चॉरुम्
५. पंजुम्
६. चेयुम्
७. सतुम्
८. अठुम्
९. नोहुम
१०. दसुम्, दहुम्

इनमें 'ल्' (पेलो), 'सर्' (दुसरो, तिसरो), 'ज्', (दुजो, तिजो) तथा थ् (चउथो) वाले रूप हिंदी के हैं। ताजिक भाषा के क्रमसंख्याबोधक प्रत्यय उम् (संस्कृत अम्) का भी ताजुज़्बेकी में मुक्त रूप से प्रयोग होता है। यह प्रत्यय,

---

१. विस्तार के लिए देखिए प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक की 'हिन्दी भाषा', पृ० २३०-३१।

ताजिक शब्दों (यकुम्, दुयुम्, सेयुम् चॉरुम्, पंजुम्, शशुम्, दहुम्, बिस्तुम आदि) के अतिरिक्त भारतीय मूल के शब्दों के साथ भी मिलता है। जैसे चेयुम्, सतुम्, अठुम्, दसुम आदि। दस के ऊपर की संख्याओं के साथ भी 'उम्' ही लगता है।

'अव्वल' मूलतः अरबी भाषा का है। यह कदाचित ताजिक से ही ताजुज़्बेकी में आया है। इसका प्रयोग संख्यावाचक विशेषण के रूप में कम, क्रियाविशेषण रूप अधिक होता है।

'ल', 'सर्', 'थ', तथा 'ज्' वाली संख्याओं का विकास निम्न रूपों में[1] हुआ है :

सं० प्रथम>प्रा० पढम+इल्लः>पहिलो>ताजुज़्बेकी पेलो।

सं०* तिसृतीयकः>ताजुज़्बेकी तिसरो।

'दुसरो' इसी के सादृश्य पर है।

सं० चतुर्थकः>प्रा० चउत्थओ>ताजुज़्बेकी चउथो आदि।

सं० द्वितीयकः, तृतीयकः>प्रा० दुइज्जओ, तइज्जओ>ताजुज़्बेकी दुजो, तिजो।

(४) समुदायबोधक

इसके लिए -इन्,-इं,-न,-इ-उन् आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ 'दोनों' के लिए 'टुइन्', 'दुयिन्', 'दुई', 'दुन्', 'दुइ' आदि व्यवहृत होते हैं। इसी प्रकार तिनुन् 'तिनिन्', 'चॉरिन्', 'चॉरुन', आदि भी मिलते हैं। इनका विकास सं० संबंध बहुवचन—आनाम्>आनं>अन>वन> -उन रूप में ज्ञात होता है।

ताजुज़्बेकी पर संख्याओं के क्षेत्र में उज़बेक प्रभाव बिल्कुल नहीं है। इसका कारण कदाचित् यह है कि भारोपीय परिवार की भाषा होने के कारण ताजिक के संख्यावाचक शब्द इसके अपने शब्दों के निकट, अतः सहज ग्राह्य हैं, किंतु इसके विरुद्ध उज़बेक नाम बिल्कुल ही अलग अतः अपेक्षया कठिन हैं।

---

१. विस्तार के लिए देखिए लेखक की पुस्तक 'हिन्दी भाषा', पृष्ठ २३२-३३।

क्रिया

६.१ धातु

ताजुज़्बेकी में धातुएँ हिन्दी आदि की ही भाँति स्वरांत और व्यंजनांत दोनों प्रकार की हैं। कुछ उदाहरण हैं :—

अ—ल (ला)

आ—बला (बुला), बगा (फेंक), पका (पका)

इ—जि (जी)

उ—रु (रो)

ए—ले (ले), दे (दे), रे (रह)

ओ—हो (हो), सो (सो), रो (रो)

क्—देक् (देख), दुक् (दुख), सक् (सक), लमक् (लटक), रक् (रख)

ख्—देख् (देख), दुख् (दुख), रख् (रख)

ख़्—रख़् (रख)

ग्—बग् (भाग), पॉग् (भाग), देग् (देख), लग् (लग)

च्—बेच् (बेच)

छ्—बेछ् (बेच)

ज्—समज् (समझ)

ट्—बेट् (बैठ), कट् (कट)

ड्—कड् (कढ़)

ड़्—सड़् (जल), बेड़् (बैठ), पुगुड़् (पकड़), पड़् (पढ़), दुड़् (दौड़)

ण्—सुण् (सुन)

त्—सुत् (सो), सत् (डाल)

द्—बंद् (बाँध), चुद् (चोद)

न्—पशान् (पहचान), पेशॉन् (पहचान), सिन् (सुन), सुन् (सुन)

प्—दप् (दब)

ब्—दब् (दब), दॉब् (दबा)

म्—जम् (जम)
य्—पय् (पढ़), रय् (रह)
र्—मर् (मर), पुगुर् (पकड़), पर् (भर), दुर् (दौड़)
ल्—मुल् (मिल), द्यकल् (भेज), चल् (चल)
व्—लुव् (ले), बलाव् (बुला), दुव् (दे)
स्—बेस् (बैठ), देस (देख)
श्—बेश् (बेच)
ह्—रह् (रह)

ताजुज़्बेकी में प्रयुक्त धातुओं की संख्या मेरे द्वारा एकत्र सामग्री में दो सौ के लगभग है। इनमें अधिकांश वहीं हैं जो हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में प्रयुक्त होती हैं, हाँ ध्वनियों में कुछ परिवर्तन अवश्य हो गया है। ध्वनि-परिवर्तन की विशिष्ट प्रवृत्तियों के कारण एक ही धातु कई रूपों में भी मिलती है। उदाहरणार्थ :

धातु	अर्थ
(१) उतर्, उतुर्, उटर्	उतर्
(२) उट्, उड्, उड़्	उड़्
(३) तेपड़्, टेपर्, टपर्, तपड़्	गिर्
(४) ज, जो, जु, जुव्, जव्	जा
(५) चोर्, चो, शो, शोड़्, शोर्, चोड्, चोट्	छोड़्
(६) चल्, चुल्	चल्
(७) खो, खा, को, काँ, क, ख	खा
(८) कर्, कार्, कल्	कर्
(९) कट्, कत्	कट्
(१०) काट्, काड्, काड़्, कार्	काट्
(११) देख्, देक्, देग्, देस्	देख्

ताजुज़्बेकी में कुछ धातुएँ ताजिक तथा उज़्बेक भाषा से भी प्रभाव स्वरूप आई हैं, यद्यपि उनकी संख्या अत्यल्प है। उदाहरण के लिए 'रस्' (=पहुँचना) ताजिक 'रसीदन्' से संबद्ध है (हिन्दी रसीद का संबंध भी इसी फ़ारसी रसीदन) से है) तो तुशा (=बिछाना) उज़्बेक 'तुशामाक्' से है। हिन्दी तोशक शब्द भी इसी से है।

एक-दो धातुएँ हिन्दी अर्थों से अलग पंजाबी अर्थों में प्रयुक्त होती हैं। जैसे सड़् (नो)=जल् (ना)।

६. २. अकर्मक-सकर्मक

कुछ धातुएँ अकर्मक होती हैं जैसे 'हो' तथा कुछ सकर्मक होती हैं, जैसे 'देख्'। ताजुज़्बेकी में बहुत सी अकर्मक धातुओं में अ, इ, उ का आ, ए, ओ करके या व्यंजनांत धातु के अंत में 'आँ' या 'आ' जोड़कर सकर्मक रूप बनाए जाते हैं। उदाहरणार्थ :

दब्—दाँब्
मर्—मार्
कट्—काट्
गिर्—गेर्
खुल्—खोल्
चल्—चला
पक्—पका
बाग्—बगाँ (फेंक)
बेट्—बेटाँ (बैठा)
दुड़्—दुड़ा (दौड़ा)

६. ३. प्रेरणार्थक

प्रेरणार्थक के लिए हिन्दी की ही तरह धातु में 'वा' जोड़ते हैं :
कर्—करवा
खुल्—खुलवा
गिर्—गिरवा
यह 'वा' सं० 'प्' (जैसे स्ना—स्नापयति) > पा० 'प्' > प्रा० व् > अप० व् से विकसित है।

६. ४. कृदन्त

ताजुज़्बेकी में मुख्य कृदंत चार हैं : वर्तमानकालिक, भूतकालिक, क्रियार्थक संज्ञा और पूर्वकालिक। अपूर्ण क्रियाद्योतक भूतकालिक से तथा पूर्णक्रिया-द्योतक तथा तात्कालिक वर्तमानकालिक से ही बनते हैं।

६. ४. १. वर्तमानकालिक कृदन्त

हिन्दी तथा उसकी विभिन्न बोलियों की भाँति ताजुज़्बेकी में भी वर्तमान-

कालिक कृदन्त धातु में -त- जोड़कर बनता है। इसका प्रयोग संज्ञा, विशेषण, क्रिया, तथा क्रियाविशेषण के रूप में होता है। ताजुज़्बेकी के कुछ उदाहरण हैं :

(१) वो नि कर्ता
(वह नहीं करता)
(२) मे होर रुति नि
(मैं और नहीं रोती)
(३) जुवाब देतो जा
(जवाब देता जा)
(४) ए रोते चले गे।
(ये रोते चले गए)
(५) तु ज़िक न ओते।
(तुम परेशान न होते)

इस -त- का संबंध सं० शतृ प्रत्यय से है। 'त' के बाद 'ओ' और 'आ' पुल्लिग के लिए आते हैं, इ, ई स्त्रीलिंग के लिए और 'ए' या तो बहुवचन के लिए या विकारी रूप में। सं० से इनका विकास है : सं० चलन्त:>प्रा० चलन्तो>चलतो; सं० चलन्तक:>प्रा० चलन्तओ, चलन्तअ>चलन्ता>चलता। सं० चलन्ती>चलती। 'ए' विकारी एकारांत रूपों के सदृश्य पर है।

६. ४. २ भूतकालिक कृदन्त

हिन्दी की ब्रज आदि भाषाओं में भूतकालिक कृदन्त बनाने के लिए पुल्लिग में ओ, औ या यो का प्रयोग होता है। परिनिष्ठित हिन्दी में इसके लिए धातु में पुल्लिग में आ, स्त्रीलिंग में ई तथा बहुवचन एवं विकारी रूप में ए जोड़े जाते हैं। अवधी आदि में 'न' वाले रूप भी मिलते हैं। ताजुज़्बेकी में इन सभी रूपों का प्रयोग मिलता है, साथ ही कुछ पुराने रूप भी मिलते हैं जो हरियानी, कौरवी तथा पंजाबी आदि में हैं। कुछ उदाहरण हैं :

पुल्लिग :—(१) ओ—उटो (उठा), देखो (देखा), रसो (पहुँचा), सुतो (सोया), चलो (चला), सुनो (सुना), सम्जो (समझा)

(२) यो—दुड़्यो (दौड़ा), लकर्‌यो (निकला), सुन्यो (सुना), मार्‌यो (मारा), र्‌यो (रहा), टोक्यो (टोका), कर्‌यो (किया), गयो (गया), उतर्‌यो (उतरा), लग्यो (लगा), अयो (आया), होयो (हुआ), सुन्यो (सुना)

(३) इयो—बंदियो (बाँधा), लगियो (लगा), सुतियो (सोया), लकरियो, लक्रियो, (निकला), सुनियो (सुना), रसियो

(पहुँचा)

(४) इआ—सुनिया (सुना), चलिया (चला), सुतिया (सोया)

(५) या—सुन्या (सुना), मार्‌या (मारा)

(६) आ—चला, मारा, हसा (हँसा), लगा, सुना, रखा (रक्खा)

(७) वा—दोवा (दिया), जोवा (गया), होवा, हुवा (हुआ)

(८) नेओ—लिनेओ (लिया), दिनेओ (दिया)

(९) निओ—लिनिओ (लिया)

(१०) न्यो—लिन्यो (लिया), दिन्यो (दिया)

(११) नो—लिनो, लीनो (लिया), दिनो (दिया)

स्त्रीलिंग—(१) इ या ई—ति, ती (गिरी); करि, करी (की); बेटि, बेटी (बैठी); हुइ, हुई (हुई); रि, री (रही); रकि, (रक्खी); लिखी (लिखी); गि, गी (गई)

(२) नि, नी—रूनि (रोई); लिनि, लिनी (ली)

पुंल्लिग बहुवचन तथा विकारी : ए, ये—होये (हुए), सुते (सोये), रसे (पहुँचे), रे (रहे), रके (रक्खे)

ऐतिहासिक दृष्टि से उपर्युक्त रूपों ('न' वाले रूपों को छोड़कर) का संबंध मूलतः सं० के भूतकृदंत प्रत्यय क्त से है। उदाहरणार्थ (क) सं० चल्+क्त=चलितः>प्रा० चलिदो>चलियो>चल्यो>चलो; (ख) सं० चलित+क+ :=चलितओ>चलिदअ>चलिअअ>चलिया>चल्या >चला। पुंल्लिग के १,२,३ का संबंध 'क' से है तो ४,५,६,७ का 'ख' से। यह भी उल्लेख्य है कि ताजुज्बेकी में पुराने और नए दोनों रूप न्यूनाधिक रूप में चल रहे हैं। उदाहरण के लिए उपर्युक्त विकास से स्पष्ट है कि चलियो>चल्यो>चलो विकास की तीन सीढ़ियाँ हैं, किंतु ताजुज्बेकी में तीनों ही के प्रयोग चल रहे हैं। 'इआ' 'या' और 'आ' अंत वाले रूपों के बारे में भी यही बात है। 'वा' ओ, उ के बाद 'व' श्रुति के कारण है और बाद का है। कुछ एक धातुएँ तो ऐसी भी हैं जिनके पांच-छः रूप मिलते हैं: मारियो, मार्‌यो, मारो, मारिया, मार्‌या, मारा; होवा, हुवा, होइया, होयो, होइयो। ८ से ११ तक के नवाले रूप व्युत्पत्ति की दृष्टि से विवादास्पद हैं। इ, ई, ए, ये वाले रूप उपर्युक्त के लिंग, वचन तथा विकार के कारण हुए रूपांतर हैं। 'इ' वाले रूप 'ई' वाले प्राचीन रूपों के विकास हैं। 'ये' में 'य' श्रुति है।

६. ४. ३ क्रियार्थक संज्ञा

हिन्दी में धातु में 'ना' (जैसे चलना) जोड़कर क्रियार्थक संज्ञा बनाते हैं।

ब्रज-राजस्थानी में नो-णो जोड़ते हैं। ताजुज़्बेकी में नो-णो (उच्चारण में ड़ों भी) का ही प्रयोग प्रायः मिलता है। 'ना-णा' वाले रूप अपवाद-स्वरूप ही सुनाई पड़ते हैं, जो उच्चारण में 'ना-णा' की तुलना में न-ण के अधिक निकट होते हैं। ताजुज़्बेकी क्रियार्थक संज्ञा के कुछ उदाहरण हैं: जिणो-जिनो (जीना), जणनो-जन्नो (जनना), तरनो (धरना), जाणो-जानो (जाना), चलणो-चलनो, चरनो-चड़नो (चढ़ना), केणो-केनो (कहना), उटणो-उटनो (उठना), मरनो (मारना), पेशान्नो (पहचानना), देखणो-देखनो (देखना), देणो-देनो (देना) आदि। न्, र्, ड़्, ण्—अंत्य धातुओं में 'नो' ही आता है। इन रूपों में न-ण तो संस्कृत कथनं, चलनं, करणं, जैसे रूपों के अनं > अणं से संबद्ध हैं तथा 'ओ' विसर्ग से विकसित 'ओ' है।

६. ४. ४ पूर्वकालिक कृदन्त

ताजुज़्बेकी में पूर्वकालिक कृदन्त बनाने के प्रत्यय निम्नांकित हैं :—

के—मुड़्के (मुड़ कर), लेके (लेकर), चड़्के (चढ़कर), केके (कहकर), कर्के (करके), होके (होकर), रस्के (पहुँचकर)

कि—अकि (आकर), मुर्कि (मुड़कर), लेकि (लेकर), पुगुर्कि (पकड़कर)

क—लेक (लेकर)

गे—देगे (देकर)

शून्य प्रत्यय—चड़् (चढ़कर)

इनमें 'के' का प्रयोग सर्वाधिक होता है, 'कि' का उससे कम, और 'क' 'गे' और शून्य प्रत्यय का बहुत ही कम।

जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, ये प्रत्यय धातु में जोड़े जाते हैं।

ककारांत धातुओं में प्रथम तीन के रूप क्रमशः -ए, -इ, -अ हो जाते हैं: देके (देक्+के=देखकर), चुकि (चुक्+कि=चुककर, उठाकर), रक (रक्+क=रख कर)। ऐसे रूपों में कभी-कभी दीर्घ 'क' (रक्क=रखकर, देक्के=देखकर) भी सुनाई पड़ता है, यद्यपि उसकी दीर्घता प्रायः नाममात्र की या अत्यल्प होती है।

कुछ लोग पूर्वकालिक कृदन्त के साथ -त भी जोड़ते हैं। जैसे, 'लेजकेत' 'अकेत', 'लेकेत', 'केकेत', 'होकेत'। स्पष्ट ही ये हिंदी में 'लेजाकर तो' 'आकर तो' 'लेकर तो' 'कहकर तो' तथा 'होकर तो' के समान हैं। ताजुज़्बेकी में यह प्रवृत्ति सामान्य न होकर वैयक्तिक है। अधिकांश लोग ऐसा प्रयोग बिल्कुल नहीं करते। कुछ लोग सर्वत्र ऐसा करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी मिलते हैं जो केवल कभी-कभी ही ऐसे प्रयोग करते हैं। कहना न होगा कि यह 'त' अपने

प्रयोग की दृष्टि से अवलंब शब्द जैसा, या निरर्थक है। यों कभी-कभी हिंदी ही की तरह (पहले उसे मारकर तो बात करना), ताजुज़्बेकी में भी (ख के त ज–खाकर तो जाओ) पूर्वकालिक कृदन्त के साथ इसका प्रयोग ज़ोर देने के लिए अर्थात् सार्थक भी होता है।

निरर्थक या अवलंब शब्द के रूप में 'त' का प्रयोग हिंदी प्रदेश की भोजपुरी, अवधी आदि अनेक बोलियों में भी होता है, और इनमें भी इसके प्रयोग की कमी-बेशी प्रायः वैयक्तिक ही होती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से संज्ञा, विशेषण या सर्वनाम आदि (राम तो जाता है, यह अच्छा तो है, मैं तो जाऊँगा) की भाँति पूर्वकालिक कृदंत के साथ 'तो' या 'त' का प्रयोग पहले ज़ोर देने के लिए ही हुआ होगा, बाद में यह अपना अर्थ खोकर अबलंब शब्द बन गया होगा।

ताजुज़्बेकी में पूर्वकालिक कृदन्त के कुछ प्रयोग हैं :

(१) इन् ज़त्कुन त बुडि ने लेके गुंड कर्के लिज के एक् दश्त् अ बगयो।
(इन लड़कों को बुड्ढी ने लेकर, लपेटकर, ले जाकर एक निर्जल स्थान में फेंका)

(२) कुड़ुन त लेके चड़् अयो कर् अ म।
(घोड़ों को लेकर चढ़कर आया घर पर)

(३) पाँशाँ न कुतो त लेकि कर् पर म गियो।
(बादशाह (ने) कुत्ते को लेकर घर पर (में) गया)

(४) पाँचाँ हम इस् ते हेक निकिलकेत जकेत सो गो।
(बादशाह भी इससे आगे निकलकर, जाकर सो गया)

ताजुज़्बेकी के ये 'के' 'कि' आदि हिन्दी कर, के आदि के अनुरूप हैं। इनका विकास सं० पूर्वकालिक कृदन्त कृत्वा > करित्ता > करिअ > करि > कर, कइ > कै > गै > गे; के > कि, क रूप में हुआ है।

६. ५ सहायक क्रिया

ताजुज़्बेकी में प्रमुख सहायक तथा अस्तित्वार्थी क्रिया 'छो' तथा 'हो' है। 'छो' के वर्तमान के रूप इस प्रकार हैं :

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	छुँ, छुँन्, छुँम्, चुँ, चुन्	छ, च, छि, श, चिं
म० पु०	छे, चे	छो, चो, शो, शोउ, चिं, छिं
अ० पु०	छे, चे, छि, चि, शे	छिं, छि, शि, चिं, शिन

हो (जो 'ओ' रूप में भी आती है) के रूप हैं :—

उ० पु०	उँ	एँ, अइँ

	एकवचन	बहुवचन
म० पु०	ए, ये, अइ, ई	ओ, हो
अ० पु०	अइ, ए, ये इ, ई	एँ, अइँ, हन्, अन्

भूतकाल में केवल 'छो' के रूपों का ही प्रयोग होता है, जो इस प्रकार हैं:—

उ० पु०	छो, चो, छु, चु, चे, चि, छि	छे, चे, छि, चि
म० पु०	छो, चो, छु, चु, चि, छि	छो, चो, छे, चे, चि, छि
अ० पु०	छो, चो, छु, चु, शो, चे, छि, चि, छे	छे, चे, छो, चो छि, चि

'छो' के रूप तीन प्रकार के हैं, छ-वाले, च-वाले तथा श-वाले। यह विकास छ > च > श रूप में हुआ ज्ञात होता है। ये रूप परिनिष्ठित हिन्दी में तो नहीं हैं किंतु अनेक भारतीय आर्य भाषाओं में हैं तथा कई हिन्दी बोलियों में भी हैं। उदाहरणार्थ गुजराती छूँ, छे, छो आदि; कश्मीरी छुस्, छेस, छिह् आदि; जैपुरी छूँ, छै, छाँ, छो, छा आदि; मेवाती सूँ, सै, साँ, सो आदि; हरियानी सै, सूँ, सो, साँ आदि; पंजाबी सा, से, सी आदि; कुमायूनी छूँ, छै, छ, छन, छिया आदि; गढ़वाली छौं, छै, छया आदि; नेपाली छुँ, छु, छे, छै, छौ आदि; मैथिली छौं, छैं, छे आदि; दक्खिनी अछे, अच्, अछै, अछो आदि; उड़िया अछि आदि; मराठी असणें; तथा बंगाली आछि, आछ, आछे आदि। कबीर (अछलौं), जायसी (अछहिं, आछ), तुलसी (अछत) में भी कुछ संबद्ध रूप मिलते हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से यह धातु बहुत ही विवादास्पद है[1]। कुछ प्रमुख मत ये हैं।

(१) वररुचि इसे सं० अस् (होना) से व्युत्पन्न मानते हैं। क्रमदीश्वर (४.१०) एवं रामशर्मन (२.२७) का भी यही मत है।

(२) हेमचन्द्र इसे सं० आस् (=बैठना) धातु से संबद्ध करते हैं।

(३) अस्कोली (Ascoli) इस धातु से संबद्ध प्राकृत रूप 'अच्छइ' को पालि 'अच्छति' से जोड़ते हैं। 'अच्छति' का संबंध वे 'आस्' धातु के कल्पित भविष्य रूप *आत्स्यति अथवा *आत्स्यते से मानते हैं।

(४) चाइल्डर्स (Childers) 'अच्छइ' को 'आस्' धातु के ही एक कल्पित रूप *आस्स्कदि से विकसित मानते हैं।

(५) ई० म्यूलर (Muller)—इसका संबंध पहले सं० गम् (जाना) धातु से मानते थे। उनके अनुसार 'गच्छति' में 'ग' के लोप से 'अच्छति' बना।

---

१. वररुचि १२.१९; हेमचंद्र ४.२१५; केलाग पृ० २८०; चटर्जी पृ० १०३५; पिशेल ४८०; टर्नर पृ० ५३१; ब्लाक पृ० ३५६; तेसितोरी पृ० १३९।

(६) ट्रेंकनर (Trenckner) तथा टोर्प (Torp), 'आस्' धातु के भूतकाल (aorist) के कल्पित रूप *आत्सीत् से इसे संबद्ध मानते रहे हैं। म्यूलर ने भी अपना पूर्ववर्ती मत छोड़कर, बाद में इसी को मान लिया था।

(७) ई० कून (Khun) इसे सं० 'आस्' धातु का एक अविकसित रूप मानते हैं।

(८) योहान्सन (Johansson) इसे 'अस्' धातु के कल्पित भविष्य रूप *अस्स्यति या *अत्स्मति से निकला मानते हैं।

(९) पिशेल (Pischel) इसे सं० धातु 'ऋ' (=किसी में गिरना, टकराना, जाना आदि) से (रूप ऋच्छति) संबद्ध मानते हैं। संस्कृत वैयाकरणों की ऋच्छ्, या बोंटलिंक (Bontlingk) तथा रोथ (Roth) की अच्छ् भी यही है। तेसितोरी को भी पिशेल का मत मान्य है।

(१०) टर्नर ने इसकी व्युत्पत्ति आ+क्षे (*आक्षेति, प्रा० *अच्छेति>अच्छे) से माना है।

(११) सिल्वाँ लेवी (Sylvain Levi) तथा मेये (A. Meillet) ने इसका संबंध मूल भारोपीय धातु एस् से माना है। जूल ब्लाख तथा चटर्जी भी इसी पक्ष में हैं।

वस्तुतः ध्वन्यात्मक एवं आर्थिक दोनों दृष्टियों से विचार करने पर प्रथम दसों मत बहुत युक्तियुक्त नहीं लगते। ऐसी स्थिति में अंतिम अर्थात् ग्यारहवां मत ही मान्य मालूम होता है। इसका विकास मेरे विचार में इस प्रकार दिखाया जा सकता है।

मूल भारोपीय धातु *एस् (es), सं० अस्, तथा ग्रीक, लैटिन, प्राचीन ट्यूटानिक एस् आदि रूपों में विद्यमान है। इसका एक *स्क (sk) विकरणयुक्त (thematic) रूप *es-sk (=होना) भी, प्राचीन भारोपीय भाषा में प्रयुक्त होता था, इस बात का पता प्राचीन लैटिन esco, escit (भविष्य), होमरकालीन ग्रीक भूत eskon, eske; आर्मेनियन (Subjunctive) इशेम (icem); तथा तोखारियन sketar (=है), skente (=हैं) से चलता है। इसके *es-ske-ti से वैदिक काल में *as-cha-ti रूप की संभावना है। इसी से पालि अच्छति, प्रा० अच्छइ आदि विकसित हुए।

प्राकृत एवं अपभ्रंश काल में इस अच्छ् (=होना) धातु का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है। कुछ उदाहरण हैं :

महाराष्ट्री—अच्छसि, अच्छन्ति, अच्छउ

जैन महाराष्ट्री—अच्छइ, अच्छसु, अच्छह

अर्धमागधी—अच्छइ, अच्छाहि
आवन्ती—अच्छध
पैशाची—अच्छति
अपभ्रंश—अच्छइ, अच्छउ, अच्छे
अवहट्ट—अछ्, अछिअ, अछे

शौरसेनी साहित्य में इस धातु का प्रयोग नहीं मिलता। किंतु वररुचि (१२.१९) द्वारा इसे शौरसेनी माने जाने, तथा शौरसेनी प्राकृत एवं अपभ्रंश से संबंधित आधुनिक भाषाओं गुजराती, राजस्थानी आदि में इसके प्रचुर प्रयोग से इस बात का सहज ही अनुमान लगता है कि शौरसेनी क्षेत्र में भी यह धातु अपरिचित नहीं थी।

ताजुज़्बेकी के वर्तमान के रूप उक्त धातु के संस्कृत के वर्तमान के रूपों से संबद्ध ज्ञात होते हैं। भूतकाल के रूप कदाचित् भूत के रूपों से संबंद्ध हैं, यद्यपि विकसित होते-होते दोनों रूप कई स्थलों पर समान भी हो गए हैं।

'हो' वाले रूप स्पष्ट ही संस्कृत भू धातु के वर्तमान काल के रूपों से विकसित हैं। ये हिन्दी हूँ, हैं, है, हो, है, हैं के अनुरूप हैं[1]।

६.६ काल

६. ६. १ वर्तमान

६. ६. १. १ सामान्य वर्तमान (मैं करता हूँ)

ताजुज़्बेकी में सामान्य वर्तमान के लिए चार प्रकार के रूपों का प्रयोग मिलता है। इनमें दो प्रकार के रूप संयोगात्मक हैं, और दो वियोगात्मक। इनमें सबसे अधिक प्रयोग संयोगात्मक=१ का होता है और सबसे कम संयोगात्मक=२ तथा वियोगात्नक=२ का। नीचे 'कर' धातु के रूप (मैं करता हूँ) दिए जा रहे हैं।

संयोगात्मक—१

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	कँरुइ, कँरइ	करइँ, करयँ, कँरइ, करइ,
म० पु०	करइ, करय	करइ, करय, करउ
अ० पु०	करइ, करय	करइँ, करयँ, कँरइँ, करइ

---

1. विस्तार के लिए देखिए हिन्दी भाषा पृ० २५१।

इसके मुख्य प्रत्यय हैं : उइँ, अइँ, अइ, अयँ, अय, अउ। कुछ अनियमित रूप भी होते हैं, जिनका उल्लेख्य आगे भविष्य के प्रसंग में किया गया है। उपर्युक्त रूप दोनों लिंगों में आते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से ये रूप संस्कृत के वर्तमान के रूपों से संबद्ध ज्ञात होते हैं : करोति>करइ>करय; कुर्वन्ति>करइँ> करयँ; करोमि>करुइँ>कँरइ। अन्य रूप इन्हीं के सादृश्य पर हैं।

संयोगात्मक—२

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	करतु	करते, करत
म० पु०	करतो, करता, कँरत	करते, करत
अ० पु०	करतो, करता, करत	करते, करत

ये पुंल्लिग के रूप हैं। इनके स्त्रीलिंग के रूप इकारांत या ईकारांत हो जाते हैं। स्पष्ट ही ये रूप वर्तमानकालिक कृदंत हैं। अंत के ओ, आ, उ, ऐ, अ लिंग और वचन के हैं। अन्यत्र इन पर विचार किया जा चुका है।

वियोगात्मक—१

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	करइ चुँ	करइ चिं
म० पु०	करइ चे	करइ चो, करउ चो
अ० पु०	करइ चे	करइ चिं

इनमें धातु में 'अइ' तथा सहायक क्रिया रूप में उ० पु० एकवचन में 'चुँ', उ० पु० तथा अ० पु० वहुवचन 'चिं' एवं शेष में 'चो' जोड़ते हैं। सामान्य रूप तो यही हैं किंतु अ० पु० बहु० में करन् चि, करिन् चि आदि अन्य रूप भी मिलते हैं। करइ् के स्थान पर करइँ या करउ के स्थान पर करउँ, तथा च (चो, चुँ, चिं) के स्थान पर 'छ' या 'श' वाले रूप भी अविरल नहीं हैं। वियोगात्मक—१ रूप दोनों लिंगों में आते हैं। इनमें 'करइ' मूल क्रिया है तथा 'च' वाले रूप सहायक क्रिया।

वियोगात्मक—२

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	करतो~करता~करत उँ	करते अइँ

म० पु० करतो~करता~करत इ	करते ओ
अ० पु० करतो~करता~करत इ	करते अइँ

ये पुल्लिग के रूप हैं। स्त्रीलिंग के रूपों में ती आता है। ये रूप हिन्दी 'करता हूँ' आदि के अनुरूप हैं। कभी-कभी इन वर्तमानकालिक कृदन्तों एवं सहायक क्रिया के मिश्रित रूप (जैसे करतुँ, करति, करतेइँ आदि) भी सुनाई पड़ते हैं। व्युत्पत्ति के लिए वर्तमानकालिक कृदन्त तथा सहायक क्रियावाला अंश देखा जा सकता है। उँ, इ, अइँ, ओ, हिन्दी हूँ, है, हैं, हो के विकास हैं।

अंग्रेज़ी I have a house की तरह 'मे कर तरुइँ' जैसा प्रयोग भी ताजुज़्बेकी में है। हिन्दी में 'मेरे पास घर है' कहेंगे। ताजुज़्बेकी का उदाहरण है :

मे	कर तरुइँ	हम कर तरइँ
तु	कर तरइ	तम कर तरउ
ओ	कर तरइ	ओदुन कर तरइँ

इसके प्रत्यय भी वही हैं जिनकी व्युत्पत्ति पर संयोगात्मक—१ के अंतर्गत विचार किया जा चुका है।

६.६.१. २ अपूर्ण वर्तमान (मैं कर रहा हूँ)

अपूर्ण वर्ततान के लिए यों तो ताजुज़्बेकी में सामान्य वर्तमान का भी प्रयोग होता है किंतु कभी-कभी एक स्वतंत्र रूप भी इसके लिए प्रयुक्त होता है, जो निम्नांकित है।

एकवचन	**बहुवचन**
उ० पु० करुइँ दे	करइँ दे
म० पु० करइ दे	कर शोउ दे
	कर चे दे
	करउ चे दे
अ० पु० करइ दे	करि चे दे
	करिन् शिन् दे

इनमें धातु में उइँ, अइँ, अइ., अउ, इन्, इँ तथा शून्य जोड़ते हैं तथा सहायक क्रिया के रूप में दे, शोउ दे आदि जोड़ते हैं। इनकी व्युत्पत्ति के लिए वर्तमान संयोगात्मक—१ तथा सहायक क्रिया वाले अंश देखे जा सकते हैं।

६. ६. १. ३ पूर्ण वर्तमान (किया है)

(पुल्लिग)

एकवचन	**बहुवचन**
उ० पु० कियो छूँ	किये छि

किये छुँ
किया छुँ
म० पु० कियो छे — किये छि
किया छे — किये छो
अ० पु० कियो छे — किये छि
किया छे — करिँ (न्) छि

स्त्रीलिंग (की है)

तीनों पु० कि छि — कि छि

इनमें छे तथा छि के स्थान पर कुछ लोग शे, शि भी बोलते हैं। किया, कियो, किये कि के स्थान पर करा, करो, करे, करि भी प्रयुक्त होते हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से भूतकालिक कृदंत तथा सहायकक्रिया वाले अंश देखे जा सकते हैं।

६. ६. २ भूत

६. ६. २. १ सामान्य भूत

इसके लिए भूतकालिक कृदन्त (दे०) का प्रयोग होता है। पुल्लिग एकवचन में रूपांत में ओ, अ या आ; बहुवचन में ए; स्त्रीलिंग एकवचन में इ या ई तथा बहुवचन में इँ या ईं आते हैं—

	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
तीनों पुरुष	आयो, आया अय अयो	आइ, आई, अई	आए, अए	आइँ, आईं अइँ

ये हिन्दी आया, आए, आई हैं।

सामान्य भूत में क्रिया का रूप क्रिया के अकर्मक होने पर कर्ता के अनुसार तथा सकर्मक होने पर कर्म के अनुसार होता है। किंतु ऐसे प्रयोग भी मिलते हैं जहाँ सकर्मक क्रिया भी कर्ता का अनुगमन करती है। उदाहरणार्थ—

कर्म के अनुसार—मिज रुटि खयि — हम न रुटि खयि
(मैंने रोटी खाई)
तिज रुटि खयि — तम न रुटि खयि
उस न रुटि खयि — उन न रुटि खयि

\+ \+ \+ \+

कर्ता के अनुसार—मिज रुटि खयो — हम न रुटि खये
(मैंने रोटी खाया)
तिज रुटि खयो — तम न रुटि खये

उस न रुटि खयो उन न रुटि खये

व्युत्पत्ति भूतकालिक कृदंत के प्रसंग में दी जा चुकी है ।

६. ६. २. २ अपूर्ण भूत

पुल्लिग (कर रहा था) :

	एकवचन	**बहुवचन**
तीनों पु०	करतो लगे छो	करतो लगे छे

स्त्रीलिंग (कर रही थी)

	एकवचन	**बहुवचन**
तीनों पु०	करति लगि छि	करति लगि छि

दोनों वचनों, दोनों लिंगों तथा तीनों पुरुषों में 'कर चि' का प्रयोग भी मिलता है । करतो आदि वर्तमानकालिक कृदंत, लगे आदि भूतकालिक कृदंत तथा छो, छि, छे सहायक क्रिया हैं ।

६. ६. २. ३ पूर्ण भूत

पुल्लिग : (किया था)

	एकवचन	**बहुवचन**
तीनों पु०	करा चो	करे चे
	करो चो	
	कियो चो	किये चे

स्त्रीलिंग : (की थी)

तीनों पु०	करि चि	करि चि

ध्वनि-परिवर्तन या स्थानीय भेदों के कारण एक के प्रायः एकाधिक रूप मिलते हैं । 'दिया था' को 'दोवा चो' 'दुवा चो' तथा 'दिने चो' तीनों रूपों में सुना जा सकता है । कुछ लोग दोनों वचनों तथा लिंगों में चो, चे, चि के बाद 'दे' लगाते हैं । जैसे 'तिज करा चो दे' =तूने किया था । करा, करो, करे, करि के स्थान पर दिया, दियो, दिये, दि या दी का प्रयोग भी मिलता है । ये रूप भूतकालिक कृदंत+सहायक क्रिया हैं ।

६. ६. ३. भविष्य

ताजुज़्बेकी में भविष्य के रूप दो प्रकार के होते हैं । एक तो हिन्दी की तरह - ग - वाले रूप और दूसरे हिन्दी की कुछ बोलियों में मिलने वाले रूपों की तरह संयोगात्मक रूप । यहाँ दोनों अलग-अलग दिए जा रहे हैं ।

'ग' वाले रूप : ('कर' धातु के)

	एकवचन		बहुवचन	
	पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
उ० पु०	करुंगो, - गा - ग	- गि	करिन्गे	करिन्गि
	करुगो, - गा - ग	- गि	करन्गे	करन्गि
म० पु०	करगो, - गा,ग	- गि	करगे	करगि
	करोगो, - गा, - ग	- गि		
अ० पु०	करगो, - गा, - ग	- गि	करिन्गे	करिगी
	करोगो, - गा, - ग	- गि	करन्गे	करन्गि

रूपों से स्पष्ट है कि पुल्लिग एकवचन में गो, गा या ग आते हैं। इनमें 'गो' का ही प्रयोग अधिक होता है 'ग' का कम और 'गा' का और कम। बहुवचन में पुल्लिग में गे और स्त्रीलिंग में गि। गि के स्थान पर कभी कभी 'गी' भी सुनाई पड़ता है। धातु और ग् के बीच उ० पु० एकवचन में उँ या उ, उ० पु० तथा अ० पु० बहुवचन में इन् या अन्, म० पु० तथा अ० पु० एकवचन में अ या ओ तथा म० पु० बहुवचन में अ का प्रयोग होता है। कुछ अन्य स्वरांत तथा व्यंजनांत धातुओं के रूप हैं: खोवगि (खाओगी), रकगे (रक्खोगे), समजिन्गे (समझेंगे), जइन्गे (जाएँगे), होवगो (होगा), सोवगि (सोओगी), ओवगो (आओगे)। बोलने में 'ग' वाले अंश को कुछ पुराने लोग अलग भी बोलते हैं। 'गो' वाले रूप ह्रस्व होकर 'गु' रूप में भी सुनाई पड़ते हैं: करोगु (करेगा), कोंगु (खाऊंगा)। यह 'कोंगु' 'खाउँगो' से विकसित है। इस प्रकार के विकसित अनेक रूप मिलते हैं।

इन रूपों में अंत्य ओ, आ, इ, ऐ आदि तो लिंग और वचन के हैं। 'ग' सं० गतः से है। 'करु' आदि संस्कृत के भविष्यत के रूपों से संबद्ध हैं।

संयोगात्मक रूप

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	करुइँ, कँरइ	करइं, करयँ, कँरइ, करइ
म० पु०	करइ, करय	करइ, करय, करउ
अ० पु०	करइ, करय	करइँ, करयँ, कँरइ, करइ

संयोगात्मक रूप के प्रत्यय हैं: उइँ, अइँ, अइ, अयँ, अय, अउ। 'कर' धातु के कुछ अन्य अपवाद रूप (उ० पु० एकवचन) करतुइँ, (म० पु० एकवचन) करयोवयँ तथा (अ० पु० एकवचन) करतय हैं। ध्वनि-परिवर्तन, लोप तथा मिश्रण के कारण कुछ रूप एकाधिक रूपों में विकसित हो गए हैं। उदाहरणार्थ दोंवइँ-दुवँइ-दुइँ-द्विँ (दूँगा); जोंवइ-जोवयँ-जोवइँ-जुवइँ-जुइँ-जोवें (जाऊँगा); होवय-हुवय-हुवइ-हुवि-हुवइँ-हुवे-होतइ-ओतइ-ओतेइ; खाउइँ-

खाउयँ-खाउँ-खातुँ-खतुँ तथा समजुइँ-समतुँ-समतु आदि। अतिरिक्त 'त' वाले रूप कई धातुओं के हैं। ये ऐतिहासिक दृष्टि से वर्तमानकालिक कृदंत के आधार पर बने रूप ज्ञात होते हैं।

भविष्य के उपर्युक्त रूपों में 'ग' वाले रूपों की तुलना में ये दूसरे संयोगात्मक रूप अधिक प्रयुक्त होते हैं। इन संयोगात्मक रूपों में म० पु० बहुवचन में 'करइ' के अतिरिक्त 'करउ चो' (अर्थात् धातु में 'अउ चो' जोड़कर बने रूप) तथा अ० पु० बहुवचन में करइँ या करइ के स्थान पर 'करिन् चि' 'करिन् शि' 'करिन् छि, 'करिं चि' 'करिन् हन' के प्रयोग (अर्थात् धातु के साथ इन् या इँ और चि या छि या शि या हन) भी प्रायः सुनाई पड़ते हैं।

ताजुज़्बेकी में वर्तमान (संयोगात्मक—१) और भविष्य (संयोगात्मक) के लिए एक ही रूप का प्रयोग भाषाओं की दुनिया में कोई नई बात नहीं है। ताजुज़्बेकी के कुछ क्षेत्रों को घेरने वाली उज़्बेक भाषा में भी यह विशेषता है। उदाहरण के लिए उज़बेक में ओक़िमॉक़(=पढ़ना) धातु से तीनों पुरुषों दोनों वचनों के रूप हैं :

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	ओक़ीमन	ओक़ीमिज़
म० पु०	ओक़ीसन	ओक़ीसिज़
अ० पु०	ओक़ीदि	ओक़ीदिलार

इनका प्रयोग 'मैं पढ़ता हूँ' तथा 'मैं पढ़ूँगा' आदि दोनों के लिए होता है। अर्थ का निर्णय संदर्भ से हो जाता है। ताजुज़्बेकी के ये दोनों कालों के समान रूप संस्कृत के वर्तमान और भविष्य के रूपों के ऐसे विकास हैं जो विकसित होते-होते एक में मिल गए हैं (करोति>करइ, करिष्यति>करइ) तथा कहीं-कहीं एक दूसरे को प्रभावित भी किया है। यह समानता ध्वनि-परिवर्तन संयोग और प्रभाव का परिणाम है। यों इनके समान बने रहने में, संभव है पार्श्ववर्ती उज़्बेक भाषा की ठीक ऐसी ही व्यवस्था का भी प्रभाव हो। यह भी उल्लेख्य है कि ताजुज़्बेकी में वर्तमान और भविष्य के लिए इन समान रूपों का प्रयोग ही अधिक होता है। अन्य रूप अपेक्षाकृत बहुत कम प्रयुक्त होते हैं।

इसी प्रकार वर्तमान और भूत की सहायक क्रियाओं में काफ़ी समानता होने के कारण अस्तित्ववाची वर्तमान और भूत तथा पूर्ण वर्तमान एवं पूर्ण भूत भी अनेक रूपों में समान है।

६. ६. ४ संभावनार्थ

संभावनार्थ, सामग्री में दो प्रकार के मिले हैं : भूत, भविष्य। भूत वर्तमानकालिक कृदंत से बनता है :

अगर होतो' (=अगर होता)।

भविष्य के लिए (अन्य पुरुष) या तो भूतकालिक कृदंत 'अगर उस न देख्यो' (=अगर उसने देखा) या केवल धातु 'पाँचों मन्त रन कर' (=राजा मुझे रानी करे) का प्रयोग करते हैं। उत्तम पुरुष एकवचन में उइँ, उँ या ऊँकारांत (मे, मरुइँ, मरुँ या मरूं) तथा बहुवचन में एँकारांत (हम करें) एवं मध्यम पुरुष में आज्ञा (अगर तुजा=अगर तू जा; अगर तम खग्रो=अगर तुम खाग्रो) के रूप प्रयुक्त होते हैं। कृदंती रूपों से इतर रूप आज्ञा के ही हैं, जो मूलतः संस्कृत के वर्तमान से रूपों के ही विकसित हैं।

६.६.५ आज्ञा

आज्ञा का प्रयोग मध्यम पुरुष में ही होता है। हिन्दी की तरह ही ताजुज्बेकी में भी एकवचन आज्ञा में धातु का प्रयोग होता है जैसे जा, चल, पड़ (पढ़)। बहुवचन में धातु में ओ या उ या ओउ जोड़ते हैं। जैसे जाओ, जाउ, जाओउ; चलो, चलउ, चलोउ; पड़ो, पड़उ, पड़ोउ। एकवचन वाले रूप सामान्य या निरादरार्थी हैं तथा बहुवचन वाले आदरार्थी। इसीलिए आदर के लिए एकवचन में भी बहुवचन वाले रूप प्रयुक्त होते हैं। बहुवचन के रूपों में 'ओउ' वाले रूपों का प्रयोग अधिक होता है, 'उ' वालों का कम तथा 'ओ' वालों का और भी कम।

उत्तम पुरुष तथा अन्य पुरुष में आज्ञा के रूप इच्छार्थक या अनुमतिबोधक होते हैं। इसके लिए उत्तम पुरुष एकवचन में धातु में उइँ, उँ, ऊँ; बहुवचन अइँ, एँ; अन्य पुरुष एकवचन में अइ, ए, तथा बहुवचन में अइँ, एँ जोड़ते हैं। जैसे में चलुइँ, हम चलें, वो चले, वे चलें।

ऐतिहासिक दृष्टि से आज्ञा के रूप सं० के वर्तमानकालिक रूपों के ही विकास हैं : चलामि > चलउँ > चलूँ, चलुइँ (ताजुज्बेकी के वर्तमान के रूपों का प्रभाव); चलसि > चलइ > चल; चलथ > चलइ > चलहु > चलो आदि।

६.७ संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया का अर्थ है मूल क्रिया के साथ किसी और तत्त्व को जोड़ देना। हिन्दी ही की तरह ताजुज्बेकी में भी यह योग तीन प्रकार का मिलता है :

(१) मूल क्रिया+कालद्योतक सहायक क्रिया

(क) रको च=रक्खा था

(ख) अयो चो=आया हूँ

(ग) कियो छो=कहा था

इस प्रकार की संयुक्त क्रिया प्रायः संयुक्त काल कहलाती है।

(२) क्रिया के अतिरिक्त कोई (संज्ञा, विशेषण, अवयव) शब्द+सहायक क्रिया

(क) ज़ियति करइ=ज़्यादती करेगा

(ख) तमाशो करइ=तमाशा करता है

(ग) एला कियो=साथ किया

(घ) अवक़ात कियो=खाना किया, खाना पकाया

(ङ) पिशन कर्यो=प्रश्न किया

(च) जवाव दिनो=जवाब दिया

(छ) कबुल करइ=कबूल करता है

(ज) अरेस्तन करइ=क़ैद करेगा

(झ) जुदो करो=जुदा किया

वस्तुतः इस वर्ग की क्रियाओं में सभी संयुक्त क्रिया नहीं होतीं। कुछ में संबद्ध शब्द कर्म या पूरक होता है। इस दृष्टि से उपर्युक्त सूची में कदाचित् केवल 'ग' और 'झ' ही इसके शुद्ध उदाहरण हैं।

(३) मूल क्रिया+अर्थद्योतक सहायक क्रिया

हिन्दी में १७-१८ सहायक क्रियाओं का प्रयोग होता है। ताजुज़्बेकी में इस प्रकार की मुख्यतः छः ही क्रियाओं का प्रयोग होता है जिनमें सर्वाधिक प्रयुक्त क्रिया 'जा' है। कुछ उदाहरण हैं:

जा

अ जओ=आ जाओ

चलो गियो, चल्यो ग्यो, चलो गो=चला गया

पक गियो=पक गया

पज ग्यो=टूट गया

(रह) मार गो=रास्ता मार गया=रास्ता चला

रस गयो=पहुँच गया

रे गियो=रह गया

ले गियो=ले गया

सड़ गो=जल गया

सम गि=समझ गई

हो गयो=हो गया

ऐसे प्रयोगों में मूल क्रिया, मूल धातु, वर्तमान कालिक कृदंत या भूतकालिक कृदंत रूप में आती है।

कुछ अन्य क्रियाओं के उदाहरण हैं :

आ

चलि अयो=चला आया

पि अइ=पी आई

'आ' जा जैसी नहीं है। इसके प्रयोगों में इसका मूल अर्थ बना रहता है, और यह 'जा' आदि अन्य सहायक क्रियाओं की भाँति मूल क्रिया से संयुक्त नहीं होती।

दे

बान दियो=बाँध दिया

शोड़ दिनेओ=छोड़ दिया

ले

खा लिनी=खा ली

ले ले=ले ले

सट

बगा सट्यो=फेंक डाला

बेच शिट्यो=बेंच डाला

बग

चिर बगा=चीर डाला

सड़ा बगा=जला डाला

६.८ वाच्य

ऊपर कर्तृवाच्य की क्रियाओं का विवरण था। कर्मवाच्य सकर्मक धातुओं का होता है। ऊपर भूतकाल के प्रसंग में जहाँ कर्म के अनुसार क्रिया के होने का संकेत किया गया है, वह कर्मवाच्य है। इसके अतिरिक्त हिन्दी की तरह ही 'जा' धातु से कर्मवाच्य की क्रिया बनती है :

मिरि रुटि खइ गि=मेरी रोटी खाई गई।

कोड़ो लयो गयो=घोड़ा लाया गया।

भाववाच्य की क्रिया भी 'जा' से बनती है :

रन ते खयोनि गियो=रानी से खाया नहीं गया।

पाचा ते पयो नि गियो=बादशाह से पाया नहीं गया।

अव्यय

७.० हिन्दी आदि की तरह ही ताजुज़्बेकी के कुछ कालवाचक, स्थानवाचक तथा रीतिवाचक अव्यय तो सार्वनामिक तत्व में कुछ जोड़ कर बनते हैं, किंतु अन्य दूसरे प्रकार के हैं। यहाँ कुछ प्रमुख अव्यय संभावित व्युत्पत्ति के साथ दिए जा रहे हैं।

७.१ सार्वनामिक

इनमें सार्वनामिक तत्व ए, इ, अ; ज, जि; त, क, कि; उ हैं।

७.१.१ कालवाचक

(अब)	(जब)	(तब)	(कब)
एब	जब	तब	कब
इब	जद	तद	कद
अब			कदुन्
			कदुँ

'अभी' के लिए अबे, इबे, एबे तथा 'कभी' के लिए कदि, कबे आते हैं।

कालवाचक में सार्वनामिक तत्व में 'न' और 'द' (दुन, दुँ) जोड़े गए हैं। 'ब' की व्युत्पत्ति सं० वेला (समय) से है। 'कद' सं० 'कदा' से, जद 'यदा' से, तथा तद 'तदा' से संबद्ध हैं। हरियानी किब, कद, इब, जद, पंजाबी जद, आदि तुलनीय हैं।

७.१.२ स्थानवाचक

(यहाँ)	(वहाँ)	(जहाँ)	(कहाँ)
इयाँ	उयाँ	जियाँ	कियाँ
इन्याँ	उन्याँ	जिन्याँ	किन्याँ
इयँ	उयँ	जियँ	कियँ, किअँ
इन्यँ	उन्यँ	जिन्यँ	किन्यँ

इँ	उँ, उइँ	जि	किं
इगि	उगि	जिगि	कि गि
इँ	उ	×	कीं
इंय	×	×	×
यइँ जाग	उइँ जाग	जि जाग	कि जाग
×	उइँन	×	×
इन	उन	×	किन
इयो	उयो	जियो	कयो
इये	उये	×	किये
इन्ति	उन्ति	×	×
इन्त	उन्त	×	×

दिशावाचक के लिए भी इन्हीं में कुछ का प्रयोग होता है। जैसे इधर—इ गि, इन्ति, इन्त; उधर—उ गि, उन्ति, उन्त, उइँ; जिधर—जि गि; किधर—कि गि।

मेरे द्वारा एकत्रित सामग्री में रिक्त स्थानों पर संभावित रूप नहीं हैं।

यहीं, वहीं आदि के लिए एँ या ए जोड़ते हैं। जैसे इयें (यहीं), इये आदि।

इयाँ, उयाँ, जियाँ, कियाँ वाले रूप हिन्दी तथा उसकी बोलियों के यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ आदि रूपों से; तथा हरियानी के 'ग' वाले इंगे, किंगे, जिंगे रूपों से तुलनीय हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से इन्त सं० अत्र से संवद्ध है। 'न्' क्षतिपूरक है। 'उन्त' उसी के सादृश्य पर 'उ' से बना है। यइँ जाग, उइँ जाग, जि जाग, कि जाग में यइँ, उइँ आदि तो सर्वनाम हैं तथा 'जाग' (जगह) फ़ा० जायगाह्>जाग है। इगि, उगि आदि का 'गि' भी फ़ा० जायगाह्>जागह्>जगह्>जगे>गे>गि है। अन्य रूप अस्मिन्>*यहिं+आ>इयाँ; यस्मिन्>जहि+आ>जियाँ (इयाँ के इ के सादृश्य के कारण ज का 'जि'), कस्मिन्>कहि+आ>कियाँ (इ सादृश्य से) रूप में विकसित हैं। 'उयाँ' उ से इनके सादृश्य पर है।

७.१.३ रीतिवाचक

(ऐसे)	(वैसे)	(जैसे)	(कैसे)
इ कुर	उ कुर	जि कुर	क कुर
इ कुरि	उ कुरि	जि कुरि	क कुरि
			कुरि
			कुरि
			कुर

व्युत्पत्ति और तुलना के लिए देखिए विशेषण में सार्वनामिक का गुण-वाचक ।

७.२ अन्य

(१) **'आज' के अर्थ में**—अज्, अच, आँच्, ओच् ।
सं० अद्य>प्रा० अज्ज>आज (>अज)>आच>अच, आँच, ओच ।

(२) **'कल' के अर्थ में**—कल, कल्ल, कॉल, कॉला, फ़दर, फ़दरा (केवल आने वाले कल के लिए) ।
सं० कल्य>प्रा० कल्ल>काल>कॉल, काला, कल । 'फ़दर', 'फ़दरा' अरबी फ़ज्र, फ़ा० फ़ज्र से संबद्ध हैं । (ज>द) ।

(३) **'सुबह' के अर्थ में**—फ़जर, सुबह, सुब्ह, सुबो, वख़्त-अ-नमॉज़ । ये क्रमशः अरबी फ़ज्र तथा सुबह् से विकसित हैं । 'वख़्त-अ-नमाज़' स्पष्ट ही 'नमाज़ का समय' है ।

(४) **'शाम' के अर्थ में**—शाम, शॉम, शामो । (फ़ारसी शाम)

(५) **'दिनोंदिन' के अर्थ में**—दिन-ब-दिन । यह फ़ारसी है । ताजुज़्बेकी में कदाचित् ताजिक से गया है ।

(६) **'पिछले वर्ष' के अर्थ में**—परुन् । 'पर+वर्ष' से इसका संबंध ज्ञात होता है । हिन्दी में इस अर्थ में 'पर साल' चलता है

(७) **'फिर' के अर्थ में**—फेर, फ़ेर, पे, फे, पेर । ये हिन्दी 'फिर' से तुलनीय हैं । फिर की व्युत्पत्ति अस्पष्ट है । 'फिर' अर्थ में ताजुज़्बेकी में 'नव' भी आता है जो फ़ारसी है ।

(८) **'ऊपर' के अर्थ में**—उफ़र, उफ़र, फेर, उफराँ, उफरा । सं० उपरि> प्रा० उप्पर>उफ़र आदि ।

(९) **'नीचे' के अर्थ में**—तल, नीचे, तला, मा । 'तल' सं० है । 'नीचे' सं० नीचै से है । 'तला मा' 'तल में' है ।

(१०) **'बाहर' के अर्थ में**—बार, बॉर, बर । सं० वहिः>प्रा० बाहिरो>बाहर >बार>बॉर, बर ।

(११) **'भीतर' के अर्थ में**—अंदर । फ़ारसी है ।

(१२) **'आगे' के अर्थ में**—हिके, हेक, हिक, एक़ा, यक़ा, उगि, इगि । ये सभी सं० अग्रे>प्रा० अग्गे से संबद्ध ज्ञात होते हैं ।

(१३) **पीछे के अर्थ में**—पच, पश, पश्, पाशा । सं० पश्च से संबद्ध है ।

(१४) **'बीच' के अर्थ में**—बिश्कोर्तो, बिश्कलो, बिश्त, बिच, बिश, बिश्कर, बिश्कड़, बिचाँ । 'बिच' आदि सं० विच् से संबद्ध हैं । 'बिश्' वाले रूपों में 'च' का 'श' में विकास हुआ है । 'कड़' वाले रूप भोजपुरी-अवधी

बिचखँड़ (बीच+खंड) से तुलनीय हैं। 'त' वाले रूप विकास की दृष्टि से अस्पष्ट हैं।

(१५) **'पास' के अर्थ में**—कनि, कुला, कुले, नज़दीक। सं० कर्णे>काने>कने >कनि रूप में 'कनि' का विकास हुआ है। हिन्दी की कई बोलियों में पास के अर्थ में 'कने' का प्रयोग होता है। 'नज़दीक' फ़ारसी है तथा 'कूल' संस्कृत।

(१६) **'दूर' के अर्थ में**—दुर (सं० दूर)।

(१७) **'ओर' के अर्थ में**—लब (फ़ारसी)।

(१८) **'अगर' के अर्थ में**—अगर, अगअ, अग (फ़ारसी अगर)।

(१९) **'लेकिन' के अर्थ में**—लकिन, लोकिन (अरबी लेकिन)।

(२०) **'अथवा' के अर्थ में**—या, य, कि (फ़ारसी 'या' तथा 'कि')।

(२१) **'भी' के अर्थ में**—बि, बे, ब, हम। इनमें प्रथम तीन सं० 'अपि' से संबद्ध हैं तथा 'हम' फ़ारसी है। 'हम' का प्रयोग ताजिक तथा उज़्बेक में भी होता है।

(२२) **'धीरे-धीरे' के अर्थ में**—सेकिन-सेकिन।
(ताजिक और उज़्बेक सेकिन='धीरे')।

(२३) **'क्यों' के अर्थ में**—कियों, कइँ, कइँद, कइन्द, कइ, कइनि, क, कन, कइने। (सं० किम्+एवं)।

(२४) **'हाँ' के अर्थ में**—ह, हा, हाँ (ताजिक और उज़्बेक हा। सं० आम् या द्रविड़ आँ से भी विकास संभव है।)

(२५) **'नहीं' के अर्थ में**—ने, नि, न, न्, हेच। सं० नास्ति>प्रा० णत्थि> अप० नहिं>नइँ>ने>नि>न>न। 'हेच' उज़्बेक है।

(२६) **'और' के अर्थ में**—होर, होरे, ओ, अउ, उ, अ। (सं अपर>अहवर> अउर>अउ, और>होर, औ, ओ। फ़ारसी व से उ, अ हैं यों सं० अपर से भी इनका संबंध असंभव नहीं है।)

(२७) **'कि' के अर्थ में**—के, कि (फ़ारसी कि)।

(२८) **'वाह' के अर्थ में**—वख़-वख़, ख़ोब, ख़ूब। (फ़ारसी वाह>वह>वख़। उधर की रूसी, उज़्बेक आदि कई भाषाओं में 'ह' का उच्चारण ख़' जैसा होता है उदाहरणार्थ 'बहार' 'बख़ार' जैसा सुनाई पड़ता है। फ़ारसी ख़ूब)

(२९) **'हाय' के अर्थ में**—वइ, दरेग़, हाय, ओह्, ओख़, आह, अह। 'दरेग़' फ़ारसी है तथा शेष सं० 'अहो' और 'हा' से संबद्ध ज्ञात होते हैं। 'ओह' अरबी 'उफ़' से भी संबद्ध हो सकता है।

(३०) **'ओहो' के अर्थ में**—ओहो, ओग़ो, ओखो, ओख़्खो (सं० अहो)।

अवलंब शब्द

८.० विश्व की अन्य बोलियों तथा भाषाओं की तरह ही ताजुज़्बेकी में भी अवलंब शब्दों या तकिया कलाम (prop word) का प्रयोग होता है। सभी भाषाओं में अवलंब शब्दों के प्रयोग की शून्यता, अधिकता या न्यूनता व्यक्ति विशेष पर निर्भर करती है। एक ही भाषा या बोली का बोलनेवाला एक व्यक्ति अवलंब शब्दों का प्रयोग नहीं या कम करता है, तो दूसरा उससे अधिक करता है, और तीसरा बहुत अधिक करता है। यही बात ताजुज़्बेकी में भी है। कुछ लोग तो ऐसे मिलते हैं जो एक-एक वाक्य में तीन-तीन चार-चार बार अवलंब शब्दों का प्रयोग करते हैं, किंतु दूसरी ओर कुछ लोग ऐसे भी मिलते हैं जो इसका प्रयोग बहुत कम करते हैं। तत्त्वतः अवलंब शब्द सामान्य भाषा या बोली से अधिक व्यक्ति-बोली (idiolect) की चीज़ है।

८.१ ताजुज़्बेकी में, यों तो 'त' 'अ' 'अँ' के, आदि कई अन्य अवलंब शब्द भी प्रयुक्त होते हैं, किंतु इस बोली के सर्वाधिक प्रचलित अवलंब शब्द सो-सि-से हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से सो-सि-से का संबंध भारोपीय मूल *स से है। सं०, सः, अवेस्ता हो, पुरानी फ़ारसी हउव, जो अन्यपुरुष एकवचन के रूप हैं,*स् से ही संबद्ध हैं। सं० सः, प्रा० सो, पुरानी हिंदी सो आदि भारत में इसके विकास हैं। भोजपुरी तथा कुछ अन्य हिंदी बोलियों में प्रयुक्त अवलंब शब्द सो, से आदि इसी से संबंधित हैं। ताजुज़्बेकी सो-सि-से भी इस अन्यपुरुष सर्वनाम 'सो' से ही संबद्ध हैं। इस प्रकार ये मूलतः अन्यपुरुष सर्वनाम हैं।

८.१.१ ताजुज़्बेकी में सो-सि-से के विभिन्न प्रयोगों को दो वर्गों में रखा जा सकता है। प्रथम में अन्य व्याकरणिक रूपों की भाँति, अवलंब शब्द भी लिंग एवं वचन के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। अर्थात्

(क) सो—पु० एक० के साथ। जैसे :—

(१) अंगक् सो कोवै (अंगक (लड़के का नाम) कहता है)।

(२) ओ बोड़्ड़ो सो कोवै (वह बड़ा (लड़का) कहता है)।

(३) ओ पॉशॉ सो न कियो (उस बादशाह ने कहा)।

(४) बेटो सो अयो (बेटा आया)।

(५) अब सो गियो (अब्बा गये)।

'सो' शीघ्रता से कहने में 'सु' भी हो जाता है। जैसे—

(१) बेल त लल कर् कि उफ़र् सु मँ चड़ो (बेलचे को लाल कर के ऊपर (में) चढ़ो)।

(२) एक रत् अ एक सु पर चरै (एक रात एक (घोड़े) पर चढ़ती है)।

और शीघ्रता से बोलने पर 'सु' और भी संक्षिप्त होकर 'स' या 'स्' हो जाता है :—

(१) लकिन् उस् अमि के कले स त कटुँइ।
(लेकिन उस आदमी के सिर को काटूँगा)

(२) इस् पयि स न गल् न कर्‌यो।
(इस भाई ने बात नहीं की।)

(३) अब स न जोवब दीनो।
(अब्बा ने जवाब दिया।)

(४) उस कुर्रे स् न हर दिन् (उस घोड़े को हर दिन)

(ख) सी—स्त्री० एक० के साथ। जैसे :—

(१) रनि सि अयो (रानी आयी)।

(२) बिटिय सि ची (बेटी थी)।

(३) त त हड्डि सि बि न रि (उस को हड्डी भी न रही)।

(ग) से—बहु० के साथ। जैसे :—

(१) रनुन् से न अव्क़ॉत पकयो (स्त्रियों ने खाना पकाया)।

(२) बेटुन् से गियो (बेटे गए)।

८.१.२ दूसरे वर्ग के प्रयोगों में लिंग-वचन का विचार नहीं मिलता :—

(अ) सो—एक० स्त्री० के साथ। जैसे :—

(१) पॉशॉ एक ति सो छो (बादशाह के एक लड़की थी)।

(२) देव् न पॉशॉ त रन सो त क लिनो।
(देव ने बादशाह की बीवी को खा लिया।)

(आ) सि—एक० पु० के साथ। जैसे :—

(१) बेटा सि ने कियो (बेटे ने कहा)।

(२) ओ सि मुरि म त बर लकरियो (वह मोरी में से बाहर आया)।

(इ) सि—बहु० पु० के साथ। जैसे :—

पयुन सि आए (भाई आए)।

(ई) से—एक० पु० के साथ। जैसे :—

पयि से न चलि रुटि पकॉयो (भाई ने चालिस रोटियाँ पकाईं)।

इस दूसरे वर्ग के प्रयोग ही ताजुब्बेकी में अधिक मिलते हैं। संभव है, पहले

अवलंब शब्दों के प्रयोग में लिंग-वचन का विचार होता रहा हो, और प्रथम वर्ग के प्रयोग उसी परंपरा के अवशेष हों।

८.२ इस बोली में अवलंब शब्दों का सर्वाधिक प्रयोग संज्ञा शब्दों के साथ होता है। दूसरे क्रम पर सर्वनाम हैं। विशेषण के साथ अवलंब शब्द, कुछ अपवादों को छोड़कर, प्रायः तभी आते हैं जब वह संज्ञावत् कार्य करते हैं।

कारकों की दृष्टि से अवलंब शब्द, संबोधन को छोड़कर, सभी कारकों के साथ प्रयुक्त होते हैं। इनमें भी कर्ता कारक के साथ प्रयोग सर्वाधिक हैं, एवं करण, अपादान तथा संबंध के साथ अपेक्षया कम।

कर्ता कारक के साथ, अवलंब शब्द, सविभक्तिक एवं अविभक्तिक दोनों ही स्थितियों में आते हैं :—

(१) वज़ीर स न कियो (वज़ीर ने कहा)।

(२) फ़ेर् पयुन से चले गे (फिर भाई चले गए)।

सविभक्तिक कर्ता कारक में अवलंब शब्द प्रायः कर्ता एवं परसर्ग के बीच में आता है :—

(१) दो रनि सि न जके (दोनों रानियों ने जाकर)।

(२) बेट स न कियो (बेटे ने कहा)।

कर्म-संप्रदान कारक के साथ भी अवलंब शब्द सविभक्तिक एवं अविभक्तिक दोनों ही प्रयोगों में आते हैं। सविभक्तिक प्रयोगों में अवलंब शब्द कर्ता की भाँति ही कर्म एवं परसर्ग के प्रायः बीच में आते हैं :—

(१) एक सि ति बि रन् कर के न दी।
(एक को भी स्त्री करके न दी, अर्थात् एक की भी शादी नहीं की)

(२) ज़र्दालु स त पुट के खायो।
(ज़र्दालू को तोड़कर खाया।)

(३) हड्डि से त बिल्लि त दिनेयो।
(हड्डी को बिल्ली को दी)

(४) दस्मॉल प-त अँक से मलेओ।
(रुमाल से आँख मली)

करण-अपादान एवं संबंध कारकों में भी इनका प्रयोग इसी रूप में मिलता है :

करण-अपादान :—

एक स त बे गल् न कर्‌यो।
(एक से भी बात नहीं की)

संबंध :—

रनि सि को जतक नि हुव छो।

(रानी के पुत्र नहीं हुआ था)

अधिकरण कारक के साथ अवलंब शब्दों का प्रयोग अन्य कारकों से थोड़ा भिन्न है। अधिकरण कारक के निर्माण में प्रायः दो परसर्ग 'म' (में), 'पर' (पर) तथा 'अ' विभक्ति, इस बोली में प्रयुक्त होती हैं।

'म' और 'पर' के साथ तो अवलंब शब्द मूल शब्द और परसर्ग के बीच में आते हैं :—

(१) मथे स म तपोंच मार्‌यो।
(माथे में तमंचा मारा)।

(२) कोड़े सो पर् गियो।
(घोड़े पर गया)

किंतु अ की स्थिति में अ मूल शब्द के साथ आता है और अवलंब शब्द उसके बाद आते हैं :—

(१) जतक् पोस्त-अ से रे गियो।
(लड़का चमड़े में रह गया=गर्भ रह गया)

(२) तेल को ताँच् सर-अ से (सोने का ताज सिर पर)

(३) पैर-अ से मौज़े (पैर में जूते)

(४) तल्-अ से दरवजो इ (तले दरवाज़ा है)

स्पष्ट ही ऐसा इसलिए है कि 'अ' मूल शब्द से उस रूप में अलग नहीं है, जिस रूप में 'म' या 'पर' हैं। 'म' 'पर्' से बनने वाले रूप वियोगात्मक हैं, जबकि अ-वाले संयोगात्मक। इस प्रकार अवलंब शब्द विभक्ति को अलग हटाकर संयोगात्मक रूप को तोड़ते नहीं।

'म' एवं 'पर' के संबंध में यह भी उल्लेख्य है कि 'पर' की तुलना में 'म' के साथ अवलंब शब्दों का प्रयोग अधिक होता है।

संयुक्त परसर्ग या परसर्गवत् प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ भी अवलंब शब्द आते हैं :—

(१) हिक् सो मा ता एक कुतो लिकेरो।
(आगे (में) से एक कुत्ता निकला)

(२) इस त वज़ीर् न पड़ के अब मरा हेका सो टर्‌यो।
(इसको वज़ीर ने फाड़कर मेरे अब्बा के आगे टाला)

(३) मुंडे त ले के गे अब सो कुल।
(मुंडे को लेकर गए अब्बा (के) पास)

कभी-कभी अवलंब शब्द 'अ' का भी सो, सि या से के साथ-साथ प्रयोग होता है। जैसे :—

जतक् अ से गे (लड़के गए)

किंतु ऐसे प्रयोग अधिक नहीं मिलते ।

८.३ ऊपर 'अ', 'अँ', 'के', 'त' आदि अन्य अवलंब शब्दों का उल्लेख किया जा जा चुका है । इनमें सर्वाधिक प्रयुक्त अवलंब शब्द 'त' है । उपर्युक्त अवलंब शब्दों सो-सि-से की तुलना में 'त' अवलंब शब्द की दो विशेषताएँ उल्लेख्य हैं । पहली तो यह कि इसका प्रयोग अपेक्षाकृत कुछ ही लोगों में मिलता है । सो-सि-से की भाँति यह बहु-प्रचलित नहीं है । दूसरे यह कि इसका प्रयोग प्राय: पूर्वकालिक कृदंत के साथ ही होता है ।

अधिकांश लोगों द्वारा प्रयुक्त रूप	**कुछ लोगों द्वारा प्रयुक्त रूप**	**अर्थ**
कर् के	कर् के त	करके
सुन् के	सुन् के त	सुनकर
ले के	ले के त	लेकर
ज के	ज के त	जाकर
मुड़् के	मुड़् के त	मुड़कर

ध्यान देने पर यह स्पष्ट हुए बिना नहीं रहता कि वस्तुत: यह 'त' हिंदी 'तो' का विकसित रूप है । हिंदी में भी पूर्वकालिक कृदंतों के साथ कुछ लोग 'तो' लगाते हैं । जैसे 'वह आकर तो गया' या 'मैं देखकर तो आया' । ऐसे वाक्यों में 'तो' प्राय: ज़ोर देने के लिए ही लगता है, यद्यपि कभी-कभार इसका निरर्थक या अवलंब शब्दवत् प्रयोग भी सुना जाता है । इस बोली में भी मूलत: इस प्रकार का प्रयोग ज़ोर देने के लिए ही रहा होगा, बाद में इस शब्द ने अपना वह अर्थ प्राय: खो दिया और अब इस बोली के कुछ बोलने वालों में मात्र अवलंबवत् रह गया है । यों ज़ोर देने के लिए, अर्थात् 'त' के सार्थक प्रयोग भी ताजुज़्बेकी में कभी-कभी मिल जाते हैं ।

'त' का इस प्रकार का अवलंब शब्दवत् प्रयोग भोजपुरी, अवधी आदि हिंदी प्रदेश की कई बोलियों में मिलता है । ताजुज़्बेकी की भाँति ही उनमें भी कभी तो यह सार्थक या ज़ोर देने के लिए आता है, और कभी निरर्थक या अवलंब शब्दवत् । ताजुज़्बेकी में 'त' के कुछ प्रयोग इस प्रकार हैं :

(१) कुड़् न् त ज़िन कर के त चोड़् दे ।
(घोड़ों को ज़िन करके छोड़ दे)

(२) एक् कोड़् ड़ पर चड़् के त सइसखने म त निकिलो ।
(एक घोड़े पर चढ़ कर सईसख़ाने में से निकली)

(३) गुल् अ के त देखो ।
(गुल ने आकर देखा ।)

(४) पॉचाॅ ते ले ज के त दप् के त अये ।
(बादशाह को ले जाकर, दफ़ना कर आए ।)

(५) अमि परे कुल् त दोव ले के त चलो गो ।
(मां से दुआ लेकर चला गया)

२

ताजुज़्बेकी-हिंदी शब्दकोश

ताजुज़्बेकी-हिंदी शब्दकोश

अंक, अंकि, अँक्, अंक्—आँख; दे० आँक् (पं० अक्ख, सं० अक्षि)।

अंगारि —अंगारा (सं० अंगार, फ़ा० अंगारह्)।

अंगुर —अंगूर (फ़ा० अंगूर, ताजि० अंगुर)।

अंचा —बहुत, ज़्यादा (ताजि० उज़० ऊंचा=ज़्यादा, बहुत ज़्यादा)।

अंडु —१. अंडा; २. अंधा; दे० 'अंडो'।

अंडो —१. अंडा (सं० अंड+कः); २. अंधा; दे० 'अंदो'।

अंदर —अंदर, भीतर (फ़ा० अंदर)।

अंदो —१. अंधा (सं० अंध+कः); २. अंडा; दे० 'अंडो'।

अँव्णो —आना (सं० आगम्—, पं० आउणाँ, हरि० आँवणाँ)।

अ —१. अधिकरण कारक का परसर्ग, में, पर; २. संबोधन का चिह्न; ३. अवलंब शब्द।

अई —१. (तुल० ताजुज़्बेकी अय, अयि, आयि, आँय, आँयि) मां; (तुल० हि० आई; भोज० आई=माँ; अइया=सास; बुंदे० आइजा=माँ; उज़० आयी, अया=मां; मूलतः सं० आर्यिका अथवा तुर्की आयी); २. ऐ, ओ (संबोधन); ३. (तुलनीय ताजुज़्बेकी इ, हइ) है (पुरानी हि० हइ>अइ>इ); ४. यह (तुल० भोज० हइ=यह)।

अइग़िर —घोड़ा, नौजवान घोड़ा (उज़० अइग़िर=घोड़ा)।

अइजा, अइजो—(तुल० ताजुज़्बेकी अयजो, अय्ज़ो) औरत, स्त्री (बुंदे० आइजा=मां; उज़० आजिज़ा=औरत। मूलतः यह शब्द अरबी का है और इसका अर्थ है 'कुछ न कर सकने वाला' या 'असमर्थ'। उज़बेक भाषा में क्रांति (१९१७ ई०) के पूर्व तक ही इसका स्त्री अर्थ में प्रयोग होता था। उसके बाद समानता की भावना के कारण स्त्रियों के लिए यह संज्ञा समाप्त हो गई)।

अक —आग; दे० 'आक'।

अकल —बुद्धि (हिं० तथा हि० की बोलियाँ अक़्ल, अकल, अकिल; मूलतः अर० अक़्ल)।

अका —चाचा, बाप का बड़ा या छोटा भाई (उज़० अका=बड़ा भाई; अफ़० अका=बाप का भाई; ताजि० अका=बड़ा भाई, चाचा; ताजुज़्बेकी में यह अफ़० या ताजि० से आया है)।

अख़िर —१. आख़िर, अंत, २. अंत में (हिं० और उसकी बोलियाँ आख़िर; उज़० आख़र, आख़िर; ताजि० आख़िर; मूलतः अर०)।

अख़्तख़ानो—अस्तबल (उज़० आँत्ख़ाँना=अस्तबल)।

अग —१. अगर; दे० 'अगर'; २. आग; दे० ऑक।

अगर —यदि, अगर (उज़०, ताजि० अगर, मूलतः फ़ा० अगर)।

अच —आज; दे० 'आच'।

अज़ —से (ताजि०, फ़ा० अज़=से); **अज़ बरोयि**—लिए, के लिए।

अजब —अजीब, अद्‌भुत (उज़० अजब, मूलतः अर० अजब)।

अज़ाँयि —औरत; दे० 'अइज़ा'।

अज़ोक़ो —खाने की चीज़ें (उज़० अज़ूक़ा, अज़ुक़ा=खाने की चीज़ें)।

अट —आठ (तुल० पं० अट्‌ठ; सं० अष्ट)।

अडो —आधा; **अडि**—आधी (सं० अर्ध)।

अणो —आना; दे० 'अँव्णो'।

अत —१. वायदा (उज़० ताजि० अह्‌त; मूलतः अर० अह्‌द); **अत् पैवन**—क़रार, वायदा (उज़० अह्‌त पइमान=क़रार; अर० अह्‌द+फ़ा० पइमान) २. दे० 'आत'।

अद —आधा; अदरॉंत—आधी रात; दे० 'अदो'।

अदम —आदमी (ताजि० उज़० ऑदम=आदमी; अर० आदम)।

अदम्ख़ुर—आदमख़ोर (अर० आदम+फ़ा० ख़ोर)।

अदर —पहाड़ की घाटी (उज़० अद्र=पहाड़ की घाटी)।

अदो —आधा (सं० अर्ध; पं० अद्‌दा)।

अद्मि —आदमी; दे० 'आँद्मि'।

अद्रोवा —आटे का सूप (तुल० उज़० अतला=आटे का सूप)।

अन —१. अन्न; २. भोजन; ३. पुलाव (सं० अन्न)।

अनलिज़—विश्लेषण (रूसी अनालिस्=विश्लेषण)।

अन्तुयि —अनधुई, बिना नहाई-धोई (हिं० अनधुई; सं० अन्+सं० धावन, प्रा० धोअण)।

अन्बुर —जंबूर (उज़० अम्बिर, अम्बुर, अन्बुर, ताजि० अम्बुर, मूलतः फ़ा० ज़ंबूरह्)।

अन्मि —आदमी; दे० 'आद्मि'।

अन्मिज़ॉत—आदमज़ाद, आदमी (उज़० अदम्ज़ात्, अर० आदम+फ़ा०

ज़ाद)।

अप —आप, दे० 'आँप्'; **अपि**—आप ही।

अपर —अपना, अपनी। दे० 'अपरो'।

अपरो —अपना; **अपरि, अप्रि**—अपनी; **अपरे, अप्रे**—अपने।

अप्रो —अपना; दे० 'अपरो'।

अफ़ंदि —उज़्बेकिस्तान तथा ताजिकिस्तान आदि के 'शेखचिल्ली' जिनके अनेक चुटकुले प्रसिद्ध हैं। ताजुज़्बेकी-भाषी लोगों में भी इनके चुटकुले प्रसिद्ध हैं। इस तुर्की शब्द का मूल अर्थ है 'पढ़ा-लिखा आदमी', 'अध्यापक'।

अफ़ज़ल —सामान; **ज़ीन-अफ़ज़ल**—घोड़े का सब सामान जैसे ज़ीन, रकाब आदि।

अफ़ज़ॉल —दे० 'अफ़ज़ल'।

अब —१. इस समय, अब; २. आप, स्वयं।

अबा —१. अब्बा, बाप; **उगो अब**—विपिता, कठबाप; २. दादा, बाप के बाप; ३. (बच्चों की भाषा में) नाना (तुल० हिं० अब्बा; अफ़० अबा=बाप; मूलत: फ़ा० अब्बा)।

अबे —अभी; **अबे बि**—अभी भी।

अबो —अब्बा; दे० 'अबा'।

अमक्बचा —चचेरा भाई (उज़० अमकिबच्चा=चचेरा भाई; ताजि० अमक्बचा; अमक=चाचा+बच्चा)।

अमनत —अमानत (उज़० अँमँनत, ताजि० अमॉनत, मूलत: अर० अमानत)।

अमल्दर —अमलदार (उज़० अमल्दार, मूलत: अर० अमल+फ़ा० दार)।

अमि —आदमी; दे० 'आद्मि'।

अय —माँ; दे० 'अइ', उगि अय—विमाता, मैभा।

अयजो —दे० 'अइज़ा'।

अयि —दे० 'अइ'।

अय्ज़ो —दे० 'अइज़ा'।

अरेस्तन —क़ैद, गिरफ्तार; **अरेस्तन करनो**—गिरफ़्तार करना (रूसी अरेस्त=क़ैद)।

अर्ज़ —प्रार्थना (ताजि०, उज़० अर्ज़, मूलत: अर० अर्ज़)।

अर्जन —जौ (तुल० उज़० अर्पा=जौ)।

अर्री —आरा (उज़० अर्री, ताजि० अर्री ; फ़ा० आरा)।

अले —पहले (हि० पहले>पले>अले)।

अल्बति —अलबत्ता, अवश्य (ताजि० उज़० अलबत्ता, मूलत: अर० अल्बत्तह्)

अवाँजो —१. आवाज़ ; २. खबर ; दे० 'ऑवॉजो';(ताजि० ऑवॉज़; उज़० अवज़ा=अफ़वाह) ।

अव्कात, अव्क़ात, अव्क़ोत—खाना (ताजि० अव्क़ात, उज़० अव्क़त=खाना; अर० क़त (=खाना) के बहुवचन 'अक़वात' का विपर्ययित रूप 'अव्क़त) ।

अव्ग़ॉल —हाल, स्थिति (अर० 'हाल' का बहु० अह्वाल>अवहाल>अवग़ाल; ताजि० उज़० अवहाल, अह्वाल) ।

अव्वल —पहला, पहले (ताजि०, उज़० अव्वल, मूलत: अर० अव्वल) ।

अश्कर —लश्कर (हि०, उज़० ताजि० लश्कर>अश्कर, मूलत: फ़ा० लश्कर) ।

अस —ऐसा ।

अस्कर —१. दे० अश्कर ; २. सिपाही (ताजि०, उज़० अस्कर=सिपाही ; मूलत: अर० अस्कर=फ़ौज) ।

अस्ता —आहिस्ता, धीरे (हि० आहिस्ता, उज़० अस्ता ; मूलत: फ़ा० आहिस्तह्); **अस्ता-अस्ता**—धीरे-धीरे (ताजि०, उज़० अस्ता-अस्ता) ।

अस्प —घोड़ा (ताजि० अस्प, मूलत: फ़ा० अस्प) ।

अस्मन —आसमान (ताजि० उज़० ऑस्मान, मूलत: फ़ा० आसमान) ।

अस्र —सदी (ताजि०, उज़० अस्र=सदी, मूलत: अर० अस्र=सदी) ।

अस्सलम अलेइ कुम—सलाम, प्रणाम (अर० अस सलामो अलैकुम) ।

अहुज़ —आह (उज़० आहुज़ार, मूलत: फ़ार० आह्-ओ-ज़ार) ।

अह्मक़ —मूर्ख (ताजि०, उज० अह्मक़; मूलत: अरबी अह्मक़) ।

आँक —आँख दे० ऑङ्क ।

आख़िर —दे० 'अख़िर' ।

आणो —(तुल० ताजुज्बेकी अणो, अँवणो, ऑवणो, ऑणो)—आना ।

आत —हाथ (सं० हस्त) ।

आप —आप, स्वयं, ख़ुद ।

आयि —दे० 'अइ' ।

ऑङ्क —आँख (सं० अक्षि, प्रा० अक्खि, पं० अक्ख) ।

ऑक —आग (सं० अग्नि, प्रा० अग्गि) ।

ऑच —आज (सं० अद्य, प्रा० अज्ज) ।

ऑणो —आना ; दे० 'आणो' ।

ऑदम —आदमी (उज़० ओदम, मूलत: अर० आदम) ।

ऑदमखुर—आदमख़ोर (अर० आदम+फ़ा० ख़ोर) ।

ऑदमज़ॉत—आदमज़ाद (अर० आदम+फ़ा०) ।

आँमि —आदमी (अर० आदमी)।
आँन्मि —आदमी (अर० आदमी)।
आँप • —आप, स्वयं, खुद।
आँमि —आदमी (अर० आदमी)।
आँय —दे० 'अइ'।
आँयि —दे० 'अइ'।
आँवाँज़ो—१. आवाज़ ; २ .ख़बर (ताजि० आवाज़ ; उज़० अवज़ा=अफ़वाह ; मूलतः फ़ा० आवाज़)।
आँसिय —चक्की (ताजि० ओसियो)।
इँ —यहाँ
इंति, इंति—इधर
इंदड़, इंदय—ईंधन (हरि० ईंधण, सं० ईंधन)।
इँय, इँया—यहाँ, इयें—यहीं।
इ —१. यह दे० 'य' ; **इ कुर**—ऐसा ; **इ कुरि**—ऐसे ही ; ऐसी, ; २. ही ; जैसे **इसि**=इसी; ओइ=वही ; **बोति**=बहुत ही ; अपि= आप ही ; ३. है ; दे० 'अइ' ; ४. का ; ताजिक (फ़ारसी) में संबंधकारक चिह्न ; जैसे **कितॅब-इ-मन**=मेरी किताब ; **दुम्-इ-शुतुर**=ऊँट की दुम। कभी-कभी 'ए' भी होता है। ५. पर, में (अधिकरण कारक का चिह्न)।
इख़्तियार, इख़्तियाॅर—इच्छा (उज़० ताजि०, इख़्तियार=इच्छा ; मूलतः अर० इख़्तियार=अधिकार)।
इगि —इधर।
इजत —इज़्ज़त (ताजि० उज़० इज़्ज़त; मूलतः अर० इज़्ज़त)।
इन —१. ये ; २. इन।
इनू, इनो—१. ये ; २. इन।
इन्या —यहाँ।
इन्हु —१. ये ; २. इन।
इला —साथ (उज़० इला=साथ)।
इलिचि —दे० 'एलिच'।
इश —ऐश ; **इश-इशरत्**—ऐशोइशरत, भोगविलास (ताजि०, उज़० ऐशुइशरत ; मूलतः अर० ऐश+फ़ा० उ+अर० इशरत)।
इशरत —ऐश (ताजि०, उज़० इशरत ; मूलतः अर० इशरत)।
इस —इस
इसि —इसी।

इस्पिन् —चचा ।

इबे —अभी ; दे० 'अबे' (हरि० ईब, ईब्बे) ।

ईं —यहीं ।

उँगुटि —अंगूठी (सं० अंगुष्ठ+क:>हि० अंगूठा से अंगूठी) ।

उँग्लि —अँगुली (पं० उंगल, सं० अंगुली) ।

उंग्लि —अंगुली ; दे० 'उँग्लि' ।

उँट, उंट—ऊँट (सं० उष्ट्र) ।

उंत, उंति—उधर ।

उँन्या, उँयाँ—वहाँ ।

उ —१. वह ; दे० 'ओ' ; **उकुर, उकुड़**—वैसा, वैसे ; **उकुरि, उकुड़ि**—वैसे, वैसे ही, वैसी ; २. वे ; ३. और (ताजि० उज़० उ=और ; फ़ा० व, अर० व) ।

उइँ, उइँन, उइन—वहाँ ।

उकल —सूई, इंजेक्शन (रूसी उकोल=इंजेक्शन) ।

उक़िश —शिक्षा, पढ़ाई, तालीम (उज़० ओक़िश ; धातु ओकिमॉक़=पढ़ना) ।

उकुव्चि —विद्यार्थी, छात्र (उज़० उकूव्चि=पढ़नेवाला) ।

उक्र्युक—विशेष प्रकार की रस्सी जिससे जानवरों आदि को पकड़ते हैं ।

उगि —१. उधर ; २. वहाँ ; ३. आगे ।

उटनो —१. उठाना (सं० उत्थान); २. उड़ाना (सं० उड्डयन) ।

उटुर्नो —उतरना (सं० अवतरण) ।

उट्नो —१. उठना ; २. उड़ना ; दे० 'उटनो' ।

उडनो, उड्नो, उड़नो, उड़्नो—१. उड़ना ; २. उड़ाना (सं० उड्डयन) ।

उण —ऊँट (सं० उष्ट्र) ।

उतर्नो, उतुर्नो—१. उतरना ; २. उतारना (सं० अवतरण) ।

उन, उनुँ, उनुँन, उनु, उनो, उन्—१. वे ; २. उन ।

उन्य, उन्या—वहाँ ।

उफर, उफ़र—ऊपर (सं० उपरि) ।

उरुग, उरुग़, उरुय्—१. वंश, परिवार ; २. जाति ; ३. उपजाति, उपक़बीला (ताजि० उज० उरुग़=क़बीला ; मूलतः तुर्की) ।

उरुसि —रूसी भाषा (उज़० ओरुस, ओरिस) ।

उस —उस ।

उसि —उसी ।

उसु —१. उसी ; **उसबोत**—उसी के बाद, उसके बाद ; २. उस ।

उसे —उसी ; **उसे ब'द**=उसके बाद, उसी के बाद ।

उस्ता —उस्ताद ; दे० 'उस्तॉद' ।

उस्तायि—उस्तादी (फ़ा० उस्तादी) ।

उस्तॉ —उस्ताद ; दे० उस्तॉद ।

उस्तॉद —उस्ताद (भोज०, हरि० ओस्ताज, ताजि० उस्तॉद, उज़० उस्ताज अर० उस्ताज़) ।

उस्तॉय —उस्ताद ; दे० 'उस्तॉद' ।

ए —१. ये ; २. एक ; ३. ऐ, ओ (संबोधन के लिए प्रयुक्त शब्द) ; ४. पर, में ; अधिकरणकारक-चिह्न । यह सं०–ए है । इसका एक रूप 'इ' भी मिलता है । ५. का ; दे० 'इ' का चौथा अर्थ ; ६. है

एइ —१. यही ; २. यह ।

एक —१. आगे ; दे० 'हेक' २. एक ; एक् मो—एक मुँह, एक बार ; ३. एक बार ; ४. ज्यों ही ।

एकिनि —एक बार ; एक दिन ; एक दम, एकबारगी (एक+दिन+इ) ।

एकु —एक (सं० एक:>एको>एकु) ।

एकुलो —अकेला (सं० एकल:) ।

एके —१. एक; २. एक ही ।

एगेर —अगर ; दे० 'अगर' ।

एन्क —फिर ।

एबे —अभी ; दे० 'अबे' ।

एज़ंयिल—इसराइल, मृत्युदूत (ताजि० इज़रायल ; उज० अज़रायइल ; मूलत: अर०) ।

एल —दोस्त, मित्र (उज़ एल्=मित्र) ।

एला —दे० 'इला' ।

एल्चि, एल्चु—दूत, राजदूत (ताजि० उज़० एलच, मूलत: तुर्की एल्चि) ।

एस —इस; दे० 'इस' ।

ओं —वे ।

ओंन्हु —१. वे, २. उन ।

ओहुं —वे ।

ओ —१. वह ; २. वे ; ३. और ; ४. ओ, ऐ (संबोधन के लिए प्रयुक्त शब्द) ।

ओइ —वही ।

ओकिलि—ओखली (सं० उलूखल) ।

ओकिश —दे० 'उकिश' ।

ओक्लि —दे० 'ओकिलि'।
ओख़ो —ओख़्खो, अख़्खाह् (उज़० ओहो, ओख़्खो)।
ओच —आज (सं० अद्य>प्रा० अज्ज)।
ओणो —दे० 'होणो'।
ओदुन —वे।
ओन —१. वे ; २. उन।
ओब्बो —ओख़्खो, अहा (तुलनीय उज़० अब्बा—नापसंदीदगी दिखाने का विस्मयादिबोधक शब्द)।
ओब्ला —अल्लाह्, ख़ुदा ; **ओब्लाह्क़िबर**—अल्लाहु अकबर, अल्लाह् सबसे बड़ा है (उज़० ॲब्लाहक्बर)।
ओमिन् —मुझे विश्वास है (ताज़ि० उज़० आमीन, मूलतः अर० आमीन)।
ओव —१. शिकार ; २. गाय (फ़ा० गाव)।
ओव्णो —१. आना ; दे० 'अँव्णो' २. होना।
ओह् —हाय (उज़० ओह्, उह्)।
कंग्रि —एक अनाज।
कंजि —काँजी ; शोरबा, सूप (सं० कांजी, मूलतः कदाचित् द्रविड़)।
कँणो —खाना (सं० खादन)।
कंद —मिस्री, खांड़ (ताजि० क़ंद, उज़० क़ंत् ; फ़ा० क़ंद<सं० खंड)।
कंदोलत — मिठाई (ताजि० कंदालत=मिठाई या मिठास ; उज़० क़ंदालत=मिठाई बनाने का पेशा ; कंद=मिस्री मूलतः सं० खंड)।
कंबग़ल —ग़रीब (ताजि० उज़० कमबग़ल=ग़रीब)।
कँवणो —खाना (सं० खादन)।
क —१. क्या ; २. का, संबंधकारकीय परसर्ग ; ३. कर (पूर्वकालिक कृदंती प्रत्यय जैसे ले क ज=ले कर जा)।
कइँ —क्या, क्यों ; **कइँ ग़म** —किसलिए **कइँ ख़तर**=किस लिए।
कइ —दे० 'कइँ'।
कइन, कइनि, कइने—दे० 'कइँ'।
कइंद —कइंद
कइफ़ —मज़ा (ताजि० उज़० कैफ़, मूलतः अर० कैफ़=आनंद)।
ककि —कँघी। दे० 'खकि' (पंज० कंगी)।
कचो —१. कच्चा ; **कचो-पको**—कच्चा-पक्का ; २. असिद्ध खाद्य पदार्थ, सिद्धा।
क़जि —दे० 'क़ाँजी'।
कट्नो —१. कटना ; काटना २. (सं० कर्तन) ; ३. काढ़ना, निकालना ;

४. कढ़ना, निकलना (सं० कर्षण, प्रा० कड्ढण)।

कड्नो —१. काढ़ना, निकालना ; २. कढ़ना, निकलना (सं० कर्षण, प्रा० कड्ढण, पं० कडना)।

कड़न —गेहूँ ; दे० 'करंक'।

कड़्ट्नो—दे० 'कड़्नो'।

कड़्नो —१. काढ़ना, निकालना ; २. कढ़ना, निकलना (सं० कर्षण, प्रा० कड्ढण)।

कणि —कहानी ; दे० 'कनि' (तुल० हरि० काँहणी ; सं० कथानिका)।

कणो —१. खाना ; दे० 'खाँणो' ; २. कढ़ना, निकलना ; ३. काढ़ना, निकालना (सं० कर्षण) ; ४. करना, दे० 'कर्नो'।

कतक —दही ; **कतक करनो**—दही जमाना (उज़० क़तिक=दही)।

कत्णो —१. काटना ; २. कटना (सं० कर्तन)।

कदि —कभी (पं० कदी, हरि० कदे)।

क़दिम —पुराना (अर० क़दीम)।

क़दिमतरि—ज्यादा पुराना, पुराना (फ़ा० ताजि० क़दीमतरीन, कदीमतर)।

कदुं कबुन्—कब (पं० कदों, हरि० कद, सं० कदा)।

कढ्णो —१. काढ़ना, निकालना ; २. कढ़ना, निकलना (सं० कर्षण, प्रा० कड्ढण, पं० कडणा)।

कन —१. क्या ; २. दे० 'काँन्'।

कनि —१. कहानी (सं० कथानिका) ; २. पास (सं० कर्ण ; ताजि० कनि=पास); ३. कौन।

कनिज़ —नौकरानी (ताजि० उज़० कनीज़, मूलतः फ़ा० कनीज़)।

कन्नो —खड़ा होना ; दे० 'कल्नो'।

कफन —१. कफ़न ; २. जनाज़ा (अर० क़फ़न)।

कफस —पिंजड़ा (ताजि० उज० क़फ़स, मूलतः अर० क़फस)।

कप्ड़ाँ, कप्ड़ो—बर्तन।

कफ़्तर —कबूतर (उज़० कप्तर, ताजि० कफ़्तर, फ़ा० कबूतर)।

कब —डेरा (उज़० कपा=खेमा)।

क़बत —१. तह ; पंक्ति (उज़० क़बत=तह)।

कबर —क़ब्र (ताजि० उज़० क़ब्र, अर० क़ब्र)।

कब्तर् —दे० कफ़्तर।

कबुल —स्वीकार ; **कबुल करनो**—स्वीकार करना (ताजि० उज़० क़बल, मूलतः अर० क़बूल)।

कम —१. कम (फ़ा० कम) ; २. दे० 'काम'।

क़म —क़ौम (ताजि० उज़० क़ौम, मूलतः अर० क़ौम)।

कमान —कमान, धनुष (फ़ा० कमान)।

कमाँन्गुलक—१. गुरदेल, गोली फेंकने का धनुष ; २. कमान, धनुष (फा० कमान+फा० गुलूला)।

क (क़)म्चिन्—कोड़ा (उज़० क़मचिन्, तु० क़मची)।

कयि —कहानी दे० 'कनि'।

कयो —कहाँ।

करंक —(तुल० ताजुज़्बेकी करङ, करन, कड़न) गेहूं (हरि० पं० कनक, सं० कणिक)।

कर —घर (सं० गृह ; पंज० कर)।

क़रउल —रखवाला, पहरेदार, चौकीदार (उज़० क़रावुल, मूलतः मंगोल शब्द)।

करङ् —गेहूँ ; दे० 'करंक'।

करन —गेहूँ ; दे० 'करंक'।

क़रिब —पास, क़रीब (अर० क़रीब)।

क़रिबि —१. पास का, क़रीबी, २. क़रीब, पास (अर० क़रीब)।

क़र्ज़ —ऋण, क़र्ज़ (अर० क़र्ज़)।

कर्जिन्क —टोकरी (रूसी कर्ज़िन्का)।

कर्द —किया (फ़ा० तथा ताजिक रूप)।

करनो —करना (सं० कर्)।

क़र्म क़र्चि—आगे-पीछे (मूलतः यह उज़० प्रयोग है, किंतु इसका अर्थ ताजुज़्बेकी में बदल गया है। उज़० में इसका अर्थ है 'आमने-सामने'। उज़० में शुद्ध रूप है 'क़रमा-क़रशि')।

क(क़)लंदर—साधु, क़लंदर (ताजि०, उज़० क़लंदर, मूलतः फ़ा० क़लंदर)।

क(क़)ल—क़िला (ताजि०, उज़० क़लआ ; मूलतः अर० एकवचन में क़लअह् तथा बहुवचन में क़िलाअ)।

कल —कल (=बीता और आने वाला ; सं० कल्य)।

क़लम —१. पेंसिल ; २. क़लम (उज़० क़लम=पैंसिल ; ताजुज़्बेकी में लेखनी अर्थ में 'क़लम' का प्रयोग बहुत कम होता है ; मूलतः एक-मत से यह अर० क़लम तथा दूसरे मत से सं० कलम है)।

कलु —१. ताजुज़्बेकी-भाषियों की एक उपजाति ; २. काला ; दे० 'कॉलो' ; ३. सिर ; दे० 'कलो' ;

कलो —१. काला ; **कलि**—काली ; दे० 'कॉलो' ; २. सिर (ताजि०, फ़ा०, उज़० कल्ला=सिर)।

कल्खोज —सामूहिक फार्म, कलखोज़ (रूसी कलखोज़) ।

कल्खोज्चि—कलखोज़ में काम करने वाला (ताजि० उज़० कल्खोज्चि ; रूसी कलखोज़+तुर्की ची) ।

कल्नो —१. करना (र>ल) ; दे० 'करनो' ; **सुर्म कल्नो**=सुर्मा करना या लगाना ; २. खड़ा होना ; इस अर्थ में 'कन्नो' (ल>न) भी आता है ; ३. रुकना ; ४. रखना, धरना ; ५. फेंकना, डालना ; ६. खींचकर ले जाना ।

कस —१. बदला (ताजि० उज़० क़स्द=बदला ; मूलतः अर० क़स्द=पक्का इरादा) ; २. घास ; दे० 'गॉस् ; उत्तरी-पश्चिमी भारतीय भाषा 'कलशा' में 'खस्', कई जिप्सी बोलियों में भी 'खस्') ।

क(क़)सम—शपथ, क़सम ; **क़सम खणो**—क़सम खाना (अर० क़सम) ।

कसो —बड़ा प्याला ; दे० 'कॉसो' ।

क(क़)स्द – १. नज़र । **क़स्द करनो**—देखना ; २. पक्का इरादा (अर० क़स्द=पक्का इरादा ; उज़० में नुकसान करने का इरादा) ।

कॉम —दे० 'काम' ।

का —१. क्या ; ३. का (संबंध परसर्ग) ।

कान —कान (सं० कर्ण, प्रा० कण्ण) ।

काम —काम (सं० कर्म, प्रा० कम्म, पंज० कम्म) ।

कालो —काला ; 'दे० 'कॉलो' ।

कॉ —क्या ।

कॉग़ज —१. काग़ज़ ; चिट्ठी (ताजि० उज़० काग़ज़ ; मूलतः फ़ा० काग़ज़) ।

क़ॉजि —क़ाज़ी, न्यायाधीश, पंच (ताजि० उज़० क़ाज़ि०, मूलतः अर० क़ाज़ी) ।

कॉड्नो —काढ़ना, निकालना (पंज० कडणा, सं० कर्षण, प्रा० कट्ढण) ।

कॉड़ —घड़ा (सं० घट) ।

कॉड़्नो —काढ़ना, निकालना (सं० कर्षण, प्रा० कट्ढण) ।

कॉणो —खाना; दे० 'खॉणो' ।

कॉन —कान (सं० कर्ण, प्रा० कण्ण) ।

कॉफ़िर —काफ़िर (ताज़ि० उज़० क़ॉफ़िर; मूलतः अर० काफ़िर) ।

कॉम —दे० 'काम' ।

क़ॉम —दे० 'क़ोम' ।

कॉर —१. दे० 'कर'; २. काम (सं० कार्य, भोज० कार) ।

क़ॉर —गुस्सा, क्रोध (ताजि० उज़० क़ह्र=गुस्सा; मूलतः अर० क़ह्र) ।

कॉरु —दे० 'कर' ।

कॉर्नो —दे० 'कर्नो'।
कॉर्वॉन—कारवाँ (ताजि०, उज़० कारवान; मूलतः फ़ा० कारवाँ)।
कॉर्वॉन्बॉशि—कारवाँ का मालिक (उज़० कॉर्वान्वाशि)।
कॉलो —(तुल० ताजुज्बेकी कलु, कलो, कालु, कालो) काला; **कालि**—काली (सं० काल)।
कॉल्नो —१. दे० 'कार्नो' (र>ल); २. खड़ा होना, दे० 'कल्नो'; ३. रखना; ४. डालना; ५. फेंकना।
कॉस —दे 'गॉस'।
कॉसो —बड़ा प्याला (उज़० कॅसा=बड़ा प्याला; हि०, भोज०, अव०, हरि० कसोरा, सकोरा)।
किं —१. कहाँ; २. कौन; दे० 'किंन्'।
किंश्रा —कहाँ।
किंन —कौन।
किंन्य, किंन्या—कहाँ।
किंया —कहाँ।
किंये —कहाँ।
कि —१. की (संबंधकारक का परसर्ग) दे० 'को'; २. कि; ३. कर (पूर्वकालिक कृदंत का प्रत्यय), **लेकि**=लेकर, **देकि**=देकर।
किगि —किधर (तुल० हरि० कींघे)।
किच्नो —१. खींचना; २. खिचना।
किड़ा कीड़ा (सं० कीटक, प्रा० कीडग्र)।
किणो —कहना (सं० कथन)।
क़िलब, किताब, कितॉब—किताब, पुस्तक (ताजि० उज़० किताब, मूलतः अर० किताब)।
किन्या —कहाँ।
किब्ला —पश्चिम (उज़० ताजि० क़िब्ला, मूलतः अर० क़िब्लह)।
क़िमॉर —जुवा (ताजि० उज़० क़िमॉर्)।
क़ियामत—क़यामत (अर० ताजि० क़ियामत)।
कियो —क्यों।
क़ियोमतो, क़ियोम्मतो—क़यामत; दे० 'क़ियामत'।
किल, किला, किलो—कीलोग्राम (रूसी किलो)।
किल्जो —कलेजा (सं० कालेय+क, पं० काल्जा)।
किश —कुछ (तुल० भोज० किछ)।
किस —किस; **किसि**—किसी।

किसत्णो—खींचना ।

कु —को (संबंधकारकीय परसर्ग); दे० 'को' ।

कुइ —कोई ।

कुकुड़ि —मुर्गी (सं० कुक्कुट, पंज० कुकड़ी) ।

कुचो —सड़क, रास्ता, गली (ताजि०, उज़०, कोज़ा, फ़ा० कुचह्) ।

कुजा —घड़ा (ताजि० उज़० कोज़ा, पं० कुज्जा, हरि० कूज्जा, मूलतः फ़ा० कूज़ह्) ।

कुटुर्नो —दे० 'कुतुर्नो' ।

कुटो —दे० 'कुतो' ।

कुड़ो —१. कड़वा (पंज० कौड़ा, सं० कटु+क); २. घोड़ा; **कुड़ि**—घोड़ी, (सं० घोटकः, घोटिका) ।

कुड़्ड़ो —दे० 'कुड़ो'; **कुड़िड़्**—घोड़ी ।

कुणो —१. गोद, अँकवार (तुल० भोज० कोराँ); २. कहना (कुहणो> कुणो; सं० कथन) ।

कुता —दे० 'कुतो' ।

कुतुरुंगो —पिल्ला (पंज० कुतूरा, हरि० (पानीपत के आस-पास) कुतरू) ।

कुतुर्नो —१. कुतरना, काटना; २. खोदना ।

कुतो —कुत्ता; **कुति**—कुतिया ।

कु(कु)द—दे० 'कुदो' ।

कु(कु)दो—समधी, समधिन (ताजि० क़ुदो, पंज० कुड़म) ।

कुन —१. करो (ताजि०); २. से ।

कुब्ललम—चतुर, होशियार ।

कुब्ला —किबला, पश्चिम; दे० 'किब्ला'; **कुब्ले लप**—पश्चिम ओर ।

कुम —कपड़े और सीने के बीच का स्थान, जहाँ चीजें छिपा सकते हैं (उज़० क़ोयिन्) ।

कुमर —कोयला (उज़० कोमिर, ताजि० कोमुर); **कुमरतन**—काला, कोयले जैसे शरीर वाला ।

कुमुर —दे० 'कुमर' ।

कुर —१. कैसा; २. कैसे; ३. क्या; ४. प्रकार, रूप, सा; ५. कौन ।

कुरि —१. कैसा, कैसी; २. कैसे; ३. घोड़ी (सं० घोटिका); ४. कौन; ५. क्या; ६. प्रकार, रूप ।

कुरो —घोड़ा (सं० घोटकः) ।

कुरौंन —क़िला (ताजि० उज़० कोर्ग़ॉन; मूलतः फ़ा० क़ोरखानह्= शस्त्रागार) ।

कुर्चग़, कुर्चय—गुड़िया (उज़० क़ोग़िरचॉक़=गुड़िया)।
कुर्ता —कुर्ता, कमीज़ (उज़० ताजि० कुर्ता, मूलतः तुर्की कुर्तह्)।
कुर्पचा —गद्दा, तोशक (ताजि० उज़० कोर्पचा=तोशक)।
कुर्बका —मेढक (ताजि० उज़० कुर्बका=मेढक)।
कुर्बन, कुर्बान—कुर्बान, बलिदान (ताजि० उज़० कुर्बान्, मूलतः अर० कुर्बान)।
कुर्रि —दे० 'कुरि'।
कुर्रो —दे० 'कुड़ो'; कुर्रि—घोड़ी (सं० घोटकः, घोटिका)।
कुल —१. दे० 'कुर'; २. पास; दे० 'कुल'।
कुल, कुले—पास, के पास (सं० कूल, पंज० कोल)।
कुलोला —बाल का शृंगार, चोटी करना (ताजि० कुलाला=जुल्फ़)।
कुल्नो —खड़ा होना।
कुल्फ़ —ताला; **कुल्फ़ करनो**—ताला लगाना (ताजि०, उज़० कुल्फ़; मूलतः अर० क़ुफ़्ल)।
कुल्बो —हलचल।
कुश —१. कुछ; २. चिड़िया (उज़० कुश्=चिड़िया)।
कुशाँदा —जगहवाला, कुशादा (ताजि० कुशादा, मूलतः फ़ा० कुशादह्)।
कुस —गाँड़, चूतड़ (पंज० कुस=योनि, ताजि० कुस, मूलतः फ़ा० कुस=योनि)।
कंजा —छोटा, सबसे छोटा (ताजि० उज़० कंजा=सबसे छोटा)।
के —१. के (संबंधकारकीय परसर्ग) दे० 'को'; २. कि; ३. कर (पूर्वकालिक प्रत्यय), जैसे लेके=लेकर, देके=देकर; ४. को (कर्म परसर्ग) (तुल० भोज० के)।
केड़, केड़ा, केड़ो—१. कौन (पं० केड़ा); २. किस; ३. जिस; ४. कोई।
केणो —कहना (सं० कथन)।
केतुणो, केतुनो—कितना; **कितना, केलणे**—कितने; **केलणि, केतनि**—कितने (तुल० हरि० कितणा, पंज० किन्ना)।
केरनो —करना (सं० कर्)।
केरि —१. कौन (पंज० केड़ा); २. जो।
केलिन —१. दूल्हन (ताजि० उज़० केलिन्=दूल्हन); २. छोटे भाई की पत्नी।
कों —१. कौन; २. को (कर्म एवं संप्रदान कारक का परसर्ग)।
कोंन —कौन।
को —१. का (संबंधकारकीय परसर्ग); २. को (कर्मकारकीय परसर्ग);

३. को, के लिए (संप्रदान परसर्ग)।

कोइ —घोड़ी (सं० घोटिका)।

कोजा —बर्तन, घड़ा, दे० 'कूज़ा'।

कोड़ो, कोड़्ड़ो—घोड़ा ; **कोड़ि, कोड़्ड़ि**—घोड़ी (सं० घोटक, घोटिका)।

कोणो —१. खाना ; २. करना।

कोत, कोता—दे० 'ख़ोता'।

कोन —कौन।

क़ोम —क़ौम (पंज० कोम, अर० क़ौम)।

कोयो, कोरो—घोड़ा, **कोयि, कोरि**—घोड़ी (सं० घोटकः, घोटिका)।

कोर्ख़नो—कारखाना (ताजि०, उज़० कॉरख़ाना, फ़ा० कारख़ानह्)।

कोर्रो —दे० 'कोरो' ; **कोर्रि**—दे० कोरि (कोरो के साथ)।

कोलो —ताजुज्बेकी-भाषियों का एक उपक़बीला।

कोल्लो —खोलना।

कोश —भौं (उज़० क़ाश=भौं)।

खंद, खंदक—गड्ढा, खंदक (ताजि० उज़० खंदक़; मूलतः अर० ख़ंदक़)।

खँव्णो —खाना।

खै, खैर—ख़ैर, कोई बात नहीं (ताजि०, उज०, फ़ा० ख़ैर)।

ख़क —१. हक़, २. वेतन, ३. पारिश्रमिक (ताजि० उज़० ख़क, मूलतः अर० हक़ ; इस क्षेत्र में 'ह' का उच्चारण 'ख़' होता है।)

खकि —कंघी (सं० कंकतिका)।

खणो —खाना।

ख़ट —४. गंदा, कीचड़ ; २. गदला, मैला (पानी आदि) (अफ़० ख़ट=गंदगी)।

ख़त —पत्र, चिट्ठी (अर० ख़त)।

ख़तर —के लिए, ख़ातिर (अर० ख़ातिर)।

ख़त्बर —पत्रवाहक, दूत (अर० ख़त+फ़ा० बर)।

खना —खाना (सं० खादन)।

ख़नो —जगह (ताजि०, उज़०, फ़ा० ख़ानह्)।

ख़बर —ख़बर, समाचार (अर० ख़बर)।

ख़यो —अंडकोश (उज़० हया=अंडकोश)।

ख़रख़र —खर्राहट।

ख़रबुजो—ख़रबूज़ा (फ़ा० ख़रबूज़ह्)।

ख़ल —दे० 'ख़ल्क़'।

ख़लास —ख़ाली, मुक्त, ख़लास; **ख़लास करनो**—छुड़ाना, मुक्त करना (ताजि०,

उज़॰, ख़लास=आज़ाद; मूलतः अर॰ ख़लास)।

ख़ल्क-ख़ल्क़ु—१. दुनिया ; २. लोग ; (ताजि॰, उज़॰, ख़ल्क ; मूलतः अर॰ ख़ल्क़)।

ख़ल्ता —थैली (ताजि॰ उज़॰ ख़ल्ता ; तुल॰ भोज॰ खलित्ती=जेब)।

खल्नो —१. खड़ा होना (तुल॰ पं॰ खड़ना); २. रुकना, रहना।

खव्णो, खाणो—खाना (पंज॰ खाँउणा, खाणा)।

खॉक —धूल, गर्द (ताजि॰ ख़ॉक्, फ़ा॰ ख़ाक)।

खॉणो —दे॰ 'खाणो'।

खॉना, खॉनॉ—घर, ख़ाना (ताजि॰ उज़॰ ख़ॉना=घर, कमरा, फ़ा॰ ख़ानह्)

खिट, खिटो, खितो—इकट्ठा (सं॰ एकस्थ, एकत्र, पंज॰ हरि॰ कट्ठा)।

खिट्नो —खींचना (सं॰ कृष्ट)।

खितो —दे॰ खिट

ख़िमो —ख़ेमा; **ख़िमो मारनो**—ख़ेमा डालना (अर॰ ख़ेमह्)।

खीर —खीर (सं॰ क्षीर)।

खुटो, खुतो—इकट्ठा ; दे॰ 'खिट'।

ख़ुदा, ख़ुदॉ—खुदा (ताजि॰, उज़॰ खुदॉ, फ़ा॰ ख़ुदा)।

खुदायि—मुफ़्त भोजन, दान, ख़ैरात (ताजि॰ उज़॰ खुदाधि=ख़ैरात ; मूलतः फ़ा॰ ख़ुदा)।

खुदो —दे॰ 'खुदा'

खुनरेज़ो—दे 'खुलिज़ेरो'।

खुमर —बर्तन (उज़॰ खुर्मा (मिट्टी का विशेष बर्तन), ताजि॰ ख़ुम=बर्तन, मूलतः फ़ा॰ ख़ुम)।

खुर्जिन —थैली, थैला, खुर्जी (भोज॰ खुर्जी=हाथी की पीठ पर का थैला ; ताजि॰ उज़॰ खुर्जिन ; मूलतः फ़ा॰ ख़ुर्जी)।

खुर्सन्दि —खुशी (ताजि॰, उज़॰ खुर्सन्द=खुश)।

खुलिज़ेरो—कवच (फ़ा॰ ख़ोल+जिरह=कवच)।

खुल्नो —खुलना।

खुश —प्रसन्न (ताजि॰, उज़॰, फ़ा॰ खुश)।

खुशख़बरि—खुशख़बरी (फ़ा॰)।

खूब —१. बहुत, अधिक ; २. बहुत अच्छा, अच्छा ; ३. हाँ (ताजि॰ उज़॰ फ़ा॰ ख़ूब)।

खेल —तरह (उज़॰ खिल्, ताजि॰ ख़ेल)।

ख़ेलख़्नो—क़ब्रिस्तान में एक परिवार के लोगों को दफ़नाने की अलग रखी गई जगह (उज़॰ खिश्रखॉना)।

खेश —रिश्तेदार (ताजि० ख़ेश, फ़ा० ख़ेश=स्वजन)।
खोणो —खाना (सं० खादन)।
खोत, खो(ख़ो)ता—गदहा (उज़० ख़ोतक=गदहे का बच्चा ; पंज०, हरि० खोत्ता)।
ख़ोदाँ —दे० 'खुदा'।
ख़ोब —दे० 'ख़ूब'।
खोल्नो —खोलना।
गंजो —गंजा; **गंजि**—गंजी, विना बालों की (सं० गंजः)।
गंदुम —गेहूँ (ताजि०, फ़ा० गंदुम)।
ग़इर, ग़इरि—१. ग़ैर, दूसरा ; २. बग़ैर (उज़० ताजि० ग़ैर, मूलतः अर० ग़ैर)।
गद, गदा, गदाँ—भिखारी (ताजि० गदाँ, फ़ा० गदा)।
ग़ज़ब —ग़ुस्सा, क्रोध (ताजि० उज़० ग़ज़ब=गुस्सा; मूलतः अर० ग़ज़ब=ग़ुस्सा)।
ग़ज़ल —ग़ज़ल, गीत (ताजि० ग़ज़ल, मूलतः अर० ग़ज़ल)।
गज़ेत —समाचारपत्र (ताजि० गज़ेत, मूलतः रूसी गज़ेता)।
गणो —गाना (सं० गायन; पंज० गाणा)।
गप —बात (उज़०, ताजि० गप, फ़ा० गप=व्यर्थ की बात)।
ग़फ़ —छेद (फ़ा० शिग़ाफ़=दरार)।
ग़फ़लत —नींद (ताजि० उज़० ग़फ़लत; मूलतः अर० ग़फ़लत)।
गबँ, गबन्—गर्भिणी (पंज० गब्बन, सं० गर्भिणी)।
ग़म —१. पास; २. वास्ते, लिए।
ग़र —दे० 'ग़ाँर'।
गर्दकम —जुवा खेलते समय कहा जाने वाला शब्द (उज़० गर्दकम)।
गर्दन —गर्दन (ताजि०, फ़ा० गर्दन)।
गल —१. दे० 'गाल' ; २. बात (पंज० गल्ल) ; ३. गाली ; **गल् देणो**—गाली देना (सं० गाली)।
ग़ल —(तुल० ताजुज्बेकी हल) हाथ लगाना।
गलो, ग़लो—१. ग़ल्ला, अनाज ; २. ढेर ; ३. लेंहड़ (ताजि० ग़लाँ=अनाज; गला=लेंहण ; उज़० गला=लेंहड़ ; मूलतः अर० ग़ल्लह्)।
गस —दे० 'गाँस'।
गाँ, गा —गाय (ताजि०, फ़ा०, गाव, पंज० गाँ)।
गाजिर —गाजर (फ़ा० गाजर)।
ग़ार —दे० 'ग़ाँर'।

गाल —शरीर (सं० गल्ल)।

गाँ, गॉन—गाय, दे० 'गाँ'।

ग़ॉय —बालिग़ होने की स्थिति।

ग़ॉर —१. गुफ़ा; २. गड्ढा (ताजि० उज़० ग़ॉर, फ़ा० ग़ार)।

ग़ॉल —१. दे० 'गाल'; २. 'बात'; दे० 'गल'।

गॉस —घास (सं० घास)।

गि —गई।

ग़िजस —आवाज़, शोर (उज़० ग़िज़=दरवाज़े की आवाज़)।

गिणनो —गिनना (सं० गणना)।

गित —गीत (सं० गीत)।

गिदड़ —१. सियार; **गिदड़ि**—सियारिन; २. (ताजुज़्बेकी की उपबोली 'चंगरी' में) भेड़िया (फ़ा० गीदी, सं० गृध्र)।

गियँ, गिय—गया; गि=गईं; गे—गए।

गिर —१. मुट्ठी ; २. गिर्द, चारों ओर; दे० गिर्द ; ३. गिरना।

गिर्त, गिर्द—१. चारों ओर, इर्द-गिर्द (फ़ा० गिर्द); २. मुट्ठी।

गिलिम —क़ालीन (ताजि० गिलेम ; उज़० गिलाम)

गुंडा, गुंदा—बंडल, लपेटी हुई चीज़ (मरा० गुंडा, भोज० गेंड़ुरी; हरि० गीडली, हिं० साँप की गेंडरी)।

गुचो, गुच्चो—१. मर्द (बच्चों की भाषा में); २. विजातीय व्यक्ति, जैसे ताजिक, उज़्बेक, रूसी आदि; ३. जो सगा न हो; स्त्री० **गुचि, गुच्चि**। जिप्सियों की बोलियों में भी यह शब्द प्रायः इसी (विजातीय, जो सगा न हो) अर्थ में कुछ ध्वन्यात्मक रूपांतरों के साथ आता है। जैसे ईरानी जिप्सी 'गेर्ज़े', युक्रेनी जिप्सी 'गजो' (स्त्री० गजि), इंग्लैंड के जिप्सी 'गोर्जो' (तुल० उज़० गल्चा=जो बात न समझे)।

गुजु(ज़ु)र— घाट। भा मिनुसार गुदारा लागा—तुलसी; (ताजि० गुज़र ; फ़ा० गुज़ारा=नदी से पार उतरना)।

गुना —गुनाह, पाप (ताजि० गुनॉ, फ़ा० गुनाह)।

गुम, गुमो—ग़ायब, गुम (फ़ा० गुम)।

गुम्नो —ग़ायब होना (फ़ा० गुम)।

गुर्जि —विशेष नस्ल का कुत्ता (ताजि० उज़० गुर्जि, गुर्गि)।

ग़ुर्बत —परदेश ; ग़रीबी ; **ग़ुर्बत करनो**—परदेश में जाना (अर० ग़ुर्बत)।

गुल —गुल्ला, गोली (तुल० नेपाली, हरि० गुल्ला=मिट्टी की गोली ; सं० गुलक); फूल (ताजि०, उज़०, फ़ा० गुल)।

गु (ग़ु) लक्मान—१. गुलेल, गुरदेल ; २. धनुष (फ़ा० गुलूला) ।
गुश्तिन —कुश्ती (ताजि० गुश्तिन) ।
गे —१. गए ; २. पूर्वकालिक कृदंत प्रत्यय कर, के ('गे' का प्रयोग इस अर्थ में बहुत ही कम होता है) ।
ग़ेल्बर —चलनी (ताजि० ग़ल्बेर, उज़० ग़ल्विर=बड़ी चलनी) ।
गोंणो —गाना (सं० गायन) ।
ग़ोजियोन—सड़क ।
गोल —गोल (सं० गोल) ।
गोलो —गोला, (बंदूक आदि की) गोली (सं० गोल) ।
गोश, गोश्त, गोस्त—मांस (उज़० ताजि० फ़ा० गोश्त) ।
च —दे० 'छ' ।
चंग —१. धूल (ताजि० उज़०, चंग=धूल) ; २. जंग, लड़ाई ; **चंग होणो**—लड़ाई होना (ताजि० फ़ा० जंग) ।
चंद —कुछ (ताजि० फ़ा० चंद) ।
चक़(क)न—१. ताकि ; २. जल्द ; **चकन-चकन**—जल्दी-जल्दी (ताजि० चक़ॉन ; उज़० चक़न=जल्दी) ।
चकर —गंदा (तुल० हि० चीकट ; उज़० चिर्किन ; ताजि० चिर्की=गंदा) ।
चकु —(बंद न होने वाला) चाक़ू (तुर्की उज़० ताजि० चाक़ू) ।
चच —दे० 'चाचा' ।
चटि —तीर, वाण ।
चड़नो —चढ़ाना (तुल० पं० चड़ाना) ।
चड़्नो —चढ़ना (तुल० पंज० चड़ना) ।
चतग़, चतॉग़—बुरा, गड़बड़ (उज़० चतॉग़=बुरा, गड़बड़ ; ताजि० चतॉक़= ठीक नहीं) ।
चतो —छत्ता, घोंसला (फ़ा० चत्र=छाता ; सं० छत्र) ।
चदर —चादर (उज़० चदर, ताजि० चादिर, फ़ा० चादर) ।
चन —१. चाँद (तुल० पंज० चन्न), दे० 'चान' ; २. कुछ ; दे० 'चंद' ।
चप —उलटा (ताजि० उज़० फ़ा० चप=उलटा) ।
चपति—दे० चपॉति' ।
चपल्नो—बिछलना ।
चपान —१. शेरवानी जैसा एक वस्त्र जो उज़्बेकिस्तान एवं ताजिकिस्तान में पहना जाता है । उज० ताजि० चपान् ; २. चरवाहा (उज़० चोपान्=चरवाहा)
चपॉति —चपाती, रोटी (ताजि०, उज़० चपाति, फ़ा० चपाती=बहुत पतली

रोटी)।

चपॉन —दे० चपान।

चर —१. बायाँ, २. उलटा (ताजि० चर=बायाँ, उलटा), ३. चार ।

चरनो —चढ़ाना।

चर्ख —१. पहिया ; २. चरखा (ताजि० उज़० फ़ा० चर्ख़=पहिया)।

चर्नो —चढ़ना।

चलि —चालीस।

चल्नो —चलना

चवल, चवॉल, चवुल—१. चावल ; २. पोलाव (पंज० चौल, सं० तंडुल)।

चश्मा —सोता, चश्मा (ताजि० उज़० फ़ा० चश्मा=सोता)।

चाकर —मैला, गंदा ; दे० 'चक़र'।

चाकु —चाकू ; दे० 'चकु'।

चाचा —दे० चाँचाँ।

चाँचाँ —चाचा, पिता का बड़ा या छोटा भाई ; **चाँचि**—चाची ; कुछ लोगों में केवल बाप के छोटे भाई की पत्नी (सं० तात+क)।

चॉन —चाँद (पंज० चन्न, सं० चंद्र)।

चॉय —चाय (मूलतः चीनी चा)।

चॉर —चार (ताजि० चॉर, फ़ा० चहार)।

चि —१. दे० 'छि' ; २. क्या (ताजि० फ़ा० चि)।

चिचि —१. स्तन (स्त्री) ; २. (गाय आदि का) थन (सं० चुचुकिका, भोज० चूँची)।

चिज़ —चीज़ (ताजि० चिज़, फ़ा० चीज़)।

चिड़ि —चिड़िया (सं० चटकिका)।

चिरग़, चिराग़, चिरॉग़—चिराग़, दीपक (ताजि० उज़० चिराग़, फ़ा० चराग़, चिराग़)।

चिर्नो —चीरना, फाड़ना।

चिलम —१. हुक्का ; २. चिलम (उज़० चिलम, ताजि० चिलिम, फ़ा० चिलिम)।

चिल्नो —चलना।

चुं —हूँ।

चु —था।

चुक़ुरि —गड्ढा (उज़० चुकुर=गड्ढा ; ताजि० चुकुरि=गड्ढा)।

चुक्णो —१. उठाना (पंज० चुकणा); २. काटना।

चुड़्नो, चूण्नो—चुनना।

चुत -- झूठ (प्रा० झुट्ठ)।
चुद्णो —चोदना, स्त्री-प्रसंग करना (सं० चोद्)।
चुन्नो —दे० 'चुङ्नो'।
चुर —दे० 'चोर'।
चुरि —१. चोरी (सं० चोर+ई); २. (जो बंद न हो) छुरी (सं० क्षुरिका)।
चुलो —१. चूल्हा; २. जलाने का कोयला रखने का बर्तन (सं० चुल्ल, पंज० चुल्ला)।
चुल्नो —दे० 'चल्नो'।
चुहरि —नौकर, छोटा काम करने वाला (तुल० उज़० चोरि=नौकरानी; हरि०, चूहड़ा, पंज० चुहड़ा, चूड़ा)।
चे —१. है; दे० 'छे'; २. थे; ३. (करण-अपादान परसर्ग) से (से>चे); ४. छः, ६।
चेरनो —चढ़ाना।
चेर्नो —चढ़ाना।
चो —दे० 'छो'।
चोडनो, चोड़्ट्नो, चोड़्नो—छुड़ाना।
चोड्नो, चोड़्टनो, चोड़्नो—१. छोड़ना; २. भेजना।
चोपन —चरवाहा; दे० चपान।
चोरनो —दे० 'चोडनो'।
चोर —चोर।
चोर्नो —दे० 'चोड्नो'।
चोल —सूखा तथा बेग्राबाद इलाक़ा (उज़० चोल)।
चोलक़ (क), चोलाक़—१. लँगड़ा; २. ज़ख्मी (ताजि० उज़० चोलॉक़= लंगड़ा)।
चोवल —दे० 'चवल'।
छ —हैं।
छि —१. हैं; २. थी; ३. है।
छि, छीं —दे० 'छि'।
छुँ —हूँ।
छु —१. था; २. हूँ।
छुन, छुम—दे० 'छुँ'।
छूं —दे० 'छुँ'।
छे —१. है; २. हैं; ३. थे; ४. छः, ६ (इस ग्रर्थ में 'शे' नहीं ग्राता)।

छो —१. था; २. हो (तुम छो=तुम हो); ३. हूँ; ४. है।
छोड़्ट्नो, छोड़्नो—छोड़ना।
जंग —घोषणा, एलान; **जंग् मारनो**—घोषणा करना (उज० जंग=घंटा)।
जंगल —जंगल (सं० जंगल)।
जंगु —रिकाब (उज़० उज़ंगि=रिकाब)।
ज़ंजिर —ज़ंजीर (उज़०, ताजि०, फ़ा० ज़ंजीर)।
जँवणो —जाना।
जइँ, जइँन, जइ,—१. दामाद (सं० जामातृ; हि० जमाई, जवाई, पंज० जमाई, जवाँइ, नेपा० जुवाँइ, लहँ० जवाई); २. फूफा (प्रथम अर्थ में अर्थ-परिवर्तन); ३. जीजा (ताजि० उज़० 'यज़न' (=जीजा, बहनोई) या हिंदी 'जीजा' से व्युत्पन्न)।
जउ —जो (सं० यव)।
जक —जगह, दे० 'जाँग'।
जक्णो —जगना।
जग —जगह; दे० 'जाँग्'।
जण —जन, व्यक्ति (सं० जन)।
जणो —१. जाना; २. जनना, पैदा करना (बच्चा)।
जण्नो —दे० 'जमनो'।
जतक, जतकु—संतान, लड़का, बेटा (हरि० जातक=बेटा, सं० जातक)।
जतल —नौजवान।
जन —१. जान, प्राण; २. जन, व्यक्ति, लोग; ३. जनता।
जन्नो —जनना, बच्चा पैदा करना।
जप —बहुत; **जप जर्द**—बिल्कुल पीला (ताजि०, उज़० जप्=खूब)।
ज़बॉन, ज़बोन—भाषा, ज़बान (ताजि० उज़० ज़बॉन, फा० ज़बान, ज़बाँ)।
ज़मिन —ज़मीन (उज़०, ताजि०, फ़ा० जमीन, ज़मीं)।
ज़र —१. सोना (उज़० ताजि० फ़ा० ज़र); २. गड्ढा।
ज़रिन —१. ज़री, सोना; २. सोने का (उज़० ताजि० ज़र्रीन=सोने का)।
ज़रे —ज़रीये।
जर्द —पीला (ताजि० फ़ा० जर्द)।
जर्दलु —ज़र्दालू (ताजि० फ़ा० जर्दालू)।
जल —दे० 'जॉल्'।
जल्नो —जलना।
जव —दे० 'जउ'।
जवब, जवॉब—१. जवाब; २. इजाज़त (उज़०, ताजि० जवॉब=इजाज़त,

जवाब ; मूलतः फ़ा० जवाब) ।

जवॉल —थैला, थैली (ताजि० जुवाल=थैला ; फ़ा० जवाल; तुल० उज़० जुवॉलदिज=बोरा सीने की बड़ी सूई) ।

जवुन —जवान (फ़ा० जवान) ।

जवोब —दे० 'जवाब' ।

जव्णो —जाना ।

जॉक —दे० 'जॉग' ।

जॉग —जगह (फ़ा० जायगाह) ।

जॉन —१. जान, प्राण (ताजि०, उज़० जॉन, फ़ा० जान); २. जवान (फ़ा० जवान); ३. प्यार (उज़० जान=प्यारा) ।

ज़ॉर —ज़हर (ताजि० उज़० ज़हर, फ़ा० ज़ह्र) ।

ज़ॉल —जाली का थैला (शायद उज़० जुवोल (=थैला) का यह विकसित रूप है; तुल० अफ़० जाल; हिं० जाल, जाली) ।

ज़िंदगोनि—जिंदगी; **ज़िंदगोनि करनो**—रहना (ताजि० ज़िंदगॉनी, फ़ा० ज़िंदगानी) ।

जि —१. बड़ी बहन (हिं० जीजी; सं० तात+क>दादा (बड़ा भाई)> स्त्री० दीदी (बड़ी बहन)>पु० जीजा); २. माँ (बच्चों की भाषा में); प्रथम व्युत्पत्ति से ही अर्थ-परिवर्तन; ३. यह (इ>यि> जि; तुल० भोज० इ=यह); ४. ऊपर ।

जिक़, जिक़ु—परेशान, उदास (ताजि० उज़० जिक़=तंग) ।

जिगि —जिधर (हरि० जींग्धा, मेरठ की कौरवी में जिग्घे) ।

जिणो —जीना, जीवित रहना ।

जितण —ताजुज़्बेकी-भाषियों की एक उपजाति ।

जीति —जूती, जूता (सं० युक्त) ।

ज़िन —(घोड़े की) ज़ीन, (ताजि० ज़िन, फ़ा० ज़ीन) ।

जिप —जीभ (सं० जिह्वा, प्रा० जिब्भ) ।

ज़िमिन —ज़मीन (ताजि० फ़ा० ज़मीन) ।

ज़ियति —१. ज़्याद्ती ; २. बढ़ती (ताजि० ज़्यॉदती, फ़ा० ज़्यादती) ।

जियन —भतीजा (ताजि० जियन=भतीजा ; भांजा ; हज़ारा की बोली में 'जेअ्र'=भांजा, भांजी) ।

ज़ियरॉत, ज़ियॉरत—तीर्थयात्रा (ताजि० ज़ियॉरत, मूलतः अर० ज़ियारत) ।

ज़िरत —वारिस (उज़० ज़ुरिअ्रत=औलाद) ।

जुंणो, जुंवणो—जाना ।

जु —जो ; **जु कुर**=जैसे, जैसा ।

जुणि —ताजुज़्बेकियों की एक उपजाति ।
जुदो —जुदा, अलग (ताजि० जुदाँ, फ़ा० जुदा) ।
जुम —बुरा (तुल० ताजि० शूम=बुरा) ।
जुरगिरि—ज़ोरगीरी, ताक़त दिखाना (फ़ा० ताजि० ज़ोरगीरी) ।
जुवब —दे० 'जवाँब' (हरि० जुबाब) ।
जुवबगर—जवानदेह, उत्तरदायी (अर० जवाब+फ़ा० गर) ।
जुवल —थैला ; दे० जवाँल ।
जुवोब —दे० 'जवाँब' ।
जुवोरि —ज्वार, मक्का (ताजि० उज़० जोहारि, जुहारि=ज्वार) ।
जुव्णो —जाना ।
जे —से (परसर्ग अपादान) ।
जेप —जेब, पाकेट (अर० जेब) ।
जेड़, जेड़े, जेर—जिस, जो, जिसको, जौन (पंज० जेड़ा) ।
जोंइ, जोंइन—जीजा ; दे० 'जइँ' ।
जोणो, जोवणो—१. जाना ; २. होना ; ३. पैदा होना ।
जोड़ —जुड़ा ; ठीक । जोड़ होणो—ठीक हो जाना ।
जोड़्नो—१. जोड़ना ; २. ठीक करना ।
जोनु —१. घुटना ; सं० जानु (आजानुबाहु) ; २. जाँघ (सं० जानु= आजानुबाहु ; उज़० सान=जाँध ; अफ़० जंगुन=जाँघ) ।
जोन —जान, प्राण (ताज़ि० जाँन्, फ़ा० जान) ।
ज़ोर —ज़ोर, शक्ति (फ़ा० ताजि० ज़ोर) ।
जोर्नो —दे० 'जोड़नो' ।
जोवन —जवान (ताजि० जवाँन्, फ़ा० जवान) ।
जोबव —जवाब (अर० जवाब) ।
जोव्णो —१. जाना; २. होना; ३. पैदा होना ।
टिकि —टिकिया, रोटी (हि० टिक्की, पज० टिक्की, टिक्कड़) ।
टुंड्नो —दे० 'तुंडनो' ।
टुक्नो —काटना (पंज० टुक्कना) ।
टुट्नो —टूटना ।
टोक्णो —ठोकना ।
टोडि —ठोढ़ी, ठुड्ढी (सं० तुंड) ।
ठग —ठग (सं० स्थग) ।
डर —डर, भय (सं० दर) ।
डर्नो —डरना (सं० दर) ।

डिंगो —टेढ़ी आँख वाला, ऐंचाताना (हि० डिंगा, डेबर)।
ड्रेनो —दे० 'देणो'।
डोडि —रोटी (अफ़० डोडय)।
ड्यकल्नो —भेजना।
तंदुर —तंदूर (उज़० ताजि० तंदुर्, तनुर, तंदिर; मूलतः फ़ा० तन्नूर)।
तंबल —एक विशेष प्रकार का पाजामा (तुल० पंज० तप्पड़)।
त —१. अवलंब शब्द, तो (निरर्थक रूप में प्रयुक्त); २. तो; ३. तु, दे० 'तु'; ४. तुझ; ५. वह, उस (दोनों अर्थों में बहुत कम प्रयुक्त); ६. पर; ७. तब; ८. को (कर्म-संप्रदान का परसर्ग), ते, ति, तो आदि रूपों में भी; ६. का (संबंध का परसर्ग, बहुत कम प्रयुक्त); १०. से (करण-अपादान परसर्ग)।
तइ —तक।
तकत —ताक़त (ताजि० ताक़त, फ़ा० ताक़त, मूलतः अर० ताक़त)।
तक्णो —देखना, ताकना।
तख्त —तख्त, गद्दी (ताजि० फ़ा० तख्त)।
तग़ारो —१. तगाड़, तसला (ताजि०, उज़० तॉग़ॉरा, तग़ारा); २. तागा, धागा (सं० तार्गव)।
तग़दिर — तक़दीर (ताजि० तग़दिर्, मूलतः अर० तक़दीर)।
तजि —कुत्ता, ताज़ी (अर० ताज़ी=शिकारी कुत्ता)।
तज़ो —१. ताज़ा; २. साफ़ (ताजि० तॉज़ा, फ़ा० ताज़ा)।
तड़्नो —दे० 'तर्नो'।
तनप —हिस्सा, भाग (ताजि० उज़० तनाप,) (हेक्टर से छोटी ज़मीन की एक नाप)।
तन —१. शरीर (फ़ा० तन); २. अकेला, तनहा (ताजि०, उज़० फ़ा० तनहा)।
तपंच —तमंचा, पिस्तौल (उज़० तुपांचा, ताजि० तपोंचा; तुर्की तपांचह्)।
तपर्नो —१. गिरना; २. गिराना।
तप्नो —कूटना (पंज० टप्ना)।
तबक, तबॉक, तमाक— दे० 'तमॉकु'।
तम —तुम (तुल० हरि०, कौरवी तम)।
तमम —दे० 'तमॉम'।
तमाक —दे० तमॉकु।
तमॉकु —तंबाकू (उज़० तमॉकि, ताजि० तमॉकु, हरि० तमाँक्खू, भोज० तमाँखू, मूलतः पुर्तगाली)।

तमॉम् —समाप्त, खत्म (ताजि० उज़० तमॉम्, मूलतः अर० तमाम)।
तमोम —दे० 'तमॉम'।
तमोशो —तमाशा (ताज़ि० उज़० तमॉशा, मूलतः अर० तमाशा); मु० **तमोशो करनो**—आश्चर्य से देखना (उज़० मुहावरा 'तमाशा क़िलमॉक्' का यही अर्थ है। यह मुहावरा उसी का अनुवाद है)
तयफ़ो —ताजुज़्बेकी-भाषियों की एक उपजाति।
तयि —को, के, लिए, तईं।
तर —१. तरह, प्रकार (अर० तरह); २. दे० 'तरो'।
तरकस —चरमर, चुरमुर (ताजि० तराक्कास=विशेष प्रकार की आवाज़)।
तरक़ि —थैली।
तरज़्नो —तराशना।
तरानो —दे० 'तरनो'।
तरि —तुम्हारी, दे० 'तरो'।
तरे —तुम्हारे; दे० 'तरो'।
तरो —तुम्हारा; बहु० तथा विकारी **तरे, त्रे, तर**; स्त्री० **तरि**।
तर्नो —१. धरना, रखना; 'तड़्नो' भी; २. टालना, आगे बढ़ाना; ३. रखना, का स्वामी होना, 'तरानो' भी।
तल —तला; **तल अ, तल्अ**—तले, नीचे।
तॉक्नो —देखना।
तॉच —ताज, मुकुट (ताजि० तॉज, फ़ा० ताज)।
तॉज —१. ताज़ा; २. साफ़ (ताजि० तॉजॉ, फ़ा० ताजह्)।
तॉज़ि —कुत्ता (फ़ा० ताज़ी=कुत्ता)।
तॉबिपि —तबीबी इलाज, चिकित्सा (ताजि० तबीबी, अरबी तबीब=चिकित्सक)।
तॉरो —दे० 'तरो'।
तिंज, तिंजा —तूने।
ति —१. लड़की, पुत्री (सं० दुहिता; पंज० धी; अव० राज० सिं० लहँ० धी; भोज० धी, धिया); **ति त कर्नो**—(की) बेटी से विवाह करना; उगि ति—विपुत्री; २. की (संबंध परसर्ग); ३. को (कर्म-संप्रदान परसर्ग)।
तिज, तिजा, तिज्य तिज्या—दे० 'तिंज'।
तिणो —गिरना।
तिन —तीन, ३।
तिनि —१. तीनों; २. तक।

तिन्य, तिन्या—दे० 'तिंज'।

तिय —दे० 'तिंज'।

तियन —ध्यान (पंज० धियान, सं० ध्यान)।

तिरि —तेरी; दे० 'तुरो'।

तिरे —तेरे; दे० 'तुरो'।

तिरेक —फ़व्वारा, धार; **तिरेक मारना**—फ़व्वारा छूटना, ज़ोर से निकलना।

तिल्लो —सोना, स्वर्ण (ताजि० उज़० तिल्लॉ; मूलतः अर० तिला=सोना)।

तुंड (द) नो, तुंण्दनो—ढूँढ़ना, खोजना।

तुँव —धुँवा (सं० धूम)।

तु —तू।

तुक्नो —दे० 'टुक्नो'।

तुक्लि —लोमड़ी (ताजि० उज़० तुल्कि=लोमड़ी)।

तुग्ऱ, तुग्रि़ —१. ठीक, तैयार; २. सच; (ताजि० उज़० तोग्रि़=ठीक,सीधा)।

तुट्नो —दे० 'टुट्नो'।

तुणो —धोना (सं० धावन, प्रा० धोग्रण)।

तुण्नो —दे० 'तुंडनो'।

तुतकइ —गौरैया (उज़० ताजि० तोता+ताजि० कइ=छोटा)।

तुत —शहतूत (ताजि० उज़० तुत्, फ़ा० तूत, पंज० भोज० अव० तूत)।

तुनि —पास।

तुन्नो —दे० 'तुंड्नो'।

तुप —धूप (हिं०, गुज० धूप; ने०, सिं० धुप, पंज०, लहँ० तप्प, धुप्प, धुप)।

तुपचड़ि —धूप चढ़ने या निकलने की; **तुप्चड़ि लप्**=पूर्व दिशा।

तुफ़ —दे० 'तुप'।

तुमकलनो —चिल्लाना।

तुरो —तेरा; बहु० तथा विकारी **तिरे**; स्त्री **तिरि, त्रि**।

तुल्कि —लोमड़ी (उज़० तुल्कि=लोमड़ी)।

ते —१. से (करण-ग्रपादान परसर्ग); २. को (कर्म-संप्रदान परसर्ग); ३. के; **इस् ते हेक़**—इसके ग्रागे।

तेणो —गिरना।

तेपड़् (ट्) नो—गिरना।

तेबन —बड़ी सूई, सूजा।

तेर्‌नो —गिरना।

तेल —सोना (अर० तिला=सोना); (सं० तैल, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ तेल)।

तेल्पक —टोपी (ताजि० उज़० तेल्पक=फ़रवाली गर्म टोपी)।

तै —१. माँ, ताई; २. वह।

तोंव —घर (उज़० उंताब=खानाबदोशों का खेमा या घर जो मोटे कपड़े आदि का बना होता है)।

तो —१. का (संबंध कारक का परसर्ग) २. को (कर्म संप्रदान का परसर्ग)।

तोइफ़ —कबीलाई वर्ग, उपक़बीला, उपजाति (उज़० ताइफ़ा=गिरोह; मूलतः अर० ताइफ़ा=वर्ग, गिरोह)।

तोग़ै —जंगल (उज़० तोक़इ=नदी या झील के पास घास-झाड़ी का समूह)।

तोग्र् —१. ठीक, सच; २. तैयार दे० 'तुग्र'।

तोडि —दे० 'टोडि'।

तोणो —धोना।

तोतकइ —गौरैया; दे० 'तुतकइ'।

तोदि —दे० 'टोडि'।

तोप —तोप (ताजि० उज़० तोप)।

तोपलंग —शोरगुल (उज़० तोपालान=शोर)।

तोपख़नो —तोपखाना (ताजि० तोपखॉना, फ़ा० तोपख़ाना)।

तोब, तोबा —तोबा मु० **तोब करनो**— तोबा करना (ताजि० तोबा कर्दन; उज़० तोबा क़िलमॉक=तोबा करना, बाज़ आना)।

तोश, तोशा —१. बिस्तर, २. सामान (उज़० तोश्याय साहित्य में 'तोशक'; धातु तोशामॉक़=बिछाना; तुश=स्वप्न; हिं० तोशक, तोसक भी इसी से संबद्ध है)।

त् —दे० 'तु'।

त्रक्तोर, त्राक्तर—ट्रैक्टर (रूसी त्राक्तर)।

त्रि —तेरी; दे० 'तुरो'।

त्रे —तुम्हारे ; दे० 'तरो'।

थरु —जगह, स्थान (सं० स्थल:>थलु>थरु)।

दँ, दँत, दंत —दे० 'दाँत'।

दंदि —दाँत (फ़ा० दंदाँ=दाँत, पंज० दंद)।

दंबुन्को —रोते।

द —दे० 'दा' ।

दकल्नो —भेजना ।

दख्नो --दिखाना ।

दड़ि —दाढ़ी (सं० दंष्ट्र) ।

दण, दणा, दणो, द्णो—दाना (फ़ा० दानह्, पंज० दाणा, हिंदी तथा अन्य बोलियाँ दाना) ।

दति —हँसिया (तुल० हि० दराती, पंज० दात्री, दाँतरी, हरि० दाँत्ती) ।

दद —दाड़ (ताजि० दॉद=चिल्लाहट; **दद मारनो**—दाड़ मारना; उज़० दाद दिमाक़ (करना)--हाय हाय करना, फ़रियाद करना) ।

दणु —दे० 'दॉणो' ।

दन —१. दाँत ; दे० 'दाँन'; २. दिन (सं० दिन); ३. डंडा (सं० दंड) ।

दनु —दे० 'दॉणो' ।

दप —दफ़न, गाड़ना; ताजि० दफ़ कर्दन; मु० **दप सट्नो**=दफ़न करना (ताजि० दफ़, उज़० दपन; अर० दफ़्न) ।

दफ़्तर —कॉपी (ताजि० उज़० दफ़्तर=कॉपी) ।

दबनो —दबना ।

दम —साँस, दम (ताजि० फ़ा० दम) ।

दर —१. डर (सं० डर); २. दरवाज़ा (ताजि० फ़ा० दर्) ।

दरकॉर —दरकार, अपेक्षित (ताजि० दरकॉर फ़ा० दरकार) ।

दरख़्त —पेड़ (ताजि०, उज़० फ़ा० दरख़्त) ।

दरव —१. तुरत (ताजि० दरोव ; उज़० दर्रव=फ़ौरन) ; २. ग़ल्ला ।

दरेग़ —दुःख, ओफ़, हाय (ताजि० उज़० दरेग़) ।

दरवंज़ु, दरवज़ो, दरवर्दा, दरवाज़ा, दरवॉज़ा, दरवॉज़ो—दरवाज़ा (ताजि० दरवॉज़ा, फ़ा० दरवाज़ह्) ।

दर्नो —डरना (सं० दर) ।

दर्स —पाठ (ताजि०, उज़० दर्स; मूलतः अर० दर्स) ।

दर्सख़न्, दर्सख़ॉन, दर्सख़ान—दस्तरख़ान (उज़० दस्तिरख़ॉन, ताजि० दस्तर-ख़ॉन; मूलतः फ़ा० दस्तरख़्वान) ।

दलॉल —दलाल (ताजि० दलॉल, मूलतः अर० दल्लाल) ।

दवुर —दौर, काल (ताजि० दवर, मूलतः अर० दौर) ।

दव्लत —दौलत (ताजि०, दव्लत, मूलतः अर० दौलत) ।

दश, दश्त —खेत; बंजर-निर्जन इलाक़ा (ताजि० उज़० दश्त) ।

दस —दस (सं० दश)।
दस्मल, दस्माल, दस्मॉल—रूमाल (उज्ञ० दस्रोमाल, ताजि० दस्मॉल,फ़ा० दस्तरुमाल)।
दाँ, दाँत, दाँन, दांत, दांद़—दाँत (सं० दंत, फ़ा० दंदाँ, पंज० दंद)।
दा —१. बड़ा भाई (बड़ों की भाषा में); २. बाप (बच्चों की भाषा में); ३. भाई (कम प्रयुक्त); (सं० तात; हिं० दादा (बड़ा भाई, बाप, बाप का बाप); बंग० दादा, दा (बड़ा भाई) पंज० दादा=बाप का बाप; ताजि० दादा, दोदो, दादो, दा=पिता; उज्ञ० दाँदा, ददा=पिता)।
दाड़ि —दे० 'दड़ि'।
दाणु, दॉणो, दानो, दानु—दे० 'दाणो'।
दाब्णो —दे० 'दॉब्णो'।
दॉणॉ दॉणु, दाणो, दॉनॉ,दॉनु, दॉनो—१. दाना; २. ठो, गो (जैसे इक दॉणो अनार)।
दॉनॉ, दॉना —१. चतुर, होशियार (ताजि० दॉनॉ, फ़ा० दाना); २. दाना (ताजि० दॉना, फा० दानह्)।
दॉन्, दॉन्त —दॉत दे० 'दाँ'।
दॉब्णो —दाबना, दबाना।
दारु —दवा (ताजि० दॉरु--दवा; उज्ञ० दारि—दवा; पंज० दारू; हिं० दवा-दारू)।
दिणो —दे० 'देणो'।
दिनो —दे० 'देणो'।
दिन, दिनु —१. दिन; **दिन-ब-दिन**—दिन-प्रति-दिन; **एक दिनोयो**—एक दिन; **एक दिन को दिनोयो**—दिनों में एक दिन, एक दिन; २. धर्म; दिन दव्नत्—१. धर्म और संपत्ति; २. धन-दौलत (सं० दिन; अर० दीन)
दिनो —दे० 'देणो'।
दिया, दिया —चिराग़, दिया (सं० दीपक)।
दिराव —नदी, दरिया (ताजि० उज्ञ० दरिया, फ़ा० दरयाब, दरया)।
दिवार, दिवाल—दीवार (फ़ा० दीवार)।
दुंबो —भेड़; स्त्री० दुंबि—मादा भेड़; (ताजि० दुंबा, फ़ा० दुंबह्= विशेष प्रकार की भेड़)।
दु —दो, २;
दुइँ, दुइ, दुइन—दोनों।

दुक्णो, दुख्णो— दुखना ।

दुजो —दूसरा; **दुजि**—दूजी ।

दुड़्नो —(तुल० ताजुज़्बेकी दुर्नो) दौड़ना ।

दुत —दूध (सं० दुग्ध; प्रा० दुद्ध, पंज० लहँ० दुद्ध, ने० दुत, दुद, दुध) ।

दुन — दोनों ।

दुनेल, दुनेला—दो नालियों का, दुनाली ।

दुन्या —दुनिया (ताजि० दुनियाँ, मूलतः अर० दुनिया) ।

दुम —पूँछ (फ़ा० ताजि० उज़० दुम) ।

दुयिन —दोनों ।

दुर —दूर (सं० दूर) ।

दुरग, दुरगा — दो रंगों या नस्लों वाला, स्वजाति के पुरुष और अन्य जाति की स्त्री से उत्पन्न संतान । (भोज० दोगला; उज़० दुरगाइ=दो मिलाकर पैदा किए गए पेड़, पौधे, अनाज आदि) ।

दुरनि, दुरानि—१. देवरानी; २. जेठानी; ३. दूर (सं० दूर) ।

दुरनो —दे० 'दुड़नो' ।

दुव्णो —देना ।

दुसरो —दूसरा ।

दूरबीन —दूरबीन (फ़ा० ताजि० उज़० दूरबीन) ।

देक्नो —देखना ।

देकल्नो —भेजना ।

देख्णो, देख्नो, देग्नो—देखना ।

देणो, देनो —देना ।

देव —राक्षस, दानव (ताजि० उज़० देव, मूलतः फ़ा० देव) ।

देवर —(सं० प्रा० देवर, हिं० कुमा० आसा० गुज० देवर; पंज० द्योर, रूसी देवेर; अफ़० लेवर; कुछ ईरानी बोलियों में एवर) ।

देवार, देवाल, देवॉर, देवॉल—दीवार (ताजि० देवाल फ़ा० दीवार) ।

देसणो —१. दीखना २. देखना ।

दो —दो; **दो-तिन**—थोड़े, कुछ; दो-तिन ।

दोतो —पड़पोता (तुल० पंज० दोता) ।

दोवणो —दे० 'देणो' ।

दोवा —दुआ (ताजि० उज० दुआ, मूलतः अर० दुआ) ।

दोवुस —मृत्युदूत ।

दोव्णो —दे 'देणो' ।

धकल्नो —दे० 'दकल्नो' ।

दयाँनो —दीवाना, पागल (ताजि० उज० देवॉना, फ़ा० दीवाना)।

न —१. न, नहीं, मत (सं० न); २. नाम, दे० 'नॉम'; ३. ने; इस अर्थ में 'न' के अन्य रूप 'ने', 'नि', 'नो' भी प्रयुक्त होते हैं; ४. को (कर्म परसर्ग), बहुत कम प्रयुक्त; (तुल० हरियानी ने पंज० नु)।

नकरो, नक़ॉर, नक्रो—रद्दी, बुरा; स्त्री० नकिरि—बुरी; पहाड़ी नक्रो= बुरा; (तुल० नाकारा)।

नक्र —दे० 'नॉक'।

नख़द्के —सचमुच (उज़० नखातकी=सचमुच)।

नगन —पिस्तौल (रूसी नगन=पिस्तौल)।

नज़र —नज़र (अर० नज़र)।

नणो —नहाना (सं० स्ना–)।

नतुग्रि —झूठ; (उज़० नातुग्रि=ग़लत, झूठ)।

नन —दे० 'नाल'।

नपस —साँस; (ताजि० उज० नफ़स; मूलतः अर०)।

नर —१. दे० 'नाल'; २. आदमी, पुरुष (सं० नर)।

नरिन —आदमी, पुरुष (फ़ान० नरीनह=आदमी; तुल० सं० नर)।

नर्ख़ —भाव, निर्ख़ (ताजि० उज़० नर्ख़; मूलतः फा० निर्ख़)।

नल —दे० 'नाल'।

नलत — लानत (ताजि० लानत, नालत, मूलतः अर० ला'नत)।

नव —१. नया; २. पुनः, नए सिरे से; (ताजि नव, पंज० नवां फ़ा० तथा सं० नव)।

नस —'नास'।

नाँ —दे० 'नॉम'।

नाइशकर —ईख, गन्ना (नाइ=पोला डंडा+शकर (चीनी); ताजि० नाइशकर)।

नाक —दे० 'नॉक'।

नाणो —नहाना।

नाल —१. से; २. के साथ (तुल० पंज० नाल); ३. तरह, की तरह।

नालत —लानत; दे० 'नलत'।

नास् —दे० 'नॉस्'।

नॉक —नाक (सं० नक्र, प्रा० नक्क, पंज० नक्क)।

नॉदॉन —नादान, मूर्ख (ताजि० उज़० नॉदॉन, फ़ा० नादान)।

नॉम —नाम (ताजि० उज़० नॉम्, फ़ा० नाम, सं० नामन्)।

नॉस —चबाने की तंबाकू, सुर्ती (ताजि० उज़्० नॉस)।
निंद —१. नींद, सोना; २. स्वप्न (सं० निद्रा)।
निँ —१. नहीं (नहीं>नइँ>नि); २. नहीं है; ३. ने (कर्ता कारक का परसर्ग ने>नि)।
निकॉ, निकॉह्—निकाह, विवाह (ताजि० उज़्० निकॉह्, मूलत: अर० निकाह)।
निकिल्नो —निकलना।
निन —दे० 'निंद'।
निपिटनो —लिपटाना।
निपिट्नो —लिपटना।
निल —नील।
निशनो, निशान, निशानो—निशान, चिह्न (फ़ा० निशान)।
निशानि —निशानी (फ़ा० निशानी)।
नु —नौ (सं० नव)।
नुको —छोटा (पंज० निक्का)।
नुल —१. चोंच (ताजि० नुल); २. टोटी (हि० नल)।
ने —१. ने (कर्ता परसर्ग); २. नहीं, नहीं है।
नेका —दे० 'निकॉह्'।
नेबिरा —१. पोती; २. नातिन (ताजि० नबेरा, उज़्० नबीरा, नवरा=पोता, पोती, नाती, नातिन)।
नेबिरा पोति—१. पोती; २. नातिन (ताजि० नबेरा+हि० पोती, सं०पौत्री)।
नेबिरा पोतो—१. पोता; २. नाती (ताजि० नबेरा+हि० पोता; सं० पौत्र)।
नेवरा —दे० 'नेबिरा'।
नेवरा पोति —दे० 'नेबिरा पोति'।
नेवरा पोतो —दे० 'नेबिरा पोतो'।
नों, नोंन —नमक (भोज० नून, पंज० नूण, सं० लवण)।
नो —नौ, ९; २. ने (कर्ता परसर्ग)।
नोक —नाखून (उज़्० तिरनॉक़=नाख़ून; तुल० ताजि० नॉखुन; सं० नख)।
नोड़, नोण, नोन, नोय—दे० 'नोंन'।
नोवख्त —बेवक्त, नावख्त (ताजि० उज० नॉवक़्त)।
पंच —दे० 'पंज'।
पंच्णो —तोड़ना (सं० भंजन)।
पंज —पाँच (फ़ा० पंज, सं० पंच)।
पंजा —पंजा (सं० पंचक)।

पंजि —भांजी (सं० भागिनेयिका)।
पंजो —१. भांजा (भागिनेयक); २. भतीजा (कम प्रयुक्त; सं० भ्रातृजात)।
पंज्णो —तोड़ना (सं० भंजन)।
पंद्रु, पंदो —कपड़ा (सं० भांडः)।
प —पर (अधिकरण-परसर्ग)।
पइ —दे० 'पाइ'।
पइचरो —दे० 'पाइचारो'।
पइज़ —रेलगाड़ी (रूसी पोयज्द)।
पइलम —प्रतीक्षा, इंतज़ार (उज़० पायलमॉक़=इंतज़ार करना)।
पकणो —दे० 'पकाणो'।
पकॉणो —दे० 'पकाणो'।
पकाणो —पकाना (सं० पक्व)।
पकोणो —दे० 'पकाणो'।
पक्णो —१. पकना (सं० पक्व); २. भगना (सं० भाज्)।
पख्ता —रुई, कपास (ताजि० उज़० पख्ता)।
पच्च —दे० 'पाँदशा'।
पछे —पीछे (भोज० पाछे)।
पजणो —टूटना (सं० भंजन)।
पटन —दे० 'पटान'।
पट-पट —पट-पट की ध्वनि।
पटर —दे० 'पतर'।
पटान —पठान।
पड़ —दे० 'पाड़'।
पड़्व —पड़ाव (सं० पत्)।
पड़्तणो —भुनना।
पड़्नो —१. पढ़ना (इस अर्थ में 'पय्नो' भी आता है; सं० पठन); २. पड़ना, लेटना (सं० पतन); ३. फाड़ना (दे० 'पाड़्नो')।
पणि —दे० 'पाणि'।
पणो —दे० 'पाणो'।
पण्नो —कहना (सं० भण)।
पतर —पत्थर।
पतिजो —भतीजा; स्त्री० **पतिजि**—भतीजी (पं० पतीजा, सं० भ्रातृजात)।

पतुलो —पतला, महीन (सं० पत्र अथवा पात्रट)।
पतोंच —पिस्तौल (दे० 'तपंच')।
पँद —दे० 'पाँद'।
पदर —पिता (ताजि० पेदर, पदर)
पदवनि —दे० 'पाँदवाँनी'।
पदवन —दे० 'पाँदवाँन'।
पदु, पदे —दे० 'पाँद'।
पना, पनाँ, पनाँह—पनाह, शरण (ताजि० उज़० पनाँह फ़ा० पनाँह)।
पनि —दे०'पाणि'।
पबि —दे० 'पाबि'।
पयि —१. भाई (सं० भ्रातृ); २. पानी (सं० पानीय)।
पय्नो —पढ़ना (सं० पठन)।
पर —पर (अधिकरण-परसर्ग)।
परकंदा —खानाबदोश (ताजि० पराकन्दा=फैलाया, बिखरा हुआ)।
परि —१. परी (फ़ा० ताजि० परी); २. पर।
परु —१. भौं (सं० भ्रू); २. भारी (सं० भार)।
परुन —पर साल (पंज० परूँ)।
परो —भारी (सं० भार)।
पर्नो —१. पड़ना (सं० पतन); २. पढ़ना (सं० पठन); ३. भरना (सं० भर)।
पर्यं, पर्यां —दे० 'पार्यां'।
पलगमन —पत्थर फेंकने का शस्त्र विशेष (उज़० पलख़माँन्)।
पलेज —खेत (उज़० पाँलिज=तरबूज-खरबूज का खेत; हरि० पलेज तरबूज़-खरबूज़े के खेत; भोज० पहलेज=तरबूज़ या ख़रबूज़)।
पवाँच —१. भाभी, भाव; २. भयवहु, छोटे भाई की पत्नी (सं० भ्रातृजाया)।
पश —पीछे (सं० पश्च)।
पशा —दे० 'पश्शा'।
पशान्नो —पहचानना (सं० प्रत्यभिज्ञान)।
पश्शा —पिस्सू, मच्छर (फ़ा० पश्शह)।
पस —पीछे (सं० पश्च)।
पांजि —भांजी (सं० भागिनेयिका)।
पांजो —१. भांजा; (पंज० पांजा, सं० भागिनेयक:); २. भतीजा (कम प्रयुक्त; सं० भ्रातज:)।

पांदो —कपड़ा (सं० भांड:) ।

पाइ —१. भाई; २. छोटा भाई (सं० भ्रातृ, पंज० पाइ) ।

पाइचारो —भाईचारा, मित्रता (सं० भ्रातृ, फ़ा० चारह्) ।

पाग्णो —भागना (सं० भाज्) ।

पाचा —१. दे० 'पाँदशा'; २. पीछे (सं० पश्च) ।

पाड़ —पहाड़ (सं० पाषाण) ।

पाड़्नो —फाड़ना (सं० स्फाटन) ।

पाणि —पानी (सं० पानीय) ।

पाणो —पाना (सं० प्रायण) ।

पाबि —दे० 'पाँबि' ।

पार्या —१. ताजुज़्बेकी भाषियों के लिए कुछ लोगों द्वारा प्रयुक्त नाम: २. ताजुज़्बेकी भाषा के लिए कुछ लोगों द्वारा प्रयुक्त नाम ।

पाँग्णो —दे० 'पाग्णो' ।

पाँचाँ —दे० 'पाँद्शाँ' (ताजि० में बोलचाल में पाँश्चाँ) ।

पाँचाँयि —बादशाही (ताजि० में बोलचाल में पाँश्चाँयि) ।

पाँड़ —दे० 'पाड़' ।

पाँड़्नो —पड़ना (सं० पत्) ।

पाँणि —दे० 'पणि' ।

पाँदवाँन —चरवाहा (ताजि० पादावान; पादा=पशुओं का झुंड) ।

पाँदवाँनि —चरवाही (दे० पाँद्वाँन्) ।

पादशाँ —बादशाह (उज़० पाँश्शाँ, पाद्शाँह; ताजि० में बोलचाल में पाँश्चा; मूलत: फ़ा० बादशाह) ।

पाँबि —१. भाभी, बड़े भाई की स्त्री; २. चाची; ३. ताई (पंज० पाबी=भाभी, सं० भ्रातृ+जाया); ४. छोटे भाई की पत्नी ।

पाँरु, पारो —भारी, वज़नी (सं० भार; पंज० पार) ।

पार्नो —भरना (सं० भरण) ।

पाँवच —१. भाभी, भावज; २. छोटे भाई की पत्नी (हि० भावज) सं० भ्रातृ+जाया) ।

पाँशाँ, पाँश्शाँ—दे० 'पाँदशाँ' ।

पिणो —पीना (पंज० पीणा, लहँ० पीवण, सं० पिब्) ।

पिच्णो, पिज्णो—भीगना, भीजना (सं० भ्यंज्) ।

पियाज् —प्याज (ताजि० उज़० पियाँज़, फ़ा० प्याज़) ।

पियालो —प्याला (ताजि० उज़० पियाँला ; फ़ा० पियाला) ।

पिशिन, पिश्न—प्रश्न (सं० प्रश्न) ।

पुंदुक —बंदूक (अर० बंदूक)।
पुइ —फूफी, बूआ।
पुगुड़्नो, पुगुनो, पुगुर्नो —पकड़ना (सं० प्रकृष्ट)।
पुट्नो —१. फटना, फूटना, टूटना ; २. फोड़ना, फाड़ना, तोड़ना (सं० स्फोट)।
पुड़ि —बोड़ी, बोड़िया (तुल० उज़० बोइरा ; सं० वटी)।
पुत्नो —दे० 'पुट्नो'।
पुन्नो —भुनना (पंज० पुनना, सं० भूर्जन)।
पुख़ —धीरे ; **पुख़-पुख़**—धीरे-धीरे।
पेक्नो, पेख्णो—देखना (प्राचीन हि० पेखना, सं० प्रेक्षण)।
पें, पेंण, पेंन—दे० 'पेण'।
पेगड़, पेगर —भेड़िया (तुल० लहँदा बिघिआड़, अव० बिगवा)।
पेट —पेट (सं० पेट=थैला)।
पेण —बहिन (पं० पेण, सं० भगिनी)।
पेदा —पैदा (फ़ा० पैदा)।
पेन —दे० 'पेण'।
पेर, पेरु —१. पैर (सं० पद) ; २. फिर।
पेर्ट पेर्टु —दे० पेट' ('र' का आगम; तुल० हरि० सरड़क=सड़क)।
पेशन्नो, पेशान्नो— पहिचानना (सं० प्रतिभिज्ञान)।
पेसा —पैसा (प्राचीन उज़० पइसा ; (आधु० उज़० कपेक); सं० *पणांशक)।
पोति —पोती (सं० पौत्री)।
पोतो —१. पोता; २. नातिन; ३. पड़पोता (सं० पौत्रः)।
पोलद, पोलाद, पोलाँद—फ़ौलाद (उज़० ताजि० पोलात, पोलाद; फ़ा० पोलाद)।
पोस्त —चमड़ा (उज० ताजि० पोस्त, फ़ा० पोस्त)।
प्रे —दूर, दूसरी ओर, परे (सं० परे)।
फ़क़त —केवल, निरा (ताजि० उज़० फ़क़त, मूलतः अर० फ़क़त)।
फ़जर, फ़जरा—आने वाला कल, सवेरे, सुबह (अर० फ़ज्र)।
फ़ड़नो —फिरना।
फ़ता —क़सम; मु० **फ़ता लेना**—क़सम खाना।
फ़दर, फ़दरा—आने वाला कल, सुबह, सवेरे (ताजि० फ़रदा, मूलतः अर० फ़ज्र)।
फ़रनो —फिरना।
फ़लाँन, फ़लाँन्चा— फ़लाँ, अमुक (ताजि० उज़० फ़लान्, मूलतः अर० फ़ुलाँ)।

फ़ार्सि —फ़ारसी (फ़ा० फ़ार्सी)।
फ़िल —हाथी (ताजि० फ़िल, फ़ा०=फ़ील)।
फ़ुर्नो —बीतना।
फ़े —फिर।
फेर, फ़ेर —१ फिर (पंज० फेर); २. ऊपर।
वंद्णो —१. बाँधना; २. बँधना (सं० बंधन)।
ब —१. भी (दे० 'बि'); २. साथ (फ़ा० ताजि० ब)।
बइरक, बइरक़ —झंडा (ताजि० उज० बाइरॉक़, तुर्की बइरक़)।
बउ —१. छोटे भाई की पत्नी (आसामी बउ=भाभी); २. पतोहू (हिं० बंग० पंज० ने० बहू, बउ=पुत्रवधू, दूल्हन; मूलत: सं० वधू=स्त्री)।
बकर —सुंदर, अच्छा।
बकरि —बकरी (सं० बर्कर)।
बक्रि —दे० 'बकरि'।
बग, बग़ —१. बाघ (सं० व्याघ्र); २. दे० बॉग़।
बगणो —१. फेंकना; २. भगाना (सं० भज्)।
बगो —सफ़ेद (तुल० पंज० बग्गा; हरि० बुग्ग, सफ़ेद-बुग्ग)।
बगोव्णो —फेंकना।
बचा —बच्चा, लड़का (फ़ा० बच्चह्)।
बचणो —बिछाना।
बचो —दे० 'बचा'।
बजर, बज़ार, बज़ॉर—बाज़ार (ताजि० उज़० बॉज़ॉर, फ़ा० बाज़ार)।
बज़े —बाद।
बजो —दे० 'बोजा'।
बज्र् —दे० 'बज़र'।
बटणो, बटाणो, बटॉणो—बैठना (उपविष्ट्)।
बड़्नो, बड़ानो, बड़ाँनो—बनाना।
बद —बाद (मूलत: अर० बा'द)।
बदन —शरीर (फ़ा० बदन)।
बदल —दे० 'बादल'।
बदला —बदला (अर० बदल)।
बदि —बड़ी (सं० वर्ध)।
बन —बंद; बन् करनो—बंद करना (फ़ा० बंद)।
बननो —बनाना।

बन्नो —१. बनना; २. बँधना (सं० बंधन)।
बम —छत (फ़ा० बाम)।
बंय —अमीर।
बर —१. पर (फ़ा० बर); २. बाहर (सं० बाह्य, अभ्यंतर के सादृश्य पर; पंज० बार)।
बर्फ़ —बर्फ़ (फ़ा० ताजि० बर्फ़ मूलतः बफ़्र)।
बल —दे० 'बला', 'बॉल' तथा बल्दु'।
बलणो —दे० 'बलाॅवणो'।
बला —बला (अर० बला)।
बलाचफ़ा —बाल-बच्चा (ताजि० उज़० बॅलाचक़ा)।
बलाॅणो, बलाॅवणो—बुलाना (भोज० बलावल, सं० ब्रू)।
बलि —दे० 'बिल्लि'।
बल्द, बल्दु —बैल (पहाड़ी बल्द, बोल्द, भोज० बरद, पंज० बल्द, हरि० बुळध)।
बह्रोवणो —बहाना (सं० वह्)।
बादल —बादल (सं० वारिद)।
बॉग़ —बाग़ (ताजि० बॉग, फ़ा० बाग़)।
बॉजॉर —बाज़ार (फ़ा० बाज़ार; ताजि०, उज़० बॅज़ॉर)।
बादल —दे० 'बादल'।
बॉदशॉं —बादशाह (फ़ा० बादशाह)।
बॉन्नो —बाँधना (पं० बनणा; सं बंधन)।
बॉम —छत (ताजि० बोम, बाम फ़ा० बाम)
बॉर —बाहर; दे० 'बर'।
बारॉं, बॉरॉन—बारिश (ताजि० बॉरॉन्; फ़ा० बाराँ)।
बार्दिन, बॉर्दी—खीरा (ताजि० वोर्द्रिग, उज़० बॉर्द्रिग)।
बाल —बाल (सं० बाल)।
बाल्चा —रस्सी विशेष या उसका फंदा (उज़० बॉग़चा)।
बि —भी (सं० अपि+हि)।
बिगॉना, बिगॉनो, बिगोना, बिगोनो—अपरिचित, बेगाना (ताजि० उज़० बेगानो; फा० बेगानह्)।
बिच —बीच (सं० विच; तुल० पंज० बिच)।
बिज्णो —बोना (पंज० बीजण, सं० बीज)।
बिटा, बिटिया, बिट्या—बेटी, बिटिया (प्रा० बिट्ट)।
बिबि —फूफी (तुल० बीबी, बीवी=पत्नी; भोज० बीवी=(पति से

छोटी) ननद; ताजि० बिबी=दीदी; पंज० बीबी=लड़की, पत्नी)।

बिय, बिये, बियो—द्वार।

बिरिंज —चावल (ताजि० बिरिंच, फ़ा० बिरंज)।

बिलि, बिल्लि—बिल्ली (सं० विडालिका)।

बिश —बीच (उ० विच)।

बिश्कड़, बिश्कर—बीच (भोज० बिचखँड़=बीच का भाग; बीच+खंड)।

बिश्करो, बिश्कलो—बिचला; दे० बिश्कड़।

बिस्मिल्ल, बिस्मिल्ला—१. खुदा का नाम; २. खुदा के नाम पर; ३. खुदा के नाम से; ४. प्रारंभ, शुरू; मु० **बिस्मिला करनो**—शुरू करना। (अर० ब-इस्म-अल्लाह)।

बिस्यार, बिस्याँर—ज़्यादा, अधिक, बेशी (ताजि० विस्याँर्)।

बिस्योण —ताजुज़्बेकी भाषा-भाषियों की एक उपजाति।

बुंदुक, बुंदुख़, बंदुग़—बंदुक (अर० बंदूक़)।

बुइ —महक, गंध (भोज० बोय, बूय; फ़ा० बोया=सुगंधित; बू=गंध)।

बुडयि, बुडि—१. बुड्ढी; २. बुढ़िया; ३. नानी; ४. दादी, आजी (तुल० हि० बुड्ढी; अफ़० बुडयि=बुढ़िया; सं० वृद्धिका)।

बुडो —१. बुड्ढा, बूढ़ा; २. दादा, आजा; ३. नाना; **बुडो अबा**—१. दादा; २. नाना (तुल० हि० बुड्ढा, बूढ़ा; अफ़० बोडा=बूढ़ा; सं० वृद्ध)।

बुर्च —१. बुर्ज (ताजि० बुर्च; फ़ा० बुर्ज); २. ओर, तरफ़।

बुलबुल —बुलबुल (फ़ा० ताजि० बुलबुल); **बुलबुले गोया**—बात करने वाली चिड़िया। उज़० **बुलबुले गोया**—अच्छी गाने वाला बुलबुल, बहुत अच्छा बोलने वाला। 'गोया' ताजि० गुफ़्तन (=बातचीत करना) से।

बुलुत —बादल (उज़० बुलुत=बादल)।

बे —१. द्वार (तुल० पंज० बूआ, सं० द्वार); २. भी (दे० 'बि'); **बेहम**—भी (यह दुहरा प्रयोग है। 'बे का अर्थ है 'भी' और 'हम' ('भी' अर्थ में ताजि० उज़० शब्द) का भी अर्थ है भी। इस प्रकार 'बे हम' का अर्थ है 'भी भी', किन्तु इनका सम्मिलित प्रयोग ताजुज़्बेकी में 'भी' के लिए होता है।

बेख़ —दे० 'बेखि'।

बेख़तर —बेहतर, अच्छा (ताजि० बेहतर, फ़ा० बेहतर)।

बेखि, बेखे —एक दम।

बेग़ —बग़ल, पास (फ़ा० ताजि० बग़ल, उज़० बग़र)।
बेग़म —बिना ग़म, निश्चिततापूर्वक (फा० ताजि० उज़० बेग़म)।
बैंच —बीच (सं० विच)।
बेच्णो, बेछ्णो—बेचना (सं० विक्रय, प्रा० विच्च)।
बेटणो, बेटॉणो—बैठना (सं० उपविष्ट्)।
बेट, बेटा, बेटा—बेटा; **उगो बेटा**—विपुत्र (प्रा० बिट्ट)।
बेट्नो, बेठ्नो, बेड़्नो—बैठना (सं० उपविष्ट्)।
बेमलल्, बेमलाल—आराम से (ताजि० उज़० बेमलॉल=आराम से)।
बेयो —द्वार, दरवाज़ा (तुल० सं० द्वार, पंज० बूआ)।
बेरक़, बेर, बेरा—दे० 'बइरक'।
बेल, बेल्चा —बेल्चा (ताजि० फ़ा० उज़० बेल, बेल्चा)।
बेश्णो —दे० 'बेच्णो'।
बेसवाद, बेसवाद—अनपढ़ (ताजि० उज़० बेसवाद=अनपढ़)।
बेहुशु —बेहोश; मु० **बेहुशु जणो**—बेहोश हो जाना (फ़ा० बेहोश)।
बो —दे० 'बोत'।
बोज, बोजा —साढ़ू (ताजि० बोजा; उज़० बॉजा; मध्य एशिया की 'कबोल' बोली में 'बॉजा', 'बाजा')।
बोज़ॉर —दे० 'बॉज़ॉर'।
बोजबला —बहादुर, वीर (उज० बोज़बॉला=तगड़ा जवान)।
बोड़ो, बोड़्ड़ो—बड़ा; स्त्री० **बोड़ि, बोड़्ड़ि, बोरी**—बड़ी (सं० वर्द्ध)।
बोत, बोतो, बोद—बहुत (पंज० बोत, सं० प्रभूत)।
बोरो, बोर्रो—दे० 'बोड़ो'।
बोलक —१. अलग; **बोलक्-बोलक्**—अलग-अलग, एक-एक करके; २. दूसरा (उज़० बोलक=अलग)।
बोवो —१. नाना; २. दादा, बाप का बाप (ताजि० बोबो; उज़० बावा; तुर्की बाबा)।
मंग —दूल्हन (तुल० ताजि० कंगल; पंजा० मँगेतर)।
मंगर —१. पीठ; २. कंधा (जयपुरी, डांगी, मेवाती मंगर=पीठ; हरि० मंगर)।
मंगेव, मँगेवा—विवाह, मँगनी (सं० मार्गण)।
मंग्णो —माँगना (सं० मार्गण)।
मंङ —दे० 'मंग'।
मंजि —चारपाई (पंज० मंजी, भोज० माँचिया=छोटी चारपाई; सं० मंचिका)।

म —१. मुझ; २. में (इस अर्थ में 'मे', 'मो', 'मि' 'म्' भी आते हैं); ३. माँ।

मइदन, मइदान, मइदॉन—मैदान (ताजि० उज़० मयदॉन फ़ा० मइदान)।

मइन, मइना—महीना (फ़ा० माहीनह्)।

मइमुन —बंदर; बंदरिया (ताजि० उज़० मइमून=बंदर)।

मइलि —ठीक, अच्छा, अच्छी बात है (उज़० मयलि=अच्छा, हाँ; ताजि० मयलश=हाँ; अच्छा)।

मकम —बंद (तुल० उज़० महकम=मजबूत)।

मकि —दे० 'मखि'।

मकुम —ज़ोर से।

मक्तब —स्कूल (ताजि० उज़० मक्तब; मूलत: अर० मक्तब)।

मक़्सद, मक़्सदु—मक्सद, उद्देश्य (ताजि० उज़० मक़्सद; मूलत: अर० मक़्सद)।

मखि —मक्खी (सं० मक्षिका)।

मख़्त —तारीफ़ (उज़० मक्तॉव, मख़्तॉव्=तारीफ़)।

मख़्सद, मख़्सदु—दे० 'मक़्सद'।

मगजिन —दूकान (रूसी मगाज़ीन्=दूकान)।

मगर, मगरा—ताजुज्बेकी-भाषियों की एक उपजाति (तुल० हरि० मगरा=सुस्त-आदमी)।

मङ् —दे० 'मंग'।

मचि, मछि —मछली (हरि० पंज० मच्छी, सं० मत्स्यका)।

मटो —मीठा; (सं० मिष्ट)।

मट्नो —१. रखना; २. बैठाना।

मठो —मीठा (सं० मिष्ट)।

मतल —इंतज़ार, प्रतीक्षा (उज़० मतल=इंतज़ार; मूलत: अर० मुअत्तल)।

मतो —१. मीठा (सं० मिष्ट); २. माथा दे० 'मॉथो'।

मत्णो —दे० 'मॉत्णो'।

मथो —दे० 'मॉथो'।

मन —१. मैं (मात्र ताजिक अभिव्यक्तियों में; बहुत कम प्रयुक्त। जैसे कितॉब-इ-मन=मेरी किताब; ताजि० मन=मैं); २. मन (४० सेर)।

मनि, मने —दे० 'माने'।

मन्नो —मानना (सं० मानन)।

मयिन —दे० 'माहिन'।

मर —दे० 'मरो'।
मरि — हमारी।
मँरे —हमारे।
मरो —हमारा; बहु० विकारी मरे, म्रे, मर; स्त्री० मरि।
मर्ग —मौत (फ़ा० ताजि० मर्ग)।
मर्त, मर्ता —मर्तबा, बार (ताजि० उज़्ज़० मर्ता, मर्तबा, मूलत: अर० मर्तबह्)।
मर्नो —१. मरना; (सं० मरण); २. मारना (सं० मारण); **कि मरि**—के मारे से; जैसे **दर कि मरि**...डर के मारे, डर से।
मर्य —मेरा।
मर्हमत —दया, कृपा, मेहरबानी (ताजि० उज़्ज़० मर्हमत्=धन्यवाद के उत्तर में कहा जाता है; मूलत: अर० मर्हमत्=कृपा)।
मलनो —मलाना (सं० मलना)।
मलुम —मालूम, ज्ञात (पंज० मलूम, ताजि० मालुम, मूलत: अर० मालूम)।
मलेनो —दे० 'मलनो'।
मलोनो —दे० 'मलनो'।
मल्नो — मलना; मल्नो-मलोनो—**मलना-मलाना** (सं० मलन)।
मश —दे० 'मश्क'।
मशिन, मशिना—मोटर, ट्रक (रूसी मशीना=ट्रक, मोटर)।
मश्क —मश्क (फ़ा० ताजि० मश्क=पानी भरने का, उज़्ज़० मेश)।
मस —बदमाश।
मसन —फूफा (तुल० पंज० मास्सड़, ताजि० उज़्ज़० यज़्ना=बहिन का पति; हज़ारा भाषा में एज़्नगि, एज़्न, इयेज़्न=बहनोई, ननदोई, मौसा, फूफा)।
मस्सि —मौसी (पंज० मास्सी, सं० मातृष्वसिका)।
महिन — महीन, बारीक, पतला (ताजि० महिन, मूलत: अर० महीन)।
माँम —दे० 'माँम'।
मा —माँ; **उगि मा**—विमाता (सं० माता)।
माथो —दे० 'माँथो'।
माने —अर्थ, मतलब (ताजि० माने, उज़्ज़० माअनि, माअना; भोज० माने, मूलत: अर० माना)।
मामा —दे० 'माँमा'; स्त्री० मामि=मामी।
मार्नो —दे० 'माँर्नो'।
मालुम —दे० 'मलुम'।

मासि, मास्सि—दे० 'मस्सि'।
माँ —में (अधिकरण परसर्ग)।
माँतृणो —बाँटना !
माँथो —माथा (पंज० मत्था; सं० मस्तक)।
माँम, माँमा, माँमाँ—१. मामा ; स्त्री० **माँमि**—मामी; २. बाप का भाई (इस अर्थ में कुछ लोगों द्वारा ही प्रयुक्त; हिं० पंज० लहँ०, बं०, अफ़० मामा=माँ का भाई; मध्य एशिया की कबोल भाषा में माम, माँमाँ=माँ का भाई।
माँरो —हमारा; स्त्री० माँरि (तुल० राज० म्हारा)।
माँर्नो —मारना (सं० मारण)।
माँल —मवेशी, मवेशी का झुंड या लेंहड़ (ताजि० उज़० माँल=मवेशी)।
माँश —उड़द (ताजि० उज़० माँश, फ़ा० माँश)।
मिंज, मिंजा—मैंने।
मि —१. बारिश; मि **पड़्नो**—मेह पड़ना (हिं मेह, पंज० मींह मिंह); २. मैं; ३. में।
मिटो, मिठो—मीठा (सं० मिष्ट)।
मिन्य, मिन्या, मिय, मिया—दे० 'मिंज'।
मिरि —मेरी।
मिरे —मेरे।
मिलोन —दस लाख (रूसी मिलिओन)।
मिस्लन् —जैसे (हिं० मस्लन, ताज़ि० उज़० मसलन, मूलतः अर मसलन)।
मुंडो —लड़का (पं० मुंडा; सं० मुंड)।
मु —दे० 'मों'।
मुआल्लिम —अध्यापक (ताजि०, उज़० मुअल्लिम; मूलतः अर० मुअल्लिम)।
मुक़ोबिलो —मुक़ाबिला (ताज़ि० उज़० मुकाँबिला; मूलतः अर० मुकाबलह्)।
मुग़ुल —मुग़ल; **मुग़ुलिस्तान**—मंगोलिया (ताज़ि० उज़० मुग़ुल, मुग़ुलिस्तान)।
मुच, मुछ —मूँछ् (पंज० मुच्छ, सं० श्मश्रु)।
मुड़्नो —१. मुड़ना; २. हटना (सं० मुरण)।
मुड़्स —पति (लहँ० मुड़्स; सं० मनुष्य)।
मुतृणो —पेशाब करना (सं० मूत्र)।
मुरद, मुरदु, मुराद, मुरादु, मुराँदु, मुराँद—इच्छा (उज़० ताज़ि० मुराँद; मूलतः अर० मुराद)।
मुम्किन —संभव (ताज़ि० उ० मुम्किन, मूलतः अर० मुमकिन)।

मुरि —१. मोरी; २. छेद (सं० मुख+ड़ी)।
मुरो —मेरा; मिरे—मेरे; स्त्री० मिरि, म्रि—मेरी।
मुँर्नो —दे० 'मुड़्नो'।
मूर्स —दे० 'मुड़्स'।
मुल, मुला, मुलाँ—दे० 'मुल्ला'।
मुल्नो —मिलना (सं० मिलन)।
मुल्ल, मुल्ला, मुल्लाँ—मुल्ला (ताज़ि० उज़० मुल्ला, मूलतः अर० मुल्ला)।
मुसफ़र, मुसाफ़र—मुसाफ़िर (पंज० मुसाफ़र; मूलतः अर० मुसाफ़िर)।
मुसलि, मुसल्लि—ताजुज़्बेकी भाषा-भाषियों की एक उपजाति।
मुस्तक़म —मज़बूत (ताज़ि० उज़० मुस्तहकम, मूलतः अर० मुस्तहकम)।
में —दे० 'मे'।
मेंजु —मस्तिष्क, दिमाग़ (हि० भेजा, सं० मज्जा)।
मै —१. मैं; २. में।
मेति, मेतिर—मीटर (रूसी मेत्र)।
मेमाँन, मेमोन अतिथि (ताजि० मेमाँन, उज़० मेहमाँन; फ़ा० मेहमान)।
मेव, मेवा —फल (ताजि०, उज़० मेवा; फ़ा० मेवह)।
मेहमाँ (ो) न —दे० 'मेमाँन'
मों —मुँह (सं० मुख)।
मोंडो —दे० 'मोडो';।
मो —१. दे० मों'; २. में; ३. मामा; ४. बाप का भाई।
मोज़ो —जूता, घुटने तक का जूता (ताजि० मोजा=जुता; पंज० मोजा =देहाती जूना, मूलतः पहलवी मोचक)।
मोटु, मोटो —मोटा (सं० मुष्ट)।
मोडो —कंधा (हि० मोढ़ा, पंज० मोडा, मोड्ठा, मोभ़० मुड्ढा)।
मोम, मोमा—दे० 'मोभ'
मोलो —१. मोल; **मोल लेणो**—मोल लेना, खरीदना (सं० मूल्य); २. बहुत।
म्रि —मेरी।
य —१. यह (इस अर्थ में या, यो, याँ, इ, यि, जि भी आते हैं); २. या, अथवा (इस अर्थ में 'या' भी आता है); **य कि**—या कि; (फ़ा० या); ३. पास, बग़ल में।
यउ —दोस्त, मित्र।
यक —१. एक (ताजि० फ़ा० यक); २. आगे।
यकुर —ऐसा।

यक्क, यक्का—गला (उज़० येला=कंधा)।
यख —१. ठंडा; २. सर्दी, ठंडक (ताजि० याख, उज़० यख)।
यज़्न, यज़्ना—१. फूफा; २. छोटी या बड़ी बहिन का पति, जीजा (हज़ारों की भाषा में एज़्नगि, इएज़्ना=मौसा, फूफा, बहनोई; ताजि० उज़० नज़्ना; काबुली याज़्ना=बहनोई)।
यतल —बेसवार, ख़ाली, कोतल (तुल० उज़० येतिलमॉक़=तैयार हो जाना, पक जाना)।
यतुणो, यतुनो—इतना।
यर्शा, यर्शा —मुताबिक़ (ताजि० उज़० यरशा=मुताबिक़)।
या —या; **या तौबा**—या अल्ला, तोबा-तोबा, छिः छिः (फ़ा० अर० तौबह्)।
याख —दे० 'यख'।
याद —दे० 'यॉंद'।
याश —युवक, नवजवान (ताजि० उज़० यॉश=जवान)।
यॉं —१. दे० 'य'; २. हे; जैसे **यॉं अल्ला**—हे ईश्वर।
यॉंद —याद, स्मरण (ताजि० यॉंद, फ़ा० याद)।
यि —यह।
ये —ये, यह का बहु०।
येगितु —ऐसे।
यो —यह।
रंग —रंग; मु०···**को रंग म रन्नो**—के रंग में रँगना, के जैसा होना (सं० रंग)।
रंडो —विधुर, रँडुवा; स्त्री० **रंडि**—विधवा (हि० ने०, बं० राँड, राज०, गुज० राँड, सं० रंडा)।
र —दे० 'रह्'।
रइस —सामूहिक फ़ार्म का प्रधान (ताजि० उज़० रइस, मूलतः अर० रईस)।
रकेणो, रक्णो, रखणो, रख्नो—रखना।
रख़म —रहम, दया (ताजि० **रहम**, उज़० रखम, मूलतः अर० रहम)।
रचणो —दे० 'रस्णो'।
रज्णो —आनंद करना, मज़ा करना (भोज० राजब, सं० राज)।
रणो —दे० 'रणो'।
रणनो, रन्नो—रँगना (सं० रंग)।
रत, रतु —दे० 'रॉंत'।

रदिश्रो —दे० 'रादिश्रो'।

रन —स्त्री, पत्नी (पंज० रन्न=स्त्री); मु० **रन करनो**—विवाह करना।

रनि — दे० 'रानि'।

रनो —दे० 'रन'।

रय, रयि —राह् (फ़ा० राह्)।

रय्णो —रहना।

रवन, रवॉन, रवॉनो, रवोनो—रवाना; मु० रवोनो श्राणो—रवाना होना (फ़ा० रवानह्)।

रव्गन —तेल, रोग़न (ताजि० उज़० खग़न; मूलतः अर० रौग़न)।

रव्ज़न —खिड़की (ताजि० रव्ज़न=छोटी खिड़की, रोशनदान)।

रसो —रस्सा, रस्सी (सं० रश्मि)।

रस्णो —पहुँचना (फ़ा० रसीदन)।

रस्तो —रास्ता (फ़ा० रास्तह्)।

रह —राह, रास्ता (ताजि० रॉह, मु० **रह लेणो**—जाना; **रह मारनो**—चलना (ताजि० रॉह, फ़ा० राह)।

रा —दे० 'रह'।

रात, रातु —दे० 'रॉत'।

रादिश्रो —रेडियो (रूसी रादिश्रो)।

रानि —रानी।

राय —राह् (फ़ा० राह)।

रास्तो —दे० 'रस्तो'।

राह —दे० 'रह'।

रॉज़िगि —मर्ज़ी, रज़ामंदी (ताजि० रॉज़िगी)।

रॉत —१. रात (सं० रात्रि); २. बीता हुश्रा कल; ३. शाम।

रॉह —दे० 'रह'।

रुच्क, रुच्का—क़लम (रूसी रुच्का)।

रुटि, रुति —रोटी (सं० *करपट्टिका)।

रुणो —दे० 'रोणो'।

रुश्मॉल —रूमाल (फ़ा० रू+माल; फिर शायद 'दस्तमाल' का प्रभाव)।

रेणो —रहना (तुल० पंज० रैणाँ)।

रोणो —रोना (पंज० रोणा)।

रोब, रोबा —लोमड़ी (लोमश > लोवा > रोवा > रोबा)।

रोमु —लेंहड़, समूह, झुंड (ताजि० रामा=समूह) ।
लँणो —लेना (तुल० पंज० लेणा) ।
लंगणो —१. लँघान; २. लगाना ।
लंगो —नंगो (तुल० बोलचाल की पंज०, हरि० भोज० लंगा) ।
लंग्णो —१. लाँघना; २. बीतना, लगना (समय); ३. माफ़ करना; ४. जाना ।
ल —१. पर; २. लिए, वास्ते ।
लउ —ख़ून (हि० लहू) ।
लक —कमर (सं० लंक, पंज० लक्क) ।
लकड़ि, लकरि—१. लकड़ी; २. डंडा, लाठी, छड़ी (सं० लकुडिका) ।
लकर्नो —१. निकलना; २. जाना (तुल० भोज० लकरायल=व्यर्थ में घूमना); ३. भागना ।
लकिन —लेकिन (ताजि० उज़० लॅकिन, लॉकिन; फ़ा० लेकिन) ।
लकेन —कुर्सी की पीठ या उसका हाथ ।
लग्णो —लगना; होना ।
लड़इ —लड़ाई ।
लड़ि —दूल्हन (तुल० पंज० लाड़ी=दूल्हन) ।
लडु —दूल्हा ।
लड(ड़)नो —लड़ना; दे० 'लत्णो' ।
लड् (ड्) नो—लड़ना ।
लणो —लाना ।
लत्णो, लद्णो—१. पाना; २. लादना ।
लन —१. साथ, के साथ; २. से (पंज० नाल) ।
लप —दे० 'लब' ।
लफ़्ज़ —शब्द; **लफ़्ज-इ-अफ़ग़ॉनि**—ताजुज़्बेकी के लिए प्रयुक्त एक नाम; **लफ़्ज़-इ-इन्कु**—ताजुज़्बेकी का एक नाम ।
लब —१. किनारा; २. पास, समीप; ३. ओर, तरफ़ (ताज़ि० उज़० लब; मूलतः फ़ा० लब) ।
लम्कोणो —लटकाना ।
लम्क्णो —लटकना ।
लल —दे० 'लॉल' ।
लव —ख़ून (हि० लोहू) ।
लव्णो —लाना ।
लश्कर —लश्कर, सेना (ताजि० उज़० लश्कर, मूलतः फ़ा० लश्कर) ।

लाँग्णो —लाँघना ।
लाड़ि —दूल्हन (तुल० पं० लाड़ी=दूल्हन) ।
लाँणो —लाना ।
लाल —दे० 'लाॅल' ।
लाॅकिन —दे० 'लकिन' ।
लाॅणो —लाना ।
लाॅल —१. लाल (रंग); २. लाल, एक बेशक़ीमत पत्थर (अर० ला'ल) ।
लाॅलाॅ —बाप का बड़ा या छोटा भाई, चाचा [तुल० पंज० (कुछ परिवारों में) लाला=बाप] ।
लिक़, लिक़प—दे० 'लिक़बु' ।
लिक़ब, लिक़बु—नक़ाब, चेहरा (उज़० लकाॅब, निक़ाब, मूलत: अर० नक़ाब) ।
लिकर् (ड़्) नो, लिकिर् (ड़्) नो, लिकुर् (ड़्) नो,—निकालना (तुल० हरि० भोज० लिकड़ना)
लिख्णो —लिखना (सं० लिख्) ।
लिणो, लिनो—लेना ।
लिश्कणो —फिसलना ।
लुंगो —दे० 'लंगो' ।
लुँन्नो —चुनना (सं० लवन) ।
लुँव्णो —लेना ।
लु —दे० 'लउ' ।
लुकुइँ, लुकुइँन, लुकुइ—लोग (सं० लोक) ।
लुक्णो —१. छिपना, छिपाना; २. गड़ना, गाड़ना (सं० लुक्, भोज० लुकायल, पंज० लुकणा) ।
लुड़ि —झोंका ।
लुव्णो —१. लेना; २. लाना ।
ले —१. लिए, वास्ते; २ तक; ३. ओर, तरफ़ (सं० लग्ने) ।
लेणो —लेना ।
लेफ़ —रज़ाई (हिं० लिहाफ़, मूलत: अर० लिहाफ़) ।
लेब —ओर (फ़ा० लब) ।
लोंव्णो —लेना ।
लोकिन —दे० 'लकिन' ।
लोयो —लोहा (ब्रज० राज०, लोहो; सिं० लोहु, हि० पं०, लहँ० लोहा, गुज० लोह, सं० लौह)।

लोव्णो —१. लाना; २. लेना।
ल्यणो —१. लाना; २. लेना।
व —और (हि० व, मूलतः फ़ा० व)।
वइ —१. हाथ, उफ़ (ताजि० वह, पश्तो वइ); २. वही (वह+ही >वइ)।
वकेअ —घटना, वाक़या (ताजि०, उज़०, हि० वाक़िआ, वाक़या; मूलतः अर० वाक़िअ:)।
वख़ —दे० 'वख़्त'।
वख़-वख़ —वाह-वाह (ताजि० वाख-वाख, फा० वाह-वाह)।
वख़्तरमज, वख़्तरोमज —नमाज़ के वक़्त, सुबह, सवेरे (अर० वक़्त+फ़ा० नमाज़)।
वख़्तु —दे० 'वख़्त'।
वख़्त —समय, वक्त (अर० वक़्त, भोज० बखत)।
वख़्त-अ-नमज —दे० 'बख़्तरमज'।
वज —खोल।
वज़िर, वज़िरु, वज़ीर —वज़ीर, मंत्री (ताजि० उज़० वज़िर, अर० वज़ीर)।
वड़्नो —१. घुसना, भीतर जाना; २. जाना।
वर —१. बारी (सं० बार); २. वार (फ़ा० वार)।
वरनो —दे० 'वड़्नो'।
वल —बाल; (ताजुज़्बेकी की एक बोली चंगरी में) औरतों का बाल (सं० बाल)।
वलेकुम —वालेकुम, सलाम (अर० सलामुन अलैकुम)।
वसियत —वसीयत (ताजि० उज़ वसियत, मूलतः अर० वसीयत)।
वसे —वास्ते (अर० वास्ते)।
वा —हवा (अर० हवा)।
वार —दे० 'वर'
वाल —दे० 'वल'
वाँ —दे० 'वा'।
वाॅर —दे० 'वर'।
वाॅल —दे० 'वल'।
विय, विया, वियाँ —विवाह (पंज० बया, बिआ; भोज० बियाह, सं० विवाह); २. दावत; मु० **वियाँ देणो**– दावत देना, भोज देना (यह उज़० प्रभाव है। उज़० में 'विवाह' को 'तोय' कहते हैं, और 'तोय बेरमाॅकु' (शाब्दिक अर्थ विवाह देना) का अर्थ होता है 'बड़ी दावत देना')।

वे —वे (बहुत कम प्रयुक्त)।
वेड़ो —बछड़ा (सं० वत्स, प्रा० वच्छ+देशज प्रत्यय ड़+ग्रा)।
वो —१. वह; २. वे।
शउकुन —शोर, गुल (उज़० शउकुन=शोर)।
शम —शाम (ग्रर० शाम)।
शमो —दे० 'शम'।
शम्शेर —तलवार (ताजि०, शम्शेर, फ़ा० शम्शीर)।
शरब —१. शराब (ताजि०, उज़० शराब, मूलतः ग्रर० शराब); २. शीघ्र (तुल० उज़० शिताब=शीघ्र)।
शर —दे० 'शहर'।
शर्त —शर्त (ग्रर० शर्त)।
शर्ति —शीघ्र।
शश्क, शश्का—तलवार (रूसी शश्का=तलवार)।
शहज़(ज़ा, ज़ॉ)दा—राजकुमार, शाहज़ादा; स्त्री० शहज़दि—राजकुमारी (फ़ा०शाहज़ाद्ह, शाहज़ादी)।
शहर —नगर (फ़ा० शह्र)।
शॉर —दे० शहर।
शि —१. दे० 'छि'; २. गे (बहुत कम प्रयुक्त)। जैसे सम्के चले जइन शि=समझकर चले जायेंगे।
शिकर, शिकार, शिकॉर—शिकार (फ़ा० शिकार)।
शित्णो —दे० 'सट्नो'; **बेंच शितो**—बेच डाला।
शिन्नो —सुनना (सं० श्रवण)।
शिर —दूध (ताजि० शिर, फ़ा० शीर; तुल० सं० क्षीर)।
शिरबिरिंज —खीर (ताजि० शिरबिरिंज, फ़ा० शीरबिरंज)।
शिरिन —मीठा (उज़० शिरिन, ताजि० शिरीन; फ़ा० शीरीं)।
शिलिम —लेई, गोंद; शिलिम कर्णो—सटाना, चिपकाना (उज़० शिलिम—शिक़=चिपचिपा; उज़० येलिम=लेई)।
शुतुर —ऊँट (ताजि० शुतुर, फ़ा० शुतुर)।
शुमा, शुमॉ—आपका; तुम्हारा (ताजि० शुमॉ—आपका, तुम लोगों का; फ़ा० शुमा)।
शुया —ताजुज्बेकी भाषियों की एक उपजाति।
शे —दे० 'छे'।
शेर —दे० 'शहर'।
शै-खेल —सभी ताजुज्बेकी-भाषियों के लिए या उनकी कालु उपजाति के

लिए प्रयुक्त नाम ।

शो —दे० 'छो' ।

शोड्नो, शोड़्नो, शोणो—छोड़ना (सं० छोरण)।

संदुक़ —संदूक़ (ताज़ि० उज़० संदुक़, मूलतः अर० संदूक़)।

सहज़ —दे० 'सईस' ।

सइस —सईस (अर० सईस) ।

सईसखनो —सईसखाना (अर० सईस+फ़ा० खाना)।

सक्णो —सकना (सं० शक्)।

सख —दे० 'साख़' ।

सच —१. सत्य; २. ठीक (सं० सत्य, हिं० सच) ।

सज़ —दे० 'सॉज़' ।

सट्नो —१. डालना; मु० **मर सट्नो**—मार डालना; २. लगाना; ३. रखना; ४. मिलना, मिलाना, ५. सटना, सटाना ।

सड़्नो —जलना ।

सड़े —दे० 'सरे' (अर्थ नं० २) ।

सत —सात (सं० सप्त, पंज० सत्त)।

सत्णो —दे० 'सट्णो' ।

सेद —सौ (ताजि०, फ़ा० सद) ।

सफ, सफ़ —साफ़ (अर० साफ़)।

सफ़र —यात्रा, सफ़र (अर० सफ़र) ।

सब —सब (सं० सर्व) ।

सबुत —१. प्रमाण, सबूत; २. ठीक; ३. पूरा (तुल० पंज० साबुत; अर० सुबुत)।

सज्म्णो, सम्णो—समझना (सं० संबुध्य)।

सयिबगिर —१. वारिस; २. निगहबान (ताजि० साहिब्रगिर, फ़ा० साहबगीर, अर० साहब+फ़ा० गीर)।

सयिबगिरि -- देखरेख, निगहबानी (ताज़ि० साहिबगिरी, फ़ा० साहबगीरी, अर० साहब+फ़ा० गीर)।

सराइ, सरॉइ **सरॉय**--महल, राजभवन (ताज़ि० उज़ सरॉय=महल; मूलतः फ़ा० सराय)

सरि —तरह, सा (सं० सदृश>सरिस)।

सरे —१. सामने, पर, में, **वख्त सरे**—वक्त पर (ताजि० सरे बक़्त=वक्त पर; मूलतः फ़ा० सरे+अर० वक़्त); २. साढ़े; **सरे तिन्बिसि** =७०; **सरे चार बिसि**=९० (सं० सार्ध) ।

सर —सिर (सं० शिर, फ़ा० सर)।
सरो —सारा; **बो सरो**—बहुत सारा।
सर्टनो, सर्तनो—दे० 'सट्नो'।
सर्नो —दे० 'सड़्नो'।
सल —दे० 'सॉल'।
सलम, सलाम, सलॉम—सलाम, प्रणाम। मु० **सलॉम देणो**—सलाम करना (अर० सलाम)
सलि —साली (सं० श्यालिका)।
सलु, सलो —दे० सॉलो; स्त्री० **सलि**—साली।
सव्लत —कर (ताजि० उज़० सव्लत्=रोब, रोबदाब; उज़० सालिक़ =कर)।
सश्क, सश्का—तलवार (मूलतः रूसी)।
ससु —सास (सं० श्वश्रु, पंज० सस्स)।
साख —१. डाली (ताजि० शॉख़, फ़ा० शाख़); २. सींग (ताजि० उज़० शाख़=सींग; फ़ा० शाख़—सींग)।
साज़ —दे० सॉज़।
साल —दे० 'सॉल'।
साअत —घंटा (हरि० स्यात-स्यात=घड़ी-घड़ी; ताजि० उज़० साअत= घंटा; मूलतः अर० साअत=घंटा; मुहूर्त; अच्छी या बुरी घड़ी)।
साज —१. साज़, साज़-सामान; २. बात; ३. साज़िश; ४. ठीक; मु० सॉज़ करणो=ठीक करना, (फ़ा० साज़=सामान; फ़ा० साज़िश; सं० सज्जा, प्रा० सज्ज, हि० साज)।
सॉत —दे० सॉअत'।
सात्णो —दे० 'सट्नो'।
साम्णो —दे० 'समज्णो'।
सॉय, सॉया, सॉयाँ—छाता (ताजि० सॉया, फ़ा० सायह्)।
सॉल —वर्ष (फ़ा० साल)।
सॉलि —साली (सं० श्यालिका)।
सॉलो —साला (सं० श्यालक)।
सॉसु —सास (सं० श्वश्रु, भोज० सासु)।
सि —१. वह (बहुत कम प्रयुक्त); २. अवलंब शब्द, निरर्थक शब्द (सं० सः, प्रा० सो, हि० सो का स्त्रीलिंग रूप)।
सिख —सीख, छड़ (ताजि० सिख़, फ़ा० सीख़)।

सिन्नो —सिलना (सं० सीवन)।
सिन्य, सिन्या—स्वामी, मालिक (भोज० सैयाँ सं० स्वामी)।
सु —दे० 'सो'।
सुको —सूखा (सं० शुष्क, पंज० सुक्का)।
सुक्णो, सुख्णो—सूखना (सं० शुष्क, पंज० सुक्कणा)।
सुट्नो —दे० 'सुत्नो'।
सुणो —सोना (सं० शयन)।
सुण्नो —१. दे० 'सुन्नो; २. फेंकना (तुल० पंज० सुटना); ३. सोना (शयन)।
सुन्नि —सुन्नी; मुसलमानों का एक समुदाय (अर० सुन्नी)।
सुन्नो —सुनना (सं० श्रवण)।
सुम —रुपया, रुबल (ताजि० सोम; उज़० सुम)।
सुम्का —बस्ता (रूसी सूम्का)।
सुरत —चित्र, तस्वीर (ताजि० उज़० सूरत=चित्र; मूलतः अर० सूरत)।
सुर्म, सुर्मा —सुर्मा (ताजि० सुर्मात्र; उज़० सुर्मा; फ़ा० सुर्मह्)।
सुस्त —ढीला, सुस्त (फ़ा० सुस्त)।
सुसुो —ससुर (सं० श्वसुर)।
सूरत —दे० 'सूरत'।
से —१. वह, वे, उस, उन (बहुत कम प्रयुक्त); (सं० सः) २; अवलंब शब्द, निरर्थक शब्द; ३. से (करण-अपादान परसर्ग)।
सेकिन —धीरे; सेकिन-सेकिन=धीरे-धीरे (ताज़ि० उज़० सेकिन=धीरे)।
सेख —दे० 'सिख'
सेग्वो —गोश्त (तुल० भोज० सगौती=गोश्त)।
सेलम —सलाम; **सेलम् अलेइकुम्**—सलाम, आप सलामत रहें। (अर० सलाम; सलामुन अलैकुम)।
सेव —सेब (फ़ा० सेब)।
सो —१. सौ (सं० शत); २. वह, वे (बहुत कम प्रयुक्त); **सोइ**=वही; ३. अवलंब शब्द, निरर्थक शब्द (सं० सः)।
सोड़्त, सोड़्ता—सोटा, डंडा (तुल० भोज० सोटा)।
सोणो —सोना (सं० श्रवण)।
सौद —सौ (ताजि० सद, फ़ा० सद)।
सोबत —बातचीत (ताजि० उज़० सोहबत=बातचीत; मूलतः अर०

सुहबत)।

हंडि, हंदि —हँड़िया (भोज० हंडी, हाँड़ी; पंज० हाँडी; सं० भांडिका)।

हंइ —दे० 'अइ' (इसमें 'ह' का उच्चारण अत्यंत निर्बल होता है)।

हइरन, हइरॉन—दे० 'हेइरॉन्'।

हइवन, हइवॉन—जानवर, हैवान (ताजि० उज़्० हइवॉन, मूलतः अर० हैवान)।

हक़िक़तन —सचमुच (अर० हक़ीक़तन)।

हग्णो —पाखाना होना (पंज० हगणा, भोज० हगल)।

हजर, हजॉर—हज़ार (ताजि० हज़ॉर, फ़ा० हज़ार)।

हड्डि —हड्डी (सं० अस्थि)।

हत —दे० 'हात'।

हदि —दे० 'हड्डि'।

हन —१. में; २. हैं।

हबश —हब्शी, काला आदमी (उज० हबश, ताजि० हबशी, मूलतः अर० हबशी)।

हम —१. हम; २. भी; हम वे=भी (उज़० ताजि० हम; फ़ा० हम=भी)।

हम्सोय, हम्सोया—पड़ोसी, हमसाया (ताजि० हमसॉया=पड़ोसी; फ़ा० हम-साया)।

हय —सवारी; मु० **हय करनो**—सवारी करना (सं० हय=घोड़ा)।

हर —प्रति, हर; **हर चंद**—सभी, कितने भी, चाहे जैसे हो (फ़ा० हर+चंद)।

हलनो, हलोनो—हिलाना (सं० हल्लन)।

हल्जइ —ताजुज़्बेकी-भाषियों का एक उपक़बीला (तुल० अफ़० गिल्जइ)।

हल्नो —१. हिलना; २. हिलाना (सं० हल्लन)।

हवा, हवाँ —हवा (अर० हवा)।

हवुस —हौज (उज़० हवुज़; मूलतः अर० हौज़)।

हव्लि —आँगन (ताजि० उज़० हव्लि=आँगन; मूलतः फा० हवेली=बड़ा मकान)।

हश्तॉद —अस्सी (ताजि० हश्तॉद, फ़ा० हश्ताद)।

हस्णो —हँसना (सं० हसन; पंज० हसण)।

हा —हाँ (उज़० हा, अथवा सं० आम्)।

हाज़िर, हॉज़िर—अभी, तुरत (ताजि० उज़० हॉज़िर=अभी; अर० हाज़िर)।

हॉत —हाथ (सं० हस्त>त्थ)।

हिक —हृदय (भोज० हिक, पंज० हिक)।
हिक, हिके —आगे (सं० अग्रे)।
हिच —इच्छा (भोज० हिच्छा, सं० इच्छा)।
हिल्नो —१. हिलना; २. रहना।
हुँट, हुँठ —होंठ, ओठ (अवधी भोज० पंज० होठ, हि० होंठ, सं० ओष्ठ)।
हुंदु —हिंदू।
हुंदुस्तन, हुंदुस्तॉन—हिंदुस्तान (उज़० हिंदिस्तान, फ़ा० हिंदुस्तान)।
हुणो —होना (तुल० पंज० होणा; सं० भू)।
हुवस —हवास, होश; **हुवस् करनो**—घबराना (पंजा०, भोज० आदि हवास, मूलतः अर० हवास)।
हुवणो —दे० 'हुणो'।
हुशर, हुशार, हुशॉर—होशियार (फ़ा० होशियार)।
हेइरॉन, हेइरॉनो—हैरान (अर० हैरान)।
हेक —१. आगे; २. पहले।
हेच —१. नहीं (ताजि० उज़० हेच=कुछ भी नहीं) २. बिना, मूलतः फ़ा० **हेचु हेसॉब**—बेहिसाब, बहुत।
हेरन —दे० 'हेइरॉन'।
होणो, होनो—होना (सं० भू)।
होर —और (पंज० होर, सं० अपर)।
होरे —अन्य लोग, और लोग, और ही (सं० अपर)।
होवणो —दे० 'होणो'।

४

ताजुज़बेकी लोक-कथाएँ

एक

चो नि चो येक पाँचाँ चो। उस पाँचाँ के नाँ सो सनाँवर। अ रानी के से नाँ गुल चो। पाँचाँ नँ रान परे को नाँ ता गुल राके चो के अज्ञ बरोई बकर देक्ने परे खातर रान परे को नाँ ता गुल राके चो। एक दिन को दिनोयो पाँचाँ सइसखाने मँ गियो। पाचा नँ कुड़न ता देको के कुड़न को अवग़ाॅल चताॅग़ ए। पाचा नँ सइस ता बलायो, "ये सइस!" सइस आयो। सइस ता पिश्न करो, "ये सइस! कईँ खातर कुड़न को अबग़ाॅल चताॅग़ ए।" सइस नँ कियो के पाँचाँ अगर अ गुनाअ ता तु लङ्गा, में के के दुवँ। पाँचाँ नँ केयो के गल कर। में त्रे गुना ता लङ्गे चुँ। सइस नँ केयो के पाँचाँ कुड़ुन पर रान त्रे आवइ, एक रात अ एक सु पर चरइ, एक रात अ एक सु पर चरइ। नि सामतु कि किया जोंवइ। पाँचाँ नँ केयो, "खै, अइ रात अ दुइँ कुड़ुन ता झिन कर के त चोड़ दे।" पाचा मुड़ के तअ कर परे गियो। खैर रात अ पाँचाँ रात परे ता केयो के अ जाग ता सट। पाँचाँ के रान नँ जग ता सटो। पाँचाँ इख्तियाँर करो के सुणे को। पाँचाँ लेफ़ मँ वरो। सुतो। लकिन सुणेइ को इख्तियाँर नि। अञ्चा वख्त बिश्कर ता लङ्गो। पाँचाँ एक वख्त आँयो, ग़फ़लत नँ लेके गियो। उसी वख्त पाँचाँ के रन उटो। रा या पड़ाव। पाँचाँ के रन सइसखाने लेबा रवाँन आँयो। सइसखाने मँ गियो। लाकिन पाँचाँ हम बे जाग परे। ऊ बे सइसखाने लेबा रवाँन आँयो। गुल एक कोड़्ड़ पर चड़ केत सइसखाने मँ त निकिलो। पाँचाँ बे एक कोड़्ड़े पर चड़ के त, या बे रन परे पाँचाँ निकिलो। लोकिन दुइ जने, अइ मइदान, तइ मइदान, कर केत अञ्चा वख्त इन रा मारो। येक जगा ये गियो। येक पाड़ के बेग़ मा येक ग़ार चो। लोकिन या ग़ार अञ्चा कुशाँदि। गुल नँ कोड़्ड़ उसु ग़ार के मो या बंदो। ग़ार के बिच वार के त चली गी। लाकिन पाचा हम, इस नँ बे, कोड़्ड़े ता बंदो ग़ार कुला। या बे हम ग़ार के बिच वारो। ग़ार के बिच वार के त, लोकिन क़रम-क़र्ची हो के त, या बे गियो। उसुबोत अन्दर वार के त, इस नँ तमाँशो करो के गुल उन्याँ येक हबश नाल बेटी। लोकिन उ आपि कुर्री के कालुइ मिस्लन कि कुमरतना। वोरी आँकि से जप ज़र्दि। गुल पर बड़ो ग़ज़ब आँयो के ये गुल! कईँ खातर नाँवख्त आँयो। के के त हात से हबश के येक सीख लोयो को चो। के इसी सीख नाल गुल ता

ग्रस अञ्चा कि मारो, गुंल को बदन मं ता लव निकिलो । तिरेक मारो । गुल नँ लॉकिन व्राइ ना केयो इ्'दाद ना मारो । पाँचाँ ने केयो के दरेग, में इस गुल ता ग्रज़ बरोइ कि बकर देक चो, इसी खतर इसको नाँ ताँ मिञ्जा गुल राकैं चो, गुल नाल ता हम बकर देका चो । या इसी वख़्त ग्र हम लेफ़ मँ ग्रगर वरतो या दाद वाइ कुवा चो । ग्र लकिन इस लोयो नाल हवश नँ मारो । इस नँ ना केयो के मुरो एक जग ढुकइ, ना केयो ।

हवश नँ गुल ता केयो के पाँचा के काले ता ले के ग्रोवा गो । मे त्रे नाल उसू वख़्त गल करुइँ । इशि-इशरत करुइँ । ना व त्रे नाल गल नि करतु, के के त । गुल पाँचाँ मुड़ो के इख़्तियाँर करो के पाँचाँ के काले ता लेकवा । सनाँवर पाँचाँ नँ इस गल त सुन के त वख़्ते सरे मुड़ो । ग्र के त कर परे येक ग्रमि ता तुण के त लेकयो, ग्र परे जग साटो । गुल ग्रा के त देको के पाँचाँ सुतेइ । इस का हात शमशेर चो । के पाँचाँ सुते के के त, शमशेर नाल मारो के पाँचाँ के काले ता कटो । काट के त खल्ता मा इसना कलो । उसुबोत या रवोनो ग्रॉयो । पाँचाँ हम बे इसकी पाचा निकिलो । निकिल के त रवोनो ग्रॉयो । गियो । ये क़र्रम क़र्ची हो के त ग़ार कुला गियो । पाँचाँ के रन हेका, पाँचाँ उसके पाचा । खूब, अ काले ता ले जा के त हवश कुला बगॉयो । हवश नँ उस काले ता देक के त हइरान गो । हवश ना केयो के ये गुल ! लकिन तिञ्ज पाँचाँ पर रग़म ना कयो, ग्र त्रे पर तु रग़म कोवइ । ये गुल जा तु इस दुन्याँ मँ उस दुन्याँ मँ मुरो माँ-पेण लाग, के के त जवाँब दिनो । उसु बोत गुल दाद मार के त निकिलो । पाँचाँ हम इस ते हेका निकिल के त, जा केत कर परे सो गो । उसु बोत गुल ग्रॉयो । पाँचाँ ने केयो कि ये गुल तु किया गेयो चो । गुल नँ केयो के में बार निकिली ची । पाँचाँ नँ केयो के तु चूट नँ के । तुग़रि गल परे ता कर । पाँचाँ जाग परे उटो । गुल ता लिनेग्रो, येक कपस मँ कलो । कपस में कल के त, "सनाँवर ब गुल चि कर्द, व गुल ब सनाँवर चि कर्द" के के त, कर के बे मँ लाम क सतो कपस ता । अ लाँकिन दु ताज़ी तरा ची । इसी दुइँ ताज़ी परे नाल ग्रवकाँत त पाँचाँ कोवा चो । ग्र इनके हिक़ ता रे ग्रवक़ाँत ता कपस के बिच गुल ता दुवा चो । खल्क़ ग्रवा चे, तमाँशो करा चो, के "ये सनाँवर, केयो खातर तु कुतन के हिके रे ग्रवक़ाँत ता उस के हेका बगोवइ ।" ग्र सनाँवर पाचा कुवो चि के इस काँम नाल काँम तारो ना व । ग्रगर काँम तारो हुवा, लोकिन में इस वाकेग्रा ता के के दुवँइ, लोकिन उस ग्रामि के काले स ता काटुंइ, के के त, शर्त करा चो लुकुइ मर्दुम नाल । ग्रगर कुइ नँ पिश्न करतो, या इसी गल त कर चो, के के त, कुवा चो के "गुल ब सनाँवर चि कर्द, सनाँवर ब गुल ची कर्द" के के त उन ता उँया खूब रक, माँ त इँया खूब रक । तमाँम ।

हिन्दी रूपान्तर

• [रूपान्तर को मूल के निकट रखा गया है। इसी कारण इसमें प्रवाह का अभाव है तथा प्रयोग की दृष्टि से त्रुटियाँ भी हैं।]

था या नहीं था, एक बादशाह था। उस बादशाह का नाम था सनोवर और रानी का नाम गुल था। बादशाह ने अपनी रानी का नाम गुल रखा था। उसके चेहरे की ताज़गी, पवित्रता और कोमलता देखकर स्त्री का नाम गुल रखा था। दिनों में एक दिन बादशाह सईसखाने में गया। बादशाह ने घोड़ों को देखा कि घोड़ों की हालत खराब है। बादशाह ने सईस को बुलाया, "ऐ सईस!" सईस आया। सईस से प्रश्न किया, "ऐ सईस! किस ख़ातिर (=किस लिए, क्यों) घोड़ों की हालत खराब है?" सईस ने कहा कि बादशाह अगर मेरे गुनाह को तू माफ़ कर, तो मैं कह दूँ। बादशाह ने कहा कि "बात करो (=कहो), मैंने तेरे गुनाह को मफ़ किया।" सईस ने कहा कि बादशाह! घोड़ों पर रानी तेरी आती है। एक रात एक पर, और एक रात एक पर चढ़ती है। नहीं समझता (जानता) कि कहाँ जाती है। बादशाह ने कहा, "ख़ैर, इस रात दो घोड़ों को ज़ीन करके छोड़ दे।" बादशाह मुड़कर घर पर गये। ख़ैर, रात को बादशाह ने अपनी रानी से कहा कि मेरी जगह को लगा (=मेरा बिस्तर लगा)। बादशाह की स्त्री ने जगह को लगाया (=बिस्तर लगाया)। बादशाह ने सोने की इच्छा की। बादशाह लिहाफ़ में गया और सोया। लेकिन सोने की इच्छा नहीं थी। काफ़ी वक्त बीत गया। एक वक्त आया। राजा को नींद ने पकड़ लिया (सो गये)। उसी वक्त बादशाह की रानी उठी। गयी। बादशाह की रानी सईसख़ाने की ओर आई। सईसखाने में गई। लेकिन बादशाह भी जाग पड़े। वे भी सईसखाने की ओर रवाना हुए। गुल एक घोड़े पर चढ़ कर के सईसखाने में से निकली। बादशाह भी एक घोड़े पर चढ़ कर के, (वे भी) रानी के पीछे निकले। लेकिन दोनों ने इस मैदान से उस मैदान, इसी में काफ़ी वक़्त बर्बाद किया। एक जगह वे गये। एक पहाड़ के नीचे एक ग़ार था। लेकिन यह ग़ार अच्छा-कुशादा था। गुल ने घोड़ा उसी ग़ार के मुँह के पास बाँधा और ग़ार के बीच (भीतर) जा करके, चली गयी। लेकिन बादशाह ने भी, घोड़े को ग़ार के पास बाँधा। वह भी ग़ार के भीतर गया। ग़ार के बीच चलकर के, लेकिन उसके पीछे-पीछे हो कर, वह भी गया। उसके अन्दर जा कर के, उसने तमाशा देखा कि गुल वहाँ एक हब्शी या काले देव के पास बैठी है। लेकिन वह स्वयं काला का काला, मस्लन कोयले जैसे तन वाला। उसकी आँखें बिल्कुल ज़र्द। वह गुल पर बहुत नाराज़ हुआ कि "ऐ गुल! किस खतिर (क्यों) नावक़्त आयी। कह कर तो···। हाथ में हब्शी के एक लोहे की सीख

थी। कि इसी सीख से, गुल को इतनी ज़ोर से, या अच्छी तरह मारा, कि गुल के बदन से लहू निकलने लगा। फ़व्वारा छूटा। गुल ने लेकिन उफ़ तक नहीं की, धाड़ नहीं मारी। बादशाह ने कहा कि दुःख है, मैंने इस गुल की ताज़गी, पवित्रता और कोमलता देख कर, इसका नाम गुल रखा था। गुल से भी इसे अधिक कोमल समझता था। वह जब मेरे लिहाफ़ में आई थी (पहली बार) धाड़ मार कर रोयी थी। और लेकिन इस हबशी ने इस लोहे से उसे मारा और इसने नहीं कहा कि मेरी एक भी जगह दुखती है, नहीं कहा।

हबशी ने गुल से कहा कि राजा का सिर ले कर आवोगी। मैं तेरे साथ उसी वक्त बात करूँगा, ऐशो-इशरत करूँगा। नहीं तो, तेरे साथ बात नहीं करूँगा, कह कर तो…। गुल ने पीछे मुड़ने की इच्छा की, ताकि राजा का सिर ले कर आवे। सनोवर बादशाह इस बात को सुनकर, ठीक वक़्त पर मुड़ कर लौटा। आ कर घर पर, एक आदमी को ढूँढ़ कर ले गया और उसे अपनी जगह सुला दिया। गुल ने आकर देखा कि बादशाह सो रहा है। उसके हाथ में शमशीर (तलवार) थी। कि बादशाह सो रहा है, ऐसा कह कर (सोच कर), तलवार से मार कर, बादशाह के सर को काटा। काट कर उसे थैले में, उसने डाला। उसके बाद वह रवाना हुई। बादशाह भी उसके पीछे निकले। निकल कर रवाना हुए। दोनों एक दूसरे के पीछे चलते हुए, ग़ार के पास गये। बादशाह की रानी आगे, बादशाह उसके पीछे। (क्या) खूब! और गुल ने सिर ले जा कर हबशी के पास फेंका। हबशी उस सिर को देख कर हैरान हो गया। हबशी ने कहा, "ऐ गुल! लेकिन, तुमने बादशाह पर रहम नहीं किया, तो क्या मेरे पर तू रहम करोगी? ऐ गुल! जा, तू, इस दुनिया में, उस दुनिया में, मेरी माँ-बहन लग" कह कर जवाब दिया। उसके बाद गुल धाड़ मार कर, निकली। बादशाह भी इससे आगे निकल कर, जा कर, घर पर, सो गया। उसके बाद गुल आयी। बादशाह ने कहा कि "ऐ गुल! तू कहाँ गयी थी।" गुल ने कहा कि मैं बाहर निकली थी। बादशाह ने कहा कि तू झूठ न कह। सच्ची बात कर। बादशाह (अपनी) जगह से उठा। गुल को लिया, एक कफ़स (पिंजड़ा) में किया। कफ़स में कर के "सनोवर ने गुल के साथ क्या किया और गुल ने सनोवर के साथ क्या किया?" कह कर, घर के द्वार में, कफ़स को कस कर लटका दिया। उसके पास दो ताज़ी (कुत्ते) थे। इन्हीं दोनों ताज़ियों के साथ, बादशाह खाना खाता था और इनके आगे का बचा खाना, कफ़स में गुल को देता था। लोग आये, देखा, पूछा कि "ऐ सनोवर! किस खातिर (क्यों) तू कुत्तों के आगे का खाना उसे देता है?" सनोवर बादशाह ने कहा कि, इस काम के साथ तुम लोगों का काम नहीं (इससे तुम लोगों से क्या मतलब?) अगर काम तुम्हारा हो (अगर तुम लोगों से मतलब हो) तो

मैं इस वाक़या को कह दूँगा, लेकिन उस आदमी का सिर काट लूँगा। (ऐसा) कह कर शर्त की लोग-आदमियों के साथ। अगर किसी ने प्रश्न किया, तो यह बात पूरी की जायेगी, ऐसा कहा। फिर बार-बार कहने लगा—गुल ने सनोवर के साथ क्या किया, सनोवर ने गुल के साथ क्या किया। उनको वहाँ खूब रख, हमें यहाँ खूब रख, अर्थात् उनका वहाँ भला हो, हमारा यहाँ भला हो। समाप्त।

टिप्पणी

उज़्बेक भाषा में कहानी के आरम्भ में कहते हैं—**'बिर बार एकन, बिर योक़ एकन, बिर पाश्शा, बोलगान एकन'**। अर्थात् **'एक था, एक न था, एक राजा था'**। **'चो नि चो एक पाँचाँ चो'** शायद उसी के आधार पर है। यों भारत में भी कहीं-कहीं कहते हैं, **'झूठ है, या सच है, एक राजा था'**। इससे भी इसका सम्बन्ध हो सकता है। **चो**=था। यह शब्द **चु, चू** रूप में भी प्रयुक्त होता है। स्त्रीलिङ्ग में **ची**। मारवाड़ी, मेवाड़ी आदि राजस्थानी बोलियों में **छा, छ, छूँ, छो, छुँ, छै, छोस्** आदि रूप आते हैं। ताजुज़्बेकी बोली के **चो, चु, चू** आदि भूतकालिक रूप **छो, छु, छू** आदि के ही अल्पप्राणीकृत रूप हैं। पञ्जाबी तथा हिन्दी की कुछ बोलियों में बादशाह को **बाश्शा** कहते हैं। **पाँचाँ, बाश्शा** का ही विकसित रूप है। यों उज़्बेक, ताजिक में भी **पादशाह** या **पाँश्शाँ** कहते हैं। उनका भी प्रभाव इस पर सम्भव है। **नाँ**=नाम, भोजपुरी नाँव। **अ**=और। भोजपुरी आदि अनेक बोलियों में **'और'** का विकसित रूप 'अ' प्रयुक्त होता है। **'रन' या 'रान'** का सम्बन्ध रानी से नहीं है। इस बोली में 'रन' 'रान' का प्रयोग 'स्त्री' के लिये होता है। सं० **रण्डा,** पञ्जाबी **रण्ण** हिन्दी **राँड़** आदि से इसका सम्बन्ध ज्ञात होता है। **अज़ बरोई** ताजिक प्रयोग का विकसित रूप है। इसका अर्थ **'के लिए'** या **'के कारण से'** है। **'बकर'** मूलतः अरबी का **बिक्र** है, जिसका अर्थ ताज़गी, पवित्रता आदि है। यह इस बोली में ताजिक भाषा से आया है, उज़्बेक भाषा में यह शब्द नहीं है। **यँ, नँ, मैं, परे, त** क्रमशः में, ने, मैं, पर, तो हैं। **ता**=को, से। ब्रज आदि बोलियों के त-से बनने वाले **ते, तें, तैं, तईं, तन** आदि भी यही हैं। तुलनीय हैं कनौजी **तें, ते,** गढ़वाली **ते,** बैसवाडी **तें,** बघेली **ते, तन** आदि। **अवग़ॉल**—इसका उच्चारण इस बोली में **अवहॉल** भी होता है। यह मूलतः **हाल** का अरबी बहुवचन **अह्वाल है**। उज़्बेक भाषा में **अह्वाल** का ध्वनि-विपर्यय-युक्त रूप **अवहॉल** प्रयुक्त होता है। ताजुज़्बेकी में यह उज़्बेक प्रभाव है। **चतॉग़**—उज़्बेक में 'बुरा' या 'खराब' के अर्थ में **चताग़ या चताक़** शब्द प्रयुक्त होता है। **पिस्न**=

सं० प्रश्न। लोकभाषा में 'प्रश्न' का प्रयोग अब तक बच रहना आश्चर्यजनक है। हिन्दी की प्रायः सभी बोलियों में संस्कृत प्रश्न के स्थान पर 'सवाल' या 'पूछना' प्रयुक्त होते हैं। उज़बेक या ताजिक में 'पिश्न' नहीं है। **लङ्घे चुँ**= लाँघता हूँ। सं० **लङ्घन**। अर्थात् माफ़ करता हूँ। **कुड़न**=घोड़ों। **घ** का **क** या भ का **प** आदि हो जाना पञ्जाबी प्रवृत्ति है। वस्तुतः इस बोली का मूल प्रदेश किसी ऐसे स्थान पर होना चाहिये जो पश्चिमी हिन्दी क्षेत्र में होता हुआ, राजस्थानी पञ्जाबी के सम्पर्क में रहा हो। **सामतु**=समझता। **किया**=कहाँ। **जोंवइ**=जाती है। **खै**=खैर। **म्रे**=मेरे; **त्रै**=तेरे। **चोड़ दे**=छोड़ दे। **जग**= जगह। **इख्तियाँर**—उज़बेक एवं ताजिक में 'इख्तियाँर' रूप में यह शब्द उच्चरित होता है, तथा उसमें 'इच्छा' का अर्थ भी विकसित हो गया है। 'इच्छा' अर्थ में यह शब्द इन्हीं भाषाओं से इस बोली में आया है। **सुणे को**=सोने की। **लेफ़**=लिहाफ़, रज़ाई। **वारो**=**गयो**=गया। यह **वारो** रूप है तो **गयो** के सादृश्य पर, किन्तु यह मूलतः भारतीय न होकर कदाचित् उज़बेक भाषा की धातु **बर** (**बरमॉक़**=जाना) से बना है। इस प्रकार उज़बेक या ताजिक से शब्द तो इस बोली ने लिये हैं, किन्तु व्याकरण के नियम इनके प्रायः अपने हैं, जो पश्चिमी हिन्दी से पूर्णतः मेल खाते हैं। **अञ्चा**—उज़बेक शब्द है। इसका अर्थ 'काफ़ी', 'ज्यादा' आदि होता है। **अञ्चा वक्त** भी ठीक इसी प्रसङ्ग में उज़बेक भाषा में प्रयोग होता है। **ग़फ़लत**=नींद, गहरी नींद (उज़बेक शब्द)। मूलतः यह वही शब्द है जो उर्दू-हिन्दी आदि में है। उज़्बेक में अर्थ-परिवर्तन हो गया है। **हम**=भी **बे**=भी। यहाँ ताजिक हम और हिन्दी **भी** (बे) दोनों समानार्थी शब्दों का ज़ोर देने के लिए साथ-साथ प्रयोग है। आगे भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं। **लेबा**=ओर। **रवाँन आयो**=रवाना होकर आया। **या**=वह, यह। **लोकिन**= **लेकिन** का उज़्बेक उच्चारण। यह लॉकिन, लाकिन, लकिन रूप में भी प्रयुक्त होता है। **बेग**=नीचे, जड़ में। **अञ्चा कुशादि**=अच्छा कुशादा था। **कोड़ड्**=घोड़ा (पञ्जाबी उच्चारण)। **पाचा**=पीछे। **मो**=मुँह। **कुला**= पास (सं० **कूल**)। **करम कर्ची**=आगे-पीछे। यह उज़्बेक प्रयोग है, किन्तु ग़लत अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। इसका उज़बेक में अर्थ आमने-सामने होता है। आगे-पीछे अर्थ में उज़्बेक में क़रम क़रा आता है। **उसु बोत**=उसके बाद। **वार के त**=जा कर तो। यह **वार** जैसा कि पीछे कहा गया है, कदाचित् उज़बेक धातु **वर** है। **उन्याँ**=वहाँ। **नाल**=पास (पञ्जाबी शब्द)। **कुर्री**=काला (उज़बेक **कोर्रा**)। **कुमरतना**=कोयले की तरह तन वाला। उज़बेक प्रयोग है। **'कुमर'** का अर्थ है 'कोयला'। **आँकि**=आँख। **जप जर्द**=बिल्कुल पीला (ताजिक प्रयोग)। उज़बेक में इसे **सप सरक़** कहते हैं। **सप, जप** एक ही हैं। **ग़ज़ब**=क्रोध (उज़्बेक शब्द)। हिन्दी में भी मूलतः यह शब्द है, किन्तु इस अर्थ में नहीं।

कईं खातर=क्यों, किस लिए। हात=हाथ। **लोयो**=लोहा। **अञ्चा**=ज़ोर (उज़्बेक शब्द)। **लव**=लहू। **तिरेक मारना**=फ़व्वारा छूटना। **वाइ**=हाय, उँफ़। यह शब्द उज़्बेक, ताजिक एवं अफ़ग़ानी में आता है। हिन्दी के भी एक फ़िल्मी गीत में **वइ-वइ** इस अर्थ में आया है। **दाद ना मारो**=धाड़ नहीं मारी, नहीं चिल्लायी (हिन्दी मुहावरा तथा 'दाद' उज़्बेक ताजिक शब्द)। **दरेग़**=आफ़त, अफ़सोस (उज़्बेक शब्द)। **मिंजा**=मैंने। **राके चो**=रखा था। **दाद वाइ**=हाय-हाय (उज़्बेक प्रयोग)। **मुरो**=मेरा। **जग**=जगह। **दुकइ**= दुखती है। **काले**=सिर (उज़्बेक-ताजिक कल्ला=सिर)। **ओवागो**=आवोगी। **उसू**=उसी। **गल**=बात (पञ्जाबी प्रयोग)। **इसी-इशरत**=ऐशो-इशरत। **पाचा**=पीछे। **वख्ते-सरे**=वक़्त से पहले (ताजिक प्रयोग)। **कर**=घर (पञ्जाबी उच्चारण)। **आमि**=आदमी। **तुण्**=ढूंढ़। **देको**=देखा। **खल्ता**=थैला; भोजपुरी **खलित्ती**। **इसना कलो**=इसने किया। **हेका**=आगे। **बगॉये**=फेंका। **हैरान गो**=हैरान हो गया। **कैयो**=कहा। **तिञ्जा**=तूने। **पेण**=बहिन (पञ्जाबी उच्चारण)। **सो गो**=सो गया। **बार**=बाहर। भोजपुरी में **बाहर निकलना** मुहावरा ठीक इसी अर्थ में है। इसका आशय है पेशाब-पाखाने जाना। **चूट**=झूठ (पञ्जाबी उच्चारण)। **कपस**=कफ़स। **सनॉवर ब गुल चिकर्द, व गुल ब सनॉवर चिकर्द**=सनोवर ने गुल के साथ क्या किया, और गुल ने सनोवर के साथ क्या किया। यह वाक्य ताजिक भाषा का है। **अवक़ात**=भोजन (उज़्बेक शब्द)। **बगोवइ**=रखता है; फेंकता है। **लुकुइ-मर्दुम**=लोक; **मर्दुम** फ़ारसी तथा ताजिक शब्द है। **तमॉम**=समाप्त। यह शब्द उज़्बेक एवं ताजिक में इसी रूप में उच्चरित होता है।

दो

छो नि छो, एक पॉचॉ छो। पॉचॉ कि दो रनि सि छि। रनि सि को जतुक नि हुवा छो। या पॉचॉ शिकॉर मँ जोव छो। वज़ीर कि ति, बॉइ कि ति, पॉदवॉन कि ति तीनि एक जॉग बेटे छे। वज़ीर कि तिन कियो, पॉचॉ मत रन कर। मे एक दरसखन सिन के दुंवँइ, खलक़ु सो बेड़ के रुटि खइन हुन, बि ज़ियति करइ।' बॉइ कि तिन कियो कि 'म त करा में एक रुशमॉल सिन के दुंवँइ, लुकुइन तमोशो करि।' पॉदवॉन कि ति न कियो, 'अगर पॉचॉ म त क रा एक मुंडो, एक बिट्या जनके दुंवँइ, के दुन्या मँ न ओव। इस त पाचा न कान रकेयो। पॉचॉ चलो गो शिकॉर मँ। शिकॉर मँ त मुड़के अयो, वज़ीर त चकलियो पॉदवॉन कि ति ग़म। पॉदवॉन त कियो, 'ति पर त पॉचॉ त दे। पॉदवॉन न ति प त पॉचॉ त दिनेओ। पॉचॉ न बियॉ करके निकॉ बॉनके कर परे ले गियो। इसी विशकड़ मँ केतुणो वख्त लंग्यो। य रन गबँ ओ गियो। सत महिनुन को

जतक पोस्त से रे गियो। पाँचाँ चलो गियो शिकाँर मँ। नो मइना उ नो दिन ओ यो रन को जतकु आयो। पाँचाँ के दो रनि सि न जके एक बुडि त लयो। इसि रन को जतकु सो होयो। रन के तल दो कुतुरुंगे त बगयो। इन जतकुन तँ बुडि नें लेके गुंडा करके लि जाके एक दश्त बगयो। बुदि चलि अयो। जतकु रे गियो। एक ओव अइ जतकुन त चिचि दिनेओ! पाँचाँ ले ख़बर तक्यो, रन तिरे न कुतुरुंगो जणियो। पाँचाँ न कियो, 'रन त जुवल मँ काँल के लमकोव। ए जतक एक दिनुन को होयो, एक मइनुन को होयो, इसि नल इकसाले, दोसाले, तिनसाले, पंजसाले होयो। पाँचाँ कोड़े प त पणि देणे अयो! ए जतक इँनु बि लकरि को कोड़े त चड़ के अये। कोड़े त कियो कि पणि पि! पाँचाँ चलो गियो। पाँचाँ शिकार म चलो गियो। पाचा कि रन सम गी। इस पाचा के रनुन न बुडि त ढ्यकलियो कि उसि जतकुन त गुम कर। बुडि गि जतकुन कुला। बेट्यो निट्या नाल गल कर्यो, 'तु ज़िक़न ओते?' एक जाग बुलबुल-इ-गुयाँ छे। उस त पइ तुरो लेके ओव नल तरे गल करइ। बुडि फेर चलि गि। मुंडो आँवइ बिट्या ज़िक़ इ, गल नि करत। अ पेंण तु कइ नि गल नि करता। ज़िक इ। तु दश्त जवइ, मे इँय ज़िकु जोवइ। फलाँ जाग एक बुलबुल-इ-गुयाँ छे। अगर उस त लावा ओ मरे नल गल करइ। फदर से मुंडे न तोशा तोपरा पर त तुग़र कर्यो। मुंडो चलो गयो। तिन-चाँर दिनु को रा मर्यो। जंगल म गियो। तियन काँल्यो एक तुंवा लिल र्यो। मुंडो गयो। एक देव एक फिल त पड़तइ अक पर कचो-पके खोवइ दे। य मुंडो पश त गियो, 'अस सलाम अलेइकुम आय। देव मुड़के देख़्यो, 'अगर सलाम न देतू त तमें खोवा चो।' मुंडे न कियो कि, 'एबे बि खाना?' देव न कियो, 'एबे नि खातुं।' देव न कियो 'कइन ले अये?' में बुलबुल-इ-गुयाँ पाचा अये छुँ। देव न कियो कि 'उस बुलबुल-इ-गुयाँ पाचा केतणे अन्मि मरगे। इस मुंडे न कियो कि 'अय, अगर न लाँ न ओते। इस देव न ख़त करके मुंडे त दिनेओ, 'फलाँ तोग़इ मँ मिरि पेण छे। काग़ज़ करके दीनेओ, 'तु लिजके दे, ओ तरे काम त तुग़्र करइ। इस मुंडे न काँग़ज़ त लेके चलो गियो। बिश्करतों केतुणो दिन रह मरगो, उस तोग़इ मँ रसियो। एक कालो देव बेटी। य गियो पश त अस-सलाम अलेइकुम कियो। देव न मुड़के देखयो, 'अगर सलाँम न देतो, मे त त खवा छों। मुंडे न कियो कि, 'एबे बि खाना?' देव न कियो कि में त त नि खातुँ, तु मुरो बेटा ओ गियो। काँग़ज़ त देव त दिनेओ। देव न पड़्यो, 'ओगो तु बुलबुल-इ-गुयाँ पच अये, बुलबुल-इ-गुयाँ नकार जाग अइ, केतणे अन्मि गे मर गे। फेर इस त मुंडे न कियो, 'तइ न लोंव न ओते। इस मुंडे त लेके बगे देव कुला ले गयो कि, 'इसि बुलबुल-इ-गुया त यइ देव लेके दुवइ। इस देव न मुंडे त लेके गियो। रतु गि, बग़ कुला पाड़गे। मुंडे त कियो कि में बोड़्ड़ो छूं, में जोंउ देकिन छी,

तु नुकोइ, त त ने देगती, तु ज बग़ में वड़ बुलबुल-इ-गुया लमकेइ, लेके मरे तुनि ले के आजा, उगि मे अप समजुंइ। मुंडो गियो, देवाल परत लांगियो, बुलबुल-इ-गुयाँ त लीनेओ। मुंडो पागियो। पश्त शउकुन ओयो। मुंडो पागियो। देवकुला अयो। देव न कुमअ परे काल्यो। लेके पागयो कुमअ कलके पागियो। देव न जाँग परे लायो, उस देव त दीनेओ। उस देव न लेके अपरे जाँग अयौ उइँ त मुंडे त लेके, उस देव कुला ले गयो। उस देव न कियो कि इगि कुश गल नि, हुशर ओ, कपस त कुम परे मात बर न काड़ के असमाँन अ देव उ परि फ़ड़िन छि, अगर देख्यो, लेके चले जइन शि। मुंडे न कुम परे मत न कड्यो, लेके चलो गियो, पेण परि कुला रस गियो, बुलबुल-इ-गुया त काड़ियो। बुलबुल-इ-गुया बिटिया नला गल करइ, बिटिया वख्तु सो खुश हो गियो। पाँचाँ फेर कोड़े पर त पणि देणे अयो। मुंडो गियो। मुंडे त पाँचाँ न कियो, 'तु मरे पर मेहमान हुवइ। मुंडे न पेण पर त कियो, 'पाँचाँ कुवइ कि मरे पर मेहमान हुवइ। बिटिया न कियो 'मइलि सि'। बुलबुल-इ-गुया न बिटिया त कियो, 'मरे त ग़इरि अव्क़ात नि खोवगि। बिटिया पइ परे नल बुलबुल-इ-गुया हाँत से पाँचाँ लबा गे। पाँचाँ न गिलिम जाग बचायो रनिन से न अव्कात— पकायो। बुलबुल-इ-गुया चुले पर बेट्यो। बुलबुल-इ-गुया त किश बि कियो न गियो। पाँचाँ कि रनि न इस अव्क़ाँत में ज़ार साटियो। बुलबुल बिटिया कुला गियो बिटिया त कियो कि, 'तु अव्क़ाँत न खा, अवक़ात में ज़ार साट्यो। अव्क़ाँत पक गियो। काँसे में काल के ले के अयो। मुंडे न न खायो। पाँचाँ न कियो कि, 'कइनि न खात?' हम नि खात। पाँचाँ न कियो कि कइनि नि खात? अव्वल कुते परे त दे फेर हम खोवइँ। पाँचाँ न अन कि गिर्द त कुतो त दिनोओ। ताँज़ि न खयो। ताँज़ि मर गि। पाँचाँ हइरानो होयो। 'खोब।' देख्यो कि हक्कितन ज़ार साटी। रनुन त बलयो।' तम कोड़े लुवा छोया पांडे?' रनुन कियो, 'हम कोड़े लुँवइ।' सइस पर त बलयो 'एक मस कोड़ो काड़!' गाले म ता एक कोड़ि लायो। रन त कोड़ि के दुम बंदियो। कोड़े त कोड़ि पाचा एल कर्यो। कोड़े न कोड़ि त हेक तर्यो। इँय मर। उँय मर। इस कि गोस्त सो बढ़ने से मत पट-पट तेर्यो गियो। त त हडि सि बि न रि। जुवल त उतरके लायो। उस रन त जुवल मात कड्यो। रन कि चिचि मत दुत जतकुन को मो परा उडियो। रन न जतकुन त चिचि परि कि बिस्कर म निपिट्यो कि ए जतक मरे अपरे छी। पाँचाँ न खल्क़ त खबर कर्यो। बिया। दिनेओ। ओ मुराद परे म रस गियो, में चलयो। तमाँम।

हिन्दी रूपान्तर

था या नहीं था, एक बादशाह था। बादशाह की दो रानियाँ थीं। रानियों

को बच्चे नहीं हुए थे। यह बादशाह शिकार में गया था। वज़ीर की लड़की, अमीर की लड़की, चरवाहे की लड़की तीनों एक जगह बैठी थीं। वज़ीर की लड़की ने कहा, 'बादशाह मुझसे विवाह करे, तो मैं एक ऐसा दस्तरख़ान सिल के दूँ, जिस पर जब लोग रोटी खाएँ, तो रोटी कम न पड़े।' अमीर की लड़की ने कहा कि मुझसे विवाह करे तो मैं एक रूमाल सिलकर दूँ जो देखने ही लायक हो। चरवाहे की लड़की ने कहा अगर बादशाह मुझसे करे तो एक ऐसा लड़का और ऐसी लड़की जनूँ कि दुनिया में न हों। बादशाह ने इसे सुना। वे शिकार में चले गए। शिकार से लौटकर आए तो वज़ीर को चरवाहे की लड़की के पास भेजा। वज़ीर ने चरवाहे से कहा 'अपनी लड़की बादशाह को दो।' चरवाहे ने लड़की बादशाह को दी। बादशाह विवाह करके, निकाह करके उसे घर पर ले गया। इसी बीच काफ़ी समय बीत गया। यह स्त्री गर्भवती हुई। गर्भ में सात महीने के बच्चे हो गये। बादशाह चले गए शिकार में। नौ महीने नौ दिन बाद इस स्त्री को बच्चे हुए। बादशाह की दो रानियाँ जाकर एक बुढ़िया लाईं। उससे बताया कि इसी स्त्री को बच्चे हुए हैं। रानी के नीचे उन बच्चों के स्थान पर दो पिल्ले रख दिए बुढ़िया ने। बुढ़िया ने इन बच्चों को लिया, कपड़े में लपेटकर एक मैदान (जंगल) में फेंक दिया। बुढ़िया चली गई, बच्चे रह गए। एक हिरनी ने आकर बच्चों को स्तन पिलाए। बादशाह तक ख़बर गई, 'तेरी स्त्री ने पिल्ले जने हैं।' बादशाह ने कहा स्त्री को बोरे में डालकर लटका दो। ये लड़के एक दिन के हुए, एक महीने के हुए, इसी तरह एक साल, दो साल, तीन साल, पाँच साल के हुए। बादशाह घोड़े को पानी देने (पिलाने) आया। ये बच्चे भी लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर आए। घोड़े से कहा कि पानी पी। बादशाह चले गए। बादशाह शिकार में चले गए। बादशाह की रानियाँ समझ गईं। उन्होंने बुढ़िया को भेजा कि इन बच्चों को गुम कर दो। बुढ़िया बच्चों के पास गई। बेटा बिटिया से बात कर रहा था तू उदास नहीं होती? एक जगह बात करने वाली चिड़िया (बुलबुल) है। उसको तेरा भाई लेकर आएगा, वह तेरे साथ बात करेगी। बुढ़िया फिर चली गई। लड़का आता है, लड़की उदास है, बात नहीं करती। ऐ बहन तू क्यों नहीं बात करती? उदास है? (बहिन ने कहा) तू जंगल में चला जाता है, मैं यहाँ उदास जाती हूँ। फ़लाँ जगह एक बात करने वाली चिड़िया है, अगर उसे लाओ तो वह मेरे साथ बात करेगी। अगले दिन लड़के ने सामान तैयार किया और चला गया। तीन-चार दिन की राह मारी। जंगल में गया। ध्यान किया (ध्यान से देखा तो पाया) एक (जगह) धुआँ उठ रहा है। लड़का गया। एक दानव एक हाथी को आग पर कच्चा-पक्का पका कर खा रहा था, यह लड़का पीछे गया—'अस्सलाम अलेकुम'। दानव ने मुड़ कर देखा—अगर सलाम न

करता तो तुम्हें खा जाता। लड़के ने कहा—अभी भी खाना है? दानव ने कहा—अब नहीं खाता। दानव ने पूछा—किसलिए आए? मैं बात करने वाली चिड़िया के पीछे आया हूँ। दानव ने कहा—उस बात करने वाली चिड़िया के पीछे कितने आदमी मर गए। इस लड़के ने कहा ऐ (दानव) अगर न लूँ नहीं बनेगा। इस दानव ने खत लिखकर लड़के को दिया। 'फलाँ जंगल में मेरी बहन है।' क़ाग़ज़ लिखकर दिया। 'तू लेजाकर दे, वह तेरा काम ठीक करेगी।' यह लड़का काग़ज़ लेकर चला गया। बीच में कितने ही दिन राह मारता रहा। उस जंगल में पहुँचा। एक काली दानवी बैठी थी। यह पीछे गया—अस्सलाम अलेकुम। दानवी ने मुड़कर देखा— अगर सलाम न देता मैं तुझे खा जाती। लड़के ने कहा—अभी भी खाना है? दानवी ने कहा कि मैं तुझे नहीं खाती। तू मेरा बेटा हो गया। दानवी को काग़ज़ (पत्र) दिया। दानवी ने पढ़ा—ओहो! तू बात करने वाली चिड़िया के पीछे आया। वह बुरी जगह रहती है। कितने आदमी गए, मर गए। फिर इस लड़के ने कहा—उसे न लूँ तो नहीं बनेगा। इस लड़के को लेकर सफ़ेद दानव के पास गई। यह दानव बात करने वाली चिड़िया लेकर देगा। यह दानव मुंडे को लेकर गया। रात आ गई। बाग़ में पड़ (लेट) गए। (दानव ने) लड़के से कहा—मैं बड़ा हूँ, मैं जाऊँगा तो दिखाई दूँगा, तू छोटा है, नहीं दिखाई देगा। तू जा बाग़ में घुस, बात करने वाली चिड़िया लटक रही है। तू लेकर मेरे पास आजा आगे मैं आप समझूँगा। लड़का गया। दीवाल पर से लाँघा, बात करने वाली चिड़िया को लिया। लड़का पा गया। दानव के पास आ गया। दानव ने (उसे) भीतर छिपा लिया और भागा। दानव जगह पर लाया। उस दानवी को दिया। वह दानवी लेकर अपने जगह आई। लड़के को लेकर वहाँ से उस दानव के पास ले गई। उस दानव ने कहा आगे कुछ बात नहीं। होशियार हो। बाहर मत काढ़ो। आसमान में दानव व उसके परिवार के लोग उड़ रहे हैं। अगर देखेंगे, लेकर चले जाएँगे। लड़के ने बाहर नहीं निकाला। लेकर चला गया। बहिन के पास पहुँच गया। चिड़िया को निकाला। बात करने वाली चिड़िया बेटी के साथ बात करती है। वह खुश हो गई। बादशाह फिर घोड़े को पानी देने (पिलाने) आया। लड़का गया। बादशाह ने लड़के से कहा तू मेरे घर मेहमान हो। लड़के ने बहन से कहा—बादशाह कहता है कि मेरे घर मेहमान हो। बिटिया ने कहा—तुम्हारी मर्ज़ी। बात करने वाली चिड़िया ने बिटिया से कहा—मेरे बग़ैर खाना मत खाना। बिटिया-भाई बात करने वाली चिड़िया हाथ में लेकर बादशाह के यहाँ गए। बादशाह ने नीचे कालीन बिछाया। रानियों ने खाना पकाया। बात करने वाली चिड़िया चूल्हे के पास बैठी। उससे कुछ भी कहा गया, (वह वहाँ से) नहीं गई (हटी)। बादशाह की रानियों ने

इस खाने में ज़हर डाला। चिड़िया बिटिया के पास गई। बिटिया से कहा कि तू खाना न खा, खाने में ज़हर पड़ा है। खाना पक गया। बड़े प्याले निकाल-कर लेकर आए। लड़के ने नहीं खाया। बादशाह ने कहा कि क्यों नहीं खाता? हम नहीं खाते। बादशाह ने कहा कि क्यों नहीं खाता। अव्वल (पहले) कुत्ते को दो, फिर हम खाएँगे। बादशाह ने अन्न पास के कुत्ते को दिया। ताज़ी (कुत्ते) ने खाया। वह मर गया। बादशाह आश्चर्यचकित हो गया। खूब! देखा कि सचमुच ज़हर पड़ा है। स्त्रियों को बुलाया। 'तुम घोड़े लोगी या कपड़े'। स्त्रियों ने कहा 'हम घोड़े लेंगी।' सईस को बुलाया। 'एक बदमाश घोड़ा निकालो।' वह झुंड में से एक घोड़ी (भी) लाया। स्त्रियों को घोड़ी की दुम से बाँधा। घोड़े को घोड़ी के पीछे साथ कर दिया। घोड़े ने घोड़ी को आगे बढ़ाया। यहाँ मारा वहाँ मारा। उनके बदन से गोश्त-गोश्त पट-पट गिरने लगा। फिर हड्डी भी न रही। बोड़े को उतार कर लाया। उस स्त्री (बच्चों की माँ) को बोड़े में से काढ़ा। स्त्री के स्तन में से दूध बच्चों (भाई-बहन) के मुँह पर गिरा। स्त्री ने बच्चों को छाती से लिपटाया कि ये बच्चे मेरे अपने हैं। बादशाह ने दुनिया को खबर की। बहुत बड़ा भोज किया। उसकी मुराद पूरी हो गई। समाप्त।

तीन

छो नि छो एक चोपन छो। ओ एक बेटा तरा छो। उस को नॉ त गुनन रको। गुनन दिन ब दिन बोरो होतो गो। ओ एक कोरो तरा छो। गुनन शिकार मँ गियो। तेलपक ग़मा रोब को पोस्त लयो। एकिनि पॉशॉ को अमल-दार लंगो कि अनमिड कुन शिन कि देख मरो पॉशॉ नॉदॉन इ, गुनन दॉनॉ छे। पॉशॉ को कॉर आयो। गुनन मरे कुल। अजा। गुनन गियो। पॉशॉ न कियो 'उस अदर मँ अदमखुर छे। गुनन गियो अदर मँ। अदमखुर गुनन त देखे अयो। गुनन न उकरयुक त लेकि अदमखुर को सर मँ बगयो अदमखुर त लायो। पॉशॉ न ति प त गुनन त दिनो। गुनन न तिन दिन उ तिन रत विया करो। इसि नल मुरद उ मखसदु सो मँ रसो।

हिंदी रूपांतर

था या नहीं था, एक चरवाहा था। उसके एक बेटा था। उसका नाम गुनन रखा था। गुनन दिन-ब-दिन बड़ा होता गया। उसके एक घोड़ा था। गुनन शिकार में गया। टोपी के लिए लोमड़ी का चमड़ा लाया। एक दिन बादशाह के एक अमलदार गुज़र रहे थे। लोगों से बोले—देखो मेरे बादशाह नादान हैं, गुनन होशियार है। बादशाह के घर आए। गुनन, मेरे पास आ जाओ। गुनन

गया। बादशाह ने कहा उस पहाड़ी (की गुफा में) आदमखोर है। गुनन पहाड़ी (की गुफा) में गया। आदमखोर गुनन को देखकर आया। गुनन ने एक विशेष प्रकार की फँसाने वाली रस्सी लेकर आदमखोर के सर पर फेंकी और आदमखोर को (उसमें फँसाकर) लाया। बादशाह ने अपनी लड़की गुनन को (दूल्हन रूप में) दी। गुनन ने तीन दिन और तीन रात तक भोज किया। इस तरह वह अपनी मुराद व अपने मक़सद को पहुँच गया।

चार

छो नि छो एक अन्मि छो। ओ कमबगल छो। ओ एक दिन ज़िमिन कुल्बो करो। उस न एक कोज़ा ज़र लदो। अन्मि न जर त लेकि अयो। बलचक़ा नल कयो।

हिंदी रूपांतर

था या नहीं था, एक आदमी था। वह ग़रीब था। वह एक दिन ज़मीन जोत रहा था। उसने सोने (अशर्फ़ी) से भरा एक बर्तन पाया। आदमी सोना लेकर आया। अपने बाल-बच्चों के साथ (प्रसन्न होकर) खाना खाया।

पांच

अफ़ंदी कॉज़ि होयो। एक अन्मि अफ़ंदी कुला अयो। अफ़ंदी से कहा—अफ़ंदी तुरो बल न मुरो गाँ त मारो। अफ़ंदी न कियो—इनुँ हइवान छीं, इस में कुइ जुवबगर नि। अन्मि न फ़ेर कियो—मुरो गल नातुग्रि। तुरो बल त मुरो गाँ न मारो। अफ़ंदी ने कहा—दराव पेसा दे!

हिंदी रूपांतर

अफ़ंदी (एक व्यक्ति का नामः दे० शब्दकोश में) एक बार काजी बना। एक आदमी अफ़ंदी के पास आया। अफ़ंदी से कहा—अफ़ंदी तेरे बैल ने मेरी गाय को मारा है। अफ़ंदी ने कहा—ये हैवान हैं। इसमें कोई जवाबदेह (अर्थात् ज़िम्मेदार) नहीं। आदमी ने फिर कहा—मैंने गलत बात कह दी। तेरे बैल को मेरी गाय ने मारा। अफ़ंदी बोला—तुरत पैसा दे।

सहायक पुस्तकें तथा लेख

ऑन ऐन इंडियन डाइलेक्ट डिस्कवर्ड इन सेंट्रल एशिया—ओरांस्की, मास्को, १९६०

इंदीस्कया इ इरांस्कया फ़िलोलोगिया, इज़्दातेल्स्त्वा नऊका, मस्क्वा १९६४

इंदीस्किम दिग्रालेक्त ग्रुपि पार्या—ओरांस्की, मस्क्वा, १९६३

इंदोयाज़िच्नया एत्नाग्रफ़िचेस्कया ग्रूप अफ़ग़ान फ़ स्रेद्नेइ आज़िय, सव्येत्स्कया एत्नाग्राफ़िया, २, १९५६, मस्क्वा।

ए ग्लॉसरी ऑफ़ द ट्राइब्ज़ ऐंड कास्ट्स ऑफ़ द पंजाब ऐंड नार्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्राविंस—रोज़, प्रथम संस्करण

ऐंथ्रापालगिचेस्कया वीस्तफ़का, १८७९, खंड ३, भाग १, १८८२ मस्क्वा

ऐन इनक्वाइरी इंटू द एथ्नोग्राफ़ी ऑफ़ अफ़गानिस्तान—बेलो, प्रथम संस्करण

ऐन एटिमॉलॉजिकल वॉकेबुलरी ऑफ़ पश्तो—मार्गेंसर्ट, १९२७

ओ० डी० बी० एल० (ओरिजिन ऐंड डेवलपमेंट ऑफ़ बेंगाली लैंग्विज) सुनीति कुमार चटर्जी, प्रथम संस्करण

कम्प० ग्रैमर (कम्पैरटिव ग्रैमर मॉडर्न आर्यन लैंग्विजिज़ ऑफ़ इंडिया)—बीम्स, दिल्ली, दूसरा संस्करण

ग्रैमर (आफ़ द ईस्टर्न लैंग्विजिज़)— हार्नले, प्रथम संस्करण

द्रविडियन (कम्पैरटिव ग्रैमर ऑफ़ द्रविडियन लैंग्विजिज़)— कैल्डवेल, १९६१, मद्रास

ताजिकिस्तान—पन्कोफ़, १९२५, ताशकंत

ताजुज़्बेकी या पार्या : हिन्दी भाषा की एक नवज्ञात बोली—भोलानाथ तिवारी, हिंदुस्तानी (त्रैमासिक पत्रिका), जुलाई-दिसम्बर १९६३, इलाहाबाद

द पोज़ीशन ऑफ़ रोमनी इन इंडो-आर्मन— टर्नर, १९२७, एडिनबर्ग

नसेलेनिये समरकंदस्कह् ओब्लस्ती—जरूबिन, १९२६

नेपाली डिक्शनरी—टर्नर, प्रथम संस्करण

प्राकृत कल्पत—रुरामशर्मन

प्राकृत ग्रैमर—पीशेल, प्रथम संस्करण, दिल्ली

प्राकृत प्रकाश—वररुचि

भारतीय भाषा विज्ञान—किशोरी दास बाजपेयी, प्रथम सस्करण, वाराणसी

मतिरिग्रालि प रइग्रॅनी रवनियू ल्दे्नेइ ग्राज़िय—मार्गदोविच, बुखारा ताशकेंत, १६२६

राजस्थानी (पुरानी राजस्थानी)—तेसितोरी, २०१२ वि०, बनारस

बिलसन फ़िलॉलॉजिकल लेक्चर्स—डॉ० भंडारकर, प्रथम संस्करण

शब्दानुशासन—हेमचंद

संस्कृत ग्रैमर—मोनियर विलियम्स, दूसरा संस्करण

सिंधी ग्रैमर—ट्रंप, प्रथम संस्करण

हिंदी ग्रैमर (ग्रैमर ऑफ़ हिंदी लैंग्विज)—केलाग, तीसरा सस्करण

हिंदी भाषा—भोलानाथ तिवारी, १६६६, इलाहाबाद

हिंदी भाषा का इतिहास—धीरेंद्र वर्मा, चौथा संस्करण, इलाहाबाद

हिंदी भाषा का उद्‌गम और विकास—उदयनारायण तिवारी, दूसरा संस्करण, प्रयाग

हिंदी भाषा की एक नवज्ञात बोली—भोलानाथ तिवारी, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, २२ मार्च १९६४, दिल्ली

हिंदी शब्दानुशासन—किशोरी दास बाजपेयी, प्रथम संस्करण, वाराणसी

अस्कोली, क्रमदीश्वर, चाइल्डर्स, म्यूलर, जूल ब्लॉक, टेंकनर, कून, योहान्सन, बोंटलिक, रोथ, सिल्वाँ लेवी के मत पीशेल या चटर्जी के संबद्ध अंशों से लिए गए हैं।